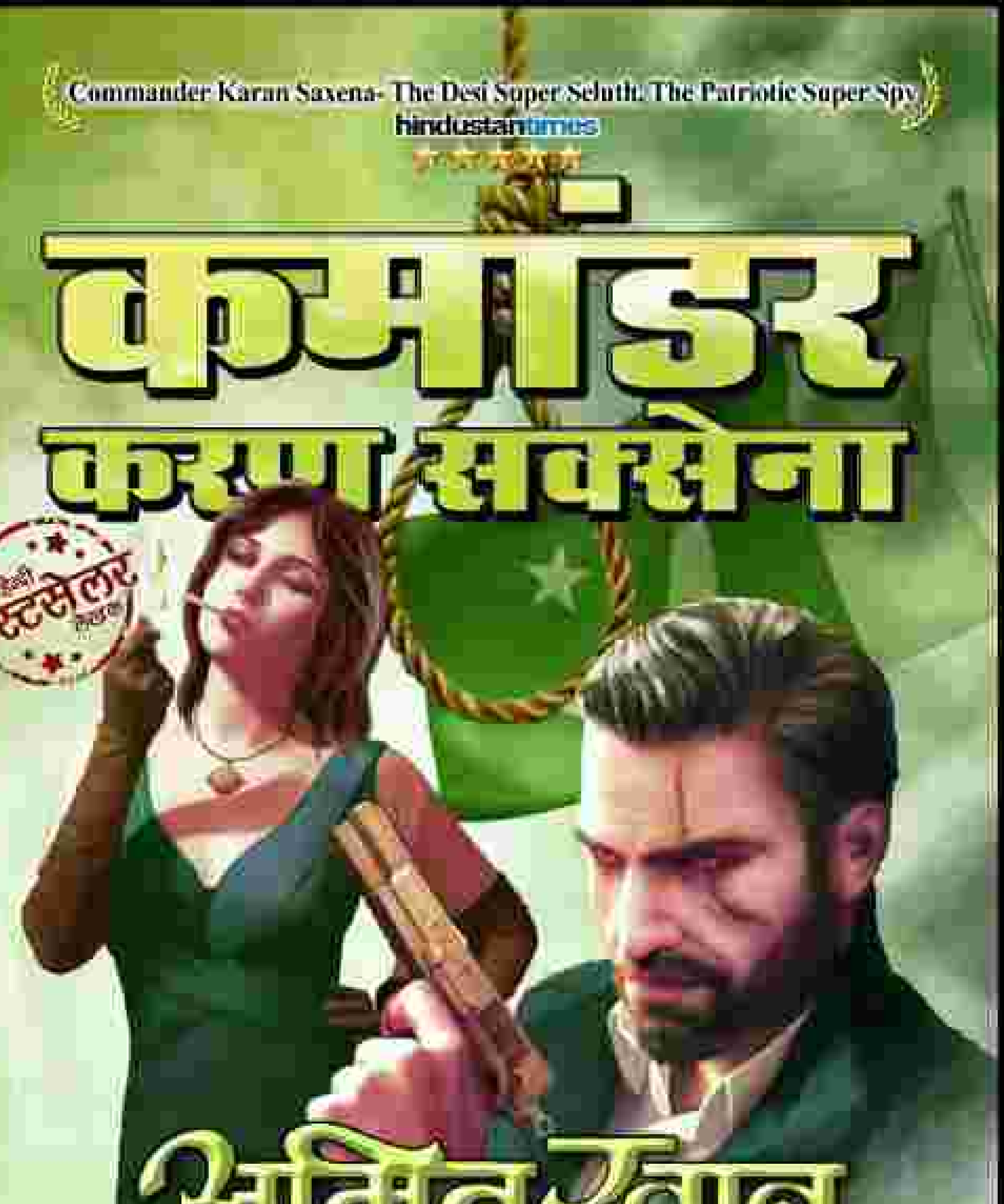
Commander Karan Saxena- The Desi Super Seluth: The Patriotic Super Spy

hindustantimes

कमांडर करण सक्सेना



अमित खान

सर्जिकल स्ट्राइक

कमांडर करण सक्सेना ने पाकिस्तान में घुसकर उस आतंकवादी को फांसी की सज़ा दी।

सर्जिकल स्ट्राइक
अमित खान



सर्जिकल स्ट्राइक

कुछ टिप्पणियाँ अख़बारों से अमित खान के बारे में

अमित खान

का बेहद तेजरफ्तार उपन्यास

"क... कौन है वो आदमी, जिसे तुम फाँसी देना चाहते हो ?" नफीसा बाई ने पूछा ।

"सुलतान फौजी !"

नफीसा बाई फटे-फटे नेत्रों से कमाण्डर करण सक्सेना को देखती रह गयी ।

जबकि कमाण्डर अब वहीं बांस की कुर्सी पर टांग फैलाकर बैठ गया ।

"मेरी आज तुमसे मुलाकात जरूर पहली बार हो रही है ।" कमाण्डर हिंसक मुद्रा में ही बोला- "लेकिन मैंने तुम्हारी और फौजी की प्रेम-लीलाओं के किस्से काफी सुन रखे हैं । मुझे यह भी बताया गया है कि उसे तुम्हारे यहाँ की शराब बहुत पसंद है ।"

"क... किसने बताया तुम्हें यह सब ?"

"काले चोर ने बताया । आसमान से उतरे फ़रिश्ते ने बताया । उसने यह भी बताया कि सुलतान फौजी को तुम्हारे अंदर हद से ज्यादा दिलचस्पी है । वैसे भी ऐसा बदमाश आदमी शराब का ब्रांड आसानी से बदल लेता है, लेकिन औरत का ब्रांड ज़रा मुश्किल से ही बदल पाता है ।"

नफीसा बाई घबरा गयी । नफीसा बाई, जिसके बारे में कहा जाता था कि अगर कोई मर्द एक बार उसके साथ कुश्ती लड़ ले, तो उसकी पूरी बॉडी के नट-बोल्ट खुल जाते हैं । उसकी तबीयत एकदम ठूं-ठा हो जाती है । उसी नफीसा बाई की मुलाकात जब कमाण्डर से हुई, तो वह खुद ठूं-ठा हो गयी ।

कमांडर करण सक्सेना

का जबरदस्त एक्शनपैक्ड कारनामा

सर्जिकल स्ट्राइक

पाकिस्तान की सरज़मीन पर एक ऐसी सर्जिकल

कमांडर करण सक्सेना

एक संक्षिप्त परिचय

- ❖ वह भारत की सर्वोच्च जासूसी संस्था रॉ का एजेंट है ।
- ❖ वह काले रंग का लम्बा ओवरकोट और काला गोल क्लेंसी हैट पहनता है ।
- ❖ उसे .38 कैलीबर की कोल्ट रिवाल्वर पसंद है, जिसे वह हमेशा अपने ओवरकोट की जेब में रखता है । जबकि दूसरी कोल्ट रिवाल्वर अपने काले गोल क्लेंसी हैट की ग्लिप में फंसाकर रखता है, जो विपरीत परिस्थितियों में उसके बहुत काम आती है ।
- ❖ कमाण्डर को आदत है कि वह रिवाल्वर हाथ में आते ही उसे तीन बार अपनी उँगलियों के गिर्द घुमाकर उसे बैरल की तरफ से पकड़ता है, इसे जगलरी करना कहा जाता है ।
- ❖ कमांडर को "डनहिल" सिगरेट पसंद है ।
- ❖ लड़कियों में उसकी विशेष दिलचस्पी है और देखा गया है कि सुन्दर लड़कियां भी कमाण्डर में ख़ास रुचि रखती हैं ।

अमित खान

	• नाइट क्लब	

लेखकीय

प्रिय पाठकों,

बेहद उर्जावान माहौल में पेश है- सर्जिकल स्ट्राइक ! बिलकुल नई प्रकाशन संस्था 'बुक कैफ़े पब्लिकेशन' से ।

'सर्जिकल स्ट्राइक' से पहले मैं थोड़ा 'बुक कैफे पब्लिकेशन' के बारे में बात करना चाहूँगा । आज हिंदी जासूसी साहित्य को, जिसे कथित बुद्धजीवी वर्ग 'पल्प फिक्शन' भी कहता है और जिस नाम से मुझे सख्त एतराज है, को नए प्रकाशकों की बहुत जरूरत है । जितने भी उत्साही और बड़े प्रकाशक थे, वह सब बंद हो गए हैं । सबने नये-नये काम कर लिए हैं । शायद वह भी सही थे । जीविकोपार्जन के लिए आर्थिक सुद्रढ़ता बहुत जरुरी है । उन्हें लगने लगा था कि अब ट्रेड की बदौलत जीवन नहीं चलाया जा सकता । ऐसी विकट परिस्थिति में मैंने 'बुक कैफ़े पब्लिकेशन' की स्थापना की है । क्योंकि मेरा ध्येय आर्थिक नहीं है । मेरा ध्येय प्रकाशन से पैसा कमाना नहीं है । मेरा ध्येय सिर्फ इतना है कि जिस उपन्यास जगत को मैंने अपने जीवन के सबसे सुनहरी 25 वर्ष दिये । जिस ट्रेड ने मुझे भी काफी कुछ दिया । पूरे भारतवर्ष में नाम दिया । पैसा दिया । इज्जत भी दी । उस ट्रेड के प्रति अब मेरा भी कुछ कर्त्तव्य है । अब मेरी बारी है कि मैं उस ट्रेड को कुछ दूँ । तो सबसे पहले 'बुक कैफ़े पब्लिकेशन' की शुरुआत मैं कुछ पाने के लिए नहीं कर रहा हूँ बल्कि कुछ देने के लिए कर रहा हूँ । मेरे अग्रज और स्तंभ कहे जाने वाले प्रकाशकों से अतीत में कुछ गलतियाँ हुई हैं । जैसे सबसे बड़ी गलती उनसे ये हुई कि उन्होंने नए लेखकों को प्रोत्साहन नहीं दिया । नये उपन्यास, नई उर्जा, नई सोच के साथ मार्केट में नहीं आ पाये । यह भी एक वजह रही इस ट्रेड के डूबने की । अब मुझे लगता है कि भूल सुधार होना चाहिए । 'बुक कैफ़े पब्लिकेशन' का यह भी एक ध्येय होगा कि नए लेखकों को भरपूर प्रोत्साहन दिया जाये । उन्हें प्रकाशित किया जाये । अच्छे उपन्यास पाठकों के लिए मार्केट में उपलब्ध हों ।

इसके अलावा 'बुक कैफ़े पब्लिकेशन' में पुस्तकों की क्वालिटी का भी भरपूर ध्यान रखा जायेगा । हमारा ध्येय होगा कि 'बुक कैफ़े पब्लिकेशन' से सुंदर किताबें प्रकाशित हों । कवर, पेपर क्वालिटी और प्रिंटिंग सभी उच्च स्तरीय हों । इन्हीं सब मापदंडो को ध्यान में रखते हुए 'बुक कैफ़े पब्लिकेशन' से सबसे पहले 'सर्जिकल स्ट्राइक' और 'तेरी मेरी कहानियां' के 2 पेपरबेक संस्करण प्रकाशित किये जा रहे हैं । आशा है, दोनों पुस्तकें आपका भरपूर मनोरंजन करेंगी और यह आपके लिए संग्रह करने योग्य भी होंगी ।

कुछ बातें 'सर्जिकल स्ट्राइक' के बारे में

जो उपन्यास आपके हाथों में है, इस उपन्यास की किस्मत बड़ी अजीब रही है । दरअसल यह उपन्यास वर्ष 2003 में तब लिखा गया था, जब कोई 'सर्जिकल स्ट्राइक' का नाम भी नहीं जानता था । तब इस उपन्यास का नाम रखने में बड़ी दिक्कत हुई थी । मुझे इस उपन्यास का कोई अच्छा नाम सूझ ही नहीं रहा था । प्रकाशक ने ही इस उपन्यास का नाम 'एक नंबर का जल्लाद' रखकर इसे प्रकाशित कर दिया । उपन्यास जबरदस्त हिट रहा । लेकिन मैं इस नाम से संतुष्ट नहीं था । अब इस उपन्यास के पुनः प्रकाशन का समय आया, तब मुझे इस उपन्यास का सबसे सही और सटीक नाम सूझा– सर्जिकल स्ट्राइक! मुझे तब लगा कि 'सर्जिकल स्ट्राइक' जैसे नये सब्जेक्ट पर तो मैं 15 वर्ष पहले ही उपन्यास लिख चुका हूँ । इस तरह इस उपन्यास के टाइटल की वृहद यात्रा का अंत हुआ । अब इस उपन्यास का नाम 'सर्जिकल स्ट्राइक' फाइनल है और सदा-सर्वदा यही रहने वाला है । इस उपन्यास में मैंने आज के हिसाब से काफी कुछ परिवर्तन भी किए हैं । आशा करता हूँ कि यह उपन्यास आपका भरपूर मनोरंजन करेगा ।

कुछ बातें 'तेरी मेरी कहानियाँ' के बारे में

इसी उपन्यास के साथ मेरा एक कहानी संग्रह भी प्रकाशित हो रहा है, जिसमें कुछ पुरानी कहानियों के साथ कुछ नई कहानियाँ भी हैं । इस कहानी का सबसे विशेष आकर्षण मेरा नया लघु उपन्यास है, जिसका नाम 'पार्टीशन' है ।

पार्टीशन– जो मेरी सबसे ज्यादा पसंदीदा कहानियों में से एक है । मेरा आपसे अनुरोध है कि आप कहानियों के साथ-साथ इस लघु उपन्यास को जरूर पढ़ें और अपनी मूल्यवान राय से मुझे जरूर अवगत करायें । धन्यवाद सहित ।

आपका अपना

अमित खान

मुंबई – 400104

सम्पर्क सूत्र : foramitkhan@gmail.com



1. मिशन की शुरुआत

इस समय गंगाधर महंत और कमाण्डर करण सक्सेना रॉ हेडक्वार्टर के उस फिल्म रुम में बैठे थे, जहाँ केसों से सम्बंधित फ़िल्में दिखाई जाती हैं ।

शाम का समय था । कमाण्डर करण सक्सेना को थोड़ी देर पहले ही रॉ के हेडक्वार्टर बुलाया गया था, ताकि उसे एक बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण मिशन सौंपा जा सके ।

इस समय उन दोनों के सामने पैंतीस मिलीमीटर का पर्दा था और

उस पर्दे पर एक बहुत खतरनाक आदमी की तस्वीर नजर आ रही थी ।

वह दरिंदा था ।

वह शक्ल से ही वहशी नजर आता था ।

उसके बाल जंगलियो की तरह दोनों कंधो पर बिखरे हुए थे ।

जिस्म की रंगत गहरी सांवली थी ।

मोटी नाक ।

कंजी आँखे ।

इसके अलावा दायें कान में पीतल का एक कुंडल लटका हुआ था ।

उसे देखते ही लगता था, वह कोई भेड़िया है ।

"करण !" गंगाधर महन्त उस फोटो को देखते हुए बोले- "यह एक कश्मीरी आतंकवादी है और इसका नाम सुलतान फौजी है ।"

"सुलतान फौजी ।"

"हाँ ।"

कमाण्डर थोड़ा अलर्ट होकर बैठ गया, इसमें कोई शक नहीं कि वह व्यक्ति शक्ल-सूरत से ही अपराधी नजर आ रहा था ।

"दरअसल इसी सुलतान फ़ौजी के विषय में बात करने के लिये मैंने आज तुम्हें यहाँ बुलाया है ।" गंगाधर महन्त बोले- "यह आदमी शक्ल-सूरत से जितना खतरनाक नजर आता है, असल में उससे कहीं ज्यादा दुर्दांत है । पहले यह भारतीय फौज में लॉन्स नायक था, लेकिन फिर इसने पाकिस्तानी घुसपैठियों के बहकावे में आकर फौज की नौकरी छोड़ दी और उसके बाद कश्मीरी आतंकवादी बन गया । मुम्बई बम काण्ड के बारे में तो तुमने सुना ही होगा ?"

"उसके बारे में भला किसने नहीं सुना ।"

"दैट्स गुड ! दरअसल यह सुलतान फौजी उसी मुम्बई बम काण्ड का मुख्य अभियुक्त है ।" गंगाधर महन्त ने 'हवाना सिगार' का कश लगाते हुए जबरदस्त रहस्योद्घाटन किया- "आज से ३ साल पहले जब मुम्बई शहर के अंदर भयानक बम-विस्फोट हुए थे, तब

पिचहत्तर फीसदी विस्फोटों में इसी सुलतान फौजी का हाथ था। इसने बीस से ज्यादा इमारतों में विस्फोट किये, जिसमें पाँच हज़ार के आसपास निर्दोष शहरी मारे गये और लगभग तीन हज़ार के करीब बुरी तरह घायल हुए।"

"ओह!"

"यह बेहद दुर्दांत किस्म का अपराधी है।"

"लेकिन जहाँ तक मुझे याद पड़ता है चीफ !" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "यह अपराधी तो पकड़ा गया था।"

"बिल्कुल ठीक अंदाजा है तुम्हारा। आज से एक साल पहले सुलतान फौजी को मुम्बई पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था। इतना ही नहीं सुलतान फौजी पर अदालत में सारे इल्जाम भी साबित हो गये थे, आमतौर पर 26 जनवरी या 15 अगस्त वाले दिन किसी अपराधी को फाँसी नहीं दी जाती। लेकिन सुलतान फ़ौजी के लिये एक स्पेशल कोर्ट बिठाई गयी और जज ने अपना वो ऐतिहासिक फैसला सुनाया, जो भारत के इतिहास में पहले कभी किसी अपराधी को नहीं सुनाया गया था।"

"ऐसा क्या फैसला था ?"

"दरअसल उस स्पेशल कोर्ट ने सुलतान फ़ौजी को फाँसी की सजा सुनाई और उसकी फाँसी की जो तारीख मुकर्रर की, वो ऐतिहासिक तारीख थी, सुलतान फ़ौजी को ठीक 26 जनवरी वाले दिन सुबह 5 बजे फाँसी होनी थी। फाँसी का यह खास दिन मुकर्रर करने के पीछे भी एक खास वजह थी।"

"क्या ?" कमाण्डर करण सक्सेना ने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

"सुलतान फौजी चूंकि देश का दुश्मन था।" गंगाधर महन्त ने 'हवाना सिगार' का कश लगाते हुए कहा- "और वह क्योंकि देश के टुकड़े कराना चाहता था, इसलिये खासतौर पर उसे फाँसी देने के लिये 26 जनवरी का दिन चुना गया, गणतंत्र दिवस का दिन चुना गया। ताकि देश के दुश्मनों के मुंह पर कसकर तमाचा लग सके और उन्हें इस बात का अहसास हो सके कि हिन्दुस्तानियों के अन्दर

अभी इतना दम है, जो वह अपनी आजादी की हिफाजत खुद कर सकते हैं । कुल मिलाकर अगर सुलतान फौजी को 26 जनवरी के दिन फाँसी लग जाती, तो यह न सिर्फ कश्मीरी आतंकवादियों के मुँह पर बल्कि पाकिस्तानी फौज के मुँह पर भी बड़ा तमाचा होता । लेकिन अफसोस !" गंगाधर महन्त ने गहरी सांस छोड़ी- "ऐसी नौबत नहीं आयी ।"

"क्यों ?" कमाण्डर चौंका- "नौबत क्यों नहीं आयी ?"

"क्योंकि सुलतान फ़ौजी 26 जनवरी की सुबह फाँसी लगने से पहले ही कालकोठरी से फरार हो गया । बताते हैं कि जेल का जेलर तथा वार्डन कश्मीरी आतंकवादियों के हाथो बिक गये थे और उन्होंने ही सुलतान फौजी को जेल से फरार कराने में मदद की । यह बात अलग है कि बाद में उन दोनों को भी नौकरी से सस्पेंड कर दिया गया । लेकिन उससे क्या फर्क पड़ता है, सुलतान फौजी तो जेल से फरार हो ही गया था ।"

"ओह !"

"बहरहाल इस घटना को आज दस महीने गुजर चुके हैं, पूरे दस महीने ! इस बीच मुम्बई पुलिस ने फौजी को हर जगह ढूंढा, हर मुमकिन जगह तलाश किया- लेकिन सुलतान फौजी गधे के सिर से सींग की तरह गायब हो चुका था । उसका फिर कहीं कुछ पता न चला । लेकिन सिर्फ पन्द्रह दिन पहले इस पूरे घटनाक्रम में एक बार फिर काफी सरगर्मी आ गयी है ।"

"वो कैसे ?" करण सक्सेना की उत्सुकता और बढ़ी ।

"पिछले दस महीने से जिस सुलतान फौजी के बारे में यह पता नहीं लग रहा था कि वो कहाँ गायब हो गया है ।" गंगाधर महन्त ने कहा- "उसी सुलतान फौजी का अब एकाएक पता चल गया है । वो इस समय पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में है, वह जरूर जेल से फरार होने के बाद सीधा इस्लामाबाद पहुँच गया था । क्योंकि इस समय उसके लिये वही सबसे ज्यादा सैफ जगह है ।"

"ल... लेकिन आपको यह कैसे मालूम हुआ", करण सक्सेना

ने सस्पेंसफुल स्वर में पूछा- "कि सुलतान फौजी इस समय इस्लामाबाद में है ?"

"गुड क्वेश्चन !" गंगाधर महन्त मुस्कराये- "अच्छा सवाल है । दरअसल यह रहस्य भी बड़े करिश्माई ढंग से उजागर हुआ । आज से पन्द्रह दिन पहले इस्लामाबाद में वहाँ के प्राइम मिनिस्टर की लड़की की शादी थी, जिसमें न सिर्फ दुनिया भर से बड़े-बड़े लीडर आये बल्कि पाकिस्तान के भी बड़े-बड़े लीडर और उद्योगपति उस शादी में शरीक हुए थे । उस शादी की वीडियो रिकार्डिंग मुम्बई पुलिस के कुछ ऑफिसर्स ने देखी, तो वह उछल पड़े । क्योंकि उस शादी में सुलतान फौजी को भी शामिल दिखाया गया था, जो लड़की को बाकायदा गिफ्ट दे रहा था ।"

"ओह ! क्या वो रिकार्डिंग अभी भी आपके पास है ?"

"बिल्कुल है । पुलिस ऑफिसर्स ने तभी स्टार टी.वी. से वो वीडियो रिकॉर्डिंग ले ली थी, मैं अभी तुम्हें वो रिकॉर्डिंग दिखाता हूँ ।

□□□

गंगाधर महन्त ने 'हवाना सिगार' का कश लगाते हुए प्रोजेक्टर रूम की तरफ हाथ से इशारा किया, तो फौरन पैंतीस मिलीमीटर के पर्दे पर चमकती सुलतान फौजी की तस्वीर नदारद हो गयी और अब वहाँ शादी की वही वीडियो रिकॉर्डिंग नजर आने लगी, जिसमें काफी प्रसिद्ध चेहरे नजर आ रहे थे ।

कुछ देर पर्दे पर फिल्म चलती रही, फिर वो फिल्म एक खास चेहरे पर जाकर रुक गयी ।

वो सुल्तान फौजी का चेहरा था, जिसमें उसे बिल्कुल साफ-साफ पाकिस्तानी प्राइम मिनिस्टर की बेटी को कोई कीमती गिफ्ट देते हुए दर्शाया गया था ।

धीरे-धीरे उसका चेहरा पर्दे पर क्लोज होता चला गया ।

"माई गॉड, यह तो हण्ड्रेड परसेंट सुलतान फौजी ही है ।"

"यस ।"

"पाकिस्तान सरकार से इस बारे में कोई बातचीत नहीं हुई ?" करण सक्सेना ने पूछा- "पाकिस्तानी गवर्नमेंट से यह नहीं कहा गया कि उनके कंट्री में हमारा अपराधी है, जिसे उनको फौरन हमारे हवाले करना चाहिये ।"

"पाकिस्तान गवर्नमेंट से भी बात की गयी थी- लेकिन उधर से जो जवाब मिला, वो काफी निराशाजनक था ।"

"क्या जवाब मिला ?"

"सबसे पहले तो पाकिस्तानी प्राइम मिनिस्टर ने इसी बात से इंकार किया कि जो व्यक्ति शादी की वीडियो रिकॉर्डिंग में दिखाया गया, वो सुल्तान फौजी है । पाकिस्तानी प्राइम मिनिस्टर ने एकदम साफ तौर पर कहा कि सुलतान फ़ौजी नाम का कोई कश्मीरी आतंकवादी इन दिनों पाकिस्तान में नहीं है । जो व्यक्ति वीडियो कैसेट में दिखाया गया है, उसकी शक्ल-सूरत इत्तेफाक से सुलतान फौजी से मिलती है । इतना ही नहीं, प्राइम मिनिस्टर ने आगे कहा कि वह आदमी पूरी तरह पाकिस्तानी है और एक प्रसिद्ध उद्योगपति के साथ उस शादी में शामिल होने आया था । वैरी सिंपल ! नो आर्ग्युमेंट आफ्टर दिस !"

"यानि वह लोग सुलतान फौजी को किसी भी हालत में भारत को सौंपने के इच्छुक नहीं है ।"

"यस ! किसी भी हालत में नहीं ।"

"ओह !"

"बहरहाल अब यही तुम्हारा मिशन है ।" गंगाधर महन्त ने 'हवाना सिगार' का कश लगाते हुए कहा- "तुमने इस बार इस्लामाबाद जाकर सबसे पहले सुलतान फ़ौजी को तलाश करना है और फिर उसे वहीं फाँसी की सजा देनी है, जो भारत की स्पेशल कोर्ट ने उसे सुनायी थी । वह पाँच हज़ार निर्दोष लोगों का खूनी है करण ! उसकी मौत सबक होगी दूसरे आतंकवादियों के लिये ! पाकिस्तान सरकार के लिये ! अगर तुम सुलतान फ़ौजी को पाकिस्तान के अंदर घुसकर फाँसी देने में कामयाब रहे, इस सर्जिकल स्ट्राइक को अंजाम

देने में कामयाब रहे, तो फिर आतंकवादियों के दिलो-दिमाग में खौफ बैठ जायेगा। यह सीधे-सीधे पाकिस्तान के मुँह पर जबरदस्त तमाचा होगा। आतंकवादी समझ जायेंगे कि पाकिस्तान में इतनी सामर्थ्य भी नहीं है कि वो उनकी जानों की हिफाजत कर सके। आज की तारीख में यह एक बड़ी सर्जिकल स्ट्राइक होगी। बाई द वे, इस मिशन की सारी तैयारियां हो चुकी हैं। तुम्हारा फर्जी नाम से जाली पासपोर्ट भी बन चुका है और उस पर वीजा भी लग चुका है। यह लो!" गंगाधर महन्त ने फौरन अपनी जेब से एक जाली पासपोर्ट निकालकर कमाण्डर की तरफ बढ़ाया।

करण सक्सेना ने पासपोर्ट खोलकर देखा।

वह पासपोर्ट एकदम कम्प्लीट था।

उसमें 'वीजे' की स्लिप वगैरा सब लगी हुई थीं।

"गुड! यानि इस बार मुझे एक जल्लाद की भूमिका अभिनीत करनी है- एक फाँसी देने वाले जल्लाद की भूमिका!"

"तुम कुछ भी समझ सकते हो, लेकिन बस इतना याद रखो कि यह मिशन काफी महत्वपूर्ण है। एक बात और!"

"क्या?"

"इस्लामाबाद पहुँचने के बाद इस मिशन में 'रजिया' नाम की एक लड़की तुम्हारी काफी मदद करेगी।"

"रजिया!"

"यस, रजिया!"

गंगाधर महन्त ने एक बार फिर प्रोजेक्टर रूम की तरफ हाथ से इशारा किया, तो पैंतीस मिलीमीटर के पर्दे पर अब रजिया की तस्वीर नजर आने लगी।

□□□

रजिया!

मुश्किल से छब्बीस-सत्ताइस साल की एक बेइंतहा खूबसूरत लड़की।

जिसका कद लम्बा था ।

बदन छरहरा था ।

रेशम से मुलायम सुनहरी बाल, पतली कमर, भारी नितम्ब, दमकता चेहरा ।

रजिया में वो सब कुछ था, जो किसी भी खूबसूरत लड़की में होना चाहिये । उस समय वो सलवार-कमीज और पुलोवर पहने थी ।

कमाण्डर करण सक्सेना अपलक रजिया को देखता रहा ।

"रजिया कौन है ?"

"रजिया एक हिन्दुस्तानी लड़की है ।" गंगाधर महन्त ने बताया- "रजिया का बड़ा भाई कभी पाकिस्तान में जासूसी करने के लिये भेजा गया था । लेकिन एक दिन वहाँ अचानक उसका राज खुल गया और तब पाकिस्तान के किसी फ़ौजी ने उसकी इस्लामाबाद में ही गोली मारकर हत्या कर दी ।"

"ओह !"

"अपने बड़े भाई की मौत से रजिया इस कदर आन्दोलित हुई कि वह उसकी मौत का बदला लेने के लिये खुद भी पाकिस्तान जा पहुँची । इतना ही नहीं, पाकिस्तान जाकर उसने वहाँ की फौज के लेफ्टीनेंट कर्नल हैदर अली से शादी कर ली और मुकम्मल तौर पर वहीं की शहरी (सिटीज़न) बन गयी ।"

"क्या उसने अपने भाई के हत्यारे को भी मार डाला ?"

"नही, दरअसल इसीलिये तो वो वहाँ अपनी शादी करने पर मजबूर हुई । क्योंकि इस्लामाबाद पहुँचने के एक महीने बाद भी उसे अपने भाई के हत्यारे का कुछ पता नही लगा था कि वो कौन है ? कहाँ है ? जबकि उसका वीजा खत्म हो रहा था । इसलिये उसने पाकिस्तान में रहने के लिये ही वो कदम उठाया था और अपनी शादी कर ली ।"

"बहुत बड़ी कुर्बानी दी रजिया ने ।" करण सक्सेना के नेत्र फटे ।

"दरअसल रजिया अपने भाई से बेइंतहा प्यार करती थी ।" गंगाधर महन्त ने अपलक रजिया की तस्वीर को देखते हुए कहा-

"आज उसे पाकिस्तान में रहते हुए पूरे छः महीने हो चुके हैं, लेकिन वो आज भी पूरे जोश के साथ अपन भाई के हत्यारे को ढूंढने में लगी है। जिस दिन भी उसे अपने भाई का हत्यारा मिल गया, वो उसी दिन उसकी हत्या करके वापस हिन्दुस्तान लौट आयेगी। बहरहाल इस्लामाबाद पहुँचने के बाद तुमने सबसे पहले रजिया से मिलना है। रजिया क्योंकि पाकिस्तानी फौज के लेफ्टीनेंट कर्नल की बीवी बनी हुई है, इसीलिये वो सुलतान फौज तक पहुँचने में तुम्हारी काफी मदद कर सकती है। बड़ी मदद कर सकती है।"

"क्या रजिया मेरे मिशन के बारे में जानती है ?"

"यस, उसे इस बारे में इनफार्मेशन भेजी जा चुकी है।" गंगाधर महन्त ने बताया- "और अब वो इस्लामाबाद में तुम्हारा ही बड़ी बेसब्री से इंतजार कर रही है।"

"गुड !"

जबकि गंगाधर महन्त ने 'हवाना सिगार' का एक और कश लगाया था।

"रजिया का एड्रेस ?"

गंगाधर महन्त ने फौरन ही एक कागज पर लिखकर रजिया का एड्रेस कमाण्डर की तरफ बढ़ा दिया।

"कल ही तुमने इस्लामाबाद के लिये रवाना हो जाना है।" गंगाधर महन्त बोले- "अब्बास अहमद के नाम से तुम्हारी फ्लाइट का टिकट भी बुक कराया जा चुका है। यह रहा टिकट !"

गंगाधर महन्त ने टिकट भी कमाण्डर करण सक्सेना की तरफ बढ़ा दिया।

"थैंक्यू ! थैंक्यू वैरी मच।"

"मुझे उम्मीद है कि तुम बहुत जल्द सुलतान फ़ौजी को उसके अपराध की सजा देकर वापस लौटोगे करण !"

"ऐसा ही होगा चीफ !"

"गुड !"

"कोई और आदेश चीफ ?"

"नहीं, बाकि कुछ नहीं ।"

कमाण्डर करण सक्सेना तुरंत ही कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया ।

उसके साथ-साथ गंगाधर महन्त ने भी कुर्सी छोड़ दी थी ।

□□□

उस दिन कमाण्डर करण सक्सेना ने काफी देर तक उस केस के सभी पहलुओं पर विचार किया ।

उसे एक अपराधी को सजा देना थी ।

फाँसी की सजा ।

सचमुच वह एक अद्भुत मिशन था, ऐसा मिशन उसे जिन्दगी में पहले कभी नहीं सौंपा गया था ।

कमाण्डर यह सोचते ही सिहर उठा कि इस बार उसे एक 'ज़ल्लाद' की भूमिका अदा करनी है । ऐसे ज़ल्लाद की भूमिका, जो हर हालत में मुजरिम को फाँसी पर लटकाकर ही छोड़ता है ।

वाकई वह एक करामाती मिशन था । करामाती भी और खून से रंगा हुआ भी ।

***



2. कमाण्डर पाकिस्तान में

अगले दिन कमाण्डर करण सक्सेना इस्लामाबाद जाने के लिये पूरी तरह तैयार था ।

सुबह के उस समय 10 बज रहे थे, मौसम आज बिल्कुल साफ था और चारों तरफ हल्की धूप छिटकी हुई थी, जब करण सक्सेना इंडियन एयर लाइंस के एक विमान में जाकर बैठ गया।

ठीक सवा दस बजे विमान ने रन-वे छोड़ा।

कमाण्डर करण सक्सेना पाकिस्तान के बारे में सोचने लगा।

पाकिस्तान, जो कभी भारत का एक अटूट अंग था। लेकिन नफरत की धारा में बहकर वह न सिर्फ भारत से अलग हो गया बल्कि आज की तारीख में वह दुनिया के मानचित्र पर भारत का सबसे कट्टर दुश्मन भी था। भारत में नक्सलवाद की समस्या हो या पंजाब में खालिस्तान का आंदोलन हो या कश्मीर की आज़ादी का इश्यु ! हम सब जानते हैं कि इन सभी आतंकवादी गतिविधियों के पीछे कहीं-न-कहीं पाकिस्तान का हाथ रहा है।

पाकिस्तान !

जिसे भारत के अंदरूनी मामलों में टांग अड़ाने की अब कुछ आदत-सी हो गयी है।

कई घंटे का सफर करने के बाद शाम के उस समय पांच बज रहे थे, जब इंडियन एयरलाइंस के विमान ने इस्लामाबाद एयरपोर्ट पर लैंड किया।

इस्लामाबाद एक नया बसा हुआ शहर है। इसलिये वहाँ की इमारतें यूरोपियन पद्धति की हैं, बड़े-बड़े आधुनिक पुल हैं, खूबसूरत मस्जिदें हैं, पार्क हैं, कई प्रकार के मनोरंजन और क्रीड़ा स्थल हैं, कुल मिलाकर इस्लामाबाद को एक आधुनिक शहर कहा जा सकता है।

इसके अलावा वहाँ की सड़कों पर अमरीकी और जापानी कारें भी बहुतायत में दौड़ती हुई दिखाई दे जायेंगी।

वहाँ के बाजारों में भी अमरीकि, चीनी और जापानी सामान की भरमार है।

कमाण्डर करण सक्सेना कस्टम से निपटने के बाद अपना लगेज़ लेकर एयरपोर्ट से बाहर निकला।

इस्लामाबाद की सड़कें उसका स्वागत कर रही थीं।

वो सड़कें, जिन पर उसने बहुत जल्द गोलियों की बौछार करनी थी।

एयरपोर्ट से बाहर निकलते ही कमाण्डर ने एक टैक्सी पकड़ी और फिर वह एक होटल की तरफ उड़ चला।

□□□

होटल साहिल पैलेस !

यह उस पांच सितारा होटल का नाम था, जिसमें कमाण्डर करण सक्सेना जाकर ठहरा।

होटल के काउंटर रजिस्टर में भी कमाण्डर ने अपना नाम 'अब्बास अहमद' लिखा।

फिर वो आनन-फानन अपने रूम में पहुँचा।

वह एक बड़ा सजा-धजा कमरा था।

वहाँ ऐशो-आराम की तक़रीबन हर चीज मौजूद थी।

उसने नहा-धोकर सबसे पहले सफर की सारी थकान उतारी।

फिर उसने रूम सर्विस को ऑर्डर देकर 'पीटर स्कॉट' (शराब) की बोतल मंगायी, जो पाकिस्तान में भी मिलती थी। हालाँकि वहाँ शराब बेन है, लेकिन फिर भी ज्यादा कीमत पर सब चीज़ें उपलब्ध थीं। वह गटागट आधी से ज्यादा शराब की बोतल एक ही बार में खाली कर गया।

उसके बाद वो बिस्तर के हवाले हो गया था।

सुबह के आठ बजे जब उसकी आँख खुली, तो न सिर्फ उसका जिस्म बल्कि दिमाग भी तरोताजा था।

□□□

बिस्तर से उठते ही कमाण्डर ने अपने मिशन से सम्बन्धित जाल बुनना शुरू कर दिया।

मौत के खेल की शुरुआत हो गयी थी।

उसने सबसे पहले अपने कपड़े बदले, जिसकी वजह से उसका

रूप काफी चेंज हो गया।

उसने योजनानुसार खाकी शर्ट और खाकी पेंट पहनी।

अटैची के अंदर से ही उसने एक थैला निकाला, कुछ कागज निकाले।

फिर वो चुपचाप दबे पांव उस होटल से बाहर निकल गया।

उस समय छः बज रहे थे।

अब उसे जल्द-से-जल्द रजिया से मिलना था।

होटल साहिल पैलेस से बाहर निकलते ही कमाण्डर ने थैला अपने कंधे पर लटका लिया और उसमें कागज भर लिये।

पलक झपकते ही वो बिल्कुल 'पोस्टमेन' लगने लगा।

फिर उसने टैक्सी पकड़ी और अगले ही पल वो लेफ्टीनेंट कर्नल हैदर अली की कोठी की तरफ उड़ चला।

□□□

कमाण्डर ने वो टैक्सी कोठी से थोड़े ही फासले पर छोड़ दी।

लेफ्टीनेंट कर्नल की कोठी इस्लामाबाद के बेहद पॉश इलाके में थी। बाकी का रास्ता कमाण्डर करण सक्सेना ने पैदल ही तय किया। कोठी के सामने पहुँचते ही वह चौंका। कोठी क्या थी, बाकायदा महल थी। उसकी बाहर से ही शानो-शौकत राजा महाराजाओं जैसी लग रही थी। पाकिस्तान में फौज कितनी शक्तिशाली है, इसका वो कोठी जीता जागता नमूना थी।

कोठी के बाहर ही फौज की वर्दी में सजा-धजा एक राइफलधारी जवान खड़ा था, जो कमाण्डर करण सक्सेना को देखते ही अलर्ट हो गया।

"कहिये ?"

"क्या लेफ्टीनेंट कर्नल हैदर अली साहब की कोठी यही है ?"

"जी हाँ।"

"उनकी बेगम मिसिज रजिया के कुछ जरुरी डॉक्यूमेंट हैं।" कमाण्डर करण सक्सेना 'पोस्टमेन' की भूमिका अदा करता हुआ

बोला- "मुझे डॉक्यूमेंट उन्हें देने हैं।"

"लाओ।" जवान ने कहा- "मुझे दे दो डॉक्यूमेंट।"

"तुम्हें कैसे दे सकता हूँ!" करण सक्सेना बोला- "मुझे उनसे रिसीविंग सिग्नेचर भी कराने हैं।"

"लाओ, सिग्नेचर भी मैं ही किये देता हूँ।"

"अजीब बात है, तुम उनकी जगह सिग्नेचर कैसे कर सकते हो? क्या मिसिज रज़िया कोठी पर नहीं है?"

"हैं।"

"फिर तुम उन्हें बुला क्यों नहीं देते या फिर दरवाजा खोल दो, मैं खुद अंदर चला जाऊँगा।"

"क्या उन्हीं के सिग्नेचर होने जरूरी हैं?"

"जरूरी हैं, तभी तो मैं इतनी जिद भी कर रहा हूँ।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "वरना मैं तुम्हें ही डॉक्यूमेंट देकर चला न जाता?"

एक पल उस राइफलधारी जवान ने कुछ सोचा।

फिर आगे बढ़कर उसने लोहे का विशाल आयरन गेट खोल दिया
।

"ठीक है, जाओ अंदर।" राइफलधारी जवान बोला- "और जल्दी से वापस लौटना।"

"मैं क्या अंदर बसने के लिये जा रहा हूँ, डॉक्यूमेंट ही तो देकर आना है।" कमाण्डर करण सक्सेना भिन्नाता हुआ बोला।

□□□

लोहे का विशाल आयरन गेट खोलते ही कमाण्डर को सामने एक लम्बा-चौड़ा ड्राइव वे नजर आने लगा।

अभी वो उस ड्राइव वे पर चंद कदम ही चला होगा कि तभी उसे एकाएक रजिया नजर आयी, जो तेज-तेज कदमों से उसी तरफ चली आ रही थी।

उस समय वो गुलाबी रंग का हाउस गाउन पहने थी और उस

सिम्पल-सी ड्रेस में भी बेपनाह खूबसूरत लग रही थी।

"कहिये, क्या बात है ?" रजिया उसके नजदीक आकर बोली।

"आपके लिये कुछ डॉक्यूमेंट हैं मैडम !"

"कहाँ हैं ?"

कमाण्डर करण सक्सेना ने फौरन एक कागज रजिया की तरफ बढ़ा दिया।

उसने पलटकर देखा, लोहे के आयरन गेट पर खड़ा राइफलधारी जवान अभी भी उसे ही देख रहा था।

उधर रजिया की नजर जैसे ही काग़ज पर पड़ी, वह बुरी तरह चौंकी।

कागज पर कोर्ड-वर्ड में लिखा था, सर्जिकल स्ट्राइक की शुरूआत।

उस पंक्ति को देखते ही रजिया के दिमाग में धमाका-सा हो गया।

उसने हकबकाकर कमाण्डर को देखा।

"क... कमाण्डर !" रजिया के मुँह से तेज सिसकारी छूटी।

"यस।"

रजिया ने एकदम झपटकर कमाण्डर के हाथ से पेंसिल छीन ली और फिर उसके हाथ में थमे एक कागज पर आनन-फानन यूँ चंद शब्द घसीटकर लिखे, जैसे सिग्नेचर कर रही हो- आज रात नौ बजे 'सुलेमान क्लब' पहुंचो, मैं तुमसे वहीं मिलूंगी।

वह चंद शब्द लिखने के बाद रजिया जितनी तेजी से उसकी तरफ आयी थी, उससे कहीं ज्यादा तेजी से वापस लौट गयी।

कमाण्डर करण सक्सेना हक्का-बक्का सा रजिया को जाते देखता रहा।

फिर वो भी खामोशी से वापस लौट गया।

□□□

सुलेमान क्लब !

वह इस्लामाबाद का बेहद मशहूर क्लब था, जिसका एड्रेस कमाण्डर करण सक्सेना को बिना किसी परेशानी के फौरन ही मालूम हो गया।

अगर हम 'सुलेमान क्लब' को मशहूर क्लब की बजाय बदनाम क्लब कहें, तो ज्यादा बेहतर रहेगा। क्योंकि वो बदनाम था, इसीलिये मशहूर था। उस क्लब की सबसे बढ़ी खूबी तो यही थी कि वो इस्लामाबाद के उस इलाके में बना हुआ था, जो रेड लाइट एरिया कहा जाता है और जहाँ एक किलोमीटर के दायरे में कई हजार वेश्यालय स्थापित हैं।

उस क्लब की दूसरी खूबी ये थी कि वहाँ गैरकानूनी तरह से जुआ खेला जाता था, शराब मिलती थी और लड़कियों के सौदे भी होते थे।

कुल मिलाकर 'सुलेमान क्लब' अय्याशी का फुल अड्डा था।

कमाण्डर करण सक्सेना को इसी बात की बड़ी हैरानी हुई कि रजिया ने उसे इतनी बदनाम जगह पर क्यों बुलाया है?

वो साढ़े आठ बजे ही क्लब पहुँच गया।

पौने नौ बज गये।

नौ बज गये।

सवा नौ बज गये।

पर रजिया वहाँ न आयी।

अब कमाण्डर करण सक्सेना निराश होने लगा।

उसे लगने लगा कि रजिया वहाँ नहीं आयेगी।

साढ़े नौ बजे जब वो वहाँ से वापस जाने का मन बना रहा था, तभी एकाएक रजिया के वहाँ कदम पड़े। कमाण्डर करण सक्सेना उसे देखकर चौंका, रजिया ने सड़क छाप वेश्याओं की तरह चेहरे पर खूब गहरा मेकअप पोत रखा था और काफी सस्ते तथा बदन दिखाऊ कपड़े पहन रखे थे। अपनी उस वेशभूषा में वह कोई 'वेश्या' ही नजर आ रही थी।

रजिया उसके सामने वाली कुर्सी पर आकर बैठ गयी।

"हैलो !" रजिया संभलकर बैठती हुई बोली- "मुझे आने में थोड़ी देर हो गयी कमाण्डर !"

"हाँ, तुम्हारा इंतजार करने के बाद मैं वापस ही जा रहा था ।"

"तुम तो जानते ही हो", रजिया बोली- "मेरा कोठी से निकलना कितना मुश्किल है, हर वक़्त मुझे कड़े पहरे में रहना होता है ।"

उस समय 'सुलेमान क्लब' के हॉल में धीमा प्रकाश था । सभी मेजें फुल थीं, लेकिन हॉल में उपस्थित तमाम लोग एक-दूसरे में मग्न थे । उन्हें अन्य लोगों से जैसे कोई सरोकार ही न था ।

"यह जगह थोड़ी बदनाम जरूर है ।" रजिया बोली- "पर हमारे लिये बहुत महफ़ूज़ है । यहाँ हम इत्मीनान से किसी भी सब्जैक्ट पर बातें कर सकते हैं और यहाँ इस बात का भी कोई खतरा नहीं है कि कोई हमारी बातचीत सुन लेगा । मुझे दो दिन पहले ही तुम्हारे आने की इन्फामेंशन मिली थी ।"

कमाण्डर करण सक्सेना ने 'डनहिल' सिगरेट सुलगाते हुए पूछा- "और क्या-क्या बताया गया था मेरे बार में ?"

"ज्यादा कुछ नहीं, सिर्फ इतना ही बताया था कि तुम सुलतान फौजी को सजा देने के लिये भेजे जा रहे हो । मुझे तुम्हारी हर मुमकिन मदद करनी है ।"

मुस्कराया कमाण्डर !

"तो क्या तुम मेरी मदद के लिये तैयार हो ?"

"हाँ, जितनी मुझसे मुमकिन होगी, मैं करूँगी ।"

"सुलतान फ़ौजी का एड्रेस जानती हो ?"

"मुझे मालूम था ।" रजिया ने गहरी सांस लेकर कहा- "कि तुम मुझसे पहला सवाल यही करोगे, इसीलिये मैंने सुलतान का एड्रेस पता लगाने की काफी कौशिश की थी । दरअसल सुलतान फ़ौजी पहले तो इस्लामाबाद में खुलेआम घूमता था, लेकिन जब से भारत सरकार ने पाकिस्तानी ऑफिसर्स से उसके बारे में पूछताछ की है, तब से वह अण्डरग्राउंड हो गया है । मैंने उसका पता लगाने की बहुत कौशिश की । बहुत-बहुत कोशिश की ।"

"फिर कुछ पता चला ?"

"नहीं ।" रजिया की गर्दन इंकार की सूरत में हिली- "काफी कौशिशों के बावजूद भी मैं उसका एड्रेस पता लगाने में नाकाम रही । अलबत्ता अपनी कौशिशों से मुझे यह जरूर मालूम हुआ कि 'वेस्टर्न चौक' पर नफीसा बाई नाम की एक अड़तीस-चालीस साल की औरत रहती है, जो चोरी-छिपे शराब बेचती है और सुलतान फौजी अक्सर उसके ठीये पर शराब पीने जाता है । सुलतान फौजी को पूरे इस्लामाबाद में उसी के यहाँ की शराब पसंद है ।"

"ओह !"

"इसके अलावा मैंने यह भी सुना है ।" रजिया थोड़ी दबी जबान में बोली- "कि नफीसा बाई और सुलतान फौजी के बीच जिस्मानी रिश्ते भी हैं, इसलिये भी सुलतान फौजी का अक्सर उसके यहाँ आना-जाना होता है ।"

"यानि", करण सक्सेना ने 'डनहिल' की राख ऐशट्रे में झाड़ी- "आज की तारीख में सुलतान फ़ौजी के कहीं भी आने-जाने का एक ही परमानेंट ठिकाना है और वो है, नफ़ीसा बाई का ठीया ।"

"बिल्कुल ।"

"फिर तो नफीसा बाई को यह भी जरूर मालूम होगा कि सुलतान फौजी आज की तारीख में रहता कहाँ है ?"

"बिल्कुल मालूम हो सकता है ।"

"पहले वो कहाँ रहता था ?"

"उस जगह को अब देखने से कोई फायदा नहीं ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि वह एक सरकारी कोठी है और अब उस कोठी को एक एम0पी0 (मेंबर ऑफ़ पार्लियामेंट) के नाम अलॉट कर दिया गया है ।"

"ओह !"

तभी रजिया ने अपने पर्स से एक घड़ी निकालकर कमाण्डर करण सक्सेना की तरफ बढ़ाई, फिर पहले की तरह ही धीमे स्वर में

बोली- "यह लो, अब इस घड़ी को अपने पास ही संभालकर रखना कमाण्डर !"

"क्यों ?" करण सक्सेना ने हैरत से उस घड़ी को उलट-पलटकर देखा- "इसमें ऐसी क्या खास बात है ?"

"दरअसल यह घड़ी एक ट्रांसमीटर है ।" रजिया जबरदस्त रहस्योद्घाटन करती हुई बोली- "अब मुझे जब भी तुमसे सम्पर्क स्थापित करना होगा, इसी घड़ी के जरिये से करूँगी । इस घड़ी के ऊपर लगा 'लाल बल्ब' देख रहे हो ?"

कमाण्डर की निगाह फौरन 'लाल बल्ब' पर जाकर केंद्रित हो गयी ।

"जब भी यह लाल बल्ब स्पार्क करे ।" रजिया बोली- "तभी समझ जाना कि मैं तुमसे बात करना चाहती हूँ । इस लाल बल्ब के नीचे तुम्हें जो काली सी जाली नजर आ रही है, वह माइक है, जिसके जरिये तुम्हारी आवाज़ मेरे तक पहुँचेगी ।"

"गुड !"

कमाण्डर करण सक्सेना ने वो हैरतअंगेज रिस्टवॉच अपनी जेब में रख ली ।

उसने 'डनहिल' का एक कश और लगाया ।

"इसके अलावा मैं तुम्हें एक खास बात और बता देना चाहती हूँ ।"

"क्या ?"

"तुम कभी इस घड़ी पर मुझसे सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश नहीं करोगे कमाण्डर ! क्योंकि मैं नहीं चाहती कि हैदर अली या कोई और मेरे आसपास हो और तभी इस घड़ी का लाल बल्ब स्पार्क करने लगे । इससे मैं उसी पल शक के दायरे में आ जाऊंगी । इसलिये जब भी मुझे तुमसे बात करनी होगी, मैं खुद करूँगी । समझे, मैं खुद !"

"ठीक है, मैं इस घड़ी के जरिये कभी तुमसे सम्पर्क स्थापित नहीं करूँगा ।"

"ओके, मुझे अब चलना चाहिये।" रजिया कुर्सी छोड़कर खड़ी हो गयी- "हैदर भी अब तक कोठी पर आ गया होगा, अगर वह मुझे ज्यादा देर कोठी से गायब देखता है, तो शक करने लगता है।"

कमाण्डर करण सक्सेना भी रजिया के साथ-साथ कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया।

"मैं तुमसे एक पर्सनल सवाल कर सकता हूँ ?"

"पूछो।"

"तुम्हें अपने भाई के हत्यारे का कुछ पता चला ?"

उस सवाल को सुनकर रजिया का चेहरा भट्टी की तरह दहकने लगा।

"कमाण्डर !" रजिया ने दांत किटकिटाते हुए कहा- "जिस दिन भी मुझे उस दुष्ट का पता चल गया, वह दिन उसकी जिन्दगी का आखिरी दिन होगा और उस दिन के बाद एक पल भी मैं और इस कंट्री में रहना गुनाह समझूंगी।"

उसके बाद एबाउट-टर्न लिया रजिया ने, फिर तेज-तेज कदम रखती हुई सुलेमान क्लब से बाहर निकल गयी।

कमाण्डर भी चहलकदमी-सी करता क्लब से बाहर निकला।

उसने अपनी रिस्टवॉच देखी।

अब रात के दस बजने जा रहे थे।

यह नफीसा बाई से मुलाकात करने का समय नहीं था।

उसने टैक्सी पकड़ी और सीधा अपने होटल जा पहुँचा।

***



3. एक बदनाम एरिया

अगले दिन कमाण्डर 'वेस्टर्न चौक' पहुँचा ।

'वेस्टर्न चौक' का इलाका इस्लामाबाद में बिल्कुल उसी तरह बदनाम है, जिस तरह मुम्बई में धारावी या ट्रांजिट कैम्प का इलाका बदनाम है । वहाँ चरस, अफीम, गांजा से लेकर कोकिन, हशीश, मारिजुआना, स्मैक और हेरोइन तक मिलती है । कच्ची शराब से लेकर शैम्पेन की बोतलें तक वहाँ मिल जायेंगी । उसी तरह जिस्मफरोशी का धंधा करने वाली लड़कियों के भी वहाँ बड़े अलग-अलग रेट हैं ।

जैसे उनके रेट थे, वैसी ही उनकी क्वालिटी थी ।

कमाण्डर ने देखा, नफीसा बाई का ठीया काफी बड़े एरिये में फैला था और उसके ऊपर लाल रंग की पक्की खपरैल पड़ी थी । इतना ही नहीं उस ठीये में बाकायदा दारु का अडडा भी खुलेतौर पर चल रहा था और उन्नीस-उन्नीस, बीस-बीस साल के लड़के दारु सर्व करते इधर से उधर घूम रहे थे ।

काहें का बेन था उस कंट्री में, सब कुछ तो खुल्लमखुल्ला था ।

ओनली हिप्पोक्रेसी थी । बातें बड़ी-बड़ी । काम के नाम पर जीरो ।

कमाण्डर करण सक्सेना ने 'डनहिल' सुलगा ली और वह अड्डे के बिल्कुल बीच जाकर खड़ा हो गया ।

"यहाँ सुनो ।" उसने एक लड़के को आवाज़ दी ।

"जी !" लड़का फौरन लपककर उसके करीब आया ।

"नफीसा बाई कहाँ है ?"

"न... नफीसा बाई !"

"हाँ !"

"ब... बाई से क्या काम है ?"

"वही काम है, जो दूसरे लोगों को होता है ।"

इस बात पर वह लड़का हँसा ।

"हँस क्यों रहा बे ?"

तत्काल उस लड़के की बत्तीसी बंद हो गयी ।

"जवाब नहीं दिया, बाई कहाँ है ?" कमाण्डर करण सक्सेना पहले की तरह ही कठोर लहजे में बोला ।

"उधर बाजू वाले कमरे में है ।"

कमाण्डर करण सक्सेना की निगाह अब बाजू वाले कमरे की तरफ उठी ।

बार के बिल्कुल एक तरफ कोने में वो कमरा बना हुआ था, जिसके अंदर उस लड़के के मुताबिक नफीसा बाई थी ।

फिलहाल उस कमरे का दरवाजा अंदर से बंद था । इतना ही नहीं उस कमरे के नजदीक ही शराबियों के मनोरंजन के लिये फुल वॉल्यूम में एक डैक भी बज रहा था, जिस पर पंजाबी गीतों का कार्यक्रम चालू था ।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना उस बाजू वाले कमरे के सामने पहुँचा ।

फिर उसने उस कमरे का दरवाजा थपथपाया, तो उसे मालूम हुआ कि वह दरवाजा अंदर से बंद नहीं था ।

"कौन ?"

किसी औरत द्वारा पूछे गये उस सवाल के जवाब में कमाण्डर ने फौरन दरवाजे के दोनों पल्ले खोल दिये ।

तत्काल उसे सामने प्लास्टिक की चटाई पर एक अड़तीस-चालीस साल की औरत लेटी हुई नजर आयी, जो आधी से ज्यादा नंगी थी। उसके सिरहाने ही एक जवान लड़की बैठी थी, जो बादाम के तेल से उसकी दोनों छातियों की कसकर मालिश कर रही थी।

जो औरत प्लास्टिक की चटाई पर लेटी थी, वह जरूर नफीसा बाई थी और जो लड़की उसकी सेवा कर रही थी, वह जरूर उसकी सेवादार थी।

"यह क्या बदतमीजी है !" कमाण्डर करण सक्सेना को यूँ एकाएक अंदर घुसते देखकर नफीसा बाई चिल्लाते हुए उठी।

जवाब में करण सक्सेना बड़े खतरनाक अंदाज में हँसा।

"कौन हो तुम ?" नफीसा बाई दोबारा चिल्लाई।

"मुझे तुमसे एक जरूरी काम है।"

"कैसा जरूरी काम ?"

"इस लड़की को बाहर भेज दो, फिर काम के बारे में भी बताता हूँ।"

"ल... लेकिन...।"

"जैसा कह रहा हूँ, वैसा करो। इसी में तुम्हारा भला है।"

कमाण्डर की आवाज़ में कुछ ऐसा अधिकार का पुट था कि नफीसा बाई हैरानी से उसे देखती रह गयी, फिर उसने लड़की की पीठ थपथपाई।

"बेबी, तुम ज़रा जाओ।"

लड़की हिचकिचाई।

"जैसा कह रही हूँ, वैसा करो।"

लड़की चुपचाप अपनी पाजेब बजाती हुई वहाँ से चली गयी।

लड़की के जाते ही कमाण्डर करण सक्सेना ने उस कमरे का दरवाजा अंदर से बंद कर लिया, बाकायदा सिटकनी भी चढ़ा दी।

□□□

"अब बताओ !" नफीसा बाई बोली- "कौन हो तुम ?"

"तुम मुझे एक जल्लाद भी कह सकती हो ।" कमाण्डर बड़े इत्मीनान के साथ बोला- "ऐसा जल्लाद, जो एक गुनहगार को फाँसी देना चाहता है ।"

"यह क्या बेहूदा बात कर रहे हो ?"

कमाण्डर करण सक्सेना के चेहरे पर अब खूंखार भाव मंडराने लगे ।

"तुम इसे बेहूदा बात कह सकती हो बाई !" कमाण्डर बोला- "लेकिन यही बेहूदा बात मेरा मिशन है । यह बात सुनने में थोड़ी अजीब जरूर लगती है कि एक जल्लाद किसी अपराधी को फाँसी देने के लिये इस तरह सड़क पर घूम रहा है, लेकिन तुम्हें यह बात सुनकर शायद और ज्यादा हैरानी होगी कि मैं अपने इसी मिशन को अंजाम देने के लिये हिन्दुस्तान से यहाँ आया हूँ ।"

"ह... हिन्दुस्तान से !" उसके नेत्र फटे ।

"हाँ ।"

"क... कौन हैं वो आदमी, जिसे तुम फाँसी देना चाहते हो ?"

"सुलतान फ़ौजी !"

"स... सुलतान फ़ौजी !" नफीसा बाई के मुँह से चीख-सी खारिज हो गयी ।

जबकि कमाण्डर के होंठो की मुस्कान अब कुछ गहरी हो गयी थी ।

वो वहीं नफीसा बाई के सामने एक बांस की कुर्सी पर टांगे पसारकर बैठ गया ।

"अब यह मत कह देना बाई ।" कमाण्डर बोला- "कि तुम सुलतान फ़ौजी नाम के किसी शख्स को नहीं जानती । क्योंकि मुझे किसी ने यह बहुत पक्की रिपोर्ट दी है कि तुम फ़ौजी के बारे में काफी कुछ बता सकती हो ।"

वहीं नजदीक वाली टेबिल पर स्कॉच की एक बोतल रखी थी । कमाण्डर ने बड़े खतरनाक अंदाज में स्कॉच की वो बोतल उठाई, फिर गटागट एक ही घूंट में स्कॉच की उस बोतल को आधी से

ज्यादा खाली कर गया।

नफीसा बाई फटे-फटे नेत्रों से उसे देखती रह गयी।

फिर कमाण्डर ने स्कॉच की वो बोतल इतनी जोर से मेज पर पटकी कि वह टूट गयी और उसके अंदर मौजूद स्कॉच ने पूरी मेज को गीली कर डाला।

"मेरी आज तुमसे मुलाकात जरूर पहली बार हो रही है।" कमाण्डर करण सक्सेना हिंसक मुद्रा में ही बोला- "लेकिन मैंने तुम्हारी और फौजी की प्रेम-लीलाओं के काफी किस्से सुन रखे हैं। मुझे यह भी बताया गया है कि उसे तुम्हारे यहाँ की शराब बहुत पसंद है।"

"क... किसने बताया तुम्हें यह सब ?" नफीसा बाई शुष्क स्वर में बोली।

"काले चोर ने बताया। आसमान से उतरे फरिश्ते ने बताया। उसने यह भी बताया कि सुलतान फ़ौजी को तुम्हारे अंदर हद से ज्यादा दिलचस्पी है। वैसे भी ऐसा बदमाश आदमी शराब का ब्राण्ड आसानी से बदल लेता है, लेकिन औरत का ब्राण्ड जरा मुश्किल से ही बदल पाता है।"

"तुम्हें जरूर किसी ने गलत रिपोर्ट दी है।" नफीसा बाई चीखी।

उसके चीखते ही कमाण्डर फौरन हरकत में आ गया।

वह एकदम स्प्रिंग लगे खिलौने की भाँति कुर्सी से उछला और फिर धड़ाधड़ उसके घुटने की प्रचण्ड कटोरी नफीसा बाई के पेट में पड़ी।

दहाड़ उठी नफीसा बाई।

वह अपना पेट पकड़कर दोहरी हो गयी।

उसी पल धड़ाधड़ उसके घुटने की कटोरी नफीसा बाई की पीठ पर भी पड़ी।

नफीसा बाई के मुँह से ऐसी हवा खारिज हुई, जैसे गुब्बारे के अंदर से हवा निकली हो।

वह औंधे मुँह चटाई पर जा गिरी।

बाहर अभी भी पंजाबी गीत फुल वॉल्यूम में बज रहे थे। इसलिये अंदर क्या हो रहा है, बाहर किसी को पता न था।

कमाण्डर करण सक्सेना ने नफीसा बाई के बाल अपनी मुट्ठी में कसकर जकड़ लिये तथा फिर उसे बुरी तरह झंझोड़ा।

"मैं मालिश बहुत अच्छी तरह से करता हूँ बाई।" कमाण्डर करण सक्सेना ने जहरीले सांप की तरह फुंफकारते हुए कहा- "और फिर बाद में गोली की खुराक देना भी नहीं भूलता। इसलिये अगर लाश में नहीं बदले जाना चाहतीं, तो खामोशी से बताओ कि सुलतान फ़ौजी इस्लामाबाद में कहाँ छिपा हुआ है ?"

"म... मुझे नहीं मालूम।"

"तुम झूठ बोल रही हो।"

"म... मुझे सचमुच कुछ नहीं मालूम।"

धड़ाधड़ कमाण्डर ने दो झापड़ बाई के मुँह पर जड़े।

उसकी आंखों के इर्द-गिर्द रंग-बिरंगे तारे घूम गये।

उसी पल नफीसा बाई को भाग निकलने का एक मौका हासिल हुआ।

वह एकदम झटके के साथ चटाई से उठी और फिर अदितीय फुर्ती से दरवाजे की तरफ लपकी।

लेकिन वो दरवाजा खोलकर बाहर शराबखाने में पहुँच पाती, उससे पहले ही कमाण्डर ने उसे दोबारा जकड़ लिया।

जकड़ते ही कमाण्डर की नजर उसी कमरे में बनी लकड़ी की कुछ सीढ़ियों पर पड़ी, जो नीचे तहखाने में चली गयी थीं।

कमाण्डर ने एकदम उन्हीं सीढ़ियां की दिशा में नफीसा बाई को झटका दे दिया, वह लकड़ी की सीढ़ियों पर लुढ़कती चली गयी।

वह चीखती हुई सीधे तहखाने में जाकर गिरी।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना उसके पीछे-पीछे धड़ाधड़ सीढ़ियां उतरता हुआ नीचे तहखाने में पहुँचा।

वहाँ का दृश्य बेहद विहंगमकारी था।

वहाँ बड़ी-बड़ी शराब की भट्टियां लगी हुई थी और लोहे के बेशुमार ड्रम रखे थे, जिनमें कच्ची शराब भरी थी।

लेकिन वहाँ आदमी कोई न था।

नफीसा बाई नीचे गिरते ही उठी तथा फिर तहखाने में ही बने एक और रास्ते की तरफ दौड़ी।

तब तक रिवॉल्वर भी कमाण्डर करण सक्सेना के हाथ में आ चुकी थी।

रिवॉल्वर हाथ में आते ही वो फिरकनी की तरह उंगलियों के गिर्द घूमी।

"रुक जाओ।" कमाण्डर चिंघाड़ा- "रुक जाओ। अगर एक कदम भी आगे बढ़ाया, तो मैं तुम्हें शूट कर दूंगा।"

तत्काल नफीसा बाई के कदम फ्रीज हो गये।

कमाण्डर ने पुनः झपटकर नफीसा बाई को दबोच लिया और रिवॉल्वर उसकी गर्दन पर रख दी।

"न...नहीं।" नफीसा बाई पत्ते की तरह कंपकंपा उठी- "नहीं, गोली मत चलाना, गोली मत चलाना।"

"अगर मरना नहीं चाहती, तो यह बताओ कि फौजी कहाँ है ?"

"मुझे नहीं मालूम।"

"तुम झूठ बोल रही हो।"

"इ... इस बात की क्या गारंटी है कि अगर मैंने तुम्हें फौजी का एड्रेस बता दिया, तब तुम मुझे छोड़ दोगे ?"

"कोई गारंटी नहीं।"

"फ... फिर ?"

"लेकिन अगर तुमने मुझे फौजी का एड्रेस न बताया", करण सक्सेना ने दांत किटकिटाते हुए कहा- "तो मैं तुम्हें मार डालूंगा, इस बात की पक्की गारंटी है।"

नफीसा बाई हक्की-बक्की सी कमाण्डर को देखती रह गयी।

उसी पल कमाण्डर करण सक्सेना ने रिवॉल्वर का सेफ्टी-लॉक

पीछे खींचा ।

"मेरे पास समय कम है, मुझे जल्दी सुलतान फौजी का एड्रेस बताओ ।"

"न... नहीं ।"

"जल्दी ।"

नफीसा बाई के चेहरे पर अब निर्णय-अनिर्णय के चिन्ह नजर आने लगे ।

तभी कमाण्डर ने रिवॉल्वर की नाल उसकी एक छाती पर रखकर दबाई ।

फिर उसकी उंगुली भी तेजी से रिवॉल्वर के ट्रेगर की तरफ झपटी ।

"न... नहीं । नहीं ।"

"जल्दी करो ।"

"ब... बताती हूं ।" नफीसा बाई का सांस बुरी तरह फूलने पिचकने लगा- "बताती हूँ । स... सुलतान फौज़ी आजकल गवर्नर हाउस में छिपा हुआ है ।" नफीसा बाई गहरी सांस लेकर बोली ।

"गवर्नर हाउस !"

"हाँ, हाँ । मौहम्मद अली रोड ! पुराना गवर्नर हाउस । वो गवर्नर हाउस, ज... जिसमें नीचे तहखाने में पाकिस्तान गवर्नमेंट प्रेस है, जहाँ नोट छपते हैं, करेंसी छपती है अ... और प्रेस के ऊपर गवर्नर हाउस है ।"

"क्या पाकिस्तानी का गवर्नर उस हाउस में नहीं रहता ?"

"नहीं ।" नफीसा बाई की गर्दन इंकार में हिली- "उसके लिये राष्ट्रपति भवन के पास एक नई कोठी अलॉट की गयी है । फिलहाल फौजी ही उस पुराने गवर्नर हाउस में ठहरा है । वहाँ उसकी सुरक्षा के भी बड़े माकूल इन्तिज़ाम हैं ।"

"कैसे इन्तिज़ाम ?"

"यह मुझे नहीं मालूम । मैं कभी फौजी से मिलने गवर्नर हाउस नहीं गयी । फौजी को ही जब मुझसे मिलना होता है, वो खुद यहाँ

आता है । उसी ने मुझे यह बताया कि वहाँ उसकी सुरक्षा के बड़े माकूल इन्तिज़ाम हैं ।"

"ओह !"

कमाण्डर करण सक्सेना का दायां हाथ अब नफीसा बाई के कंधे पर आहिस्ता-आहिस्ता रेंगता हुआ उसकी गर्दन तक जा पहुँचा, फिर वह उसकी गर्दन भींचने लगा ।

"य... यह क्या कर रहे हो ?" नफीसा बाई बौखला उठी- "छोड़ो मेरी गर्दन, छोड़ो ।"

लेकिन तब तक कमाण्डर का दायां हाथ नफीसा बाई की गर्दन पर काफी सख्त हो चुका था ।

"छ... छोड़ो ।"

नफीसा बाई ने चीखना चाहा ।

लेकिन चीख उसके हलक में ही घुटकर रह गयी ।

उसके नेत्र दहशत से उबल पड़े ।

उसी पल कमाण्डर ने रिवॉल्वर उसके माथे के बिल्कुल बीचो-बीच रख दिया, फिर एक बार रिवॉल्वर उसकी उंगुलियों के गिर्द फिकरनी की तरफ घूमा तथा 'धांय-धांय' दो गोलियाँ चलीं ।

तत्काल नफीसा बाई की खोपड़ी तरबूज की तरफ फट गयी ।

उसे चीखने तक का मौका न मिला, उससे पहले ही उसके प्राण पखेरू उड़ गये ।

कमाण्डर ने नफीसा बाई के मुर्दा जिस्म को अपनी दोनों बांहों से उठाया तथा फिर उसे शराब के एक बड़े ड्रम में डाल दिया ।

फिर उसने रिवॉल्वर वापस जेब में रखी ।

वह लकड़ी की सीढियां चढ़ता हुआ इत्मीनान से ऊपर पहुँचा ।

जैसे कुछ हुआ ही न हो ।

उसके बाद उसने बाहर शराबखाने में कदम रखा ।

जहाँ अभी भी पहले की तरह ही मेला सा लगा था । डैक पर फुल वॉल्यूम में पंजाबी गीत बज रहे थे और ग्राहकों को शराब सर्व करने वाले लड़के इधर-से उधर भागे-भागे घूम रहे थे ।

“बाई से काम हो गया साहब ?” तभी मालिश करने वाली लड़की एकाएक किसी भूत की तरह उसके पास नमूदार हुई।

“हाँ।” कमाण्डर करण सक्सेना बोला- “हाँ, काम हो गया।”

“तबीयत एकदम खुश हो गयी होगी साहब ! बाई के साथ जो भी मर्द एक बार कुश्ती लड़ लेता है, उसकी पूरी बॉडी के नट-बोल्ट खुल जाते हैं।”

करण सक्सेना हँसा।

“अब थोड़ी दारु भी चढ़ा लो साहब, तबीयत एकदम ठूं-ठां हो जायेगी।”

“नहीं, मुझे अभी अपनी तबीयत ठूं-ठां नहीं करनी। मैं वैसे ही ठूं-ठां हो गया हूँ। अभी काफी काम निपटाना है।”

“जैसी आपका मर्जी साहब !”

कमाण्डर तेज-तेज कदमों से चलता हुआ वहाँ से बाहर निकल गया।

***



4. गवर्नर हाउस में हंगामा

फिर कमाण्डर करण सक्सेना ने टैक्सी पकड़ी तथा पुराने ‘गवर्नर हाउस’ पर पहुँचा।

सारा काम काफी फास्ट स्पीड से हो रहा था ।

उसे उम्मीद भी नहीं थी कि सुलतान फौजी का एड्रेस इतनी आसानी से हासिल हो जायेगा ।

उसने टैक्सी 'गवर्नर हाउस' से काफी पहले ही छोड़ दी, फिर वो टहलता हुआ गवर्नर हाउस के सामने पहुँचा । गवर्नर हाउस के सामने वाली लाइन में ही एक काफी बड़ी किताबों की दुकान थी । कमाण्डर करण सक्सेना उसी दुकान में जा घुसा और फिर किताबों के पन्ने पलटते हुए गवर्नर हाउस का अवलोकन करने लगा ।

वह सचमुच कई एकड़ भूमि में फैला था ।

चूंकि उस गर्वनर हाउस के नीचे पाकिस्तान गवर्नमेंट की प्रिंटिंग प्रेस थी और वहाँ करेंसी जैसी महत्वपूर्ण चीज छपती थी, इसलिये वहाँ की सिक्योरिटी तो वैसे भी जरुरत से ज्यादा होनी थी ।

कमाण्डर ने देखा, गवर्नर हाउस की बाउण्ड्री वॉल जेल की चारदीवारी की तरह बहुत ऊंची-ऊंची थी और काले स्याह पत्थर से बनी थी ।

इतना ही नहीं- बाउण्ड्री वॉल के ऊपर लोहे के कंटीले तार भी बंधे थे, जिनमें जरूर करेंट की व्यवस्था थी ।

उस गवर्नर हाउस की सबसे महत्वपूर्ण सिक्योरिटी ये थी कि उसके चारों कोनों पर 'कुतुबमीनार' की तरह ऊंचे-ऊंचे चार सिक्योरिटी टावर बनाये गये थे, जिन पर फ्लड लाइट लगी थी, जो जरूर रात के समय जलती थी । इसके अलावा उन टावर पर दो-दो गार्ड खड़े थे, जो चौबीस घण्टे खड़े रहते थे । उनके हाथों में एक-एक दूरबीन और चीन में बनी एक-एक ए. के. सेवंटी फोर असाल्ट राइफल भी थी ।

जरूर हर आठ घण्टे बाद उन गार्डों की डयूटी बदल जाती होगी ।

गवर्नर हाउस में दाखिल होने का सिर्फ एक ही फाटक था और वो फाटक इतना लम्बा-चौडा था कि पूरा ट्रक उस फाटक के अंदर सहूलियत से चला जाये तथा बाहर आ जाये ।

उस फाटक के बाहर ही दो गनमैन और खड़े थे ।

फिलहाल गवर्नर हाउस की यही सिक्योरिटी थी, जो बाहर से नजर आ रही थी।

लेकिन कमाण्डर जानता था कि सिक्योरिटी सिर्फ उतनी ही नहीं है।

जरूर अंदर लॉन में भी चप्पे-चप्पे पर पाकिस्तानी गनमैन फैले पड़े होंगे।

कमाण्डर करण सक्सेना थोड़ी देर में ही भांप गया कि वाकई सुलतान फौजी जबरदस्त सुरक्षा घेरे में है।

वहाँ कदम-कदम पर मौत थी।

कोई भी आदमी अगर सुलतान फौजी तक पहुँचना चाहेगा, तो वह सबसे पहले फाटक द्वारा ही गवर्नर हाउस में घुसने की कोशिश करेगा।

लेकिन फाटक के रास्ते घुसने में पहली मुश्किल तो वही दोनों गार्ड थे, जो फाटक के बाहर तैनात थे।

अगर कोई उन्हें मारकर अंदर घुस जाये, तो फिर अंदर मौजूद गार्डों से उसकी मुठभेड़ होनी थी और अभी यही मालूम नहीं था कि अंदर और कितने गार्ड मौजूद है ?

उनकी संख्या दस भी हो सकती थी और सौ भी हो सकती थी।

यानि अंदर घुसने के बाद मरना-ही-मरना था।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना किताब के पन्ने पलटता हुआ सिक्योरिटी के अन्य तरीकों पर गौर करने लगा।

गवर्नर हाउस में फाटक के अलावा घुसने का जो दूसरा रास्ता था, वह बाउण्ड्री वॉल थी।

लेकिन वह रास्ता भी आसान नहीं था बल्कि वह रास्ता तो पहले रास्ते से भी ज्यादा दुर्गम था।

उस रास्ते के द्वारा गवर्नर हाउस के अंदर घुसने में पहली मुश्किल तो यही थी कि इतनी ऊंची बाउण्ड्री वॉल पर किस तरह चढ़ा जाये ?

और अगर कोई बाउण्ड्री वॉल पर चढ़ने का रास्ता भी ढूंढ निकालता, तो फिर उस बाउण्ड्री वॉल के ऊपर जो करेंटयुक्त कंटीले नंगे तार लगे थे, वह अगली मुश्किल थे।

और तारों से बचकर कोई आदमी अंदर लॉन में कूदेगा, तो फिर वही हथियारबंद गार्ड समस्या थे, जिनके बारे में अभी यही मालूम नहीं था कि उनकी संख्या कितनी है ?

यानि कहीं-न-कहीं मौत ने जरूर उसके ऊपर झपट पड़ना था।

कमाण्डर के माथे पर परेशानी की रेखायें खिंच गयीं।

उसने दिखाने के लिये तीन-चार किताबें भी खरीद लीं।

□□□

फिर कमाण्डर की आँखें गवर्नर हाउस के टावर पर जाकर चिपक गयीं।

उस पूरी सिक्योरिटी में सबसे खतरनाक चार कोनों पर बनें वह चार टावर ही थे।

क्योंकि दुश्मन गर्वनर हाउस में चाहे किधर से भी घुसे, लेकिन वो टावर पर खड़े गार्डों की निगाहों में जरूर आना था।

फिर उन गार्डों के हाथ में ए0के0 सेवंटी फोर असाल्ट राइफलें थीं, यानि दुश्मन निगाह में आते ही फौरन लाश में बदल जाना था।

करण सक्सेना ने 'डनहिल' निकालकर सुलगा ली।

वह थोड़ा बेचैन हो उठा।

वाकई सुलतान फौजी जबरदस्त सुरक्षा घेरे में था।

जरूर पाकिस्तान सरकार को इस बात का पहले से संदेह हो गया था कि अब सुलतान फौजी पर हमला हो सकता है, इसलिये उसे इतनी सुरक्षित स्थान पर रखा गया था।

कमाण्डर 'डनहिल' के कश लगाता रहा और किताबों के बीच इधर-से-उधर घूमता रहा।

लेकिन उसे इतनी जबरदस्ती सिक्योरिटी को भेदकर सुलतान फौजी तक पहुँचने का कोई रास्ता न सूझा।

आधा घण्टा और इसी तरह गुजर गया ।

इस बीच करण सक्सेना ने एक किताब और खरीदी ।

□□□

तभी घटना घटी ।

वो घटना, जिसने कमाण्डर करण सक्सेना के सुलतान फौजी तक पहुँचने का हैरान कर देने वाला रास्ता बना दिया ।

दोपहर का जैसे ही एक बजा, तभी गवर्नर हाउस का विशाल फाटक खुला और उसके अंदर से एक वैन बाहर निकली, जिसके दोनों तरफ अंग्रेजी और उर्दू में 'पाकिस्तान गवर्नमेंट प्रेस' लिखा था ।

वैन के बाहर निकलते ही फाटक पुनः बंद कर दिया गया ।

परन्तु उस वैन को देखते ही कमाण्डर हरकत में आ चुका था, उसने 'डनहिल' फेंकी और लगभग झपटकर किताबों की दुकान से बाहर निकला ।

तब तक वैन सड़क पर दौड़ने लगी थी ।

कमाण्डर करण सक्सेना फौरन वहीं सड़क के किनारे खड़ी एक टैक्सी में सवार हो गया ।

फिर चिल्लाया- "जल्दी भगाओ-जल्दी !"

टैक्सी ड्राइवर ने फौरन टैक्सी सड़क पर दौड़ा दी ।

अब वो वैन के पीछे थी ।

"किधर जाना है साहब ?"

"उस वैन का पीछा करो ।"

"व...वैन का पीछा !" टैक्सी ड्राइवर सकपकाया ।

"हाँ ।"

"ल... लेकिन वह तो सरकारी वैन है साहब !"

"वैन जरूर सरकारी है, लेकिन मुझे सूचना मिली है कि उस वैन के जरिये कोई गैरकानूनी काम हो रहा है । मैं एण्टी करप्शन ब्यूरो का आदमी हूँ, मुझे खासतौर पर इस ड्यूटी पर तैनात किया गया है कि

में असलियत का पता लगाऊं । पुलिस की गाड़ी का इस्तेमाल मैं इसलिये नहीं कर रहा हूँ कि कहीं वैन के अंदर मौजूद आदमियों को अपना पीछा किये जाने का शक न हो जाये ।"

"मैं सब कुछ समझ गया साहब, सब कुछ समझ गया ।"

"वैरी गुड ।"

टैक्सी अब वैन के पीछे थी ।

"थोड़ा फासला बनाकर वैन का पीछा करते रहो ।"

"आप बेफिक्र रहें साहब !" टैक्सी ड्राइवर गर्मजोशी के साथ बोला- "उनके फरिश्तों को भी पता नहीं चलेगा कि वैन का पीछा किया जा रहा है । देश के ऐसे गद्दारों को तो सरेआम फाँसी पर लटका देना चाहिये साहब, जो इस तरह सरकारी मशीनरी का गलत इस्तेमाल करते हैं ।"

"तुम जरूर सच्चे वतनपरस्त हो ।"

"पक्का वतनपरस्त हूँ साहब ! यह तो पाकिस्तान की बदनसीबी है कि ऐसे हरामजादे सरकारी कुर्सियों पर जाकर बैठ जाते हैं और हमारे जैसे देश से प्यार करने वाले सड़कों पर जूते चटकाते फिरते हैं । कायदे-आज़म ने ऐसे मुल्क का ख्वाब थोड़े ही देखा था । यह तो चोर-उचक्कों का बदला हुआ पाकिस्तान है ।"

"वैन की तरफ ध्यान दो ।"

"उसी तरफ ध्यान है साहब !"

लगभग बीस मिनट तक वो वैन इस्लामाबाद की सड़कों पर इधर-से उधर दौड़ती रही ।

फिर वो वैन इस्लामाबाद के एक मशहूर होटल के सामने जाकर रुकी ।

कमाण्डर करण सक्सेना चौंका, क्योंकि वह वैन किसी होटल के सामने जाकर रुकेगी, यह तो उसने कल्पना भी न की थी ।

फिर उसके देखते-ही-देखते उस वैन के अंदर काफी सारा खाना रखा गया । उसके बाद वो वैन जिस तरह धुआंधार स्पीड से वहाँ तक आयी थी, उसी तरह वापस दौड़ पड़ी ।

"अ... अब क्या करूँ साहब ?" टैक्सी ड्राइवर बौखलाया।

"पीछा करो। दोबारा पीछा करो।" करण सक्सेना का आदेशात्मक स्वर- "देखते हैं कि यह खाना लेकर कहाँ जाते हैं ?"

"ओके साहब !"

टैक्सी ड्राइवर ने अपनी टैक्सी पुनः वैन के पीछे लगा दी।

इस बार भी वो बहुत सावधानी से वैन का पीछा कर रहा था।

जल्द ही वैन दोबारा गवर्नर हाउस पर पहुँच गयी और फिर जिस तरह विशालकाय फाटक से बाहर निकली थी, उसी तरह उस फाटक के अंदर समाकर गायब हो गयी।

□□□

टैक्सी ड्राइवर ने टैक्सी 'गवर्नर हाउस' से थोड़ा आगे ले जाकर रोकी थी।

फिर वह तब तक चुप रहा, जब तक लोहे का विशालकाय फाटक पहले की तरह ही अंदर से बंद न हो गया।

"यह तो कोई हंगामा नहीं हुआ साहब।" फिर वो अपनी गर्दन पिछली सीट पर बैठे कमाण्डर करण सक्सेना की तरफ घुमाकर बोला- "यह लोग सिर्फ खाना ही लेकर आये हैं।"

"तुम अभी यह बात नहीं समझोगे जेन्टलमैन।"

"क... क्या मतलब ?"

"यह भी हो सकता है कि खाने के बंद डिब्बों में ही अफीम के पैकेट हों, स्मैक की पुड़िया हों, हेरोइन के इंजेक्शन हों।"

"अल्लाह-अल्लाह !" टैक्सी ड्राइवर के नेत्र दहशत से फटे- "यह तो मैंने सोचा ही नहीं था साहब।"

"अब यह बात जबान से बाहर मत निकालना।"

"बिल्कुल भी नहीं साहब, बिल्कुल नहीं।"

"टैक्सी का किराया कितना हुआ ?"

"कैसी बात करते हो साहब !" टैक्सी ड्राइवर फौरन बोला- "कौम की मदद के भी कहीं पैसे लिये जाते हैं। यह तो मैं खुशनसीब

हूँ कि भले थोड़ी देर के लिये ही सही, लेकिन इंसानियत के काम आ गया, मुल्क के काम आ गया।"

फिर भी कमाण्डर करण सक्सेना ने उसकी मुट्ठी में जबरदस्ती सौ-सौ के नोट ठूंसे और फिर टैक्सी से नीचे उतर गया।

"अब आप कहाँ जा रहे हैं साहब ?"

"मुझे वापस ऑफिस जाना है।"

"मैं आपको छोड़ आता हूँ साहब।"

"नहीं, मैं खुद चला जाऊँगा।"

"ले... लेकिन।"

"तुम जाओ, मुझे यहीं थोड़ा काम और है।"

कमाण्डर तेज-तेज कदमों से सड़क पर आगे की तरफ बढ़ गया।

इस समय उसका दिमाग काफी तेज स्पीड से चल रहा था।

उसे लग रहा था कि जिस योजना की तलाश में वो पिछले कई घण्टे से है, वह योजना शायद उसे मिल गयी है।

□□□

जल्द ही कमाण्डर करण सक्सेना लपकता-झपकता वापस उसी होटल में पहुँचा, जिस होटल से खाना लाया गया था।

वो सीधा उस होटल के सेंटर हॉल में पहुँचा और फिर कोने की एक टेबिल पर बैठकर उसने खाने का ऑर्डर दिया।

जल्द ही एक वेटर उसे खाना सर्व करने लगा, उस वेटर की उम्र लगभग अट्ठाइस-तीस साल थी।

"तुम्हारा नाम क्या है ?"

"गुलाम रसूल साहब।" वेटर पानी का जग और गिलास टेबिल पर रखता हुआ बोला।

"भई गुलाम रसूल, वाकई तुम्हारे होटल का खाना इस्लामाबाद में बड़ी-बड़ी लाजवाब जगह जाता है।"

कमाण्डर करण सक्सेना ने अपने 'शातिर दिमाग' से योजना के पत्ते फैलाने शुरू किये।

"क्यों साहब ?" गुलाम रसूल चौंका।

"अभी मैं थोड़ी देर पहले तुम्हारे होटल के सामने से गुजर रहा था।" करण सक्सेना बोला- "तभी मैंने गवर्नर हाउस की वैन खड़ी देखी, जो यहाँ से खाना ले जा रही थी।"

कमाण्डर की बात सुनकर गुलाम रसूल हँसने लगा।

"तुम हँस क्यों रहे हो ?"

"यह कोई बहुत अजीब बात नहीं साहब। दरअसल गवर्नर हाउस में पाकिस्तान सरकार का कोई बहुत 'खास मेहमान' ठहरा हुआ है, जिसे इत्तेफाक से हमारे होटल का खाना पसंद है। उसी के लिये पिछले पन्द्रह दिन से रेग्यूलर खाना जा रहा है।"

"यानि खाना रोजाना बिना नागा जाता है ?"

"हाँ साहब, रोजाना, बिना नागा।"

"शाम को किस टाइम जाता है ?"

"शाम को नहीं जाता साहब।"

"क... क्यों ?" कमाण्डर करण सक्सेना को झटका लगा।

"क्यों क्या ! दोनों टाइम का खाना यह लोग एक ही बार ले जाते हैं। दोपहर को एक बजे के आसपास। शायद ऐसा वो सिक्योरिटी के लिहाज से करते हैं। क्योंकि बार-बार गवर्नर हाउस के अंदर खाना ले जाने में खतरा तो है ही साहब ! कुछ भी हो सकता है ? फिर पूरा पाकिस्तान जानता है कि गवर्नर हाउस के नीचे तहखाने में करेंसी छपती है।"

"ठीक कह रहे हो तुम।"

गुलाम रसूल चला गया।

□□□

दो मिनट बाद ही गुलाम रसूल फिर वापस लौटा।

इस बार वो एक ट्रे में गरम-गरम रोटियां, सब्जी की डिश और सलाद की प्लेट वगैरा लेकर आया था। जिसे वो फौरन ही एक-एक करके कमाण्डर के सामने टेबिल पर सजाने लगा।

"एक बात तो है गुलाम रसूल ।" कमाण्डर ने पुनः वार्तालाप छेड़ा ।

"क्या ?"

"अगर पाकिस्तान सरकार ने 'गवर्नर हाउस' जैसी जगह किसी आदमी को ठहराया है, तो वह जरूर कोई बहुत ही खास मेहमान होगा ।"

"बिल्कुल साहब, खास तो वह जरूर बहुत होगा ।"

"तुम जानते हो, वह कौन है ?"

"नहीं साहब ।"

"कमाल है ।" कमाण्डर ने भौंचक्की-सी मुद्रा में उसकी तरफ देखा- "वह शख्स तुम्हारे होटल के खाने का मुरीद है । इतना ही नहीं, पिछले पन्द्रह दिन से रेग्यूलर उसके वास्ते तुम्हारे होटल से खाना जा रहा है और तुम उसी शख्स का नाम तक नहीं जानते ।"

"नहीं साहब !"

"क्यों ?"

"हम लोगों ने सिक्योरिटी गार्डों से उस 'खास मेहमान' का नाम मालूम करने की कोशिश की थी, लेकिन वो हर बार उस सवाल को टाल गये ।" गुलाम रसूल बोला- "सिक्योरिटी गार्डों का कहना है कि उस 'खास मेहमान' की जान खतरे में है, इसलिये उसे गवर्नर हाउस के अंदर सुरक्षित घेरे में रखा गया है और इसीलिये वो उसका नाम नहीं बता सकते ।"

"फिर तो उसका नाम न बताना ही ठीक है ।"

"बिल्कुल साहब !" गुलाम रसूल बोला- "हम लोग भी उन पर इसीलिये ज्यादा दबाव नहीं डालते, क्या फायदा हमारी जरा सी बैचेनी किसी बेगुनाह की जान खतरे में डाल दे ।"

बेगुनाह !

खून एकाएक बुरी तरह कमाण्डर करण सक्सेना की क़नपटी पर ठोकरें-सी मारने लगा ।

एक दुर्दांत आतंकवादी और बेगुनाह ?

पाँच हज़ार बेगुनाहों का हत्यारा, बेगुनाह ?

जिसकी पाकिस्तान सरकार अपने दामाद की तरह सेवा कर रही थी। जिसकी आसमान से उतरे फरिश्ते की तरह मेहमाननवाजी की जा रही थी। कौन जानता था कि वो व्यक्ति एक राक्षस है।

राक्षस !

जो एक सेकेंड भी इस धरती पर जीने के काबिल नहीं।

जो फौरन से पेश्तर मार डाला जाना चाहिये।

थोड़ी देर बाद जब कमाण्डर करण सक्सेना खाना खाकर कुर्सी से उठा, तो वह 'सुलतान फौजी' तक पहुँचने की योजना फाइनल कर चुका था।

□□□

रात के साढ़े आठ बज रहे थे, जब कमाण्डर करण सक्सेना की रजिया से बात हुई।

करण सक्सेना उस समय अपने 'साहिल पैलेस' होटल में था, तभी उसकी जेब में रखी घड़ी का लाल बल्ब स्पार्क करने लगा।

कमाण्डर ने फौरन घड़ी निकालकर उसका स्विच ऑन किया और माइक की जाली पर जोर-जोर से बोलने लगा।

"कमाण्डर स्पीकिंग- कमाण्डर स्पीकिंग।"

"मैं रजिया बोल रही हूँ कमाण्डर !" रजिया की घबराई-सी आवाज़ उभरी।

"बोलो रजिया।"

"त... तुमने नफीसा बाई को मार डाला कमाण्डर।"

करण सक्सेना सन्न रह गया- "तुम्हें यह बात कैसे मालूम ?"

"मैंने अभी-अभी समाचार सुने हैं, उसी में बताया गया है कि किसी अज्ञात व्यक्ति ने नफीसा बाई के अड्डे में घुसकर उसकी हत्या कर दी। समाचारों में यह भी बताया गया कि हत्यारा छः फुट से भी ज्यादा लम्बे कद का और स्वस्थ शरीर का व्यक्ति था, वह तुम ही हो सकते हो।"

कमाण्डर ने गहरी सांस ली- "तुमने सही अंदाजा लगाया रजिया, मैंने ही नफीसा बाई को मारा।"

"लेकिन क्यों, क्यों मारा ?" रजिया बोली- "क्या उसने तुम्हें फौजी का एड्रेस नहीं बताया था, इसलिये उसे मार डाला ?"

"यह बात नहीं। नफीसा बाई ने मुझे सुलतान फौजी का एड्रेस बता दिया था, वो इस्लामाबाद के पुराने गवर्नर हाउस में ठहरा हुआ है और वहाँ बाकायदा कड़ी सुरक्षा-व्यवस्था के बीच है।"

"फिर तुमने उसे क्यों मारा ?"

"इसलिये मारा क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि नफीसा बाई, सुलतान फौजी को यह खबर सर्कुलेट करती कि कोई उसे तलाश करता घूम रहा है। इससे सुलतान फौजी पहले से अलर्ट हो जाता तथा फिर उसे मारना और ज्यादा मुश्किल होता।"

"ओह !"

"समाचारों में कोई और ख़ास बात थी ?"

"नहीं- और कोई ख़ास बात नहीं थी।" रजिया बोली- "मैंने फौरन तुमसे इसलिये बात करनी चाही कि तुमने न जाने क्या गड़बड़ कर दी है। क्योंकि सुलतान फौजी का एड्रेस पता लगाने की इकलौती सीढ़ी नफीसा बाई ही थी। तुम गवर्नर हाउस गये थे ?"

"हाँ, मैंने आज अपना ज्यादा वक़्त गर्वनर हाउस के आसपास यही पता लगाने में गुजारा कि सुलतान फौजी की सिक्योरिटी क्या थी ?"

"फिर कुछ पता चला ?"

"हाँ।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "मैंने तक़रीबन सारी सिक्योरिटी पता लगा ली है।"

"क्या सिक्योरिटी है ?"

कमाण्डर ने संक्षेप में रजिया को 'गवर्नर हाउस' की पूरी सिक्योरिटी बतायी।

"माई गॉड ! तुम इतनी परफेक्ट सिक्योरिटी को भेदकर सुलतान फौजी तक किस तरह पहुंचोगे ?"

"मैंने वो योजना भी बना ली है।" कमाण्डर पूरे यकीन के साथ बोला- "आज जिस तरह तुम्हें समाचारों में नफीसा बाई की मौत की खबर सुनने को मिली है, जल्द ही बिल्कुल उसी तरह सुलतान फ़ौजी की मौत का समाचार भी सुनने को मिलेगा, यह मेरा वादा है। तुम बस देखती जाओ।"

"लेकिन तुमने सुलतान फौजी तक पहुँचने की योजना क्या बनायी है ?"

कमाण्डर ने उसे उस योजना के बारे में भी बताया।

रजिया दंग रह गयी।

"क्या हुआ ?"

"ल... लेकिन इस योजना को कार्यरूप देने में तो तुम्हारी जान भी जा सकती है कमाण्डर !"

"जान कहाँ नहीं जा सकती।" कमाण्डर ने हँसकर कहा- "फिर यह मत भूलो, मेरा यह मिशन एक जल्लाद का मिशन है। जल्लाद का मिशन।"

"मैं तुम्हारे लिये अल्लाह से दुआ करूँगी कमाण्डर !"

"थैंक्यू ! थैंक्यू वैरी मच।"

कमाण्डर करण सक्सेना ने ट्रांसमीटर ऑफ कर दिया।

□□□

रजिया के दिमाग में अनार पटाखे से छूट रहे थे।

वो बेचैन थी।

हालात उसे बहुत ज्यादा खुशगवार नजर नहीं आ रहे थे। कमाण्डर ने जो योजना बनायी थी, उसमें खतरा ही खतरा था। फिर रजिया जानती थी कि पाकिस्तान की सर्वोच्च जासूसी संस्था आई.एस.आई. के एजेंट कितने खतरनाक हैं, किसी की भी जान ले लेना उनके लिये ऐसा मजाक है, जैसे कोई मच्छर मार दिया हो।

रजिया बेचैनीपूर्वक टहलती रही।

टहलती रही।

□□□

हैदर अली रोजाना आठ या फिर नौ बजे तक कोठी में आ जाता था।

लेकिन उस दिन वो लेट हो गया और रात को कोई दस बजे उसने कोठी में कदम रखा।

हैदर अली तीस-बत्तीस साल का एक काफी हैंडसम आदमी था और अपनी उम्र के ऐतबार से वो काफी पहले 'लेफ्टीनेंट कर्नल' जैसे ऊंचे ओहदे पर पहुँच गया था। उसके बाल घुंघराले थे और फौजियों की तरह छोटे-छोटे थे, उसके नाक-नक्श भी काफी आकर्षक थे।

"आज इतनी देर कैसे हो गयी ?" रजिया ने आते ही हैदर अली से पूछा।

"यूँ ही। आई.एस.आई. हैडक्वार्टर में सडनली एक एमरजेंसी मीटिंग अटेंड करनी पड़ गयी थी।" हैदर अली ने अपनी कैप उतारकर हुक पर टांगी तथा फिर कुर्सी पर बैठकर जूते के फीते खोलने लगा।

"आई.एस.आई. हैडक्वार्टर में एमरजेंसी मीटिंग !" रजिया के दिमाग में धमाका-सा हुआ- "मीटिंग किस इश्यु को लेकर हुई ?"

"कोई खास इश्यु नहीं था।" हैदर अली बोला- "दरअसल वैस्टर्न चैक के इलाके में नफीसा बाई नाम की एक बदनाम औरत रहती थी, जिसकी दारु की भट्टिया थीं। शराब का अड्डा था, इसके अलावा सुनते हैं कि वो खुद जिस्मफरोशी के धंधे में भी इन्वाल्व थी।"

"न... नफीसा बाई।" हैदर अली के मुँह से 'नफीसा बाई' का नाम सुनते ही रजिया की सारी इन्द्रियां चौकस हो उठीं- "फ...फिर क्या हुआ ?"

"होना क्या था, आज किसी ने उसका खून कर दिया। यूँ तो उस जैसी बदनाम औरत का खून हो जाना कोई बड़ी बात नहीं- लेकिन

आई.एस.आई. उस हत्या को खामखाह तूल देने की कोशिश कर रही है।"

"क्यों ?"

"दरअसल नफीसा बाई के रिलेशन एक कश्मीर आतंकवादी सुलतान फ़ौजी से थे, जिसने आजकल पाकिस्तान में पनाह ली हुई है और जिसे हिन्दुस्तानी अदालत द्वारा फाँसी की सजा भी सुनायी जा चुकी है।"

"ओह !"

"अब आई.एस.आई. का कहना है", हैदर अली अपनी शर्ट के बटन खोलता हुआ बोला- "कि नफीसा बाई की हत्या के पीछे जरूर किसी हिन्दुस्तानी जासूस का हाथ है और अब वो जरूर सुलतान फ़ौजी पर हमला करेगा। वैसे भी सुलतान फ़ौजी और नफीसा बाई के रिलेशन के बारे में बहुत लोग जानते थे। नफीसा बाई की हत्या करने वाला आदमी हिन्दुस्तानी जासूस है, इस बात के पीछे आई.एस.आई. जो दलील देती है, वो दलील भी बहुत सॉलिड है।"

"क्या दलील देती है आई.एस.आई. ?"

"दरअसल जो रहस्यमय आदमी नफीसा बाई के अड्डे में देखा गया और जिसने नफीसा बाई की हत्या की, वह बहुत चुस्त-चालाक, तंदुरुस्त और लम्बे कद का आदमी था। इस तरह की पर्सनैलिटी वाले ज्यादातर जासूस ही होते हैं, फिर अगर वो इस्लामाबाद का ही कोई आदमी था और उसने नफीसा बाई की किसी पुरानी रंजिश की वजह से हत्या की थी, तो शराब के अड्डे में मौजूद लोगों ने उसे पहले वहाँ जरूर देखा होता। जबकि उनका कहना है कि उन्होंने पहले उस आदमी को शराब के अड्डे में तो दूर, पूरे शहर में कहीं नहीं देखा था। उन लोगों की उस गवाही से भी आई.एस.आई.की उस दलील को काफी बल मिलता है कि वो हिन्दुस्तानी जासूस था।"

रजिया सन्न-सी अवस्था में खड़ी रही।

"यह भी तो हो सकता है ।" रजिया ख़ामोशी से बोली- "कि आई.एस.आई. का ये वहम हो कि नफीसा बाई की हत्या किसी हिन्दुस्तानी जासूस ने की है ।"

"बिल्कुल वहम हो सकता है । बहरहाल असलियत चाह जो भी है, वह आने वाले कुछ दिनों में खुल ही जायेगी ।"

"कैसे ?"

"अगर सचमुच यह काम किसी हिन्दुस्तानी जासूस ने किया है ।" हैदर अली बोला- "तो वह अब खामोश नहीं बैठेगा और आने वाले दिनों में फ़ौजी को भी मार डालने की कोशिश करेगा । अगर सुलतान फ़ौजी पर भी एक दो दिन में कोई हमला होता है, तो साफ जाहिर है कि नफीसा बाई की हत्या भी किसी हिन्दुस्तानी जासूस ने की है और आई.एस.आई. का शक बिल्कुल ठीक है । ऐनी वे !" एकाएक हैदर अली ने बातचीत का विषय मोड़ा- "हम भी किस सब्जैक्ट पर बहस करने लगे ।"

"क्यों, सब्जैक्ट क्या बुरा है ?"

"यह ऐसा सब्जैक्ट है माई हनी डार्लिंग !" हैदर अली ने रजिया का चेहरा प्यार से अपनी दोनों हथेलियों में भर लिया- "जिसका कोई अन्त नहीं । जिस पर हम सारी रात भी बात कर सकते हैं । जबकि इतनी खूबसूरत रात सिर्फ ऐसी ही बातों में बर्बाद करने के लिये तो नहीं ।"

हैदर अली ने रजिया को कसकर अपने सीने से चिपटा लिया ।

"यह क्या कर रहे हो ?" रजिया उसकी बाहों में कुलबुलाई ।

"क्यों ?" हैदर अली की आंखों में शरारत तैरी- "क्या तुम जानती नहीं कि तुम्हारा लेफ्टीनेंट कर्नल पति इस समय कौन-सी जंग लड़ा करता है ?"

"लेकिन अभी तुमने खाना भी नहीं खाया है साहब ।" रजिया ने उसकी नाक पकड़कर हिलाई- "पहले खाना तो खा लो ।"

"नहीं, पहले जंग बाद में खाना ।"

"लेकिन नेपोलियन ने कहा है", रजिया हँसकर बोली- "कि जंग

बिना हथियारों के लड़ी जा सकती है, पर भूखे पेट रहकर कोई जंग नहीं लड़ सकता।"

"वो नेपोलियन की जंग होगी, जिसे बिना हथियारों के लड़ा जा सकता था। लेकिन इस जंग में तो हथियार पहले चाहिये, बिना हथियारों के तो यहाँ एक इंच भी जंग आगे नहीं सरक सकती। हाँ, भूखा पेट आदमी चल जायेगा।"

रजिया की हँसी छूट गयी।

"तुम सचमुच बहुत बदमाश हो गये हो।"

"बदमाश भी और तुम्हारी तरह थोड़ा-थोड़ा खुराफाती भी।"

फिर वह अपने प्यार के खेल में मशगूल हो गये।

□□□

रात के दो बजे का समय!

रजिया ने एक बार फिर ट्रांसमीटर पर कमाण्डर करण सक्सेना से बात की।

"हैलो कमाण्डर!" रजिया का सरसराता स्वर- "मैं रजिया बोल रही हूँ।"

"रजिया!" कमाण्डर ने थोड़ा चौंककर पूछा- "क्या बात है, तुम्हारी आवाज़ इतनी घबरायी हुई क्यों है और तुमने इतनी रात को किसलिये सम्बन्ध स्थापित किया?"

"तुम्हें एक अर्जेंट इनफार्मेशन देनी थी कमाण्डर!" रजिया की आवाज़ सचमुच चिन्ताओं से भरी थी- "कुछ घण्टे पहले ही मेरी हैदर से बात हुई है, उसने मुझे एक ऐसी खतरनाक ख़बर सुनायी है, जिसकी वजह से मैं तुमसे फ़ौरन बात करने के लिये मजबूर हो गयी।"

"क्या ख़बर?" कमाण्डर की आवाज़ में भी सस्पेंस झलका।

"दरअसल आज शाम पाकिस्तान की सर्वोच्च जासूसी संस्था आई.एस.आई. के हैडक्वार्टर में एक मीटिंग हुई थी।" रजिया बोली- "तुम्हें सुनकर हैरानी होगी कि आई.एस.आई. को इस बात

का शक हो चुका है कि नफीसा बाई की हत्या के पीछे किसी हिन्दुस्तानी जासूस का हाथ है।"

"क... क्या कह रही हो तुम ?"

"इतना ही नहीं।" रजिया ने आगे कहा- "वह नफीसा बाई की हत्या को सुलतान फ़ौजी के कत्ल की पहली कड़ी भी मान रहे हैं। उन्हें इस बात का पूरा-पूरा शक है कि अब सुलतान फ़ौजी के ऊपर भी हमला होगा। ऐसे हालात में आई.एस.आई. ने सुलतान फ़ौजी को अलर्ट कर दिया होगा और उसके आसपास की सिक्योरिटी भी और टाइट की जा चुकी होगी।"

"तुम कहना क्या चाहती हो ?"

"क्या तुम नहीं जानते !" रजिया का विचलित स्वर- "कि मैं क्या कहना चाहती हूँ ?"

"जो कहना है, एकदम साफ-साफ कहो।"

"कमाण्डर- मैं यह कहना चाहती हूँ कि कल तुम्हारा सुलतान फ़ौजी की हत्या करने का जो प्रोग्राम है, अपने उस प्रोग्राम को फिलहाल वक्ती तौर पर मुल्तवी कर दो।"

दूसरी तरफ एकदम से घनघोर सन्नाटा छा गया।

"क्या हुआ कमाण्डर ?"

खामोशी !

चुप्पी !

"तुम कुछ बोलते क्यों नहीं ?"

"नहीं।" कमाण्डर करण सक्सेना का धीमा स्वर- "नहीं, मैं अपने प्रोग्राम को कैंसिल नहीं कर सकता।"

"लेकिन क्यों ?" रजिया बोली- "क्यों कैंसिल नहीं कर सकते ?"

"क्योंकि मैंने सुलतान फ़ौजी तक पहुँचने की जो योजना बनायी है, उस पर इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आई.एस.आई. को सुलतान फ़ौजी की हत्या का पूर्वाभास हो चुका है या नहीं हो चुका है।"

"लेकिन वो फ़ौजी की सिक्योरिटी तो बढ़ा सकते हैं ?"

"उसकी सिक्योरिटी पहले ही इतने परफेक्ट है !" कमाण्डर बोला- "कि अब उसमें कुछ और इज़ाफा नहीं किया जा सकता । फिर मत भूलो, मेरे पास ज्यादा समय नहीं है । सुलतान फ़ौजी ने पाँच हज़ार हिन्दुस्तानियों का खून बहाया है, पाँच हज़ार हिन्दुस्तानियों का खून ! मुझे जल्द से जल्द उनका बदला लेकर वापस हिन्दुस्तान लौटना है ।"

रजिया के चेहरे पर कश-म-कश के भाव उभरे ।

"क्या तुम सचुमच कल का प्रोग्राम कैंसिल नहीं कर सकते कमाण्डर ?"

"सॉरी रजिया, मेरे ऊपर ऐसे किसी काम के लिये प्रेशर मत डालो, जो मैं नहीं कर सकता । कल गर्वनर हाउस में हंगामा होना है और होकर रहेगा ।"

रजिया के चेहरे पर चिन्ता की लकीरें और बढ़ गयीं ।

***



5. हंगामे की शुरुआत

अगले दिन कमाण्डर करण सक्सेना गवर्नर हाउस के सामने उसी किताबों की दुकान में मौजूद था, जिसमें उसने कल कई घण्टे गुजारे थे।

दोपहर का समय था।

कल चूंकि उसने वहाँ से पांच-छः किताबें खरीद ली थीं, इसलिये दुकान का सेल्समैन उससे काफी खुश था और आज काफी बढ़-चढ़कर उसे किताबें दिखा रहा था। लेकिन कल की तरह कमाण्डर करण सक्सेना की आज भी उन किताबों में कोई दिलचस्पी न थी और उसकी आँखें बार-बार गवर्नर हाउस के विशाल फाटक पर जाकर फ्रीज हो जाती थीं।

जहाँ कोई हलचल न थी।

कमाण्डर की निगाह इस बीच उस टैक्सी ड्राइवर पर भी पड़ी, जिसकी टैक्सी में कल उसने वैन का पीछा किया था।

वह टैक्सी ड्राइवर भी शायद उसे वहाँ देख चुका था, इसलिये बार-बार किताबों की दुकान की तरफ निगाह डाल लेता था।

बहरहाल वो टैक्सी ड्राइवर भी वहीं जमा हुआ था।

समय धीरे-धीरे आगे सरकता रहा।

दोपहर का जैसे ही एक बजा, तभी बिल्कुल कल की तरह ही लोहे का विशाल फाटक खुला और उसमें से कल वाली वैन ही

बाहर निकली ।

वैन को बाहर निकलते देख कमाण्डर भी एकदम किताबों की दुकान से बाहर निकला और सीधा कल वाली टैक्सी की तरफ ही झपटा ।

टैक्सी ड्राइवर भी मामला भांप चुका था ।

कमाण्डर टैक्सी तक पहुँच पाता, उससे पहले ही उसने टैक्सी स्टार्ट कर दी । करण सक्सेना जैसे ही टैक्सी में बैठा, तो फौरन ही टैक्सी सड़क पर दौड़ने लगी ।

"आज भी वैन का पीछा करना है साहब ?" टैक्सी ड्राइवर ने बड़ी तत्परता से कहा ।

"हाँ, कल की तरह ही बेहद चौकन्ने होकर वैन का पीछा करो । वैन के ड्राईवर को बिल्कुल भी शक न होने पाये कि उसका पीछा किया जा रहा है ।"

"आप बेफिक्र रहो साहब, वैन ड्राईवर की तो ऐसी-की-तेसी, उसके तो फरिश्तों को भी पता नहीं चलेगा कि क्या हो रहा है ।"

"गुड !"

टैक्सी कल की तरह ही बेहद सावधानी से वैन के पीछे-पीछे दौड़ने लगी ।

"किसी घपले का पता चला साहब ?" ड्राइवर ने टैक्सी चलाते हुए पूछा ।

"बिल्कुल पता चला । आज तो लगता है कि मामला ही आर-पार हो जायेगा । आज साबित होकर रहेगा कि गुनहगार चाहे कितने ही पर्दों के पीछे क्यों न छिप जाये, लेकिन मौत उसके ऊपर वहीं गिद्ध की तरह झपट पड़ती है ।"

"आप सचमुच बहुत महान हैं साहब !" टैक्सी ड्राइवर ने खुले दिन से कमाण्डर की तारीफ की- "अगर पूरे पाकिस्तान में आप जैसे जांबाज ऑफिसर हो जायें, तो फिर पाकिस्तान को जन्नत बनने से कोई नहीं रोक सकता ।"

कमाण्डर मन-ही-मन हँसा ।

यह करण सक्सेना की बहुत बड़ी खूबी थी कि वो दुनिया के चाहे किसी भी देश में हो, लेकिन परिस्थितियों को जल्द ही अपने फेवर में कर लेता था ।

□□□

कल की तरह वो वैन उसी होटल के सामने जाकर रुकी, जिस होटल के सामने कल रुकी थी ।

वैन के रुकते ही उसके पीछे-पीछे चलती टैक्सी भी थोड़े फासले से रुक गयी । लेकिन कमाण्डर आज टैक्सी के अंदर ही न बैठा रहा बल्कि टैक्सी के रुकते ही वो फौरन उसमें से बाहर निकल आया ।

"अब क्या करना है साहब ?"

कमाण्डर करण सक्सेना ने तुरंत सौ का एक नोट निकालकर टैक्सी ड्राइवर की तरफ बढ़ाया- "तुम यहाँ से फौरन जाओ ।"

"पर अब आप क्या करोगे साहब ?"

"तुमसे जो कह रहा हूँ, वह करो ।" कमाण्डर करण सक्सेना ने सौ का नोट कल की तरह ही उसकी बंद मुट्ठी में ठूंस दिया- "तुम्हारा अब यहाँ खड़े रहना मुनासिब नहीं है ।"

"लेकिन... !"

"बहस मत करो ।" कमाण्डर सख्ती से बोला- "तुम्हारा काम खत्म हुआ ।"

फिर सचमुच ड्राइवर ने कमाण्डर करण सक्सेना से ज्यादा बहस नहीं की, वह सौ का नोट लेकर तत्काल वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गया ।

□□□

कमाण्डर जानता था, उसके पास मुश्किल से पांच मिनट का समय है ।

सिर्फ पांच मिनट का समय !

और उसी पांच मिनट में उसे कारनामा दिखा देना था ।

टैक्सी के जाते ही कमाण्डर की निगाह वैन की तरफ उठी।

वैन अभी भी होटल के सामने ही खड़ हुई थी। दो गार्ड होटल के अंदर खाना लाने गये थे, जबकि एक हथियारबंद गार्ड वैन से नीचे उतरा हुआ था और बड़ी चौकस निगाहों से इधर-उधर देख रहा था।

एक फरारी कार, वैन के बिल्कुल बराबर में खड़ी थी।

करण सक्सेना टहलता हुआ फरारी कार के पास पहुँचा, फिर इससे पहले कि हथियारबंद गार्ड की निगाह उस पर पड़ पाती, वह एकदम बड़ी फुर्ती के साथ फरारी कार के नीचे घुस गया।

कुछ देर वो फरारी कार के नीचे ही छिपा हुआ गार्ड की प्रतिक्रिया देखता रहा।

लेकिन उस पर कोई असर न था।

गार्ड को भनक तक नहीं थी कि कोई फरारी कार के नीचे भी घुस गया है।

थोड़ी देर कमाण्डर दम साधे वहीं बैठा रहा।

फिर वो कार के नीचे ही धीरे-धीरे रेंगता हुआ वैन की तरफ बढ़ने लगा।

शीघ्र ही वो वैन के नीचे पहुँच गया था।

यही वो पल था, जब कमाण्डर करण सक्सेना ने दोनों गार्डों को खाना लेकर वैन की तरफ आते देखा।

कमाण्डर करण सक्सेना ने फौरन वैन के नीचे लगी स्टपनी से अपना जिस्म चिपका लिया और टाँगें एक पाइप में फंसा लीं।

तब तक दोनों गार्ड खाना लेकर वैन में सवार हो चुके थे।

उनके साथ-साथ ही हथियारबंद गार्ड भी वैन के अंदर बैठ गया।

फिर तुरंत वैन स्टार्ट हुई और अगले ही पल वो 'यू टर्न' लेकर सड़क पर दौड़ने लगी।

कमाण्डर करण सक्सेना स्टपनी से चिपका हुआ वैन के साथ दौड़ा जा रहा था।

हालांकि वो जबरदस्त खतरे का काम था।

अगर कमाण्डर का हाथ या पैर जरा-सा भी कहीं से स्लिप होता,

तो उसने फौरन मौत के मुँह में चले जाना था ।

लेकिन कमाण्डर ने सच कहा था, खतरा जिंदगी में कहाँ नहीं है ?

हर कदम पर खतरा है ! हर कदम पर मौत है !

काफी देर तक वैन सड़क पर दौड़ती रही ।

फिर एक क्षण वो भी आया, जब वैन 'गर्वनर हाउस' के विशाल फाटक के सामने जाकर रुकी ।

फाटक खोला गया ।

फाटक के खुलते ही वैन दनदनाती हुई अंदर दाखिल हो गयी और फिर लम्बे-चौड़े ड्राइव वे पर दौड़ती चली गयी ।

इस तरह कमाण्डर करण सक्सेना गर्वनर हाउस की इतनी जबरदस्त सिक्योरिटी को भेदकर आसानी से अंदर दाखिल हो गया ।

तमाम गार्ड खड़े रह गये ।

सारी सिक्योरिटी रखी रह गयी ।

जबकि कमाण्डर करण सक्सेना 'गवर्नर हाउस' के अंदर पहुँच चुका था ।

□□□

वैन एक विशाल कनोपी के नीचे जाकर रुकी ।

वैन के रुकते ही उसमें से तीनों गार्ड उतरकर चले गये और वो अपने साथ खाना भी ले गये थे ।

कमाण्डर भी फौरन स्टपनी छोड़कर नीचे जमीन पर बैठ गया ।

वैन के नीचे से 'गर्वनर हाउस' का पूरा लॉन नजर आ रहा था, जो कई हजार गज में फैला था और जिसमें पाकिस्तान के सौ से भी ज्यादा हथियारबंद गार्ड पहरा दे रहे थे ।

उनकी सिर्फ टांगें ही वैन के नीचे से नजर आ रही थीं ।

कमाण्डर को सबसे ज्यादा खतरा टावर पर खड़े गार्डों से था, क्योंकि उसे शंका थी कि जब वह वैन के नीचे से बाहर निकलेगा, तो लॉन में पहरा देते गार्डों की निगाह में आये या न आये, लेकिन टावर

पर खड़े गार्डों की निगाह में वह जरूर आ सकता था।

लेकिन अब उसकी वो शंका भी निर्मूल साबित हो गयी थी।

दरअसल वैन को जिस जगह ले जाकर खड़ा किया गया था, वह एक कनोपी थी और उसके ऊपर एक काफी बड़ी आयताकार छतरी बनी थी।

उसी छतरी की वजह से टावर पर खड़े गार्डों को कनोपी के नीचे का दृश्य नहीं दिखाई देता था और उन्हें यह भी मालूम नहीं पड़ना था कि वहाँ क्या हो रहा है ?

यानि किस्मत कमाण्डर के साथ थी।

लेकिन फिर भी कमाण्डर वैन के नीचे काफी देर तक स्तब्ध सी मुद्रा में बैठा रहा और आसपास का जायजा लेता रहा।

उसने थोड़ा नीचे झुककर गार्डों की ड्रेस देखी।

सभी ने मिलट्री कलर के कपड़े पहन रखे थे और सिर पर लोहे का जालीदार हेलमेट चढ़ाया हुआ था।

फिर कमाण्डर करण सक्सेना ने पीछे की तरफ देखा।

कनोपी से जुड़ा हुआ ही एक गलियारा था, जो अंदर गवर्नर हाउस में चला गया था।

इस समय उस गलियारे में दो हथियारबंद गार्ड पहरा देते घूम रहे थे।

पहले वह दोनों चहलकदमी करते हुए एक साथ आगे की तरफ आते तथा फिर मुड़कर वापस चले जाते।

कमाण्डर गौर से उन्हें देखने लगा।

वह दोनों इस समय गलियारे में आगे की तरफ आ रहे थे।

बिल्कुल आगे आकर वह दोनों ठिठके, उन्होंने दायें-बायें देखा।

उसके बाद उन्होंने एबाउट टर्न लिया और फिर धीमे-धीमे कदमों से वापस लौट गये।

उनके अबाउट टर्न लेते ही कमाण्डर भी हरकत में आ गया था। वह एकदम टाइगर की ही तरह जम्प लगाकर वैन के नीचे से बाहर निकला तथा फिर पलक झपकते ही गलियारे में घुस गया।

गलियारे के दोनों तरफ ही कमरे बने हुए थे ।

इससे पहले कि गार्डों में-से किसी की नजर उस पर पड़ती, वह अदितीय फुर्ती के साथ उन्हीं में-से एक कमरे के अंदर घुस गया ।

कमरा खाली था ।

पूरी तरह खाली ।

लेकिन वहाँ कमाण्डर करण सक्सेना के साथ पहली घटना घटी ।

दरअसल उस कमरे से ही अटेच्ड एक दूसरा कमरा भी था । अभी कमाण्डर ने उस कमरे में पहुँचकर ढंग से सांस भी नहीं ली थी कि तभी बिल्कुल अकस्मात उस दूसरे कमरे का दरवाजा खुला और उस कमरे से निकलकर एक गार्ड करण सक्सेना वाले कमरे में आ गया ।

एक अजनबी को कमरे में देखकर गार्ड हकबकाया ।

"क... कौन हो तुम ?"

जितना गार्ड, कमाण्डर करण सक्सेना को देखकर हकबकाया था, उतना ही कमाण्डर भी उसे देखकर हकबकाया ।

"जवाब दो !" गार्ड इस बार थोड़े तीखे स्वर में बोला- "कौन हो तुम और गवर्नर हाउस के अंदर कैसे घुस आये ?"

"तुम क्या समझते हो !" कमाण्डर करण सक्सेना धीरे-धीरे गार्ड की तरफ बढ़ा- "मैं कौन हो सकता हूँ ?"

गार्ड सकपका उठा ।

"क....कहीं !" गार्ड के चेहरे पर एकाएक दहशत के भाव नमूदार हुए- "क... कहीं तुम वही भारतीय जासूस तो नहीं, जिसने नफीसा बाई की हत्या की है और अब वो सुलतान फ़ौजी को मार डालना चाहता है ?"

कमाण्डर के चेहरे पर खतरनाक मुस्कान फैल गयी ।

"त... तुम !" गार्ड के जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो गया- "तुम जरूर वही हो, व... वही हो !"

कमाण्डर की मुस्कान और गहरी हो गयी ।

वह तब तक गार्ड के काफी नजदीक पहुँच चुका था ।

उसी पल गार्ड का हाथ झटके से राइफल के हत्थे पर पड़ा, लेकिन वो कंधे से राइफल उतार पाता, उससे पहले ही कमाण्डर करण सक्सेना अपने जाने-पहचाने खतरनाक एक्शन में आ चुका था ।

उसका पूरा शरीर हवा में उछला ।

फिर धड़ाधड़ उसके दोनों हाथों की 'कराटे चेप' गार्ड की गर्दन पर पड़ी ।

"तड़-तड़ !"

एक साथ दो हड्डी टूटने की आवाज़ आई ।

उसी के साथ गार्ड बिना चीख-पुकार मचाये पीछे को लुढ़क गया ।

कमाण्डर ने उसकी नब्ज देखी, हार्ट बीट देखी ।

चंद सेकेंड में ही उसका खेल खत्म हो चुका था ।

कमाण्डर गार्ड की लाश को घसीटता हुआ एक कोने में ले गया । फिर उसने आनन-फानन उसकी वर्दी उतारकर अपने शरीर पर पहनी, सिर पर हेलमेट भी पहना ।

वह दोनों ही चीजें उसे बिल्कुल फिट आयीं ।

पलक झपकते ही वो 'पाकिस्तानी गार्ड' नजर आने लगा था ।

राइफल भी उठाकर कमाण्डर करण सक्सेना ने अपने कंधे पर लटका ली ।

उसके बाद करण सक्सेना ने एक महत्वपूर्ण काम और किया ।

गार्ड की लाश वहीं पड़े एक सोफे के नीचे छिपा दी ।

फिर वह सचमुच फौजियों की तरह मार्च-पास्ट सा करता हुआ कमरे से बाहर निकला और सीधा गलियारे में पहुँचा ।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना क्योंकि अब पूरी तरह 'गार्ड' की वर्दी में था, इसलिये उसका डर कुछ कम हो गया था ।

गलियारे में अभी भी वही दोनों गार्ड पहरा दे रहे थे ।

कमाण्डर करण सक्सेना कमरे से निकलकर जैसे ही गलियारे में पहुँचा, तभी उसका सामना उन्हीं गार्डों से हुआ।

वह धड़धड़ाता हुआ उनके बराबर में-से गुजरा।

यह देखकर उसने संतोष की सांस ली कि उन्होंने उसे पहचाना नहीं था।

अब कमाण्डर को सबसे पहले यह पता लगाना था कि गवर्नर हाउस में सुलतान फ़ौजी कहाँ है ?

गवर्नर हाउस दो मंजिला था और गर्वनर हाउस में जिस जगह भी ज्यादा चहल-पहल होती, वहीं सुलतान फ़ौजी होना था।

करण सक्सेना गलियारे से फिर एक हॉल में मुड़ गया।

हॉल के अंदर कोई न था।

अलबत्ता उस हॉल का दरवाजा तीन तरफ़ खुलता था।

कमाण्डर करण सक्सेना तेज-तेज कदम उठाता हुआ बीच वाले दरवाजे से बाहर निकल गया।

वो फिर से एक गलियारे में था।

उस गलियारे मे भी तीन गार्ड पहरा दे रहे थे। वहाँ भी कोई खास घटना न घटी, उन तीनों में-से किसी ने उसे नहीं पहचाना।

कमाण्डर करण सक्सेना लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ उनके बराबर से भी गुजर गया।

शीघ्र ही कमाण्डर ने फिर एक कमरे में कदम रखा।

उसके बाद फिर एक गलियारे में।

वहाँ दो गार्ड स्टूलों पर बैठे चाय पी रहे थे।

"ऐ !" वह गार्ड अपना कप स्टूल पर रखकर जल्दी से उठा- "यहाँ सुनो।"

कमाण्डर के कदम ठिठके।

"कौन हो तुम ?" गार्ड थोड़े तीखे स्वर में बोला- "पहले तो तुम्हें कभी 'गवर्नर हाउस' में नहीं देखा ?"

कमाण्डर करण सक्सेना तेजी से उन दोनों की तरफ मुड़ा तथा फिर उनके नजदीक पहुँचा।

"मैं आज ही 'गवर्नर हाउस' में आया हूँ, इसलिये शायद आप लोगों ने मुझे पहले यहाँ नहीं देखा होगा।"

"अ... आज ही आये हो।" दूसरा गार्ड भी स्टूल से उछलकर खड़ा हुआ- "लेकिन पिछले पन्द्रह दिन से तो यहाँ कोई भी नया गार्ड नहीं आया।"

"पिछले पन्द्रह दिन से नहीं आया, पर आज आया है।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "और जो आया है, वो मैं हूँ।"

"यह जरूर बकवास कर रहा है।" पहले वाला गार्ड बोला।

"यह जरूर कोई फ्रॉड है, जरूर कोई गुण्डा है।" दूसरे गार्ड ने भी चिल्लाकर कहा।

फिर उन दोनों के हाथ धड़ाधड़ अपनी-अपनी राइफलों पर पड़े।

वह अपने कंधों से राइफल उतार पाते, उससे पहले ही उन दोनों का भी वह हश्र हुआ, जो पहले एक गार्ड का हो चुका था।

कमाण्डर करण सक्सेना बेपनाह फुर्ती के साथ हवा में उछला, उसके हाथ बिजली की तरह लपलपाये और फिर धड़ाधड़ कराटे चेप उन दोनों की गर्दनों पर पड़ी।

तत्काल वह दोनों भी बिना चीख-पुकार मचाये लाश में बदल गये।

उनकी गर्दनें टूटकर एक तरफ लुढ़क गयी थी।

फिर इससे पहले कि कोई उस गलियारे में आ पाता, कमाण्डर ने उनकी लाशें वहीं बने एक टायलेट के अंदर आनन-फानन ठिकाने लगा दीं।

उसके बाद कमाण्डर करण सक्सेना ने गलियारे में खड़े होकर ठण्डे दिमाग से कुछ सोचा।

गवर्नर हाउस काफी बड़ा था, इसलिये वहाँ यह पता लगाना काफी मुश्किल काम था कि सुल्तान फ़ौजी कहाँ है ?

सुलतान फ़ौजी तक जल्द-से-जल्द पहुँचने के लिये क़माण्डर ने एक चाल चली।

लाजवाब चाल !

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना की नजरें चाय के उन कपों पर जाकर फ्रीज हो गयीं, जो स्टूलों पर रखे थे और जिन्हें थोड़ी देर पहले गार्ड पी रहे थे।

करण सक्सेना लपककर कपों के नजदीक पहुँचा।

दोनों ही कपों में आधा-आधा कप चाय थी।

कमाण्डर करण सक्सेना ने फौरन एक काम किया, उसने एक कप की चाय दूसरे कप में पलट दी, जिसके फलस्वरुप दूसरा कप चाय से लबालब भर गया।

कमाण्डर ने खाली कप वहीं स्टूल पर रख दिया और चाय से लबालब भरा कप लेकर तेज-तेज कदमों से पहले की तरह ही आगे की तरफ बढ़ा।

उसके दिमाग में योजना मंडरा रही थी।

बुद्धिमानी से भरी योजना।

वह एक गलियारा पार कर दूसरे गलियारे में पहुँचा।

दूसरे से तीसरे में।

तीसरे गलियारे के अंदर उसे फिर एक गार्ड चहलकदमी करता नजर आया।

वह सीधा उस गार्ड की तरफ बढ़ा- "सुनो !"

गार्ड ने ठिठककर कमाण्डर करण सक्सेना की तरफ देखा।

"क्या बात है ?"

"सुलतान साहब ने यह एक कप चाय मंगायी है।" कमाण्डर बोला- "लेकिन मुझे एकाएक बहुत जरुरी काम याद आ गया और मुझे फौरन यहाँ से बाहर जाना है, क्या तुम यह चाय सुलतान साहब तक पहुँचा सकते हो ?"

"क्यों नहीं, जरूर पहुँचा सकता हूँ।"

"बड़ी मेहरबानी होगी भई, यह लो।"

"लाओ।"

चाय का कप लेते ही वह गार्ड गलियारे में आगे की तरफ बढ़ गया।

कमाण्डर करण सक्सेना का काम अब काफी आसान हो गया था।

उसने खामोशी से उस गार्ड का पीछा करना था, जिस जगह वो गार्ड चाय लेकर जाता, गवर्नर हाउस में वहीं सुलतान फ़ौजी होना था।

कमाण्डर तुरंत ही छिपकर उसका पीछा करने लगा।

उस गार्ड ने दो गलियारे और पार किये, फिर वो गवर्नर हाउस की उस विशाल लॉबी में पहुँचा, जहाँ से पहली मंजिल की तरफ सीढ़ियां जाती थीं।

फिर वो धीरे-धीरे सीढ़ियां चढ़ने लगा।

जरूर सुलतान फ़ौजी ऊपर था।

पहली मंजिल पर।

□□□

घटना घटी और बड़ी हंगामाखेज घटना घटी।

वह गार्ड चाय का कप लेकर आधी से ज्यादा सीढ़ियां चढ़ गया था। तभी वो ठिठका। उसके दिमाग में एकाएक धमाका-सा हुआ और उसे याद आया कि सुलतान फ़ौजी तो चाय ही नहीं पीता, फिर वो भला चाय कैसे मंगा सकता है ?

वह एकदम झटके से पलटा।

पलटते ही उसकी नजर सीढ़ियों के नीचे खड़े कमाण्डर पर पड़ी।

गड़बड़ !

फौरन यही एक शब्द उसके दिमाग में नगाड़े की तरह बजा।

उसने तत्काल चाय से लबालब भरा कप सीढ़ियों पर ही फैंक दिया और फिर बेपनाह फुर्ती के साथ अपनी जेब से खतरे की विसिल निकालकर उसे जोर-जोर से बजाने लगा।

उसी पल कमाण्डर ने उससे भी ज्यादा फुर्ती के साथ बौखलाहट

में एक कदम उठाया, उसने जेब से अपनी पसंदीदा कोल्ट रिवॉल्वर निकाली, वह उसकी उंगलियों के गिर्द घूमी तथा फिर धांय-धांय दो गोली चलीं ।

तत्काल खतरे की विसिल बजाते गार्ड के मुँह से खौफजदा चीख निकल गयी ।

उसके चेहरे के चीथड़े उड़ गये थे ।

वह सीढ़ियों पर ही गिरा तथा फिर लुढ़कता हुआ नीचे आ गया ।

उसी पल लॉबी में एक गार्ड और नमूदार हुआ । उसने वह नजारा अपनी आंखों से देखा । उस नजारे को देखते ही उसके नेत्र दहशत से फट पड़े । खतरे की विसिल निकालने के लिये उसके हाथ भी बड़ी तेजी से अपनी जेब की तरफ झपटे ।

"धांय-धांय ।"

कमाण्डर के रिवॉल्वर ने दो गोलियाँ और उगलीं ।

वह भी भैंसे की तरह डकराया और चिल्लाता हुआ वहीं ढेर हो गया ।

तब तक पूरे गवर्नर हाउस में हड़कम्प मच चुका था ।

गोलियाँ चलने, हलक फाड़-फाड़कर चिल्लाने और खतरे की विसिल बजने की उन आवाजों ने तमाम गार्डों को चौंकाकर रख दिया ।

सब अपनी-अपनी राइफल लेकर उसी तरफ दौड़ने लगे ।

□□□

तभी कमाण्डर ने खतरे की विसिल उठा ली और इससे पहले कि बड़ी संख्या में गार्ड दौड़कर वहाँ आते, उसने भी जोर-जोर से विसिल बजानी शुरू कर दी ।

जब गार्ड का जमघट वहाँ पहुँचा, तो उस समय कमाण्डर करण सक्सेना दोनों लाशों के बीच में खड़ा जोर-जोर से विसिल बजा रहा था ।

"क... क्या हुआ ?" कई सारे गार्ड बौखलाये से बोले- "क्या

हुआ ? इन्हें किसने मारा ?"

"हमारा कोई दुश्मन गवर्नर हाउस में घुस आया है।" कमाण्डर ने फौरन विसिल बजानी बंद कर दी और लगभग चीखता हुआ बोला- "उसी ने इन दोनों की हत्या की है।"

"द... दुश्मन !" कई सारे दिमागों में एक साथ धमाके हुए- "ल... लेकिन हमारा कोई भी दुश्मन इतनी जबरदस्त सिक्योरिटी को भेदकर अंदर कैसे घुस आया ?"

"फिलहाल यह सब सोचने का वक़्त नहीं है।" कमाण्डर करण सक्सेना ने आंदोलित लहजे में कहा- "हमें इस समय सुलतान साहब की सुरक्षा के बारे में सोचना चाहिये, उनकी जान खतरे में है।"

"बिल्कुल ठीक बात है।" एक अन्य गार्ड ने भी चिल्लाकर कहा- "अगर कोई आदमी चोरी-छिपे गवर्नर हाउस में घुसा है, तो वह जरूर सुलतान साहब का मर्डर करने के लिये घुसा है।"

"मैं देखता हूं कि सुलतान साहब कैसे हैं ?" यह शब्द कहने के बाद कमाण्डर करण सक्सेना योजनाबद्ध अंदाज में अदितीय फुर्ती से ऊपर की तरफ भागा।

इतना तो वह अब तक समझ ही चुका था कि सुलतान फौजी ऊपर ही कहीं है।

कमाण्डर के पीछे-पीछे कई और गार्ड भी लपके।

सब बुरी तरह बौखलाये हुए थे।

सबके छक्के छूटे हुए थे।

ऊपर पहुंचते ही कमाण्डर को एक कमरे के बाहर सात-आठ गार्डों का जमघट-सा लगा दिखाई दिया, गोलियां चलने और खतरे की विसिल बजने की आवाजों ने उन्हें भी दहला दिया था।

करण सक्सेना भांप गया, जरूर उसी कमरे में सुलतान फौजी है।

"सुलतान साहब कैसे हैं ?" कमाण्डर ने उन गार्डों के नजदीक पहुँचते ही लगभग चिल्लाते हुए पूछा।

"फ... फिलहाल बिल्कुल ठीक है।" गार्डों के चेहरे रुई की तरफ सफेद फक्क पड़े हुए थे- "हमने इसीलिये कमरे के बाहर डेरा

डाल दिया है, ताकि दुश्मन अंदर न घुस जाये ।"

"सुलतान फौजी के पास अंदर कौन है ?"

"कोई नहीं ।"

"बेवकूफ !" कमाण्डर चिंघाड़ उठा- "उन्हें कमरे में अकेला क्यों छोड़ दिया, दरवाजा खोलो, जल्दी दरवाजा खोलो ।"

फौरन बुरी तरह हड़बड़ाये हुए एक गार्ड ने जल्दी से दरवाजा खोल दिया ।

दरवाजा खोलते ही कमाण्डर अंदर जा घुसा ।

अंदर सुलतान फौजी का भी दहशत से बुरा हाल था ।

वह कबूतर की तरह फड़फड़ाता हुआ इधर से उधर घूम रहा था ।

कमरे में घुसते ही कमाण्डर करण सक्सेना वापस गार्डों की तरफ घूमा और फिर बोला- "अब सुलतान साहब की फिक्र करने की कोई जरूरत नहीं, मैं इनके साथ कमरे में बंद हुई हूँ । तुम लोग गवर्नर हाउस में जल्दी से दुश्मन की तलाश करो ।"

"ठीक है ।"

गार्ड कुछ संतुष्ट हो गये ।

उसी पल कमाण्डर करण सक्सेना ने कमरे का दरवाजा अंदर से बंद कर लिया ।

□□□

कमाण्डर चाल पर चाल खेल रहा था ।

अब कमरे में दो व्यक्ति बंद थे, कमाण्डर और सुलतान फौजी ।

पूरे गवर्नर हाउस में अभी भी बुरी तरह हड़कम्प-सा मचा था ।

वहाँ पाकिस्तानी गार्ड इधर-से-उधर इस तरह भागे-भागे फिर रहे थे, जैसे कभी-कभी चींटियों के झुण्ड में भगदड़ मच जाती है ।

हर तरफ अफरातफरी का आलम था, बेहताशा दुश्मन की खोज हो रही थी ।

और यह कितना बड़ा मजाक था, जिस व्यक्ति को इतनी बुरी तरह पूरे गवर्नर हाउस में ढूंढा जा रहा था, वही व्यक्ति सुलतान फौजी

की जान का मुहफिज बना, उसी के साथ, उसी के कमरे में बंद था।

सुलतान फौजी का व्यक्तित्व बिल्कुल फिल्मी गुण्डों जैसा था।

"कमाल है !" सुलतान फौजी जो उस समय बुरी तरह दहशतजदा था, सांप की तरह फुंफकार रहा था- "कमाल है- आखिर वो इतनी जबरदस्त सिक्योरिटी को भेधकर अंदर कैसे घुस आया और वह कौन हो सकता है, कौन ?"

सुलतान फौजी की बदहवासी देखकर मुस्कराया कमाण्डर करण सक्सेना।

पांच हजार आदमियों की हत्या करने वाले 'शैतान' के दिल में भी मौत का कैसा खौफ होता है, यह इस समय सुलतान फौजी के चेहरे पर साफ-साफ देखा जा सकता था।

कमाण्डर करण सक्सेना मुस्कराता हुआ वहीं पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गया।

उसके चेहरे पर अब व्यग्रता के कैसे भी कोई निशान न थे।

उसने बड़े इत्मीनान के साथ 'डनहिल' की एक सिगरेट निकालकर सुलगाई और ढेर सारा धुआं छत की तरफ उछाला।

उसका यह अलमस्त अंदाज देखकर सुलतान फौजी झुंझला उठा।

"तुम कैसे गार्ड हो।" सुलतान फौजी चलता हुआ करण सक्सेना के नजदीक आया और उसने कंधे पर फैले बालों को पीछे झटका दिया- "बाहरी कितनी अफरातफरी मची है और तुम यूँ आराम से बैठे सिगरेट पी रहे हो, जैसे बाहर कुछ हो ही न रहा हो।"

कमाण्डर करण सक्सेना की मुस्कान गहरी हो गयी, उसने पहले से भी ज्यादा जोर से कश लगाया।

"दरअसल बाहर जितने भी गार्ड इधर-से-उधर भागे-भागे फिर रहे हैं, वह सब मूर्ख है।"

"क... क्यों ?"

"क्यों जिस आदमी को वह ढूंढने की कौशिश कर रहे हैं, उसे वह कभी नहीं पकड़ पायेंगे। वह कोई साधारण आदमी नहीं है।"

सुलतान फौजी की कंजी आंखों में अचम्भे के निशान तैर गये ।

"त... तुम उस आदमी को जानते हो ?"

"कमाण्डर करण सक्सेना का नाम तो तुमने सुना ही होगा ?"

"क... करण सक्सेना ।" सुलतान फौजी के मुंह से सिसकारी छूट गयी- "रॉ एजेण्ट कमाण्डर करण सक्सेना ? भारत का नम्बर वन जासूस कमाण्डर करण सक्सेना ?"

"बिल्कुल वही । दरअसल वहीं खूँखार कमाण्डर करण सक्सेना गवर्नर हाउस के अंदर घुस आया है और इस समय उसी की वजह से यहाँ इतनी ज्यादा भगदड़ मची है ।"

"ल... लेकिन वो इतनी जबरदस्त सिक्योरिटी को भेदकर अंदर घुसा कैसे ?"

"बहुत आसानी से अंदर घुस गया ।" कमाण्डर ने मुस्कुराते हुए टांग-पर-टांग रख लीं- "याद है, थोड़ी देर पहले तुम्हारे लिये 'गवर्नर हाउस' की वैन होटल से खाना लेने गयी थी ।"

"ब... बिल्कुल गयी थी ।"

"बस वह वैन जैसे ही होटल पर खाना लेने पहुँची, तभी कमाण्डर करण सक्सेना उस वैन के नीचे स्टपनी पकड़कर चिपक गया और फिर वैन के तल से चिपका-चिपका ही गवर्नर हाउस के अंदर चला आया ।"

"अल्लाह !" सुलतान फौजी के नेत्र आतंक से फटे- "उसने अपनी जिंदगी का इतना बड़ा दांव लगाया ।"

"इतना बड़ा दांव लगाया, तभी तो वो यहाँ तक भी पहुँचा ।"

एकाएक सुलतान फौजी के नेत्र गोल दायरे में सिकुड़ गये, वह गौर से उसका चेहरा देखने लगा ।

"ल... लेकिन तुम्हें यह सब बात कैसे मालूम ?"

कमाण्डर करण सक्सेना ने जवाब देने की बजाय सबसे पहले जलती हुई सिगरेट फर्श पर फेंकी, फिर जूते से रगड़कर सिगरेट को बुझाया और उसके बाद अपनी जेब से कोल्ट रिवॉल्वर बाहर निकाल ली ।

"य... यह रिवॉल्वर क्यों निकाल रहे हो तुम ?"

कमाण्डर हँसा, वह जोर से खिलखिलाकर हँसा- "क्योंकि मैं ही कमाण्डर करण सक्सेना हूँ मूर्ख- मैं ही करण सक्सेना हूँ।"

सुलतान फौजी के दिल-दिमाग पर व्रजपात हो गया।

उसके कानों के इर्द-गिर्द ऐसे भीषण विस्फोट होने लगे, जैसे बम फट रहे हों।

एटम बम।

□□□

जबकि कोल्ट रिवॉल्वर हाथ में आते ही कमाण्डर एकदम कुर्सी से उछलकर खड़ा हो गया था।

रिवॉल्वर उसकी उंगलियों के गिर्द घूमी तथा फिर सुलतान फौजी की तरफ तन गयी।

"तुम्हारा अन्त समय आ गया है फौजी !" करण सक्सेना की आँखें एकाएक दहकता अंगारा बनती चली गयीं, उनमें खून बरसने लगा- "तुमने पांच हजार निर्दोष इंसानों की हत्या की है दुष्ट आदमी ! पांच हजार इंसानों की हत्या। तुम्हारा गुनाह इतना बड़ा है कि ईश्वर भी उसे माफ नहीं कर पायेगा। हिन्दुस्तानी अदालत ने उन हत्याओं के ऐवज में तुम्हें फाँसी की सजा सुनायी थी। वह बहुत छोटी सजा थी। लेकिन अफसोस ! इससे बढ़कर कोई सजा किसी आदमी को दी भी तो नहीं जा सकती। अगर मौत से बढ़कर कोई सजा होती, तो बिना शक तुम उस सजा के हकदार थे।"

सुलतान पठान के चेहरे से पसीने की धारायें बह निकलीं।

चेहरे की रंगत पीली जर्द पड़ गयी।

"अलविदा फौजी- अलविदा ! पांच हजार इंसानों की पुण्य आत्मायें तुम्हारी मौत का बेसब्री से इंतजार कर रही हैं। तुम काफी उधार की जिंदगी जी चुके हो शैतान- अलविदा !"

उसके बाद कमाण्डर करण सक्सेना ने एक भी सेकेंड व्यर्थ नहीं गंवाया। उसने रिवॉल्वर का सेफ्टी कैच पीछे खींचा और फिर

सुलतान फौजी के तरबूत जैसे सिर पर निशाना लगाकर ट्रेगर दबा दिया।

"धांय !"

गोली चलने की भीषण आवाज़ हुई।

लेकिन उसी क्षण सुलतान फौजी चालाकी दिखा गया।

गोली उसके सिर की धज्जियां उड़ा पाती, उससे पहले ही उसने अपने आपको नीचे गिरा दिया।

नीचे गिरते ही सुलतान फौजी जख्मी सांड बन चुका था।

जितनी तेजी से वह नीचे गिरा, उतनी ही तेजी से वह जम्प लेकर उठा तथा फिर उसने सांड की तरह एक प्रचण्ड टक्कर कमाण्डर करण सक्सेना के पेट में मारी।

सब कुछ बहुत तेजी से हुआ।

करण सक्सेना चीखता हुआ पीछे उलट गया था।

सुलतान फौजी पुनः द्रुतगति से उसके ऊपर झपटा।

लेकिन मुकाबला कमाण्डर करण सक्सेना से था, एक जूडो-कराटे एक्सपर्ट से।

सुलतान फौजी के सिर की प्रचण्ड टक्कर पुनः कमाण्डर करण सक्सेना के पड़ पाती, उससे पहले ही कमाण्डर करण सक्सेना की धड़ाधड़ दो लातें सुलतान फौजी के सीने पर पड़ीं।

चिंघाड़ा फौजी।

वह हवा में उछला तथा फिर सीध दीवार में जाकर लगा।

उसी पल करण सक्सेना उछलकर खड़ा हो गया था, फिर उसने एक फायर और किया।

गोली इस बार सीधे सुलतान फौजी के कधे में जाकर लगी।

वह भैंसे की तरह डकराया। उसके कंधे से खून का फव्वारा छूटा
।

इस बार फौजी ने पहले से कहीं ज्यादा समझदारी का परिचय दिया।

गोली लगी होने के बावजूद उसने फिर जम्प लगायी, लेकिन इस

बार उसने कमाण्डर करण सक्सेना के ऊपर जम्प नहीं लगायी बल्कि वो जम्प लगाकर उसी कमरे से अटैच्ड एक दूसरे कमरे में जा घुसा।

इतना ही नहीं अंदर घुसते ही उसने दरवाजा भी बंद कर लिया।

दरवाजा मजबूत इस्पात की चादर से बना था।

कमाण्डर करण सक्सेना ने धड़ाधड़ अपने कंधे की चोटें दरवाजे में मारीं।

लेकिन दरवाजा टस-से-मस न हुआ।

करण सक्सेना भांप गया कि वो जीती हुई बाजी हार चुका है।

अब सुलतान फौजी की मौत संभव नहीं थी।

□□□

उधर दूसरे कमरे में बंद होते ही फौजी ने एक खतरनाक काम और किया।

वहीं खतरे का अलार्म लगा था, उसने अंदर बंद होते ही उस अलार्म को बजाना शुरू कर दिया।

उस अलार्म के बजने का बड़ा खतरनाक रिजल्ट निकला, दरअसल वो अलार्म पूरे 'गवर्नर हाउस' में जोर-जोर से बजा था और उस अलार्म के बजते ही तमाम गार्ड बड़ी तेजी से उस कमरे की तरफ झपटे।

कमाण्डर करण सक्सेना भी आने वाले खतरे को भांप गया था।

उसने दौड़कर कमरे का दरवाजा खोला और बाहर गलियारे में पहुँचा।

उसी पल उसे गार्डों के धड़ाधड़ सीढ़ियां चढ़ने की आवाजें सुनायी दीं।

गार्ड ऊपर तक आ गये थे।

कमाण्डर करण सक्सेना फौरन बिजली की तरह लपककर सामने ही बने एक कमरे में घुस गया।

तब तक गार्ड गलियारे में आ चुके थे, गलियारे में आते ही वह दौड़ते हुए सुलतान फौजी वाले कमरे में दाखिल हो गये।

उधर !

कमाण्डर ने अपनी रिवॉल्वर चैक की।

वह खाली हो चुकी थी।

उसने फौरन दूसरी कोल्ट रिवॉल्वर निकालकर हाथ में ले ली।

फिर वो सावधानीपूर्वक कमरे से बाहर निकला और तेजी से सीढ़ियों की तरफ बढ़ा।

उसने अभी पहली सीढी पर ही कदम रखा था, तभी पीछे कहीं से एक गार्ड नमूदार हुआ और उसे देखकर जोर चिल्लाया- "वो रहा- वो रहा- पकड़ो उसे- पकड़ो।"

कमाण्डर झटके से पलटा।

उसी पल उस गार्ड के पीछे एक गार्ड और प्रकट हुआ।

धांय-धांय।

कमाण्डर ने उन दोनों को शूट कर दिया।

फिर वो धुआंधार स्पीड से सीढ़ियां उतरता हुआ नीचे पहुँचा।

तब तक गोली चलने और चीख-पुकार की आवाज़ सुनकर सुलतान फौजी वाले कमरे में से अन्य गार्ड भी बाहर निकल आये थे, फिर वह भी धुआंधार गोलियां चलाते हुए तूफानी गति से उसके पीछे-पीछे दौड़े।

उसी पल कमाण्डर एक हॉल में घुस गया।

वह उस समय बिल्कुल ओलम्पिक चैम्पियन कार्ल लुइस की तरह दौड़ रहा था। तूफानी गति से दौड़ते हुए ही उसने हॉल कमरा पार किया और फिर वो गलियारे में पहुँचा।

गलियारे में तीन पाकिस्तानी गार्ड और थे।

"क्... क्या हुआ ?" कमाण्डर करण सक्सेना को यूँ आनन-फानन दौड़ते देखकर तीनों गार्ड चौंके- "दुश्मन का पता चला कुछ ?"

"हाँ।" कमाण्डर करण सक्सेना सिर्फ एक सेकण्ड के लिये ठिठका- "दुश्मन का पता चल गया है।"

"क... कहाँ है दुश्मन ?"

"मैं हूं।"

"क... क्या कह रहे हो तुम ?" गार्डों के नेत्र अचम्भे से फटे और फिर फटे-के-फटे रह गये।

कमाण्डर ने सोचने का मौका दिये बिना उन तीनों को ही गोलियों से भून डाला तथा फिर पहले की तरह तूफ़ानी स्पीड से भागा।

अगले गलियारे में ही उसने उसी तरह दो गार्ड और भूने।

□□□

तब तक पीछे दौड़ते कदमों की आवाजें कमाण्डर करण सक्सेना के काफी नज़दीक आ चुकी थीं।

तभी कमाण्डर ने महसूस किया कि अब उसके सामने से भी बड़ी संख्या में गार्ड दौड़ते हुए उसी तरफ आ रहे हैं।

फिर उसने अपने दायें-बायें से भी गार्डों के दौड़ते कदमों की आवाजें सुनीं, जो उसी तरफ आ रहीं थीं।

विचलित हो उठा करण सक्सेना !

उसके भागने के तमाम रास्ते बंद हो चुके थे।

उसे लगने लगा, मानों वह चारों तरफ से घिर गया है।

एक क्षण के लिये कुछ सोचा करण सक्सेना ने, फिर वह एकाएक तेन्दुए की तरह जम्प लगाकर एक कमरे में घुस गया तथा उसके दरवाज़े के पीछे जा छिपा।

तभी देखते-देखते वह पूरा गलियारा असंख्य हथियारबंद गार्डों से भर गया था। उनके चेहरे आक्रोश से भरे हुए थे और उनकी आंखों में सस्पेंस के साथ-साथ गुस्सा भी था।

"वो यहीं होना चाहिये।" एक गार्ड ने उस गलियारे में आते ही चिल्लाकर कहा, अभी मैंने उसे इसी तरफ मुड़ते देखा था।"

"उसने इन दो गलियारें में भी हमारे पांच आदमी मार दिये है।" एक अन्य गार्ड चिल्लाया- "पॉच आदमी।"

"क्या तुम लोगों ने उसे किसी और तरफ मुड़ते देखा है ?" तभी एक अन्य व्यक्ति, जिसने लाल रंग की पीली-कैप लगायी हुई थी

और जो उन सबका चीफ नजर आ रहा था, उसने सामने से आये गार्डों से पूछा।

"नहीं सर !" वह गार्ड समवेत् स्वर में बोले- "हमने उसे किसी तरफ मुड़ते नहीं देखा।"

"और तुम लोगों ने ?" चीफ ने दायें-बाये से आये गार्डों की तरफ गर्दन घुमाई।

"नहीं सर ! हमने भी उसे किसी तरफ मुड़ते नहीं देखा।"

"फिर तो वह हर हालत में इसी गलियारे में कहीं होना चाहिये।" चीफ चिल्ला रहा था- "याद रहे, वह बिल्कुल हमारे जैसी वर्दी में ही है। ढूंढो उसे, ढूंढो। सब चारों तरफ फैल जाओ। वह बचकर नहीं निकलना चाहिये।"

फौरन वह असंख्य गार्ड मधुमक्खियों की तरह इधर-उधर फैल गये।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना को लगने लगा कि अब बचना मुश्किल है, बहुत मुश्किल।

और तब अपनी जिंदगी का दांव लगाकर उसने फिर एक चाल चल दी थी।

वह एकदम दरवाजे के पीछे से निकला और शेर की तरह उन तमाम गार्डों के सामने आ गया। इससे पहले की गार्ड उसे देखकर कोई एक्शन ले पाते, बाज की तरह हवा में उछला कमाण्डर करण सक्सेना और उसने एकदम उन गार्डों के चीफ को अपने फौलादी शिकंजे में जा दबोचा।

फौरन धड़ाधड़ कई सारी राइफलें कमाण्डर की तरफ उठीं।

"खबरदार !" कमाण्डर चीफ की कनपटी पर रिवॉल्वर रखकर चिंघाड़ा- "खबरदार, अगर किसी ने भी गोली चलायी, तो सबसे पहले तुम्हारा यह चीफ मरेगा। इसकी खोपड़ी की इतनी धज्जिया उड़ेंगी, जिनकी गिनती भी न की जा सके।"

सब ठिठक गये ।

"अपनी-अपनी राइफलें नीचे कर लो ।" कमाण्डर करण सक्सेना कहर भरे अंदाज में डकराया ।

एक सेकण्ड भी नहीं लगा, तत्काल सबकी राइफलें जितनी तेजी से ऊपर की तरफ उठी थीं, उतनी ही तेजी से नीचे झुक गयीं ।

चीफ भी कमाण्डर करण सक्सेना की दिलेरी को देखकर स्तब्ध था । उसे हैरानी हो रही थी कि एक अकेला आदमी गवर्नर हाउस जैसी जगह में घुसकर ऐसी जांबाजी दिखा रहा है ।

"तुम यहाँ से जिन्दा बचकर नहीं जा सकते मूर्ख !" चीफ दांत किटकिटाकर बोला- "तुमने मौत के उस खतरनाक कुएं में कदम रख दिया है, जहाँ तुम्हारी मृत्यु अब होनी ही होनी है ।"

उस खतरनाक माहौल में भी हँसा कमाण्डर करण सक्सेना !

फिर उसने बड़े यकीन के साथ रिवॉल्वर की नाल से चीफ की खोपड़ी ठकठकाई- "यह तो समय बतायेगा कि मेरा क्या होता है । लेकिन अगर इस समय तुम अपनी जान की फिक्र करो, तो ज्यादा बेहतर रहेगा ।"

कमाण्डर जब रिवाल्वर की नाल से चीफ की खोपड़ी ठकठका रहा था, उसी पल दो गार्डों ने कमाण्डर को असावधान समझकर हरकत दिखाई ।

उनकी राइफलें अदितीय फुर्ती से कमाण्डर करण सक्सेना की तरफ तनी थीं और उनकी उंगलियां बिजली जैसी तेजी के साथ ट्रेगर की तरफ झपटीं ।

परन्तु राइफल शोले उगल पातीं, उससे पहले ही कोल्ट रिवॉल्वर बेपनाह तेजी से कमाण्डर की उंगलियों के गिर्द घूमी तथा धांय-धांय दो गोलियां चलीं ।

चिंघाड़ उठे गार्ड ।

उनकी खोपड़ियां लाल तरबूज की तरफ फट पड़ीं और वो वहीं ढेर हो गये ।

"अगर कोई और भी हरकत करना चाहता है ।" कमाण्डर विषधर

की तरह फुंफकारा- "तो वह भी ट्राई कर सकता है ।"

सब सहम गये ।

दहशत से सबकी जान हलक में आ फंसी ।

"मैं किसी भी क्षण असावधान नहीं रहता, क्योंकि मेरे जैसे जासूस के असावधान रहने का सिर्फ एक ही मतलब होता है, मौत- सिर्फ मौत ।"

कमाण्डर करण सक्सेना की उस हरकत का सब पर बड़ा अप्रत्याशित प्रभाव पड़ा था ।

"रास्ता छोड़ो ।" कमाण्डर करण सक्सेना पुनः डकराया ।

फौरन असंख्य गार्डों की वो भीड़ "काई" की तरह फटती चली गयी ।

करण सक्सेना चीफ को धकेलता हुआ उन सबके बीच से गुजरा तथा बाहर की तरफ बढ़ा ।

जल्द ही वो गर्वनर हाउस के लॉन में पहुँच गया था ।

वहाँ भी तमाम गार्ड हैरान-सी मुद्रा में खड़े थे ।

किसी की हिम्मत नहीं हो रही थी कि कोई कुछ करे, कोई कदम उठाये ।

कमाण्डर करण सक्सेना मारकी के नीचे खड़ी वैन के करीब पहुँचा ।

फिर वैन का ड्राइविंग डोर खोला और चीफ को बेदर्दी के साथ उसने अंदर की तरफ धकेला ।

"य... यह क्या कर रह हो ?" चीफ का आतंकित स्वर- "क... कहाँ ले जा रहे हो मुझे ?"

"बकवास मत करो ।"

"ल... लेकिन... ।"

उसी पल कमाण्डर करण सक्सेना ने रिवॉल्वर की बैरल भड़ाक से उसकी खोपड़ी पर मारी । वह तत्काल चीखता हुआ वैन की सीट पर ढेर हो गया ।

फिर कमाण्डर ड्राइविंग सीट पर जा बैठा था ।

वैन के इग्नीशन में ही चाबी लटक रही थी, उसने फौरन वैन स्टार्ट की और फिर लॉन में खड़े गार्डों पर आदेश दनदनाया- "फाटक खोलो।"

तुरन्त दो गार्डों ने विशाल फाटक भी खोल दिया।

तभी पुनः घटना घटी।

वैन मारकी की छतरी के नीचे से निकलकर जैसे ही ड्राइव वे पर दौड़ी, उसी पल आगे के दोनों ऊंचे टावरों पर खड़े गार्ड हरकत में आ गये और उन्होंने धांय-धांय कई सारी गोलियां वैन पर बरसा डालीं।

कमाण्डर करण सक्सेना उस हमले से भी मानो पहले ही सावधान था।

उसने वैन को अदितीय फुर्ती से ड्राइव-वे पर इधर-उधर घुमाया।

तमाम गोलियां वैन के दायें-बायें से गुजर गयीं।

वैन नचाते हुए ही कमाण्डर ने टावरों की तरफ भी गोलियां चलायीं।

तत्काल टावरों पर खड़े चारों गार्ड चीखते हुए नीचे आ गिरे।

जबकि वैन अब तूफानी गति से ड्राइव-वे पर दौड़ती हुई लोहे का फाटक पार कर गयी थी।

***



6. आई. एस. आई. में हड़कंप

गवर्नर हाउस में घटी उस जानलेवा घटना ने पूरे इस्लामाबाद शहर में हड़कम्प मचा दिया था, खासतौर पर पाकिस्तान प्रशासन के अंदर तो तेज खलबली मच गयी थी ।

फौरन ही आई.एस.आई. के हैडक्वार्टर में एक इमरजेंसी मीटिंग बुलायी गयी, जिसमें बड़े-बड़े ऑफिसर्स ने हिस्सा लिया ।

सुलतान फौजी भी उस मीटिंग में सम्मिलित था । उसके कंधे में कमाण्डर करण सक्सेना की जो गोली लगी थी, वह निकाली जा चुकी थी और अब वहाँ पट्टी बंधी थी । अलबत्ता कमाण्डर करण सक्सेना का खौफ सुलतान फौजी के दिल-दिमाग पर कुछ ऐसा बैठा था कि वो अभी भी बेहद डरा हुआ था ।

पाकिस्तान की उस सबसे बड़ी जासूसी संस्था के चीफ का नाम था- कर्नल नासिर !

कर्नल नासिर, जो इंसान कम और दरिंदा ज्यादा था ।

लगभग पचास साल का किसी पहलवान जैसे लम्बे-चौड़े डील-डौल वाला इंसान । जिसके शरीर का साइज असाधारण था । उसके पेंट इतने विशाल आकार की आती, जैसे दो तम्बू चढ़ा लिये हों । यही हाल उसकी शर्ट का था ।

कुल मिलाकर दैत्य था कर्नल नासिर !

दैत्य !

खासतौर पर हिन्दुस्तानियों से उसे इतनी नफरत थी कि उनका नाम सुनते ही उसका खून खोलने लगता था ।

बताते हैं कि सन् 1971 की जंग में उसने बॉर्डर पर बीस हिन्दुस्तानी फौजियों को पकड़ लिया था और फिर फरसे से उन्हें जंगली सुअरों की तरह काटकर उनके गरम-गरम खून से स्नान किया तथा जोर-जोर से कहकहे लगाये ।

इतना ही नहीं युद्ध खत्म होने के बाद उसने वो तस्वीरें हिन्दुस्तानी फौज के बीच बॉर्डर पर भी फिंकवा दी थीं ।

ऐसा था कर्नल नासिर !

इतना खतरनाक और खौफ जगाने वाला ।

□□□

इस समय कर्नल नासिर के प्रचण्ड गुस्से को सिर्फ इसी एक खबर ने भड़का दिया था कि कोई हिन्दुस्तानी जासूस इस्लामाबाद में घुस आया है ।

“यह हमारे लिये डूब मरने की बात है, शर्म से डूब मरने की बात !” कर्नल नासिर मीटिंग के दौरान हिस्टीरियाई अंदाज में गला फाड़कर चिल्ला रहा था- “कि कोई एक आदमी, सिर्फ एक आदमी गवर्नर हाउस की हमारी इतनी बड़ी सिक्योरिटी को भेदकर न सिर्फ आसानी से अंदर घुसने में कामयाब हो जाता है बल्कि जाते-जाते सिक्योरिटी चीफ को भी उठाकर ले जाता है ।”

“सर !” आई.एस.आई. का एक एजेंट थोड़ी हिम्मत करके बोला- “उस सिक्योरिटी चीफ की पुलिस को थोड़ी देर पहले लाश भी बरामद हो चुकी है । उसकी लाश इस्लामाबाद के गोल चौक के पास उसी वैन के अंदर पड़ी पायी गयी ।”

“मुझे मालूम है ।” कर्नर नासिर दहाड़ा- “सब मालूम है । कमाण्डर करण सक्सेना ने हमारे गवर्नर हाउस के अंदर खून की होली खेली है- खून की होली । उसने वहाँ हमारे उन्नीस आदमी मार डाले । इतनी जबरदस्त सिक्योरिटी के बीच मार डाले और आखिर में खुद भी भागने में कामयाब रहा ।”

“म... मुझे तो डर लग रहा है ।” सुलतान फौजी खौफ से कंपकंपाये स्वर में बोला- “भारत सरकार ने अपनी सबसे बड़ी तोप को मुझे सजा देने के लिये भेजा है, व... वो मुझे नहीं छोड़ेगा । अमरिका की सी.आई.ए. तक उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकी । चीन की सी.आई.एल.डी. कुछ नहीं बिगाड़ सकी । पनामा दीप मे सरजॉन जैसा विश्व प्रसिद्ध अपराधी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सका । द... देख लेना, व... वो मुझे भी मार डालेगा और तुम लोग सिर्फ हाथ-पर-हाथ रखकर बैठे रह जाओगे । पाकिस्तान की

आई.एस.आई. भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ पायेगी।"

"ऐसा कुछ नहीं होगा।" कर्नल नासिर झल्ला उठा- "करण सक्सेना अब तुम तक कभी नहीं पहुँच सकेगा।"

"वह पहुंचेगा सर !" सुलतान फौजी दृढ़ लहजे में बोला- "जब वह गर्वनर हाउस की इतनी जबरदस्त सिक्योरिटी को भेधकर मेरे तक पहुँच सकता है, तो फिर आगे भी क्यों नहीं पहुँच सकता ? मत भूलिये, वह अकेला ही फौज की पूरी बटालियन है। वन मैन ऑर्गेनाइजेशन है।"

"तुम खामखाह डर रहे हो फौजी !"

"मैं डर रहा हूँ सर, लेकिन खामखाह नहीं डर रहा।" सुलतान फौजी शुष्क स्वर में बोला- "वह कोई मामूली जल्लाद नहीं है। वह अगर मुझे सजा देने आया है, तो देकर ही जायेगा।"

"बकवास मत करो।" कर्नल नासिर दहाड़ उठा था- "तुम पागल हो गये हो, बिल्कुल पागल ! अब खामोश हो जाओ और हमें थोड़ा सोचने दो कि क्या करना है।"

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना उस समय अपने होटल में था और अभी-अभी कुछ घण्टे की आरामदायक नींद लेकर उठा था।

हालांकि अपनी कौशिशों के बावजूद सुलतान फौजी को मार डालने की उसकी योजना असफल रही थी, लेकिन फिर भी वो निराश नहीं था। वह उन लोगों में था, जो बार-बार सफलता के लिये प्रयास करते हैं और तब तक पूरी लगन से जुटे रहते हैं, जब तक कामयाब नहीं हो जाते।

बिस्तर से उठने के बाद कमाण्डर करण सक्सेना ने 'ब्लडी मेरी' के दो पैग पिये और फिर कुर्सी पर इत्मीनान से टांगे फैलाकर वो सिगरेट के कश लगाने लगा।

इस समय उसे देखकर कोई नहीं कह सकता था कि वो थोड़ी देर पहले ही जिन्दगी मौत का ऐसा खौफनाक खेल खेलकर आया है।

वह पूरी तरह शांत था ।

इतना ही नहीं, वह अब ठण्डे दिमाग से अपनी आगामी योजना के बारे में सोच रहा था ।

तभी एकाएक उसकी जेब में रखी घड़ी के अंदर से ब्लिप-ब्लिप की आवाज़ निकलने लगी ।

करण सक्सेना ने फौरन घड़ी निकाली और उसका ट्रांसमीटर ऑन किया ।

"यस, कमाण्डर करण सक्सेना स्पीकिंग ! कमाण्डर स्पीकिंग ।"

"मैं रजिया बोल रही हूँ ।"

"बोलो रजिया !"

"तुम फौरन सुलेमान क्लब पहुंचो ।" रजिया की थोड़ी घबरायी सी आवाज़ आयी- "मैं भी वहीं पहुँचती हूँ ।"

"ल... लेकिन बात क्या है ?"

"तुम जल्दी वहाँ पहुंचो, फिर बाकी बात भी वहीं होगी ।"

"मगर... ।"

कमाण्डर करण सक्सेना अपनी बात पूरी करता, उससे पहले ही रजिया ने लाइन काट दी ।

उसने ट्रांसमीटर बंद करके वापस जेब में रखा तथा ब्लडी मेरी के गटागट दो पैग और पिये ।

फिर वो आनन-फानन तैयार होकर 'सुलेमान क्लब' पहुँचा ।

□□□

सुरमई शाम अब धीरे-धीरे ढलती जा रही थी ।

जैसे-जैसे शाम ढल रही थी, ठीक उसी अनुपात में सुलेमान क्लब की रौनक भी बढ़ने लगी थी । इस समय वहाँ सड़क पर घूम-घूमकर पेशा करने वाली वेश्याओं का तांता सा लगा था, जो अपने ग्राहकों के साथ वहाँ आ-जा रही थीं ।

कमाण्डर करण सक्सेना एक तन्हा पड़ी टेबिल पर जाकर बैठ गया ।

उसे वहाँ बैठे हुए अभी मुश्किल से एक मिनट भी न हुआ होगा कि तभी बुरी तरह बौखलायी सी रजिया ने वहाँ कदम रखा, वह आज भी वेश्याओं की तरह गहरा मेकअप किये हुए थी और उसने बदनदिखाऊ कपड़े पहन रखे थे ।

"उस टेबिल पर आओ ।" रजिया, कमाण्डर करण सक्सेना के नजदीक पहुँचते ही बोली- "उस टेबिल पर ।" उसने एक अन्य टेबिल की तरफ इशारा किया- "यहाँ हमारी बात सुनी जा सकती हैं ।"

कमाण्डर करण सक्सेना का सस्पेंस और बढ़ गया ।

वह अचरजपूर्ण अवस्था में कुर्सी से उठ गया और रजिया के पीछे-पीछे एक बिल्कुल कोने में पड़ी कुर्सी पर जा बैठा, रजिया उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गयी । उन दोनों के बीच में अब सिर्फ एक गोल टेबिल थी ।

"य... यह तुमने क्या कर डाला कमाण्डर !" रजिया कुर्सी पर बैठते ही धमाका सा करती हुई बोली- "त... तुमने दिन-दहाड़े गवर्नर हाउस में घुसकर पाकिस्तान के उन्नीस गार्ड मार डाले ।"

"तो इसमें अचम्भे की क्या बात है ?" करण सक्सेना ने सहज मुद्रा में कहा ।

"अचम्भे की बात ही नहीं कुछ ?"

"कम-से-कम मेरे लिये तो नहीं ।"

रजिया और ज्यादा हैरान निगाहों से उसकी सूरत देखने लगी ।

"और... और सुना है कि इतने बड़े खून-खराबे के बावजूद सुलतान फौजी तो फिर भी बच निकला ।" रजिया बोली- "उ... उसका तो फिर भी कुछ नहीं बिगड़ा ।"

"हाँ, इस बार वह बच निकला ।" कमाण्डर करण सक्सेना ने पूरे इत्मीनान के साथ कहा- "लेकिन आगे शायद वह नहीं बचेगा ।"

"लेकिन आगे उस तक पहुँचने के लिये अगर तुम जिंदा रहोगे, तभी तो वह मरेगा ।"

"मतलब ?"

"मतलब बिल्कुल साफ है कमाण्डर !" रजिया एक-एक शब्द चबाते हुए बोली- "तुम्हें मालूम नहीं है कि गवर्नर हाउस वाली घटना के बाद इस्लामाबाद में कितना बड़ा हड़कम्प मच गया है । आई.एस.आई. पूरी तरह हाथ धोकर तुम्हारे पीछे पड़ चुकी है । आई.एस.आई. के एजेंट पूरे शहर में फैल चुके हैं और सब तुम्हारी ही गंध सूंघते फिर रहे हैं । तुम्हारे लिये अब यहाँ कदम-कदम पर खतरा है ।"

मुस्कुराया करण सक्सेना, फिर पहले की तरह ही सहज मुद्रा में बोला- "मुझे किसी बात की परवाह नहीं ।"

"लेकिन अगर तुम अपनी जान बचाना चाहते हो ।" रजिया फुसफुसाई- "तो अब कुछ दिन के लिये बिल्कुल खामोश हो जाओ, कोई हरकत मत करो । मैं इसी बात के लिये सावधान करने फौरन तुम्हारे पास आई हूँ कि कहीं तुम जल्दबाजी में कोई और कदम न उठा बैठो ।"

यही वो पल था, जब सुलेमान क्लब का एक वेटर उनकी टेबिल पर सॉफ्ट-ड्रिंक के दो गिलास रख गया ।

वह कुछ सेकेंड के लिये खामोश हो गये ।

□□□

वेटर चला गया, तो वह सॉफ्ट ड्रिंक धीरे-धीरे सिप करने लगे थे ।

कमाण्डर करण सक्सेना के चेहरे से बिल्कुल भी नहीं लग रहा था कि रजिया की बात का उस पर कोई प्रभाव पड़ा है ।

"सुलतान फौजी अब कहाँ है ?" कमाण्डर ने थोड़ा रूककर पूछा ।

"वो फिलहाल आई.एस.आई. के हैडक्वार्टर में है ।" रजिया बोली- "लेकिन जल्द ही उसे कहीं और शिफ्ट किया जायेगा ।"

"मगर इस सिलसिले में तुम्हें मेरी कुछ मदद करनी होगी ।"

"कैसी मदद ?"

पहले की तरह ही आगे को झुक गया कमाण्डर करण सक्सेना,

फिर धीमे स्वर में फुसफुसाया- "क्या तुम मुझे कहीं से थोड़े बम दिलवा सकती हो ?"

"ब... बम !" उछल पड़ी रजिया।

"धीरे बोलो, धीरे।"

"ल... लेकिन तुम बमों का क्या करोगे ?" रजिया के नेत्र हद दर्जे तक फैल गये थे।

"चिन्ता मत करो, मैं सुलतान फ़ौजी जैसा आतंकवादी नहीं हूँ।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "जो बम हासिल करने के बाद निर्दोष नागरिकों की हत्यायें करूँगा। बेगुनाहों की जानें लूंगा। यह सच है कि आई.एस.आई. को अपनी ताकत का अंदाजा कराने के लिये तबाही मैं भी फैलाऊंगा। जानें मै भी लूंगा। लेकिन वह सब सरकारी जान-माल की बर्बादी होगी।"

"लेकिन उससे फायदा क्या होगा ?"

"फ़ायदे के बारे में भी मालूम हो जायेगा। पहले यह बताओ कि क्या तुम मुझे कहीं से बमों का बंदोबस्त करा सकती हो या नहीं ?"

रजिया सोच में डूब गयी।

"क्या सोच रही हो ?"

रजिया सकुचाते हो बोली- "ब...बमों का इंतजाम तो मैं कहीं से नहीं करा सकती, लेकिन तुम्हें एक ऐसी जगह का एड्रेस जरूर बता सकती हूँ, जहाँ से अगर तुम चाहो तो खुद बम हासिल कर सकते हो।"

"ऐसी कौन-सी जगह है ?"

"इस्लामाबाद सीमा से सिर्फ दो किलोमीटर दूर उत्तर-पश्चिम में पाकिस्तान की एक बहुत बड़ी ऑर्डिनेंस फैक्ट्री (हथियार फैक्ट्री) है, जहाँ तमाम किस्म के बमों से लेकर, राइफलें, गनें, पिस्टल, गोलियां, राकेट लांचर, आँसू गैस के गोले तथा और भी कई किस्म के हथियार बनते हैं। उस ऑर्डिनेन्स फैक्ट्री से तुम बम जरूर हासिल कर सकते हो। लेकिन वहाँ से बम हासिल करने में, मैं तुम्हारी कोई भी मदद नहीं कर पाऊंगी।"

"वह अगर इतनी बड़ी ऑर्डिनेंस फैक्ट्री है।" कमाण्डर करण सक्सेना की एकदम उस फैक्ट्री में दिलचस्पी जाग उठी थी- "तब तो वहाँ सिक्योरिटी भी बहुत जबरदस्त होगी ?"

"बिल्कुल सही अंदाजा लगाया तुमने, वहाँ वाकई जबरदस्त सिक्योरिटी है। उस ऑर्डिनेंस फैक्ट्री के अंदर घुसना तो बहुत बड़ी बात है, उस फैक्ट्री के आसपास भी कोई साधारण आदमी नहीं फटक सकता। फैक्ट्री के अंदर सिर्फ उन्हीं व्यक्तियों को जाने की इजाजत है, जो वहाँ काम करते हैं और जो वहाँ के रेग्यूलर वर्कर है। उन्हें भी बाकायदा ऑर्डिनेंस फैक्ट्री की तरफ से 'पास' इश्यू किये जाते हैं, जिन पर उनके फोटो चिपके रहते हैं, नाम लिखा रहता है और सिग्नेचर होते हैं। गेट पर पास दिखाने के बाद ही रेग्यूलर वर्कर भी ऑर्डिनेंस फैक्ट्री के अंदर जा पाते हैं।"

"ओह !"

"इस एक बात से ही तुम अंदाजा लगा सकते हो।" रजिया बोली- "कि उस ऑर्डिनेंस फैक्ट्री की कितनी जबरदस्त सिक्योरिटी है।"

"उस ऑर्डिनेंस फैक्ट्री में घुसने का कोई और तरीका है ?"

"यह मुझे मालूम नहीं। यह तुम्हें खुद वहाँ जाकर चैक करना होगा।"

"उस ऑर्डिनेंस फैक्ट्री के बारे में कोई भी ऐसी बात बता सकती हो।" कमाण्डर करण सक्सेना ने पूछा- "जो बम हासिल करने के दौरान मेरे काम आ सके ?"

"नहीं, कोई खास बात नहीं बता सकती। हाँ, एक मामूली बात जरूर बता सकती हूँ, जो पता नहीं तुम्हारे किसी काम आयेगी भी या नहीं।"

"क्या ?"

"दरअसल उस ऑर्डिनेंस फैक्ट्री का चीफ इन्चार्ज मेरे हसबैंड हैदरअली का दोस्त है। इसी कारण वो अक्सर हमारी कोठी पर आता रहता है। यही वजह है, जो मैं उसके बारे में थोड़ा-बहुत बातें

जानती हूँ। जैसे उसका नाम इब्राहिम कालिया है। जैसे उसकी उम्र बत्तीस-तैंतीस साल है। जैसे वो अभी तक कुंआरा है। जैसे वो कायदे आजम जिन्ना रोड पर चौदह नम्बर कोठी में बिल्कुल अकेला रहता है।"

"ओह ! इसके अलावा कोई और जानकारी ?"

"नहीं, इब्राहिम कालिया के बारे में इसके अलावा मैं तुम्हें कोई जानकारी नहीं दे सकती। हाँ, उसकी एक खास आदत के बारे में जरूर बता सकती हूँ।"

"क्या ?"

"वह ज्यादातर अपने हमउम्र लोगों को बातचीत के दौरान 'यंगमैन-यंगमैन' कहता रहता है।"

"यानि यंगमैन उसका तकिया कलाम है।"

"कुछ ऐसा ही समझ सकते हो।"

"थैंक्यू ! थैंक्यू वैरी मच ! अब हमें चलना चाहिये।"

"हाँ, काफी समय हो चुका है।" रजिया भी बोली- "लेकिन जाने से पहले मैं तुमसे एक गुज़ारिश जरूर करूँगी कमाण्डर !"

"क्या ?"

"जो भी कदम उठाओ, खूब सोच-समझकर उठाना। क्योंकि तुम्हारें चारों तरफ मौत के फरिश्ते मंडरा रहे हैं।"

"बेफिक्र रहो।" कमाण्डर करण सक्सेना फ़ौरन अपनी कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया।

उसके साथ-साथ रजिया ने भी अपनी कुर्सी छोड़ दी।

□□□

वह रात कमाण्डर के लिये एक हंगामाखेज रात थी।

उस रात उसने एक सेकेण्ड के लिये भी चैन की सांस नहीं ली।

कमाण्डर करण सक्सेना ने सबसे पहले ऑर्डिनेंस फैक्ट्री का दौरा किया।

वह गर्वनर हाउस की तरह ही कई एकड़ भूमि में फैली थी।

गवर्नर हाउस की तरह ही ऑर्डिनेंस फैक्ट्री की दीवारें ऊंची-ऊंची थीं । इतना ही नहीं, बाउण्ड्री वॉल के ऊपर लोहे के कंटीले तार भी लगे थे ।

अलबत्ता वहाँ गवर्नर हाउस की तरह सिक्योरिटी टावर नहीं थे, जिन पर हथियारबंद गार्ड खड़े हों ।

लेकिन टावरों के अलावों वहाँ और ऐसे कई सुरक्षा प्रबंध थे, जो ऑर्डिनेंस फैक्ट्री को गवर्नर हाउस से भी ज्यादा जबरदस्त सिक्योरिटी प्रदान कर रहे थे ।

जैसे ऑर्डिनेंस फैक्ट्री के चारों तरफ गार्डों ने रेत की बोरियों से ऊंचे-ऊंचे मोर्चे बना रखे थे और उनके पीछे पोजीशन संभाले हुए थे ।

उनके हाथों में ऑटोमैटिक राइफलें थीं । आगे का पूरा चेहरा जालीदार हैट से ढका हुआ था । कुल मिलाकर वह किसी भी हमले के लिये तैयार थे ।

इसके अलावा गेट पर चार गार्ड खड़े थे, जो पास देखते थे । मेटल डिटेक्टर से होकर अंदर जाना होता था, ताकि कहीं कोई आपत्तिजनक सामान ऑर्डिनेंस फैक्ट्री में न ले जाये ।

सुरक्षा संबंधी सबसे महत्वपूर्ण बात ये थी कि वहाँ गाड़ियों का आवागमन उस तरह नहीं हो रहा था, जिस तरह गवर्नर हाउस में होता था ।

वहाँ बाकायदा गाड़ियाँ खड़ी करने के लिये बाहर ही एक काफी बड़ा अलग से गैराज बना हुआ था । जो भी अपनी गाड़ी लाता, वह उसी गैराज के अंदर खड़ी करता और फिर उसे वहीं से निकालकर ले जाता ।

कमाण्डर करण सक्सेना उस समय काफी दूर झाड़ियों के पीछे छिपा हुआ था और वहीं से ऑर्डिनेंस फैक्ट्री का नजारा कर रहा था ।

काफी देर तक वो ऑर्डिनेंस फैक्ट्री की एक-एक सुरक्षा को देखता रहा ।

अंत में उसे यही लगा कि किसी भी तरह से उस फैक्ट्री के अंदर

घुसना नामुमकिन है।

और अगर वो किसी प्रकार उस फैक्ट्री के अंदर घुस भी गया, तो फिर ढेर सार बम लेकर उस फैक्ट्री से बाहर निकलना तो बिल्कुल ही असंभव काम था।

कमाण्डर करण सक्सेना काफी देर तक अपने दिमागी घोड़े दौड़ाता रहा।

फिर उसने एक नया कदम उठाया।

□□□

वह फौरन रात में ही इब्राहिम कालिया की कोठी पर पहुँचा।

यह देखकर वो चौंका कि कोठी के गेट पर कोई वाचमैन नहीं था
।

इसके अलावा पूरी कोठी घुप्प अंधेरे में डूबी हुई थी।

कमाण्डर करण सक्सेना को शक हुआ कि जरूर वहाँ कोई नहीं है।

लेकिन जल्द ही उसका वो शक भी दूर हो गया।

क्योंकि कोठी का गलियारे से जुड़ा वो मैन गेट था, उस पर ताला नहीं लगा हुआ था और वो अंदर से बंद था।

यानि अंदर कोई था।

कमाण्डर ने दरवाजे के बराबर में ही लगी कॉलबेल बजानी चाही, लेकिन फिर कुछ सोचकर वो ठिठक गया।

उसने दूसरा दरवाजा देखा, वह भी अंदर से बंद था।

उसने खिड़की देखीं। तत्काल उसकी आँखें चमक उठीं।

खिड़की खुली थी।

फौरन कमाण्डर करण सक्सेना ने खिड़की के दोनों पल्ले आहिस्ता से अंदर की तरफ धकेल दिये और फिर दबे पांव भीतर कूद पड़ा।

भीतर पहुँचते ही उसने खिड़की के पल्ले वापस पहले की तरह बंद कर दिये थे।

फिर उसने गलियारे में पहुँचकर कोठी के तमाम कमरों पर नज़र दौडाई, सभी कमरों में घुप्प अंधेरा था ।

सिर्फ एक ही कमरा ऐसा था, जिसमें जीरो वॉट का बल्ब जल रहा था और उसकी प्रकाश रश्मियां खिड़की दरवाजे से छनकर बाहर आ रही थीं ।

कमाण्डर करण सक्सेना फौरन निःशब्द ढंग से चलता हुआ उसी कमरे के नजदीक पहुँचा ।

□□□

इब्राहिम कालिया बड़े मस्त अंदाज में सीटी बजाता हुआ वापस अपने उसी कमरे में पहुँचा, जहाँ उसने रंगीन खेल खेला था । उसके बाद वो फ्रेश होने के लिये बाथरूम की तरफ बढ़ा ।

तभी घटना ने रोमांचकारी मोड़ लिया ।

इब्राहिम कालिया के एकाएक कदम ठिठक गये ।

उसे ऐसा लगा, जैसे अकस्मात जिन्न की तरह कोई उसके पीछे आकर खड़ा हो गया है । वह झटके से पलटा और अगले ही पल उसे दहशत का दौरा पड़ते-पड़ते बचा । उसके सामने काला लम्बा ओवरकोट और काला क्लेंसी हैट पहने एक लम्बे कद का नौजवान खड़ा था । इतना ही नहीं, उसके हाथ में एक रिवॉल्वर भी थी ।

"हिलना मत ।" कमाण्डर करण सक्सेना दहाड़ उठा- "हिलना मत । हिले तो गोली, फौरन गोली... ।"

"ल...लेकिन कौन हो तुम ?" इब्राहिम कालिया की आवाज़ पत्ते की तरह कंपकंपाई- "अ...और अंदर कैसे घुसे ?"

"एक टाइम में एक सवाल ।" कमाण्डर करण सक्सेना पुनः गरजा- "सिर्फ एक सवाल ।"

"क... कौन हो तुम ?"

"कमाण्डर करण सक्सेना ।"

"क... कमाण्डर ।" इब्राहिम कालिया के मुँह से चीख-सी खारिज हो गयी- "व... वही करण सक्सेना, जिसने गवर्नर हाउस में

भयंकर तबाही मचायी ? वहाँ उन्नीस गार्ड मारे। ज... जो सुलतान फौजी की हत्या करने के लिये खासतौर पर पाकिस्तान आया हुआ है।"

"बिल्कुल वही।"

"अब दूसरा सवाल पूछो।" कमाण्डर करण सक्सेना का कहर भरा स्वर।

"द...दूसरा सवाल पूछने की कोई जरुरत ही नहीं यंगमैन।" इब्राहिम कालिया के शरीर में झुरझुरी-सी दौड़ी- "ज... जो व्यक्ति गवर्नर हाउस जैसी जगह में घुस सकता है, उसके लिये इस कोठी में घुसना क्या बड़ी बात है। इस रुम में घुसना क्या बड़ी बात है ? अ... अब तो यह बताओ, तुम यहाँ किसलिये आये हो ?"

"गुड !" कमाण्डर करण सक्सेना मुस्कराया और उसने अपनी रिवॉल्वर हिलाई- "अच्छी बात है, जो तुम एकदम सही लाइन पर आ गये। मुझे ऐसे लोग बहुत पसंद हैं, जो काफी जल्दी काम की बात करने लगते हैं। बैठ जाओ।"

"ल... लेकिन...।"

"बैठ जाओ।"

इब्राहिम कालिया हिचकिचाता हुआ एक कुर्सी पर बैठ गया।

उसके सामने रिवॉल्वर हाथ में लेकर कमाण्डर करण सक्सेना भी बैठ गया था।

"लगता है, हम दोनों की काफी अच्छी तरह से बनने वाली है दोस्त !" कमाण्डर बोला- "यह तो अब तक तुम मेरे कारनामे सुनकर समझ ही गये होंगे कि मैं अपने नेताओं की तरह यहाँ शान्ति की बात करने नहीं आया हूँ बल्कि मैं यहाँ सुभाषचन्द्र बोस बनकर आया हूँ। भगत सिंह बनकर आया हूँ। जिन्होंने खुद बंदूक की नोक से अपनी कहानियाँ लिखी थीं। जो इंसाफ कटोरा लेकर भीख की तरह इंसाफ मांगते नहीं थे बल्कि इंसाफ छीनते थे, इंसाफ करते थे।"

"त... तुम कहना क्या चाहते हो ?"

"मुझे दरअसल अपने इस खतरनाक मिशन में तुम्हारी थोड़ी मदद

की जरूरत पड़ गयी है ।" कमाण्डर करण सक्सेना थोड़े नाटकीय ढंग से मुख्य मुद्दे की तरफ आता हुआ बोला ।

"कैसी मदद ?"

"मुझे छः पेटी बम चाहिये । बम, जो सिर्फ मुझे तुम्हारे जरिये ही हासिल हो सकते हैं ।"

"ब... बम !" धमाका-सा हो गया इब्राहिम कालिया के दिमाग में- "ल...लेकिन मैं तुम्हें बम कहाँ से दिला सकता हूँ ?"

मुस्कुराया कमाण्डर करण सक्सेना, उसकी वो मुस्कान बहुत खतरनाक और जानलेवा थी- "अगर कोई तुम्हारी इस बात को सुनेगा, तो हँसेगा कालिया ! तुम ऑर्डिनेंस फैक्ट्री के चीफ हो और तुम मुझसे पूछ रहे हो कि तुम मुझे बम कहाँ से दिला सकते हो ?"

"यह सच है कि मैं ऑर्डिनेंस फैक्ट्री का चीफ हूँ यंगमैन !" इब्राहिम कालिया अपने शब्दों पर जोर देकर बोला- "लेकिन उस ऑर्डिनेंस फैक्ट्री से बम मैं तुम्हें फिर भी नहीं दिला सकता । तुम शायद नहीं जानते हो कि उस ऑर्डिनेंस फैक्ट्री के चारों तरफ कितनी जबरदस्त सिक्योरिटी है । उस फैक्ट्री के अंदर से छः पेटी बम तो क्या कोई एक बम भी लेकर बाहर नहीं निकल सकता ।"

"लेकिन तुम फैक्ट्री के चीफ हो ।"

"फिर भी मै यह काम नहीं कर सकता यंगमैन !"

"तुम्हें यह काम करना होगा ।" कमाण्डर करण सक्सेना ने खूनी अंदाज में दांत किटकिटाये- "अगर तुम अपनी जिंदगी चाहते हो । अगर तुम पाकिस्तान के शहीदों में अपना नाम नहीं लिखवाना चाहते हो, तो तुम्हें उस ऑर्डिनेंस फैक्ट्री से किसी तरह छः पेटी बम बाहर निकालने ही होंगे । वरना कल सुबह का सूरज तुम अपनी जिन्दगी में कभी नहीं देख पाओगे ।"

"तुम मुझे धमकी दे रहे हो ।"

"तुम इसे मेरी सलाह भी समझ सकते हो ।"

इब्राहिम कालिया बेचैन हो उठा ।

उसके माथे पर पसीने की बूँदें चुहचुहा आयी थीं, उसने कुर्सी पर

पहलू बदला ।

"म... मुझे सोचने के लिये थोड़ा समय दो ।"

"ठीक है ।" कमाण्डर बोला- "मैं तुम्हें सोचने के लिये पांच मिनट का समय देता हूं । पांच मिनट के अंदर-अंदर तुम मुझे फैसला करके बता दो कि तुम मरना चाहते हो या फिर तुम ऑर्डिनेंस फैक्ट्री से मुझे छ: पेटी बम निकालकर देने के लिये तैयार हो ?"

इब्राहिम कालिया ने रूमाल निकाला और जल्दी-जल्दी अपने माथे का पसीना साफ किया ।

वह हद से ज्यादा आतंकित नजर आने लगा था ।

जब चार मिनट हो गये, तो वह कुर्सी छोड़कर उठ खड़ा हुआ और कमरे में इधर से उधर टहलने लगा ।

कमाण्डर ने भी उसके साथ-साथ कुर्सी छोड़ दी ।

वह हद से ज्यादा सावधान था ।

"तुम खड़े क्यों हो गये ?"

"एक मिनट !" इब्राहिम कालिया जल्दी से बोला- "एक मिनट ! मेरे दिमाग में ऑर्डिनेंस फैक्ट्री के अंदर से बम निकालने का एक तरीका आ रहा है ।"

"कैसा तरीका ?"

यही वो पल था, जब इब्राहिम कालिया ने अपनी असलियत दिखा दी ।

वहीं एक फ्लॉवर पॉट रखा था । इब्राहिम कालिया अद्वितीय फुर्ती से उस फ्लॉवर पॉट की तरफ झपटा और इससे पहले कि कमाण्डर कुछ समझ पाता, उसने फ्लॉवर पॉट के अंदर से छोटी सी पिस्टल निकाल ली ।

पिस्टल हाथ में आते ही उसने धांय-धांय दो गोलियां चलायीं ।

दोनों गोलिया कमाण्डर करण सक्सेना के कोल्ट रिवॉल्वर में जाकर लगीं और तत्काल रिवॉल्वर उसके हाथ से उछलकर दूर जा गिरा ।

सब कुछ इतनी बेपनाह तेजी से हुआ था कि कमाण्डर करण

सक्सेना हतबुद्ध सा उसे देखता रह गया ।

जबकि इब्राहिम कालिया अब जोर-जोर से खिलखिलाकर हँस रहा था ।

इस तरह मानो उसे हंसी का दौरा पड़ गया हो । मानों वह पागल हो गया हो ।

"तुम मुझे बेवकूफ समझते हो यंगमैन ।" इब्राहिम कालिया बुरी तरह हँसता हुआ बोला- "मैं तुम्हें अपने देश की बर्बादी में सहयोग दूंगा । हर्गिज नहीं । हर्गिज भी नहीं । यह ऑर्डिनेंस फैक्ट्री के चीफ का मकान है ।" इब्राहिम कालिया गर्व से बोला- "यहाँ ऐसी पिस्टलें जगह-जगह छिपी हुई हैं । मौत कहीं से भी तुम्हारे ऊपर झपट सकती थी ।"

"कभी-कभी ऐसा भी होता है कालिया !" कमाण्डर करण सक्सेना जल्दी नॉर्मल हो गया था- "कि इंसान जिसे अपनी फतेह समझता है, वही उसकी पराजय बन जाया करती है ।"

"चिंता मत करो ।" इब्राहिम कालिया ने और ज्यादा बुलन्द कहकहा लगाया- "अगर तुम इब्राहिम कालिया पर इसे अपनी फतेह समझ रहे हो, तो यह हण्ड्रेड परसेंट तुम्हारी पराजय ही होगी । तुम यहाँ सुलतान फौजी को मौत की सजा देने आये थे, लेकिन अब पाकिस्तान सरकार तुम्हें फाँसी के तख्ते पर लटकायेगी । अब तुम मरोगे ।"

कमाण्डर करण सक्सेना को पिस्टल से कवर किये-किये इब्राहिम कालिया वहीं रखे टेलीफोन की तरफ बढ़ा और फिर उसने टेलीफोन उठाया ।

"क्या करने जा रहे हो ?" करण सक्सेना आतंकित हुआ ।

"मैं अब आई.एस.आई. के हैडक्वार्टर फोन करूँगा ।" इब्राहिम कालिया गर्व से बोला- "कर्नल नासिर को फोन करूँगा । चिन्ता मत करो यंगमैन ! मैं तुम्हारे खून से अपने हाथ नहीं रंगने वाला । कर्नल नासिर ही अब तुम्हारी जिंदगी और मौत का फैसला करेंगे । मेरे फोन करने के सिर्फ दस मिनट बाद ही इस पूरी कोठी में आई.एस.आई.

के एजेंट ही एजेंट होंगे।"

"लेकिन अगर तुमने फोन किया।" कमाण्डर करण सक्सेना ने दांत किटकिटाते हुए धमकी दी- "तो यह तुम्हारी जिंदगी की सबसे भयंकर गलती होगी।"

"मैं ऐसी गलती हजार बार करना पसंद करूँगा।" इब्राहिम कालिया हँसा।

फिर सहमते हुए ही उसने टेलीफोन के नंबर डायल करने शुरु किये।

"रुक जाओ इब्राहिम कालिया।" करण सक्सेना चीखा।

"मुझे अब कोई नहीं रोक सकता।"

"मैं कहता हूँ, रुक जाओ।" कमाण्डर करण सक्सेना दरिंदे की तरह दहाड़ उठा।

"नहीं।"

उसी पल कमाण्डर के दिमाग की मांसपेशियों ने हरकत दिखा दी। फौरन उसके हैट की ग्लिप में फंसी दूसरी कोल्ट रिवॉल्वर निकलकर उसके हाथ में आ गयी और फिर धांय-धांय दो गोलियां चलीं।

दोनों गोलियां इब्राहिम कालिया की पिस्टल में जाकर लगीं।

चिंघाड़ा उठा कालिया।

पिस्टल उसके हाथ से उछलकर दूर जा गिरी।

धांय!

तत्काल एक गोली और चली।

इस बार टेलीफोन के परखच्चे उड़ गये।

कालिया दहशत से कई कदम पीछे हो गया और फटे-फटे नेत्रों से करण सक्सेना को देखने लगा, जिसके हाथ में बड़े करिश्माई ढंग से रिवॉल्वर आ चुकी थी।

"मैं तुम्हारी हत्या करना नहीं चाहता कालिया, क्योंकि मुझे तुमसे बम हासिल करने हैं।" कमाण्डर करण सक्सेना सांप की तरह फुंफकारा- "वरना अब तक गोली तुम्हारे भेजे के आर-पार हो चुकी

होती।"

कमाण्डर के शब्द पूरे भी न हुए थे कि तभी इब्राहिम कालिया ने फिर हरकत दिखायी।

वह एकाएक बैड की तरफ झपटा तथा फिर उसने गद्दे के नीचे से एक और पिस्टल निकाल ली।

पिस्टल हाथ में आते ही वह शेर की तरह कमाण्डर की तरफ घूमा।

धांय!

उसी पल कमाण्डर की रिवॉल्वर ने एक और शोला उगल दिया।

चीखा कालिया। गोली उसके बाजू में जाकर लगी। फौरन वहाँ से भलभल खून बहने लगा।

लेकिन इस बार उसने पिस्टल नहीं छोड़ी।

पिस्टल हाथ में लिये-लिये ही वो करण सक्सेना के ऊपर झपट पड़ा।

वह कमाण्डर करण सक्सेना के ऊपर कोई हमला कर पाता, उससे पहले ही करण सक्सेना ने दो प्रचण्ड घूँसे उसके चेहरे पर जड़े।

वह चीखता हुआ पीछे उलट गया।

लेकिन उलटते ही वो जम्प लेकर फिर सीधा हुआ और उसने धांय से एक फायर किया।

गोली कमाण्डर के कान को हवा देती हुई गुजरी।

उस पल कमाण्डर करण सक्सेना टाइगर क्लान के एक्शन में आ गया था।

वह हवा में उछला और उसने धड़ाक से एक प्रचण्ड लात इब्राहिम कालिया के पेट में मारी।

इब्राहिम कालिया के मुँह से पुनः पीड़ादायक चीख खारिज हुई और वो पेट पकड़कर दोहरा हो गया, लेकिन दोहरा होते समय उसने फिर गोली चलायी।

इस बार कमाण्डर का सिर तरबूज की तरह फटते-फटते बचा था

।

कमाण्डर ने फौरन छलांग लगाकर उसका पिस्टल वाला हाथ पकड़ लिया और उसके हाथ से पिस्टल पकड़कर छीननी चाही।

मगर इब्राहिम कालिया ने पिस्टल पर अपना हाथ और ज्यादा कस लिया।

उंगली सरसराती हुई दोबारा ट्रेगर तक पहुँची।

पिस्टल की उसी छीना-झपटी में ही एकाएक इब्राहिम कालिया का हाथ मुड़ गया था।

जैसे ही हाथ मुड़ा, उसी पल उससे ट्रेगर भी दब गया।

फौरन धांय से गोली चली।

भैंसे की तरह डकरा उठा कालिया।

वह गोली उसकी आंतों को फाड़ती हुई पार निकल गयी थी।

तभी बौखलाहट में ही उसने फिर ट्रेगर दबा दिया।

इस बार पिस्टल से जो गोली निकली, वो सीधे उसके दिल में जा घुसी।

जोर से डकराया इब्राहिम कालिया, उसके पूरे शरीर ने हवा में जम्प सी लगायी। दिल और पेट के अंदर से खून के फव्वारे छूटे। फिर जोर-जोर से खून की कई सारी उल्टी करता हुआ वह फर्श पर जा गिरा और गिरते ही ढेर हो गया।

कमाण्डर करण सक्सेना ने अपना सिर पकड़ लिया।

जो काम वह नहीं करना चाहता था, आखिरकार वही हो गया था
।

बम हासिल करने का जो इकलौता रास्ता उसके पास था, अब वही खत्म था।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना बेहद हताश-सी मुद्रा में इस समय एक कुर्सी पर बैठा था और डनहिल के छोटे-छोटे कश लगा रहा था।

इब्राहिम कालिया की लाश उस समय भी उससे थोड़े ही फासले

पर पड़ी थी और उसके चारों तरफ खून का तालाब सा बन गया था ।

कमाण्डर सन्न था । उसके दिमाग में खलबली सी मची हुई थी और वो सोच रहा था कि अब बम किस तरह हासिल किये जाये ?

तभी उसे बम हासिल करने का एक नया तरीका सूझा ।

बिल्कुल नया तरीका ।

वह एकदम कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया था ।

उसने सबसे पहले 'डनहिल' बुझाकर उसका टोटा अपने ओवरकोट की जेब में डाला ।

फिर वो बेपनाह फुर्ती से वहीं रखी एक टेलीफोन डायरेक्ट्री की तरफ झपटा ।

अगले ही पल उसने आनन-फानन उस डायरेक्ट्री में ऑर्डिनेंस फैक्ट्री का टेलीफोन नम्बर तलाश करना शुरु कर दिया ।

पांच मिनट तक वह डायरेक्ट्री के पन्ने पलटता रहा ।

शीघ्र ही उसे ऑर्डिनेंस फैक्ट्री का टेलीफोन नम्बर भी मिल गया था ।

नम्बर ढूंढने के बाद वो टेलीफोन की तरफ झपटा, जिसमें उसने कुछ देर पहले ही गोली मार दी थी ।

कमाण्डर करण सक्सेना ने उसका रिसीवर उठाकर कान से लगाया ।

उसने संतोष की गहरी साँस ली ।

उसमें डायल टोन आ रही थी ।

फोन चालू था ।

फोन चालू देखकर उसने ऑर्डिनेंस फैक्ट्री का नम्बर डायल किया ।

□□□

हर पल सस्पेंस का पल था ।

जबरदस्त सस्पेंस ।

योजना का पूरा खाका अब कमाण्डर करण सक्सेना के दिमाग में बिल्कुल साफ तौर पर खिंच चुका था। अब वह अगले कुछ मिनट के अंदर एक बेहद चौंका देने वाला खेल खेलने जा रहा था।

नम्बर मिलाने के बाद जल्दी दूसरी तरफ घण्टी जाने लगीं।

"हैलो !" फिर टेलीफोन लाइन पर एक अपरिचित आवाज़ उभरी- "अब्दुल स्पीकिंग !"

"ओह, अब्दुल !" कमाण्डर करण सक्सेना इस तरह चिहुंककर बोला, जैसे उस आवाज़ को वह वर्षों से पहचानता हो- "मैं इब्राहिम कालिया बोल रहा हूँ यंगमैन !"

कमाण्डर ने जान-बूझकर इब्राहिम कालिया का तकिया कलाम भी इस्तेमाल किया।

"ओह सर आप !" अब्दुल के लहजे में भी थोड़ी गरमजोशी आ गयी- "ल... लेकिन आपकी आवाज़ को क्या हुआ सर ? वह कैसे बदल गयी ?"

"मुझे थोड़ी ठण्ड लग गयी है यंगमैन !" कमाण्डर ने अपनी आवाज़ भर्रायी हुई बना ली- "इसलिये वह भारी हो गयी है।"

"ओह !"

"लेकिन एक जरूरी बात सुनो अब्दुल ! मैंने इसीलिये तुम्हें इतनी रात को डिस्टर्ब किया है।"

"कहिये सर, क्या बात है ?"

"बात बहुत ज्यादा कॉन्फिडेंशियल है।" कमाण्डर रहस्यपूर्ण स्वर में बोला, एकाएक उसकी आवाज़ भी काफी धीमी हो गई थी- "ध्यान से सुनो। कश्मीरी आतंकवादियों का एक ट्रेण्ड दस्ता आज रात चुपचाप बॉर्डर क्रॉस करके पाकिस्तान से हिन्दुस्तान पहुँचने वाला है, लेकिन उसके पास बमों की कुछ कमी है। मुझे उन लोगों को फौरन बम सप्लाई करने जाना है। वह लोग सिर्फ बमों की सप्लाई का ही इंतजार कर रहे हैं।"

"ओह, अब क्या करना है सर ?"

"करना कुछ भी नहीं है !" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "मैं

अभी फैक्ट्री पहुँच रहा हूँ। तुम फौरन छः पेटी बम निकालकर तैयार रखो।"

"ओके सर !" अब्दुल ने तत्परतापूर्वक कहा- "मैं अभी छः पेटी बम निकालकर तैयार रखता हूँ।"

"मैं पूरे एक घण्टे में फैक्ट्री पहुँच जाऊँगा यंगमैन !"

"ठीक है सर !"

□□□

उसके बाद कमाण्डर करण सक्सेना ने आनन-फानन कुछ काम और किये।

उस योजना को कार्यांवित करने में कमाण्डो ट्रेनिंग कमाण्डर करण सक्सेना के काफी काम आयी। कमाण्डो ट्रेनिंग में जासूसों को एक पपेट ट्रिक सिखाई जाती है। पपेट ट्रिक की यह विशेषता होती है कि मृत व्यक्ति को आप दूसरे लोगों के सामने जीवित शो कर सकते हैं।

करण सक्सेना ने उस रात इब्राहिम कालिया पर उसी 'पपेट ट्रिक' का इस्तेमाल किया। उसने सबसे पहले दौड़-दौड़कर लकड़ी की खपच्चियां इकट्ठी करनी शुरु कीं।

जब लकड़ी की काफी सारी खपच्चियां इकट्ठी हो गयीं, तो फिर उसने कोठी के अंदर से ही नायलोन की रस्सी के कुछ टुकड़े भी ढूंढ निकाले।

फिर उसने एक हैट और एक जोड़ी दस्ताने का भी उसी कोठी के अंदर से इंतजाम किया।

जब 'पपेट ट्रिक' में काम आने वाला वह सारा सामान इकट्ठा हो गया, तो फिर वह इब्राहिम कालिया की उस लाश के नजदीक पहुँचा, जो खून से लथपथ पड़ी थी।

फिर उसने इब्राहिम कालिया के खून से लथपथ सारे कपड़े उतारे
।

उसके बाद वह लाश को घसीटता हुआ बाथरूम के अंदर ले

गया, जहाँ फिर उसने लाश को पानी में खूब अच्छी तरह धोया तथा उसके बाद तौलिये से इब्राहिम कालिया के शव को रगड़कर पोंछा।

जल्द की लाश बिल्कुल फ्रेश हो गयी थी और अब उस पर खून का कहीं कोई दाग न था।

फिर कमाण्डर करण सक्सेना, इब्राहिम कालिया की लाश को गोद में उठाकर बाथरूम से बाहर ले आया और फिर उसे सोफे पर इस तरह बैठा दिया, जैसे वहाँ कोई जीवित व्यक्ति बैठा हो।

फिर उसने लाश के साथ कुछ महत्वपूर्ण काम और किये, जैसे उसने लाश की पीठ पर लकड़ी की वो लम्बी-लम्बी खपच्चियां नायलोन की डोरी से कसकर बांधी, ताकि मुर्दा जिस्म आगे को न झुक सके और वह एकदम सीधा रहे। ऐसी ही एक लकड़ी की खपच्ची उसने लाश की गर्दन में भी बांधी और कोहनियों से नीचे-नीचे दोनों हाथों में भी उसने लकड़ी की खपच्चियां बांधीं।

कुछ बहुत बारीक खपच्चियां उसने लाश की सभी उंगलियों में बांधीं।

फिर उसने नायलोन की अलग-अलग डोरियों से उन सभी खपच्चियों का इस तरह कॉम्बीनेशन किया कि अगर उस अंग से बंधी नायलोन की डोरी पकड़कर खींची जाये, तो वह अंग जिन्दा इंसान की तरह बड़े स्वाभाविक तरीके से हरकत कर सके।

इसी तरह उसने इब्राहिम कालिया के माथे पर भी नायलोन की डोरी कुछ इस तरह कसकर बांधी कि उसकी गर्दन को दायें-बायें मनचाही दिशा में घुमाया जा सके।

सब कुछ बड़ा करिश्माई था और यही 'पपेट ट्रिक' थी।

उस महत्वपूर्ण काम को अंजाम देने के बाद कमाण्डर करण सक्सेना ने वार्डरोब में से निकालकर इब्राहिम कालिया को उसके नये धुले हुए कपड़े पहनाये।

पैरों में मोजे और जूते पहनाये।

दोनों हाथें में दस्ताने पहनाये, ताकि उंगुलियों में बंधी खपच्चियां और नायलोन की डोरियां छिप सकें।

सिर पर हैट पहनाया, जिससे माथे पर बंधी डोरी छिप गयी ।

कुल मिलाकर कपड़े वगैरा पहनने के बाद अब इब्राहिम कालिया को देखकर कोई नहीं कह सकता था कि वह व्यक्ति मरा हुआ है ।

उस सारे काम को निपटाने में आधा घण्टे का समय लग गया ।

□□□

फिर कमाण्डर ने इब्राहिम कालिया का 'फैक्ट्री पास' और उसकी कार की चाबी अपनी जेब में रखीं ।

उसके बाद कमाण्डर, इब्राहिम कालिया को गोद में उठाकर कोठी से बाहर निकला ।

उस समय रात के ग्यारह बज रहे थे ।

इब्राहिम कालिया की सफेद कार बाहर पोर्च में ही खड़ी थी ।

कमाण्डर ने सफेद कार का ड्राइविंग डोर खोला और इब्राहिम कालिया की मृत देह को फ्रण्ट सीट पर ही बिठा दिया ।

इब्राहिम कालिया को बिठाने के बाद वह खुद भी उसके बराबर में ही ड्राइविंग सीट पर बैठ गया था ।

अगले ही पल सफेद कार रात के अंधेरे में ऑर्डिनेंस फैक्ट्री की तरफ तूफानी गति से दौड़ रही थी ।

□□□

सिर्फ बम हासिल करने के लिये कमाण्डर को जितनी मेहनत करनी पड़ रही थी, वह वाकई बहुत हैरतअंगेज बात थी ।

ऑर्डिनेंस फैक्ट्री से थोड़ा पहले ही कमाण्डर करण सक्सेना ने सफेद कार सड़क के किनारे रोक दी ।

उसने इब्राहिम कालिया की मृत देह को कार के स्टेयरिंग के सामने बिल्कुल इस तरह बिठाया, जैसे वही कार चला रहा हो ।

इस बार वह खुद कार के नीचे पायदान पर बैठ गया । कार के शीशे बिल्कुल सामने उस जगह ले गया, जहाँ गेट पर चार गार्ड खड़े थे ।

गार्डों के नजदीक ही उसने कार रोकी।

कार रोकते ही कमाण्डर करण सक्सेना फौरन इब्राहिम कालिया के पीछे पहुँच गया था।

उसके कोट के अंदर से वो सभी नायलोन की डोरियां नीचे झांक रही थीं, जिनसे उसकी मृत देह का जीवित व्यक्तियों की तरह संचालन किया जा सकता था।

कार रोकते ही कमाण्डर करण सक्सेना ने सबसे पहले ड्राइविंग डोर का काला शीशा नीचे सरकाया।

यही वो पल था, जब एक गार्ड लम्बे डग रखता हुआ कार की तरफ बढ़ा।

काला शीशा नीचे सरकाते हुए उसने टॉर्च का प्रकाश इब्राहिम कालिया के चेहरे पर डाला।

"सलाम साहब !" फिर वो थोड़े तेज स्वर में बोला।

"सलाम !" कमाण्डर करण सक्सेना ने नीचे पायदान पर बैठे-बैठे भर्राये स्वर में जवाब दिया, उसी पल इब्राहिम कालिया की गर्दन झटके से गार्ड की तरफ घूम गयी थी। इसलिये ऐसा लगा, जैसे वही बोला हो- "कैसे हो यंगमैन ?"

"अच्छा हूँ साहब !" गार्ड ने सैल्यूट करने के बाद कहा था।

"यहाँ कोई गड़बड़ तो नहीं ?"

"नहीं साहब, कोई गड़बड़ नहीं।" गार्ड बोला- "हाँ, आज आपको इतनी रात गये यहाँ देखकर जरूर हैरानी हो रही है साहब ! कैसे आना हुआ ?"

"एक बहुत जरूरी काम पड़ गया था।" कमाण्डर करण सक्सेना ने भर्राये स्वर में ही कहा- "कश्मीरी आतंकवादियों का एक दस्ता आज रात ही बॉर्डर क्रॉस करके हिन्दुस्तान जाने वाला है, उसी दस्ते को फौरन बमों की सप्लाई करनी थी। इसीलिये इतनी रात गये यहाँ आना पड़ गया।"

"अब आप बम लेकर बॉर्डर पर जायेंगे साहब ?"

"नहीं।" इब्राहिम कालिया की गर्दन इंकार में हिली- "बॉर्डर पर

नहीं । इस्लामाबाद में ही एक जगह वह आतंकवादी मेरा इंतजार कर रहे हैं । यहाँ आने से पहले मैंने अब्दुल को भी फोन कर दिया था, ताकि वह बमों की पेटियां तैयार रखे । जल्दी दरवाजा खोलो, अब्दुल मेरा इंतजार कर रहा होगा । मुझे कार के अंदर बमों की पेटियां लदवानी हैं ।"

"अभी खोलता हूँ साहब !" गार्ड मुड़ गया ।

"क्या बात हैं साहब !" तभी दूसरा गार्ड बोला- "आज तो आपने हैट वगैरह ओढ़ रखा है ।"

"हाँ, मुझे कुछ ठण्ड लग गयी है ।" कमाण्डर ने एक डोरी खींचकर इब्राहिम कालिया के चेहरे की दिशा थोड़ी और चेंज की- "देख नहीं रहे, मेरी आवाज़ भी कुछ बदली हुई है ।"

"हाँ, साहब !" गार्ड का हैरान स्वर- "वाकई आपकी आवाज़ काफी बदली हुई है ।"

"और ज्यादा ठण्ड न लगे, इसीलिये मैंने आज अपने हाथों में दस्ताने भी पहन रखे हैं, यह देखो !" इब्राहिम कालिया के दस्तानेयुक्त हाथ बड़े स्वाभाविक अंदाज में हवा में उठकर लहराये ।

"वाकई साहब, आज तो आपने अपनी पूरी पैकिंग की हुई है ।"

"चलो अब जल्दी दरवाजा खोलो ।" कमाण्डर करण सक्सेना, इब्राहिम कालिया के पीछे बैठा-बैठा पुनः भर्राये स्वर में बोला- "और सुनो ।"

"क्या है साहब ?"

"पहले मेरा पास तो देख लो ।"

कमाण्डर ने इब्राहिम कालिया के दायें हाथ की उंगलियों में 'पास' अटका दिया था । फिर उसने पीछे से एक डोरी खींची, तो हाथ 'पास' सहित ऊपर उठ गया ।

"कैसी बातें करते हो साहब !" गार्ड दांत चमकाकर हँसा- "भला आपका भी कहीं पास देखा जायेगा ।"

"नहीं यंगमैन ! नियम, नियम है । वैसे भी कम-से-कम रात के समय तो किसी को भी इस तरह अंदर मत जाने दिया करो । चाहे

वह पाकिस्तान का प्रेसीडेंट ही क्यों न हो।"

"आप मजाक अच्छा कर लेते हैं साहब !"

गार्ड ने टॉर्च का प्रकाश औपचारिक रुप से 'पास' पर डाला और फिर वह पहले वाले गार्ड के साथ-साथ गेट खोलने आगे की तरफ बढ़ गया।

पीछे कमाण्डर करण सक्सेना ने ड्राइविंग डोर का काला शीशा दोबारा ऊपर चढ़ा लिया था।

जैसे ही ऑर्डिनेंस फैक्ट्री का गेट खुला, कमाण्डर फौरन कार चलाता हुआ अंदर ले गया।

सब कुछ बहुत आसानी से निपट गया था।

□□□

ऑर्डिनेंस फैक्ट्री के बीच में एक काफी बड़ी ग्राउण्ड खाली पड़ा था और दोनों तरफ बड़े-बड़े हॉल थे, जिनके अंदर हथियार बनते थे।

सफेद कार खाली ग्राउण्ड में रेंगती हुई अभी थोड़ी ही दूर गयी होगी कि तभी करण सक्सेना ने जर्किन पहने और सिर पर मफलर लपेटे एक आदमी को उसी दिशा में दौड़कर आते देखा।

जरुर वही अब्दुल था।

कमाण्डर ने उसके नजदीक कार रोक दी तथा फिर ड्राइविंग डोर का काला शीशा दोबारा नीचे सरकाया।

तब तक अब्दुल भी खिड़की के नजदीक पहुंच गया था।

"हैलो यंगमैन !" इब्राहिम कालिया की गर्दन अब तेजी से अब्दुल की तरफ घूमी।

क्योंकि रात का समय था, इसलिये इब्राहिम कालिया का निष्प्राण चेहरा किसी को साफ तौर पर नजर नहीं आ रहा था।

"हैलो सर, मैं काफी देर से आप ही का इंतजार कर रहा था।"

"हाँ।" कमाण्डर करण सक्सेना नीचे बैठा-बैठा भर्राये स्वर में बोला- "मुझे आने में थोड़ी देर हो गयी। बम की पेटियां तैयार है ?"

"हाँ, साहब ! जैसा आपने कहा था, उसी के मुताबिक मैंने छः पेटी बम तैयार कर दिये हैं।"

"गुड !"

उसी पल कमाण्डर ने एक डोरी खींची, तो इब्राहिम कालिया का हाथ कार के इग्नीशन की तरफ बडे स्वाभाविक अंदाज में बढ़ा। जबकि सच्चाई ये थी कि उसी पल कमाण्डर का हाथ भी अंधेरे का फायदा उठाकर चुपचाप इग्नीशन की तरफ बढ़ गया था। उसने वहाँ से चाबी निकाली और फिर चाबी इब्राहिम कालिया की उंगलियों में फंसा दी।

उसके बाद पीछे से नायलोन की एक डोरी खींची। फौरन इब्राहिम कालिया का चाबी वाला हाथ अब्दुल की तरफ बढ़ा।

"यह लो चाबी !" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "बमों की सभी पेटियां पीछे कार की डिक्की में रख दो।"

"ठीक है सर, मैं अभी रखता हूँ।"

अब्दुल चाबी लेकर पीछे की तरफ बढ़ गया।

□□□

यही वो पल था, जब कमाण्डर करण सक्सेना भी फौरन हरकत में आ गया था।

वह कार का दूसरी साइड वाला दरवाजा खोलकर नीचे उत्तर गया। नीचे उतरते ही वो अंधेरे का लाभ उठाकर चुपचाप सामने ही बने एक हॉल में जा घुसा।

वहाँ राइफलों और बमों का विशाल अम्बार लगा था।

कमाण्डर ने तुरंत लपककर उन बमों के अम्बार में से कुछ टाइम-बम निकाल लिये और फिर आनन-फानन उन सभी बमों के अंदर पन्द्रह-पन्द्रह मिनट बाद के टाइम सेट किये।

उसके बाद कमाण्डर ने एक महत्वपूर्ण काम और किया। उसने वह टाइम-बम ऑर्डिनेंस फैक्ट्री के विभिन्न हॉल कमरों के अंदर रख दिये।

फिर वह जिस तरह सफेद कार से बाहर निकला था, उसी तरह दौड़कर चुपचाप कार के अंदर जा घुसा।

इस बीच अब्दुल ने डिक्की के अंदर बमों की पेटियां भी रख दी थीं। पेटियां रखने के बाद उसने डिक्की पहले की तरह ही बंद कर दी।

"यह लीजिए सर।" फिर वो चाबी लेकर वापस ड्राइविंग डोर के पास आया- "मैंने पेटियां डिक्की के अंदर रख दी हैं।"

"वैरी गुड !"

इब्राहिम कालिया का हाथ अब्दुल के हाथ की तरफ बढ़ा, उसकी उंगलियां मुड़ीं और फिर उसने चाबी पकड़ ली।

"मैं अब चलता हूँ यंगमैन !" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "आतंकवादी बेसब्री से मेरा इंतजार कर रहे होंगे।"

"ठीक है सर !"

इब्राहिम कालिया का चाबी वाला हाथ अब अंदर आ गया था।

फिर कमाण्डर ने काला शीशा दोबारा ऊपर सरकाया।

चाबी लगाकर कार स्टार्ट की, अगले ही पल कार तूफानी गति से ऑर्डिनेंस फैक्ट्री के मेन गेट की तरफ दौड़ पड़ी।

□□□

कार अभी फैक्ट्री से कुछ किलोमीटर दूर ही गयी होगी कि तभी वहाँ तबाही मच गयी।

भयंकर और दहला देने वाली ऐसी तबाही, जिसने एक बार फिर पूरे पाकिस्तान में हड़कम्प मचा दिया।

एक के बाद एक ऑर्डिनेंस फैक्ट्री के हॉल कमरों में रखे टाइम बम फट गये थे। वह टाइम बम फटे, तो उनके इर्द-गिर्द रखी अन्य विस्फोटक सामग्री में भी ब्लास्ट होने लगे।

देखते-ही-देखते फैक्ट्री में ऐसे भयंकर धमाके गूंजने लगे, जैसे बॉर्डर पर हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के बीच युद्ध छिड़ गया हो।

वहाँ मौजूद गार्डों ने जान बचाकर भागने का प्रयास किया।

लेकिन धमाके इतने जबरदस्त थे कि कोई वहाँ से न भाग सका ।

सौ से भी ज्यादा गार्ड उन विस्फोटों में मारे गये ।

पूरी ऑर्डिनेंस फैक्ट्री तबाह हो गयी ।

करोड़ों रुपये के हथियार और उनसे भी ज्यादा मूल्यवान हथियार बनाने की मशीनों के परखच्चे उड़ गये ।

यह कमाण्डर का पहला तमाचा था, जो उसने आई.एस.आई. के मुँह पर कसकर मारा था ।

वह कर्नल नासिर जैसे दरिंदों के मुँह पर भी खुला तमाचा था, जो यह सोचते हैं कि तबाही सिर्फ वहीं फैला सकते हैं । कोई और जवाब देना ही नहीं जानता ।

□□□

सुबह होने तक आर्डिनेंस फैक्टी की उस भयंकर तबाही की खबर पूरे पाकिस्तान में फैल चुकी थी ।

उस खबर ने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति और कर्नल नासिर जैसे सभी दिग्गजों के छक्के छुड़ा दिये ।

फौरन आई.एस.आई. ऑफिसर्स के साथ-साथ हैदर अली जैसे फौज के बड़े-बड़े अफसरों की एक मीटिंग हुई । सुलतान फौजी, जिसने सारी रात आई.एस.आई. के हैडक्वार्टर में ही गुजारी थी- उस खबर को सुनकर वह भी बौखला गया ।

"कमाण्डर करण सक्सेना के हौंसले दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे हैं ।" सुलतान फौजी बेहद आतंकित लहजे में बोला- "पहली बार उसने सिर्फ उन्नीस गार्ड मारे थे, सिर्फ उन्नीस ! लेकिन इस बार उसने सौ से भी ज्यादा गार्ड मार डाले हैं और करोड़ों का नुकसान किया है ।"

"वाकई यह कोई मामूली घटना नहीं है ।" हैदर अली भी आन्दोलित स्वर में बोला- "पाकिस्तान का इतिहास गवाह है कि पिछले बावन सालों में आज तक कभी कोई ऑर्डिनेंस फैक्ट्री इस तरह तबाह नहीं हुई । किसी ऑर्डिनेंस फैक्ट्री को इस तरह अकेले

घुसकर बर्बाद कर डालना मजाक बात भी नहीं । लेकिन बावन सालों में पहली बार कमाण्डर ने यह काम कर दिखाया है ।"

"सिर्फ उसने फैक्ट्री ही तबाह नहीं की या गार्ड ही नहीं मारे ।" एक आई.एस.आई. एजेंट सांप की तरह फुंफकार कर बोला- "बल्कि उसने ऑर्डिनेंस फैक्ट्री के चीफ इब्राहिम कालिया को भी मार डाला है । उसकी लाश भी बरामद हो चुकी है ।"

"हाँ, इब्राहिम कालिया की लाश को मैंने भी देखा है ।" दैत्य जैसे जिस्म वाला कर्नल नासिर अपनी धधकती आंखों पर हाथ फेरता हुआ बोला- "यहाँ आने से पहले ही मैंने उसकी लाश को देखा है । काफी बुरी हालत में उसकी लाश बरामद हुई है । उसके मुर्दा जिस्म में लकड़ी की खपच्चियां और नायलोन की डोरियां लिपटी हुई थीं । उसकी लाश से साबित होता है कि कमाण्डर ने ऑर्डिनेंस फैक्ट्री में घुसने के लिये इब्राहिम कालिया के मृत जिस्म को बाखूबी इस्तेमाल किया और उसके अंगों की 'पपेट ट्रिक' द्वारा हरकत देकर यह शो किया कि वह जिंदा है । पपेट ट्रिक- आप सब काबिल लोग हैं और मैं समझता हूँ कि तक़रीबन आप सभी जानते होंगे कि 'पपेट ट्रिक' क्या होती है ?"

"वाकई !" पपेट ट्रिक का नाम सुनकर एक ऑफिसर के नेत्र फट पड़े थे- "यह कमाण्डर बहुत खतरनाक आदमी है । खतरनाक भी और तेज दिमाग भी ।"

"मुझे तो इस घटना से भी ज्यादा अब एक और बात का डर सता रहा है ।" कर्नल नासिर बोला ।

"क... किस बात का डर ?"

"ऑर्डिनेंस फैक्ट्री के ज़बरदस्त ब्लास्ट में सिर्फ एक ही आदमी बचा था ।" कर्नल नासिर आगे को झुककर बोला- "और वह था- अब्दुल ! यह बात अलग है कि अब्दुल भी उस काण्ड में काफी जख्मी हो गया था और दिन निकलने से पहले ही उसकी भी मौत हो गयी, लेकिन मरने से पहले उसने आई.एस.आई. को अपना बयान दे दिया था ओर वो बयान काफी हंगामाखेज था ।"

"ऐसा क्या बयान था ?"

"अब्दुल ने मरने से पहले बताया ।" कर्नल नासिर बोला- "कि कमाण्डर करण सक्सेना ऑर्डिनेंस फैक्ट्री से छः पेटी बम ले गया था और वह सभी बम बहुत जबरदस्त विस्फोटक फौजी बम थे ।"

"छः.. छः पेटी बम !" हैदर अली के मुँह से सिसकारी छूटी ।

"हाँ ।"

"अल्लाह ! य...यानि कमाण्डर के इरादे अभी और ज्यादा खतरनाक है । वो अभी कहीं और बड़ी तबाही मचायेगा ।"

"ऐसा ही मालूम होता है ।"

"म... मुझे तो अपना डर सता रहा है ।" सुलतान फौजी के शरीर में कंपकंपी दौड़ी । उसने अपने कंधे पर पड़े बालों को पीछे झटका- "व... वह मुझे नहीं छोड़ेगा । जो आदमी इतना बड़ा हंगामा कर सकता है, वह मुझे तो किसी हालत में नहीं छोड़ेगा । हर्गिज भी नही छोड़ेगा ।"

□□□

अभी आई.एस.आई. के हैडक्वार्टर में वो हंगामाखेज मीटिंग चल रही थी कि तभी एक और जबरदस्त घटना घटी ।

कर्नल नासिर को उसी मीटिंग के दौरान रिपोर्ट मिली कि थोड़ी देर पहले ही कमाण्डर करण सक्सेना ने 'पाकिस्तानी फौज' के ट्रेनिंग सैंटर में घुसकर कोई एक दर्जन बम बलास्ट कर दिये, जिसमें दो हजार से भी ज्यादा पाकिस्तानी फौजी मारे गये ।

"द... दो हजार से भी ज्यादा पाकिस्तानी फौजी !" कर्नल नासिर के शरीर में सिहरन-सी दौड़ गयी ।

रिपोर्ट में आगे बताया गया, वो खूनी ताण्डव रचने के बाद कमाण्डर करण सक्सेना वहाँ से सकुशल भाग निकला था ।

कर्नल नासिर और मीटिंग में मौजूद तमाम लोग अभी उस सदमे से उभर भी नहीं पाये थे कि तभी एक और हृदय विदारक रिपोर्ट मिली ।

फौज के ट्रेनिंग सेंटर के पास ही पाकिस्तान का एक बहुत बड़ा

मिसाइल सैंटर था, जिसे चीन के सहयोग से बनाया गया था और उसे बनाने में कई अरब रूपये की लागत आयी थी ।

कर्नल नासिर को रिपोर्ट मिली कि एक-के-बाद एक असंख्य बम ब्लास्ट के कारण उस पूरे 'मिसाइल सेंटर' की भी धज्जियां उड़ गयी थीं ।

इतना ही नहीं, वहाँ भी पाँच सौ से ज्यादा पाकिस्तानी फौजी मारे गये ।

जबकि कमाण्डर करण सक्सेना वहाँ से भी बचकर भाग निकला था ।

□□□

"अब तो हद हो चुकी है- हद !" कर्नल नासिर गुस्से में दहाड़ उठा- "कमाण्डर करण सक्सेना हर पल खतरनाक होता जा रहा है । अगर उसका यही हाल रहा, तो वह बहुत जल्द पूरे इस्लामाबाद को खण्डहर बना देगा । खण्डहर ! वह अब तक हमारा बेपनाह नुकसान कर चुका है ।"

"मेरी तो रिपोर्ट सुन-सुनकर ही हालत खराब हो रही है ।" सुलतान फौजी की कंजी आँखों में भी साफ-साफ दहशत मंडरा रही थी- "म... मेरी किस्मत अच्छी थी, जो एक बार उसके सामने पड़ने के बावजूद मैं जिंदा बच गया । वरना वह तो पहली बार में ही मेरी धज्जियां उड़ा देता ।"

"कर्नल साहब !" एक फौजी ऑफिसर एक-एक शब्द चबाता हुआ कर्नल नासिर से बोला- "हमें जल्दी कुछ करना चाहिये- जल्दी ! क्योंकि अगर उसे ज्यादा समय मिल गया, तो वह सचमुच इस्लामाबाद में तबाही फैलाकर रख देगा ।"

"लेकिन सवाल ये है कि मैं क्या कर सकता हूँ ?" कर्नल नासिर झल्ला उठा- "हममें से कौन जानता है कि वो अब शैतान कहाँ है ? कोई नहीं जानता । कोई भी नहीं ।"

□□□

कर्नल नासिर की जबान से निकले वो शब्द पूरे ही हुए थे कि तभी धड़ाक से उस विशाल हॉल का दरवाजा खुला, जिसमें वो हंगामाखेज मीटिंग चल रही थी।

फिर एक आई.एस.आई. एजेंट लम्बे-लम्बे कदम रखता हुआ बेहद बौखलाई हुई-सी अवस्था में कर्नल नासिर की तरफ बढ़ा।

उस एजेंट के हाथ में एक मोबाइल फोन था।

"यह क्या बद्तमीजी है ?" कर्नल नासिर दहाड़ उठा- "मालूम नहीं, एमरजेंसी मीटिंग चल रही है।"

"सर !" आई.एस.आई. एजेंट ने बड़े तत्पर अंदाज में कहा- "कमाण्डर करण सक्सेना का फोन है, वह फौरन आपसे बात करना चाहता है।"

"क... कमाण्डर !"

ऐसा लगा, जैसे पूरे हॉल में एटम बम फट गया हो।

सब उछल पड़े।

सुलतान फौजी तो अपनी कुर्सी से इस तरह उछलकर खड़ा हुआ था, जैसे कमाण्डर वहीं आ धमका हो।

उसके दायें कान में लटका पीतल का कुण्डल और ज्यादा जोर-जोर से हिलने लगा।

जबकि कर्नल नासिर ने अब आई.एस.आई. एजेंट के हाथ से फोन झपट लिया था।

हैलो-कमाण्डर !" कर्नल नासिर शेर की तरह दहाड़ा- "हाँ, मैं कर्नल नासिर बोल रहा हूँ। बोलो, क्या कहना चाहते हो तुम ?"

"कर्नल नासिर !" कमाण्डर ने फौरन नफरत से दांत किटकिटाये- "हिन्दुस्तान में रहते हुए भी तुम्हारा नाम काफी सुना था कर्नल ! तुम्हारी दरिन्दगी के कई हिस्से सुने थे।"

"कैसे किस्से ?" पुनः दहाड़ा कर्नल नासिर।

"जैसे तुम हिन्दुस्तानियों से नफरत करते हो। जैसे तुम हमेशा

हिन्दुस्तान को गुलाम देखना चाहते हो। जैसे तुम 1971 के युद्ध के बाद बीस हिन्दुस्तानियों के खून से नहाये थे और तब तुमने खुलकर अट्टहास किया था।"

"तुम कहना क्या चाहते हो ?"

"मैं तुम्हें तुम्हारी औकात याद दिला रहा हूँ कर्नल नासिर !" कमाण्डर करण सक्सेना दृढ़ शब्दों में बोला- "मैं तुम्हें यह बता रहा हूँ कि इंसान जैसे बीज बोता है, उसे हालात की दरांती से वैसी ही फसल काटनी पड़ती है। सुलतान फौजी ने मुम्बई में जो खून की होली खेली थी, यह सब अभी तो उसका बहुत छोटा-सा नमूना है।"

"यानि तुम बदला ले रहे हो ?" कर्नल नासिर फुंफकारा।

"तुम इसे बदला भी समझ सकते हो।" कमाण्डर ने बे-हिचक कहा- "वैसे मेरी कोई इच्छा नहीं है कि मैं शैतान की बराबरी करूँ। मैंने तुम्हारे सत्ताइस-अट्ठाइस सौ आदमी मार डाले हैं, लेकिन अभी भी मेरा कोई टारगेट नहीं है कि मैं पांच हजार की गिनती पूरी करूँ। मेरा असली मकसद सुलतान फौजी को सजा देना है और मैं अपने उस मकसद को पूरा करके ही रहूँगा।"

"सुलतान फौजी।" हँसा कर्नल नासिर- "तुम उस तक कभी नहीं पहुँच पाओगे बेवकूफ।"

"अब मेरी पूरी कोशिश सुलतान फौजी तक ही पहुँचने की होगी।" कमाण्डर बोला- "तुम उसे चाहे कहीं भी छिपा लो कर्नल, लेकिन उसे तुम मरने से नहीं बचा पाओगे। हाँ, अब दिल थामकर एक आखिरी खबर और सुनो।"

"कैसी खबर ?"

"तुम्हारे आई.एस.आई. हैडक्वार्टर से थोड़ा फासले पर ही पाकिस्तान का एक सबसे बड़ा 'रक्षा अनुसंधान केन्द्र' है, जहाँ पाकिस्तानी वैज्ञानिक नये-नये हथियारों पर रिसर्च करते रहते हैं।"

"ब... बिल्कुल है।" कर्नल नासिर की आवाज़ कंपकंपा उठी- "व... वहाँ क्या किया है तुमने ?"

"कुछ नहीं किया।" कमाण्डर हँसकर बोला- "मैंने बस वहाँ दो

दर्जन शक्तिशाली टाइम-बम फिट कर दिये हैं, जो बस किसी भी क्षण फटने वाले हैं। बहुत जल्दी तुम्हें वहाँ हुई बर्बादी की सूचना भी मिल जायेगी।"

"न... नहीं।" कर्नल नासिर पागलों की तरह चीख उठा- "नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकते कमाण्डर !"

"अफसोस, मैंने ऐसा कर दिया है कर्नल !" कमाण्डर करण सक्सेना पहले की तरह ही हँसा- "और यूँ पागल मत बनो। अभी तुमने सुलतान फौजी की सुरक्षा का भी इंतजाम करना है। फिर कहूँगा, अब उसकी बारी है। वैसे भी आई.एस.आई. का हैडक्वार्टर सुलतान फौजी की सुरक्षा के लिये कोई ज्यादा बेहतर जगह नहीं है। अलविदा कर्नल, अलविदा।"

कमाण्डर करण सक्सेना के अंतिम शब्द नासिर के दिल-दिमाग पर बिजली की तरह गड़गड़ाकर गिरे थे।

य... यानि कमाण्डर जानता था कि सुलतान फौजी इस समय आई.एस.आई. हैडक्वार्टर में है ?

कर्नल नासिर जैसे पत्थरदिल आदमी के भी पसीने छूट पड़े।

घबरा गया वो।

□□□

फिर वह आनन-फानन दोबारा टेलीफोन की तरफ झपटा था, ताकि रक्षा अनुसंधान केन्द्र में फोन मिला सके और वहाँ होने वाली बर्बादी को रोक सके।

वह नम्बर डायल कर पाता, उससे पहले ही दूसरी तरफ से घण्टी बज उठी।

फोन नजदीक के पुलिस स्टेशन से था।

सूचना दी गयी कि 'रक्षा अनुसंधान केन्द्र' की पूरी इमारत बम बलास्ट में ध्वस्त हो गयी थी। वहाँ मौजूद सारे गार्ड मार गये।

इतना ही नहीं अनुसंधान केन्द्र में उस समय पाकिस्तान के सौ बेहतरीन वैज्ञानिक काम कर रहे थे, वह सब भी उस बम-ब्लास्ट में

शहीद हो गये ।

कर्नल नासिर के मुँह से तेज सिसकारी छूट गयी ।

मोबाइल फोन उसके हाथ से फिसलकर धड़ाम से नीचे जा गिरा ।

***



7. रज़िया की यादें

रजिया, कमाण्डर के उन तमाम हंगामों से नावाकिफ नहीं थी ।

उसने तबाही की वो सारी खबरें पाकिस्तानी टी.वी. पर बड़े ध्यान से सुनी थीं और देखा था कि पाकिस्तान प्रशासन उन घटनाओं के बाद कितना बौखला गया है ।

पाकिस्तानी प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के इंटरव्यू बार-बार टीवी पर प्रसारित किये जा रहे थे । वह आम जनता को दिलासा दे रहे थे कि बहुत जल्द कमाण्डर करण सक्सेना नाम की उस दहशत को खत्म कर दिया जायेगा ।

बहुत जल्द कमाण्डर करण सक्सेना की लाश इस्लामाबाद के किसी चौराहे पर पड़ी होगी। किसी नाली में पड़ी होगी। किसी गंदे गटर में पड़ी होगी।

ऐसे तथा ऐसे और भी अनेक आश्वासन।

रजिया हतप्रभ थी।

चौंकी हुई थी।

वह यकीन नहीं कर पा रही थी कि एक अकेला आदमी इतना बड़ा हंगामा भी कर सकता है।

इतना बड़ा हंगामा, जो पूरी गवर्नमेंट हिल जाये।

टी.वी. पर समाचार देखते-देखते एकाएक रजिया को 'अर्जुन ठक्कर' की याद आने लगी।

अर्जुन ठक्कर!

उसका भाई।

उसका मुँहबोला भाई, लेकिन जिसने सगे भाई से भी ज्यादा बढ़कर अपना फर्ज निभाया था।

जो कमाण्डर करण सक्सेना की तरह ही बहादुर था।

बिल्कुल उसी की तरह दिलेर! और जिसकी मौत का इंतकाम लेने के लिये ही वो अब पाकिस्तान में मौजूद थी।

अर्जुन ठक्कर की याद आते-आते रजिया के दिमाग ने अतीत की तरफ़ छलांग लगा दी।

अतीत!

जिसकी सुनहरी किताब में बहुत सारी यादें बंद थीं।

ढेर सारी खुशियां बंद थी, तो ढेर सारे गम भी उसी किताब में बंद थे।

□□□

रजिया को सबसे पहले अपने 'अब्बा' की याद आयी।

अब्बा!

इंसान की जिंदगी में यह दर्जा बहुत बुलन्द होता है। लेकिन

किस्मत की मार, रजिया को अब्बा के रूप में भी एक ऐसा शैतान आदमी मिला, जो शराबी था। नाकारा था। अय्याश था। सारे ऐब उसके अंदर भरे हुए थे।

बाप के फर्ज को तो उसने जिंदगी में कभी समझा ही नहीं।

शायद इसीलिये जब रजिया जवान हुई, तो उसने उसके हाथ पीले करने की बजाय उसे एक बैंक ड्राफ्ट की तरह इस्तेमाल किया और एक बूढ़े सेठ के हाथों एक लाख में बेच डाला। उसका सौदा कर डाला। सेठ भी ऐसा किंग-कांग था कि अगर कोई उसमें फूंक मार दे, तो वह कागज की तरह उड़ जाये। वह चलता था, तो पूरी बॉडी कीर्तन करती थी। कपड़े उतारता था, तो बिना एक्स-रे मशीन के ही अंदर के सारे अंजर-पंजर नजर आते थे। हँसता था, तो मुँह का ऐसा भूगोल नजर आता, जिसमें दांत नाम की शायद ही कोई चीज हो।

पता नहीं क्या सोचकर उसने एक कड़क जवान और तूफानी दरिया की तरह मचलते यौवन वाली लड़की को अपने गले में बांध लिया था।

फिर भी वो रजिया को जबरदस्ती अपने घर ले आया था।

लेकिन पहली ही रात जब वो अपना पोपला मुँह चमकाता हुआ रजिया की तरफ बढ़ा, तो रजिया ने जवान घोड़ी की तरह उसके सीने पर ऐसी कसकर दुलत्ती मारी कि वो जंगली भैंसे की तरह डकराता हुआ सीधा कुर्सी में जा घुसा।

उसके बाद रजिया वहाँ से भागी, तो फिर भागती ही चली गयी।

□□□

यह भी इत्तेफाक ही है कि तब शहर के हालात खराब थे। साम्प्रदायिक झगड़े के आसार बने हुए थे।

ऐसा लगता था कि किसी भी क्षण शहर में हिन्दू-मुस्लिम फसाद हो जायेगा।

शहर में अमन चैन बना रहे, इसीलिये बॉर्डर से फोर्स भी बुला ली

गयी थी।

शहर में जगह-जगह फौजियों के कैंप लगे थे।

रजिया उस रंगीन मिजाज बूढ़े के घर से भागी, तो फिर सड़क पर बेहताशा भागते हुए सीधे एक फौजी कैम्प में जा घुसी थी।

फौजी कैम्प में घुसते ही उसे मालूम हुआ कि वह बूढ़ा भी उसके पीछे-पीछे ही दौड़ा चला आ रहा था और लगभग उसके साथ-साथ ही वो भी उस फौजी कैंप के अंदर घुसा।

बूढ़े को देखते ही रजिया के मुँह से दहशतनाक चीख निकल गयी।

वह डरकर एक फौजी के चौड़े-चकले सीने से जा चिपटी थी।

वह छः फुट से भी लम्बे कद का गुबरैल जवान था। भरी-भरी मूंछे थी और फौज की वर्दी उसके बदन पर यूँ जंच रही थी, जैसे वह बदन खासतौर पर उसी वर्दी के लिये बना हो।

वही अर्जुन ठक्कर था।

अर्जुन ठक्कर के सीने से लिपटते ही रजिया ने रोना शुरु कर दिया और एक ही सांस में उसे अपनी पूरी व्यथा सुना डाली।

रजिया की व्यथा सुनते ही अर्जुन ठक्कर की आँखें एकदम दहकता अंगारा बन गयी थीं।

उसने रजिया को अपने पीछे कर लिया तथा फिर भस्म कर देने वाली नजरों से घूरता हुआ वह बूढ़े की तरफ बढ़ा।

"ह... हमारे बीच में मत जाओ।" खौफ से पत्ते की तरह कांप गयी बूढ़े की आवाज़- "य... यह मियां-बीवी का मामला है।"

"लेकिन तुम इसे जबरदस्ती अपनी बीवी नहीं बना सकते।" अर्जुन ठक्कर गरज उठा।

"क्यों नहीं बना सकता ?" बूढ़ा भी गुर्राया- "आखिर इसके बाप ने शादी करके इसे मेरे साथ भेजा है। अब यह मेरी है। सिर्फ मेरी। अब इसे वही करना होगा, जो मैं इससे कहता हूँ।"

"यह कुछ नहीं करेगी।"

"लेकिन तुम कौन होते हो, हम दोनों के बीच में बोलने वाले ?"

बूढ़े ने चिल्लाकर पूछा था ।

"मैं !" दांत किटकिटाये अर्जुन ठक्कर ने ! फिर अर्जुन ठक्कर ने आगे बढ़कर उस बूढ़े का गिरेहबान पकड़ लिया तथा फिर सांप की तरह फुंफकारा- "मैं इस लड़की का भाई हूँ बदजात इंसान ! और एक बहन की रक्षा किस तरह की जाती है, यह अर्जुन ठक्कर को बखूबी मालूम है ।"

"लेकिन तुम्हारा पास क्या सबूत है ।" बूढ़ा फिर चिल्लाया- "कि तुम इस लड़की के भाई हो ?"

"सबूत !" अर्जुन ठक्कर ने अपनी मस्कट राइफल एकदम उस बूढ़े के सीने पर ठोककर रख दी- "सबूत तुझे मेरी यह राइफल देगी ।"

बूढ़े का रंग एकदम पीला जर्द पड़ गया ।

उसकी टांगें कंपकंपाने लगीं । यही बहुत बड़ा शुक्र था कि राइफल देखकर उसने पतलून में ही पेशाब न कर दिया ।

"एक गोली !" अर्जुन ठक्कर गरजा- "सिर्फ एक गोली ही तेरे लिये काफी होगी । गोली अंदर जाते ही तेरे खण्डहर जिस्म के इस तरह परखच्चे उड़ेंगे, जैसे कांच का गिलास टूट गया हो ।"

फिर अर्जुन ठक्कर की उंगली जैसे ही राइफल के ट्रेगर की तरह झपटी, तो बूढ़ा दहशत से चिल्लाता हुआ फौजी कैंप से निकलकर भाग खड़ा हुआ ।

वो वहाँ से भागा, तो ऐसा भागा कि फिर उसने उस तरफ पलटकर भी नहीं देखा था ।

□□□

वह रात रजिया ने फौजी कैम्प में ही गुजारी ।

यह भी इत्तेफाक ही रहा कि उसी रात पूरे शहर में साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे ।

पूरा शहर जलने लगा । चारों तरफ आग ही आग थी । बारूद की गंध थी । चीखें थीं ।

फौज भी फौरन सक्रिय हो उठी।

फौज और पब्लिक के बीच सड़कों पर खुला युद्ध चलने लगा।

सारी रात वह युद्ध चलता रहा।

लेकिन आखिर में जीत फौज की ही हुई थी। दिन निकलने से पहले ही फौज ने पूरे शहर में अमन शांति कायम कर दी।

लेकिन फिर भी दो दिन तक फौज उस शहर में पड़ी रही थी कि कहीं दंगे दोबारा न भड़क उठे।

दो दिन बाद अर्जुन ठक्कर, रजिया को अपने साथ लेकर नासिक आ गया था।

जहाँ उसका घर था।

अपना घर।

□□□

वह रात भावनाओं से भरी रात थी।

अर्जुन ठक्कर अपने बैडरुम में फ्रेम के अंदर जड़ी एक तस्वीर हाथ में लिये खड़ा था। उसकी आंखों में आँसू इस तरह टिमटिमा रहे थे, जैसे आकाश की चादर पर कुछ तारे झिलमिला रहे हों।

यह एक सुंदर लड़की की तस्वीर थी।

रजिया भी अर्जुन ठक्कर के नजदीक जाकर खड़ी हो गयी और उसने तस्वीर वाली लड़की को देखा।

"य... यह कौन है ?" रजिया ने पूछा।

"म... मेरी बहन है ये।" अर्जुन ठक्कर की आंखों में आँसू और ज्यादा झिलमिला उठे- "रजनी नाम था इसका- रजनी।"

"र... रजनी !"

"हाँ।" तस्वीर को देखते हुए अर्जुन ठक्कर, रजिया के सामने कुछ तनकर खड़ा हो गया- "बेचारी बहुत अभागिन थी- जन्म की अभागिन ! जन्म लिया, तो मां चल बसी। फिर पिताजी चल बसे। और उसकी शादी का समय आया, तो खुद भी एक सड़क दुर्घटना में मारी गयी।"

"ओह !"

"मैं उससे बहुत प्यार करता था ।" अर्जुन ठक्कर अपने घर की दीवारों को देखता हुआ कहीं खो-सा गया- "कभी इस घर का कोना-कोना उसके कहकहों से आबाद था । मैं ड्यूटी से यहाँ आता, तो भैया-भैया की मधुर आवाज़ से पूरा घर गूंज उठता । मेरी जिंदगी इतनी हसीन कभी नहीं थी, जितनी रजनी के प्यार की बदौलत हो गयी थी । जानती हो ।" अर्जुन ठक्कर ने तस्वीर एक तरफ रखकर रजिया का चेहरा अपनी दोनों हथेलियों में भर लिया- "जानती हो, जब मैंने पहली बार तुम्हें देखा, तो अचानक ऐसा लगा- जैसे मुझे रजनी वापस मिल गयी हो ।"

"स... सच ?"

"हाँ, रजिया ! हाँ ! और जब मेरे कानों में तुम्हारा नाम पड़ा, तो मेरे कानों में घंटियां बज उठी थीं । रजिया और रजनी- कितनी समानता है दोनों नामों में । ऐसा लगता है कि जैसे दोनों नाम एक ही धारा से बहकर निकले हों । अब तुम्हें यहाँ कोई खतरा नहीं रजिया ! कोई खतरा नहीं ।"

अर्जुन ठक्कर के शब्द सुनकर रजिया भी जज्बाती हो उठी ।

"मैं तुम्हे बिल्कुल रजनी जैसा ही प्यार दूंगी ।" रजिया की आवाज़ भी भीग गयी थी ।

□□□

फिर सचमुच उसे अर्जुन ठक्कर से ही वही प्यार मिला, जो एक सगे भाई से मिलना चाहिये ।

धर्म और जाति से बढ़कर प्यार था वो ।

जिसमें पवित्रता-ही-पवित्रता थी । दीवानगी-ही-दीवानगी थी ।

अर्जुन ठक्कर उसकी आंखों में एक भी आँसू देख लेता, तो तड़प उठता ।

एक बार उसे मालूम पड़ गया था कि मौहल्ले के एक शरारती लड़के ने रजिया के लिये कुछ अपशब्द कह दिये हैं ।

बस ज्वालामुखी बन गया था अर्जुन ठक्कर !

वह उसके घर का दरवाजा तोड़कर अंदर जा घुसा और उसे इतना मारा, इतना मारा कि वह अधमरा हो गया था। लेकिन फिर भी अर्जुन ठक्कर ने उसे तब तक नहीं छोड़ा, जब तक उसने रजिया के पैरों में गिरकर उससे माफी नहीं मांग ली।

ऐसा था एक भाई का एक बहन के प्रति प्यार।

उससे पहले रजिया ने कभी ख्वाब में भी नहीं सोचा था कि एक भाई, अपनी बहन से इतना भी प्यार कर सकता है।

वह उसकी एक-एक खुशी पर अपनी जान लुटाने के लिये तैयार रहता।

□□□

फिर रजिया का जन्मदिन आया।

बहुत खास दिन था वो।

न सिर्फ रजिया और रजनी का नाम ही एक-दूसरे से काफी मिलता था बल्कि यह भी इत्तेफाक ही था कि रजिया के जन्म की तारीख भी बिल्कुल वही थी, जिस दिन रजनी का जन्म दिन पड़ता था।

उस दिन अर्जुन ठक्कर के घर पर एक बहुत बड़ी पार्टी थी, जिसमें उसके सारे फौजी दोस्त शामिल हुए।

देर तक हुड़दंग मचा और नाच-गाना चला।

"यह कोई मामूली घटना नहीं है रजिया !" अर्जुन ठक्कर एक मिलट्री की धुन पर उसके साथ बैले डांस करता हुआ बोला- "रजनी के और तुम्हारे जन्म दिन की तारीख भी बिल्कुल एक है। आज मुझे अहसास हो रहा है कि मेरी बहन मरी नहीं थी, वो जिंदा है। रजिया के रूप में जिन्दा है। शायद ईश्वर ने ही इस महान संयोग को हम दोनों की किस्मत में लिख दिया था।"

"तुम ठीक कहते हो अर्जुन !" रजिया भी धुन पर थिकरते हुए बोली- "सचमुच यह कोई मामूली संयोग नहीं है।"

फिर अर्जुन ठक्कर ने थिरकते हुए ही अपनी जेब से सोने का एक लॉकेट निकाला था, जो सोने की चैन में पड़ा था और जिस पर अंग्रेजी में प्रथम अक्षर 'आर' गुदा था।

आर फॉर रजिया !

आर फॉर रजनी !

इस लॉकेट को देखकर अर्जुन ठक्कर ख्यालों में खो गया था।

"जानती हो।" अर्जुन ठक्कर की आंखों में पुनः आंसुओं की बूंदे झिलमिला उठीं- "जब रजनी का एक्सीडेंट हुआ, तो उससे सिर्फ तीन दिन बाद ही उसका जन्म दिन था। उसी के लिये मैंने लॉकेट बनवाया था, लेकिन आज सोने में तराशे अपने इस प्यार को तुम्हें सौंप रहा हूँ, अपनी दूसरी बहन को।"

रजिया कसकर अर्जुन ठक्कर से लिपट गयी।

उसी पल अर्जुन ठक्कर ने उसके गले में सोने की चैन पहना दी।

□□□

रजिया अक्सर सोचती, क्या बहन-भाई के प्यार में सचमुच इतना नशा होता है ?

इतना ज्यादा नशा कि वह दोनों एक-दूसरे के लिये कुछ भी करने के लिये तैयार रहें।

फिर अर्जुन ठक्कर का जन्म-दिन भी आया था।

वह बहुत खास दिन था रजिया के लिये। उसने त्यौहार जैसी उस खुशी का हिस्सेदार किसी को नहीं बनाया था। एक बहन ने अकेले ही अपने भाई का जन्मदिन मनाया था।

उसकी हर खुशी अपने भाई के लिये थी, जिसे वह किसी के साथ बांटना नहीं चाहती थी।

उसने भी अर्जुन ठक्कर को उस दिन सोने की एक अंगूठी प्रेजेंट की। जिस पर अंग्रेजी का प्रथम अक्षर 'ए' गुदा था।

"य... यह क्या है ?" उस तोहफे को लेते समय अर्जुन ठक्कर के हाथ खुशी से कंपकंपायें थे।

"एक बहन का अपने बहादुर भाई के लिये तोहफा ।"

"क्या तुम्हारे जैसी प्यारी बहन को इस तोहफे की भी जरूरत थी ?"

"इंसान की जिन्दगी में तोहफों की कोई अहमियत नहीं होती भाई ! लेकिन सच्चे दिल से दिये गये तोहफे इंसान की खुशी को दोगुना जरूर कर दिया करते हैं ।"

"तुम बातें बनाना सचमुच खूब जानती हो ।" अर्जुन ठक्कर हँसा ।

"मैं आज तुमसे कुछ मांगना भी चाहती हूँ भाई !"

"बे-हिचक बोलो । तुम्हारी हर इच्छा को पूरा करना अर्जुन ठक्कर का पहला फर्ज है ।"

"मैं चाहती हूँ, तुम शादी कर लो भाई ! इस घर में मेरे लिये एक भाभी ले आओ ।"

"पगली !" हँसा अर्जुन ठक्कर- "तुमने मांगा भी तो क्या मांगा । एक बहन से पहले भाई की शादी कैसी हो सकती है । लोग क्या कहेंगे कि बहन घर में बैठी है और भाई ने शादी कर ली ? जानती हो !" अर्जुन ठक्कर ने प्यार से उसकी नाक पकड़कर हिलाई थी- "पहले मैं तुम्हारे लिये अच्छा सा वर ढूंढूंगा । तुम्हारे हाथ पीले करूँगा । तब कहीं अपनी शादी के बारे में सोचूंगा । सच तो यह है कि मैंने तुम्हारे लिये एक सुंदर सा लड़का देखना भी शुरु कर दिया है । सोचता हूँ कि कोई फौजी ही मिल जाये, दोनों साले-बहनोई मिलट्रीमैन ही हो जायेंगे ।"

शरमा गयी रजिया !

वह लजाकर दूसरे कमरे में भाग गयी ।

उसके कानों में शादी की शहनाइयां गूंजने लगी थीं ।

उसे पहली बार अहसास हुआ कि कोई उसकी लाइफ के बारे में इतनी सीरियसली सोचता भी है । किसी को उसकी खुशियों का इतना ख्याल भी है ।

□□□

रात का समय।

रजिया की एकाएक ही भक्क से आँख खुल गयी। यह देखकर वो चौंकी कि अर्जुन ठक्कर अभी भी जाग रहा है और अपने बिस्तर पर बैठा चाकू से कुछ कर रहा था।

वह एकदम झटके से उठ बैठी।

रजिया को जागते देखकर अर्जुन ठक्कर कुछ घबराया था। उसने फौरन वह चीज छिपा ली।

"क्या है ?" रजिया एकदम लपककर उसके करीब पहुँची- "मुझसे क्या छिपा रहे हो ?"

"क... कुछ नहीं।"

"कुछ तो ?"

"कहा न !" अर्जुन ठक्कर थोड़ा नर्वस हो गया- "क... कुछ भी नहीं।"

"लगता है, कोई खास ही मामला है।"

रजिया हँसते हुए उसके हाथ पर झपट पड़ी, जिसमें उसने कोई चीज छिपाई थी।

थोड़ी देर उनके बीच छीना-झपटी चली और आखिरकार अर्जुन ठक्कर के तकिये के नीचे घुसा वह हाथ बाहर निकल ही आया।

उसके उस हाथ में सर्विस रिवॉलवर थी।

लेकिन रजिया जो बात देखकर बुरी तरह चौंकी, वो यह थी कि अर्जुन ठक्कर अपने सर्विस रिवॉल्वर की बैरल पर चाकू की नोक से अंग्रेजी का अक्षर 'आर' गोद रहा था।

आर यानि रजिया !

जज्बाती हो उठी रजिया !

उसकी आंखों से आंसुओं की धारा बह निकली।

"मैंने आज तक मौहब्बत में दिवानगी के किस्से बहुत सुने थे अर्जुन !" रजिया रुंधे स्वर में बोली- "लेकिन कोई भाई भी अपनी

बहन से इतना प्यार कर सकता है, यह मैंने आज पहली बार देखा।"

"तुम नहीं जानती पगली !" अर्जुन ठक्कर ने उसे कसकर अपने सीने से लगा लिया और फूट-फूटकर रो पड़ा- "मेरे लिये बहन के क्या मायने हैं ? मैं एक बार अपनी बहन खो चुका हूँ और दोबारा नहीं खोना चाहता। इसीलिये इस बार मैं उसे अपनी एक-एक चीज में बसा लेना चाहता हूँ। यह देखो !" अर्जुन ठक्कर ने फौरन ही एक रुमाल निकालकर उसके सामने डाला- "मेरे पास रुमाल भी तुम्हारे नाम का है। और यह देखो, यह देखो, मेरे पास हर चीज तुम्हारे नाम की है।" अर्जुन ठक्कर एक के बाद एक कई सारी चीजें रजिया के सामने डालता चला गया।

जबकि रजिया के नेत्र फट पड़े थे।

उसने सिर्फ सर्विस रिवॉल्वर पर ही 'आर' नहीं गोदा हुआ था।

बल्कि उसके रुमाल पर भी 'आर' था।

उसके पाकेट पर्स के ऊपर भी 'आर' का स्टिकर था।

उसकी घड़ी के पीछे भी 'आर' था।

पेन के कैप पर भी 'आर' था।

हर जगह 'आर' ही 'आर' था।

दंग रह गयी रजिया !

"उफ् अल्लाह, वह इंसान था या फरिश्ता !"

उसने अपनी जिंदगी में ऐसे कौन से नेक काम कर दिये थे, जो उसे भाई के रुप में ऐसा फ़रिश्ता मिल गया।

□□□

लेकिन रजिया को कहाँ मालूम था कि उसकी वो खुशियां चंद दिन की हैं।

अगले दिन अर्जुन ठक्कर काफी देर रात को घर लौटा था और जब लौटा, तो वह खून से लथपथ था।

रजिया के मुँह से चीख निकल गयी।

"चिंता मत करो।" अर्जुन ठक्कर थोड़ा हँसकर बोला- "यह खून

मेरा नहीं है बल्कि दुश्मन का खून है। मैंने दो पाकिस्तानी जासूसों को मार डाला, जो कश्मीरी आतंकवादी बनकर यहाँ घुस आये थे और कुछ गड़बड़ पैदा करने की कोशिश कर रहे थे।"

"अल्लाह !" रजिया के हाथ दुआ की शक्ल में जुड़े- "मैं तो सोच रही थी कि कहीं तुम्हें ही कुछ हो गया है।"

"जिस भाई का घर पर तुम्हारे जैसी बहन इंतजार कर रही हो, उस भाई को भी कहीं कुछ हो सकता है रजिया ! लेकिन हाँ, तुम्हारे लिये एक बहुत बुरी खबर जरूर है।" अर्जुन ठक्कर वाशबेशन के सामने अपना खून साफ करता हुआ बोला।

"कैसी बुरी खबर ?"

"मैं कल ही पाकिस्तान जा रहा हूँ। मुझे भारत सरकार एक खास मिशन पर पाकिस्तान भेज रही है। वहाँ जाकर मुझे उन पाकिस्तानी फौजियों या जासूसों के खिलाफ सबूत इकट्ठे करने हैं, जो आज कश्मीरी आतंकवादी बनकर हिन्दुस्तान में काम कर रहे हैं।"

उसके मिशन के बारे में सुनकर रजिया के होश उड़ गये।

"लेकिन... लेकिन इतने खतरनाक मिशन पर तुम्हें ही क्यों भेजा जा रहा है अर्जुन ?" रजिया के मुँह से सिसकारी छूटी थी।

मुस्कुराया अर्जुन ठक्कर !

तब तक वो अपना सारा खून साफ कर चुका था और उसने अपनी खून से सनी शर्ट भी उतार दी थी।

"किसी-न-किसी हिन्दुस्तानी फौजी को तो इस मिशन पर जाना ही था रजिया ! यह तुम्हारे लिये गर्व की बात होनी चाहिये कि तुम्हारे भाई को हिन्दुस्तान सरकार ने इस ख़ास मिशन के लिये चुना है। बहरहाल मेरे जाने की सब तैयारियां हो चुकी हैं और कल सुबह सात बजे ही मैं यहाँ से रवाना हो जाऊँगा।"

"कल जाने के बाद तुम कब तक लौटोगे ?"

"इस बारे में कुछ भी नहीं क़हा जा सकता।" अर्जुन ठक्कर बोला- "पंद्रह दिन भी लग सकते हैं और उससे ज्यादा भी। लेकिन मेरे बारे में तमाम सूचनायें तुम्हें मेरे फौजी कैम्प से मिलती रहेंगी।"

वह रात रजिया पर बड़ी भारी गुजरी ।

फिर दिन निकलते ही अर्जुन ठक्कर पाकिस्तान चला गया था ।

एक-एक दिन वो अर्जुन ठक्कर का बेसब्री से इंतजार करती रही । उसके बारे में तमाम सूचनायें उसे सचमुच उसके फौजी कैम्प से मिलती रही थीं ।

दो बार उसे अर्जुन ठक्कर के लैटर भी मिले, जिसमें यहीं लिखा था कि वो वहाँ बिल्कुल ठीक है और वो उसकी फिक्र न करे ।

इसी तरह पन्द्रह गुजर गये । लेकिन अर्जुन ठक्कर न आया ।

फिर ठीक अट्ठारहवें दिन सुबह-ही-सुबह उसके फौजी कैम्प का एक आदमी रजिया के पास आया था और उसने अर्जुन ठक्कर के पाकिस्तान में ही मारे जाने का रिपोर्ट रजिया को दी ।

सन्न् रह गयी रजिया !

उसके दिल-दिमाग पर बिजली-सी गड़गड़ाकर गिरी थी । उसे यूँ लगा था, जैसे भूकम्प आ गया हो ।

जैसे गगनचुम्बी इमारतें गड़गड़ाकर उसके ऊपर गिर रही हों ।

जैसे सब कुछ तहस-नहस हो रहा हो ।

□□□

रजिया की आंखों में आँसू थे ।

नन्हे-नन्हे आँसू ।

उसके सामने टीवी अभी भी चल रहा था और उस पर कमाण्डर द्वारा किये गये बम बलास्ट की खबरें पुनः प्रसारित की जा रही थी ।

वो अतीत के अग्निकुण्ड से बाहर आ चुकी थी ।

मौत !

कितना छोटा सा शब्द है । लेकिन यह छोटा सा शब्द ही अपने अंदर कितना दर्द, कितना तूफान समेटे होता है ।

रजिया उस शब्द की चोट से उस दिन जो बिखरी थी, तो आज तक नहीं संभल पायी थी ।

उस खबर को सुनने के बाद एक ही शब्द उसके दिमाग से बम की

तरह टकराया- प्रतिशोध... प्रतिशोध... प्रतिशोध !

वह अपने फरिश्ते जैसे भाई की मौत का बदला चाहती थी ।

वह उस दरिन्दे का अपने हाथों से खून करना चाहती थी, जिसने उसके अर्जुन को मारा ।

शायद यही वजह थी कि रजिया तभी हिन्दुस्तान छोड़कर पाकिस्तानी चली आयी थी ।

वहाँ जब उसका वीजा खत्म होने लगा, तो उसने पाकिस्तान के लेफ्टीनेंट कर्नल हैदर अली से शादी भी कर ली ।

क्योंकि उसे पूरा यकीन था कि पाकिस्तानी फौजी के साथ रहकर ही वो अपने भाई के हत्यारे का पता लगा सकती है ।

एक बार रजिया को बेचा गया था, लेकिन दूसरी बार उसने शादी के नाम पर खुद ही समझौता किया ।

अब उसे बेसब्री से हत्यारे की तलाश थी ।

रजिया को पूरा यकीन था कि बहुत जल्द वह शैतान उसके सामने होगा ।

बहुत जल्द !

उसने दृढ़तापूर्वक अपनी आँखों के आँसू साफ किये ।

फिर खड़े होकर टीवी भी बंद कर दिया ।

***



8. सीक्रेट हाउस का चक्रव्यूह

आई.एस.आई. के हैडक्वार्टर में अभी भी बड़ी हंगामे से भरी मीटिंग चल रही थी।

कमाण्डर करण सक्सेना द्वारा किये गये एक के बाद एक कई विस्फोटों ने सबको हिला डाला था। उस मीटिंग को चलते हुए सात घंटे से भी ज्यादा समय गुजर चुका था और वह लोग अभी किसी निर्णय पर नहीं पहुँचे थे।

कमाण्डर से फोन पर हुई बातचीत के बाद कर्नल नासिर और विचलित हो उठा था।

"यह हमारे लिये मुश्किल का समय है। बहुत बड़ी मुश्किल का समय।" कर्नल नासिर अपनी भारी-भरकम आवाज़ में बोल रहा था- "कमाण्डर दो दिन में ही हमारा काफी नुकसान कर चुका है। इतना ही नहीं, उसने अब मुझे सुलतान फौजी को मार डालने की साफ तौर पर धमकी दी है। उसने बिल्कुल साफ-साफ कहा है कि अब फौजी को कोई नहीं बचा सकता। अब उसी की बारी है।"

"अल्लाह !" सुलतान फौजी के मुँह से दहशतनाक सिसकारी छूटी- "अगर अब मेरी बारी है, फिर तो मैं गया। मेरी कब्र खुदी समझो।"

"फौजी !" कर्नल चिल्ला उठा।

"क... क्या है कर्नल साहब ?"

"इतनी जल्दी हथियार डालने से कुछ नहीं होगा।"

"लेकिन हथियार उठाये रखने से भी तो कुछ नहीं हो रहा साहब ! अभी तक हर वो काम हुआ है, जो कमाण्डर करण सक्सेना ने चाहा। क्या उखाड़ लिया आप लोगों ने ? कुछ किया ? वही सब कुछ कर रहा है।"

"लेकिन फिर भी हम तुम्हें कुछ नहीं होने देंगे।" कर्नल नासिर ने एक-एक शब्द चबाते हुए कहा- "तुम्हारा जिंदा रहना हमारी इज़्ज़त का सवाल बन चुका है। उसने हमें साफ-साफ चैलेंज दिया हैं कि हम चाहे तुम्हें सात तालों में ही क्यों न बंद कर दें, लेकिन वो तुम तक जरूर पहुँचकर रहेगा। और हमने साबित करना है कि हर बार जीत उसकी नहीं होगी। वह चाहे कितने ही हाथी-घोड़े क्यों न दौड़ा ले, मगर तुम्हें मौत की सजा वो नहीं दे पायेगा।"

"लेकिन सवाल यह है साहब !" सुलतान फौजी शुष्क लहजे में बोला- "कि आप सब उसे मेरे तक पहुँचाने से रोकोगे कैसे ?"

मीटिंग हॉल में सन्नाटा छा गया।

सब चुप हो गये।

'सबसे पहले मैं इसी सिलसिले में एक सवाल पूछना चाहता हूँ सर !" तभी एक आई.एस.आई. अधिकारी बोला।

"पूछो।"

"क्या कमाण्डर इस राज़ को जानता है कि सुलतान फौजी इस समय आई.एस.आई. के हैडक्वार्टर में है ?"

"बिल्कुल जानता है।" कर्नल नासिर बोला- "उसने यह बात खुद मेरे फोन पर कही है कि सुलतान फौजी के लिये यह जगह ज्यादा महफूज नहीं है।"

"ओह !" अधिकार बेचैन हो उठा।

कई अन्य व्यक्तियों के चेहरे पर भी परेशानी की लकीरें उभर आयी थीं।

"अगर यह बात है कर्नल साहब !" एक अन्य अधिकारी तुरन्त बोला- "तो हमें सुलतान फौजी को फ़ौरन कहीं और शिफ्ट करना

चाहिये। अगर उसने यहाँ हमला कर दिया, तो सचमुच हमारे लिये काफी महंगा साबित होगा।"

"बिल्कुल ठीक बात है।" एक अन्य व्यक्ति भी बोला- "हमें फ़ौरन फौजी को कहीं और शिफ्ट करना चाहिये।"

"मगर सवाल ये है।" कर्नल नासिर बोला- "कि हम सुलतान फौजी को कहाँ शिफ्ट करें ? इस्लामाबाद में ऐसी कौन सी जगह है, जहाँ फौजी महफ़ूज़ रह सकता है ?"

"मैं बताता हूँ एक ऐसी जगह के बारे में।" तभी हैदर अली ने अपना हाथ उठाया था।

"बताओ।"

सबकी निगाहें फौरन हैदर अली पर जाकर फ्रीज हो गयीं।

"वह जगह न सिर्फ इस्लामाबाद में ही है।" हैदर अली बोला- "बल्कि इतनी महफ़ूज़ भी है कि अगर कमाण्डर अपनी पूरी ताकत लगाकर भी वहाँ सुलतान फौजी तक पहुँचना चाहेगा, तब भी नहीं पहुँच सकेगा। इस्लामाबाद में एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर तो आप सभी लोगों ने देखा ही होगा।"

"बिल्कुल देखा है।"

"अब उस एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर के बारे में, मैं एक ऐसी बात बताता हूँ।" हैदर अली टेबिल पर थोड़ा आगे को झुककर बोला- "जिसके बारे में आपमें से बहुत से लोग जानते होंगे और बहुत से नहीं भी जानते होंगे।"

"ए... ऐसी क्या बात है ?" कर्नल नासिर की आवाज़ में सस्पेंस पैदा हुआ।

"दरअसल उस एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर के बिल्कुल सैंटर में एक बहुत खास किस्म का, आधुनिक सिक्योरिटी डेवायसिस से लैस एक कमरा बनाया गया है, जिसे 'सीक्रेट हाउस' भी कहा जाता है। सीक्रेट हाउस की कई खासियतें हैं, जैसे सीक्रेट हाउस के चार दरवाजे हैं और वह चारों दरवाजें अलग-अलग दिशाओं में चार अलग हॉल के अंदर खुलते हैं।"

"ऐसा क्यों ?" एक अधिकारी बोला।

"दरअसल अगर कोई भी आदमी उस सीक्रेट हाउस के अंदर दाखिल होना चाहेगा।" हैदर अली ने कहा- "तो स्वाभाविक तौर पर उसे उन चारो में-से किसी एक हॉल में दाखिल होना पड़ेगा। क्योंकि उन हॉल में घुसकर ही वह सीक्रेट हाउस के दरवाजे तक पहुँच सकता है।"

"बिल्कुल ठीक। अगर सीक्रेट हाउस में घुसना है, तो उन चारों में-से किसी एक हॉल में जरूर घुसना पड़ेगा।"

"अब उन चार हॉल की कहानी सुनो।" हैदर अली बोला- "मौत उन्हीं चार हॉल में बिछी है। असली चक्रव्यूह उन्हीं हॉल के अंदर है और उन्हीं चार हॉल की बदौलत कोई सीक्रेट हाउस तक नहीं पहुँच सकता।"

"ऐसा कौन सा चक्रव्यूह उन चार हॉल के अंदर बिछा है ?" एक अन्य अधिकारी के नेत्र भी फैले थे।

जबकि कर्नल नासिर शांत था।

क्योंकि उसे उस पूरे सुरक्षा चक्र के बारे में मालूम था।

"दरअसल उन हॉल के फर्श पर काले सफेद खानों की शतरंज सी बिछी है। जब तुम चारों में से किसी भी हॉल का दरवाजा खोलकर अंदर घुसोगे और पहले सफेद खाने पर कदम रखोगे, तो कोई हरकत नहीं होगी। क्योंकि पहला खाना महफ़ूज़ है, लेकिन फिर तुम सीक्रेट हाउस के अंदर जाने के लिये जैसे ही अगले खाने पर कदम रखोगे, तो मौत तुम्हारे ऊपर एकदम गिद्ध की तरह झपटेगी।"

"वह क्यों ?"

"क्योंकि मान लो, अगर तुम्हारा कदम अगले काले खाने पर पड़ता है, तो उस हॉल के अंदर गनें छिपी हुई हैं। जो तुम्हारे काले खाने पर कदम रखते ही हरकत में आ जायेंगी और धांय-धांय-धांय तुम्हारे ऊपर गोलियों की बारिश होने लगेगी और तुम पलक झपकते ही लाश में बदल जाओगे।"

"वैरी इंट्रस्टिंग !" एक अधिकारी चहककर बोला- "और अगर

मान लो, हमारा अगला कदम सफेद खाने पर पड़ता है, तब क्या होगा ?"

"तब भी कुछ अच्छा नहीं होगा ।" हैदर अली बोला- "बल्कि सफेद खाने की मौत पहली मौत से भी ज्यादा खौफनाक होगी । क्योंकि सफेद खाने पर पैर रखते ही तुम्हारे ऊपर रासायनिक गैसों का हमला होगा । वह गैस बेहद जहरीली और दमघोटूं है । मुश्किल से पांच सेकण्ड के अंदर ही वह गैस इंसान का काम तमाम कर देती है । उसे सांस लेने का कोई मौका नहीं मिलता । इतना ही नहीं, मरने के बाद इंसान के शरीर की सारी खाल पलट जाती है और ऐसा लगता है कि जैसे उसे भट्टी में जिन्दा जलाया गया हो ।"

"ओह !" अनेक ऑफिसर्स के शरीर में खौफ की सिहरन दौड़ी- "सचमुच बड़ी खतरनाक मौत है ।"

□□□

"अब मैं एक सवाल और पूछना चाहूँगा ।" सुलतान फौजी बोला ।

"जरुर पूछो ।"

"यह तो साबित हो गया है कि सीक्रेट हाउस तक पहुँचने के लिये चार हॉल में-से किसी एक के अंदर घुसना जरूरी है । और यह भी साबित हो गया है कि उन सभी हॉल के अंदर काले सफेद खाने बने हुए हैं । काले खाने पर पैर रखोगे, तो गोली से मौत होगी । सफेद खाने पर पैर रखोगे, तो गैस से मौत होगी । यानि उसमें से किसी भी हॉल को पार करके सीक्रेट हाउस के दरवाजे तक पहुँचना एकदम नामुमकिन काम है ।"

"बिल्कुल ठीक ।"

"इस पूरी सिक्योरिटी से यह साबित होता है ।" सुलतान फौजी एक-एक प्वाइंट पर बारीकी से गौर करता हुआ बोला- "कि यह सारी सिक्योरिटी ही सिर्फ और सिर्फ उस सीक्रेट हाउस के लिये रची गयी है, ताकि कोई उस हॉल तक न पहुँच सके और वहाँ तक पहुँचने

से पहले ही मर जाये ।"

"यह बात भी बिल्कुल ठीक है ।"

"तो सवाल यह है मिस्टर हैदर, उस सीक्रेट हाउस के अंदर आखिर ऐसी क्या चीज रखी जाती है, जो उसकी सिक्योरिटी के इतने जबरदस्त इंतजाम किये गये हैं ?"

"गुड क्वेश्चन !" हैदर अली मुस्कुराया- "दरअसल उस सीक्रेट हाउस के अंदर पाकिस्तान की एयरफ़ोर्स के सीक्रेट पेपर रखे जाते हैं । इतने सीक्रेट पेपर, जो अगर हमारे किसी दुश्मन देश के हाथ लग जाये, तो वह पलक झपकते ही हमारी युद्ध नीति को भांप जायेगा । बमवर्षक विमानों की सही संख्या उसे मालूम हो जायेगी । कुल मिलाकर उस सीक्रेट पेपर्स के मिलते ही कोई छोटा सा देश भी पाकिस्तान पर फतेह हासिल कर सकता है । क्योंकि आजकल के युद्धों में एयरफ़ोर्स की पोजीशन काफी बढ़ गयी है और कामयाबी तथा नाकामयाबी का सारा दारोमदार अब सिर्फ एयरफ़ोर्स के ऊपर ही रहता है ।"

"यानि !" एक अधिकारी बोला- "वह सीक्रेट हाउस सिर्फ एयरफ़ोर्स के सीक्रेट पेपर्स को महफूज़ रखने के लिये ही बनाया गया है ।"

"बिल्कुल ।"

"मगर जैसाकि तुमने अभी बताया मिस्टर हैदर !" वह एक अन्य ऑफिसर की आवाज़ थी- "कि उस सीक्रेट हाउस में चारों तरफ चार दरवाजे हैं ।"

"ठीक ।"

"तुम्हारी इस बात से तो यह साबित होता है ।" ऑफिसर बोला- "कि उस सीक्रेट हाउस की दीवार पर वाल्ट वगैरह नहीं बनाये गये हैं बल्कि सीक्रेट हाउस के बिल्कुल बीचो-बीच लोहे की बहुत बड़ी-बड़ी तीन विशाल अलमारियों में एयरफ़ोर्स के सीक्रेट पेपर रखे जाते हैं ।"

"ओह !"

"अब यहीं एक सवाल और पैदा होता है।"

"क्या ?" हैदर अली ने पूछा।

"इसमें कोई शक नहीं कि सीक्रेट हाउस की सारी सिक्योरिटी बहुत जबरदस्त है। और किसी भी हॉल में से होकर वहाँ तक पहुँचना एकदम नामुमकिन है। तो सवाल यह है मिस्टर हैदर ! एयरफ़ोर्स के ऑफिसर भी उस सीक्रेट हाउस की अलमारियों में सीक्रेट पेपर रखने के लिये किस तरह जाते हैं ? आखिर वहाँ तक जाने का कोई-न-कोई रास्ता तो जरूर होगा ?"

"ठीक कहा तुमने।" हैदर अली बोला- "इसमें कोई शक नहीं। उस हॉल तक जाने का कोई-न-कोई रास्ता जरूर होगा। क्योंकि अगर वहाँ रास्ता न होता, तो फिर वहाँ तीन अलमारियाँ ही क्यों बनायी जातीं ? वहाँ सीक्रेट पेपर रखने की ही व्यवस्था क्यों होतीं ? लेकिन रास्ता जो भी है, मुझे नहीं मालूम। और सिर्फ मुझे ही क्या, पाकिस्तान में बहुत कम लोगों को इस सीक्रेट हाउस के रास्ते के बारे में मालूम है। क्यों कर्नल साहब ?" हैदर अली ने कर्नल नासिर की तरफ देखा- "मैं कुछ गलत तो नहीं कह रहा ?"

"नहीं।" कर्नल नासिर गर्व से बोला- "तुम्हारे द्वारा कहा गया अभी तक एक-एक शब्द बिल्कुल ठीक है। इसमें कोई शक नहीं कि सीक्रेट हाउस तक पहुँचने का जो भी रास्ता है, उस रास्ते के बारे में सचमुच बहुत कम लोग जानते हैं। मुझे यह कबूल करने में भी कोई हिचक नहीं है कि मैं खुद उस रास्ते के बारे में कुछ नहीं जानता। इसी एक बात से साबित होता है कि अभी तक उस तरीके को कितना सीक्रेट रखा गया है।"

"ठीक है मिस्टर हैदर !" पहले वाला ऑफिसर ही बोला- "सिक्योरिटी काफी मजबूत है। अब तुम आगे क्या कहना चाहते हो ?"

"मैं वही बात कहना चाहता हूँ, जिस सिलसिले में हमारी यह हंगामाखेज मीटिंग चल रही है। अगर हमें सुलतान फौजी को आई.एस.आई.के इस हैडक्वार्टर से कहीं और शिफ्ट करना है, तो

क्यों न उस बेमिसाल सीक्रेट हाउस के अंदर शिफ्ट कर दें ?"

सब एक बार फिर भौंचक्के रह गये।

हतप्रभ !

वाकई लैफ्टीनेंट कर्नल हैदर अली का वो प्रपोज़ल लाजवाब था।

□□□

"सबसे पहले तो उस भारतीय जासूस कमाण्डर करण सक्सेना का एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर में घुसना ही काफी मुश्किल काम है।" हैदरअली गर्मजोशी के साथ आगे बोला- "लेकिन अगर हम उसका पिछला ट्रेक रिकार्ड देखकर यह कहने लगें कि वो वहाँ भी घुस जायेगा, तो कम से कम सीक्रेट हाउस के अंदर घुसना तो उसके लिये बिल्कुल ही नामुमकिन है।"

"दोस्तों !" हैदर अली और ज्यादा जोश में भरकर बोला- "आज की तारीख में सुलतान फौजी को शिफ्ट करने के लिये पूरे पाकिस्तान में अगर कोई सबसे ज्यादा बेहतरीन जगह है- तो वह सीक्रेट हाउस है। वह वो जगह है, जहाँ कमाण्डर करण सक्सेना के फरिश्ते भी अंदर नहीं घुस सकते। उस जगह सुलतान फौजी को शिफ्ट करने का मतलब होगा, उसकी जान बच गयी। कमाण्डर करण सक्सेना का चैलेंज गलत साबित हो गया।"

"मिस्टर हैदर ठीक कह रहे हैं।" एक आई.एस.आई. अधिकारी भी उत्साहपूर्वक बोला- "हमें सुलतान फौजी को वहाँ शिफ्ट करना चाहिये।"

"बिल्कुल ठीक बात है।" एक अन्य अधिकारी भी आंदोलित लहजे में बोला- "वही सबसे बेहतर जगह है। हमें इस मामले में ज्यादा सोच-विचार नहीं करना चाहिये।"

अधिकारी को अपने समर्थन में बोलते देख मुस्कराया हैदर अली !

फिर बोला- "लेकिन सुलतान फौजी के शिफ्ट होने से पहले हमें वहाँ एक काम और कराना होगा ?"

"क्या ?"

सबकी निगाहें एकदम से हैदर अली के ऊपर जाकर केन्द्रित हो गयीं।

"हमें सीक्रेट हाउस की तीनों अलमारियों में से एयरफ़ोर्स के सभी सीक्रेट पेपर हटवाने होंगे।"

"लेकिन वह सीक्रेट पेपर हटाने क्यों जरूरी है ?"

"बहुत जरूरी है। मैं पहले ही बता चुका हूँ कि वह बहुत कीमती पेपर हैं और हमें उनका कोई रिस्क नहीं लेना चाहिये।"

"मिस्टर हैदर ठीक कह रहे हैं।" कर्नल नासिर भी बोला- "हमें सचमुच पहले उन सीक्रेट पेपरों को वहाँ से हटवाना होगा।"

"यानि मामला डन।"

"बिल्कुल डन।"

फिर वह मीटिंग काफी उत्साह के माहौल में बर्खास्त हो गयी।

मीटिंग बर्ख़ास्त होते ही कर्नल नासिर तुरंत सुलतान फौजी को वहाँ से शिफ्ट करने के कार्य-कलाप में जुट गया था।

सबसे अजीब हालत सुलतान फ़ौजी की थी।

वह कभी सीक्रेट हाउस के विषय में सोचकर संतुष्ट हो जाता था और कभी यह सोचकर डरने लगता था कि नहीं, कमाण्डर वहाँ भी पहुँच जायेगा।

उस सीक्रेट हाउस के अंदर भी पहुँच जायेगा।

वह कभी उस फैसले पर खुश होता था, कभी डरता था।

□□□

रात का समय।

हैदर अली का बैडरूम।

वहाँ टेलीविजन अभी भी चल रहा था और पाकिस्तान के प्रधानमंत्री तथा राष्ट्रपति के बाद कर्नल नासिर का संदेश भी अभी-अभी टी.वी. पर प्रसारित होकर निपटा था।

कर्नल नासिर ने अपने संदेश में दावा किया था कि वह बहुत जल्द

कमाण्डर करण सक्सेना को जिंदा या मुर्दा उसी टी.वी. स्क्रीन पर पाकिस्तान की आम जनता के सामने पेश कर देगा।

टी.वी. पर कमाण्डर करण सक्सेना से सम्बन्धित समाचार लगातार प्रसारित किये जा रहे थे। लेकिन अभी तक सुलतान फौजी का नाम समाचारों में एक बार भी नहीं लिया गया था।

क्योंकि सुलातन फौजी का नाम अगर पाकिस्तान टी.वी. या पाकिस्तान अखबार में लिया जाता, तो तुरंत साबित हो जाना था कि पाकिस्तान ने उस खतरनाक आतंकवादी को अपने यहाँ शरण दी हुई है।

इसीलिये पाकिस्तान सरकार की तरफ से सख्त आदेश थे कि सुलतान फौजी का नाम किसी भी हालत में न लिया जाये।

हैदर अली तथा रजिया ने थोड़ी देर पहले ही डिनर लिया था और इस समय वह दोनों बिस्तर पर थे।

उस पोजीशन में ही उन दोनों ने कर्नल नासिर का टी.वी. पर संदेश सुना था।

उसके बाद टेलीविजन पर पाकिस्तानी फिल्मों के ऊपर एक प्रोग्राम शुरु हो गया था। हैदर अली ने वहाँ पड़ा रिमोट उठाकर टेलीविजन की आवाज़ थोड़ी कम कर दी।

"क्यों ?" रजिया बोली- "आवाज़ क्यों कम कर दी ?"

"जब इतनी खूबसूरत हीरोइन किसी के पहलू में हो।" हैदर अली ने शरारती अंदाज में उसको किस किया- "तो उस पर्दे पर नाचती हीरोइन को देखने में किसी को क्या मजा आयेगा। असली डांस तो अब थोड़ी देर बाद यहाँ शुरु होगा।"

"अच्छा, एक बात बताओ हैदर !"

"पूछो !" हैदर अली ने उसे कसकर अपने चौड़े सीने से चिपटा लिया।

"अभी थोड़ी देर पहले कर्नल नासिर की टेलीविजन पर जो स्पीच टेलीकास्ट हुई है, उसमें कितना वजन है ? क्या सचमुच कर्नल नासिर बहुत जल्द कमाण्डर को पकड़ पायेगा ?"

"तुम्हारा सवाल थोड़ा मुश्किल जरूर है डार्लिंग !" हैदर अली ने कहा- "लेकिन अगर आने वाले दिनों में कर्नल नासिर सचमुच ऐसा कारनामा कर गुजरता है, तो इसमें चौंकने वाली बात नहीं होगी। क्योंकि कमाण्डर आखिरकार एक इंसान ही है। यह बात अलग है कि उसने थोड़े समय में ही अपने नाम की काफ़ी दहशत पूरी दुनिया में फैला दी है।"

"यानि तुम समझते हो कि कमाण्डर को पकड़ा जा सकता है ?"

"बिल्कुल पकड़ा जा सकता है।"

"अच्छा मेरे एक सवाल का जवाब और दो।" उन हालात में भी रजिया का दिमाग पूरी तरह सक्रिय था- "क्या कमाण्डर करण सक्सेना, सुलतान फौजी को सजा-ए-मौत देने के जिस मिशन पर पाकिस्तान आया हुआ है, उसका वह मिशन पूरा होगा ?"

"हर्गिज नहीं।" इस बार हैदर अली ने जवाब देने में एक सेकण्ड का समय भी नहीं लगाया था। उसने पूरे यकीन के साथ वह जवाब दिया था।

"क्यों ?" रजिया चौंकी- "क्यों उसका वह मिशन पूरा नहीं होगा ?"

"क्योंकि अब वह सात जन्म तक भी फौजी तक नहीं पहुँच सकता। उसे एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर के एक ऐसे हॉल में शिफ्ट कर दिया गया है, जहाँ बड़ी जबरदस्त सिक्योरिटी है। उस हॉल के चारों तरफ ऐसे सिक्योरिटी डेवायसिज फिट हैं, जहाँ पहुँचने का मतलब मौत से खुली शर्त लगाना है।"

"य... यानि उस हॉल के चारों तरफ मौत-ही-मौत है ?"

"बिल्कुल।"

"ऐसे क्या सिक्योरिटी डेवायसिज फिट हैं वहाँ ?" रजिया ने हैरान होकर पूछा।

"डार्लिंग !" हैदर अली ने उसकी साफ-सुथरी नाभि पर होंठ रखे तथा उसका कसकर चुम्बन लिया- "यह समय इस तरह की बातें करने का नहीं है।"

धीरे-धीरे दोनों ही नियंत्रण से बाहर होते जा रहे थे ।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना अंगड़ाई लेकर बिस्तर से उठ गया ।

उसे काफी अच्छी नींद आयी थी । जो अक्सर पुरुष को तब आती है, जब वह किसी स्त्री के साथ सहवास के बाद सोता है ।

कमाण्डर करण सक्सेना को वह ढेर सारी लड़कियां याद आने लगीं, जिनके साथ उसने सहवास किया था और शानदार पल बिताये थे ।

यह मिशन, उन मिशनों के मुकाबले उसके लिये काफी नीरस था । लेकिन यह मिशन इसलिये ज्यादा महत्वपूर्ण भी था, क्योंकि उसने सुलतान फौजी जैसे दानव को सजा देनी थी ।

जल्द ही वो बिल्कुल फ्रेश हो गया तथा फिर उसने होटल के उसी कमरे में नाश्ता किया ।

वो जानता था कि सुलतान फौजी तक पहुँचना आसान नहीं है । वो यह भी जानता था कि अब वह सुलतान फौजी को आई.एस.आई.के हैडक्वार्टर से जरूर कहीं और शिफ्ट कर दिया गया होगा ।

बहरहाल चूहा-बिल्ली का खेल जारी था ।

कमाण्डर करण सक्सेना ने अभी नाश्ता समाप्त ही किया था कि उसी पल जेब में रखी घड़ी के अंदर से ब्लिप-ब्लिप की आवाज़ निकलने लगी ।

कमाण्डर करण सक्सेना ने घड़ी निकालकर ऑन की ।

"रजिया स्पीकिंग !" ट्रांसमीटर में से रजिया की घरघराती-सी आवाज़ आ रही थी- "रजिया स्पीकिंग ।"

"यस, आई एम कॉलिंग । मैं करण सक्सेना बोल रहा हूँ । क्या रिपोर्ट है ?"

"मैं तुमसे फौरन मिलना चाहती हूँ कमाण्डर ।"

"कोई खास संदेश ?"

"हाँ, खास ही है।"

"कहाँ मिलना है ? सुलेमान क्लब ?"

"नहीं।" रजिया फौरन बोली- "सुलेमान क्लब नहीं। बार-बार एक ही जगह मिलना ठीक नहीं।"

"फिर ?"

"तुम पाशा स्ट्रीट के चौराहे पर पहुँचो, मैं तुम्हें वहीं मिलती हूँ। फिर हमारी तमाम बातें कार के अंदर ही होंगी।"

"ओके, मैं अभी दस मिनट में पाशा स्ट्रीट पहुँचता हूँ।"

"गुड !"

सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

□□□

फिर कमाण्डर आनन-फानन तैयार हुआ।

उसने चैक की सफेद पैण्ट-शर्ट पहनी। सिर पर लाल गोल्फ कैप लगाया। आंखों पर गोगल्स चढ़ाये, जिनसे उसका रुप पूरी तरह बदल गया था।

फिर वह पाशा स्ट्रीट पहुँचा।

पाशा स्ट्रीट, इस्लामाबाद का एक भीड़-भाड़ वाला बाजार है। जहाँ सुबह से शाम तक खूब रौनक रहती है। पाशा स्ट्रीट के चौराहे पर ही एक सिनेमा हाल भी है। कमाण्डर उसी सिनेमा हॉल के सामने जाकर खड़ा हो गया।

जल्द ही रजिया भी वहाँ पहुँच गयी थी। कमाण्डर फ़ौरन उसकी कार में सवार हो गया। रजिया कार ड्राइव करती हुई एक निर्जन-सी सड़क पर ले गयी थी।

"कार यहाँ क्यों ले आयीं ?" कमाण्डर करण सक्सेना ने चौंककर पूछा।

"क्योंकि मैं नहीं चाहती कि कोई तुम्हें मेरे साथ देखे। अगर ऐसा हुआ, तो मेरा समय से पहले ही पर्दाफाश हो जायेगा। जबकि मैं अपने भाई अर्जुन ठक्कर के हत्यारे को मारने से पहले न खुद मरना

चाहती हूँ और न पाकिस्तान छोड़ना चाहती हूँ।"

"ओह !"

"तुम्हें कोई ऐतराज ?"

"म... मुझे क्या ऐतराज हो सकता है। बल्कि तुम्हारा यह कदम तो खुद मेरे लिये भी बेहतर है।" वह शब्द कहने के बाद कमाण्डर करण सक्सेना ने बड़े शांत मन से डनहिल सुलगाई और फिर उसका धुआं बाहर की तरफ उछाला था- "ऐनी वे, यह बताओ कि तुमने मुझे यहाँ क्यों बुलाया है ?"

"सबसे पहले तो मैं तुम्हें बधाई देना चाहती हूँ।" रजिया मुस्कुराकर बोली।

"किस बात की बधाई ?"

"कल तुमने अकेले ही इस्लामाबाद के अंदर इतना ज्यादा बड़ा हंगामा जो मचा दिया। मुझे उम्मीद नहीं थी कि तुम यह सब कुछ कर डालोगे। मगर अब तुम्हारी दिलेरी की दाद देने को दिल चाहता है। वाकई तुमने कल के कारनामे के बाद साबित कर दिया कमाण्डर, तुम एक बहादुर और जांबाज इंसान हो। जिसे मौत का कोई खौफ नहीं।"

"थैंक्यू ! तारीफ के लिये शुक्रिया !" कमाण्डर ने पुनः डनहिल का एक कश लगाया- "अब अगर कुछ काम की बात कर लें, तो ज्यादा बेहतर रहेगा।"

"क्यों नहीं ! मैं दरअसल तुमसे सुलतान फौजी के बारे में कुछ बात करना चाहती हूँ।" रजिया बोली।

"क्या ?"

"क्या तुम जानते हो कि फौजी को अब कहाँ शिफ्ट किया गया है ?"

"नहीं, मैं नहीं जानता।" कमाण्डर का सिगरेट वाला हाथ थोड़ा ठिठक गया था- "लेकिन अब मैं उस दिशा में काम करना चाहता हूँ, क्योंकि मैंने कर्नल नासिर को खुला चैलेंज दे दिया है कि अब सुलतान फौजी की ही बारी है। पाकिस्तानी सरकार उसे जहाँ

छिपाना चाहती है, छिपा ले। लेकिन मौत उसे आकर रहेगी।"

"शायद तुम्हारे खुले चैलेंज को देखते हुए ही पाकिस्तान सरकार ने उसे इस बार ज्यादा महफ़ूज़ जगह शिफ्ट किया है।" रजिया बोली।

"त... तुम जानती हो कि सुलतान फौजी को कहाँ शिफ्ट किया गया है ?" कमाण्डर के मुँह से तेज सिसकारी छूटी।

"हाँ, मैं जानती हूँ और इसीलिये मैंने इस वक्त तुम्हें यहाँ बुलाया है।" रजिया की आँखें कार की विण्ड स्क्रीन पर घूम रही थीं और हाथ स्टेयरिंग पर थे- "उसे एयरफ़ोर्स के हैडक्वार्टर में शिफ्ट किया गया है। रात मेरी हैदर से बात हुई थी, उसी ने मुझे यह जानकारी दी। हैदर के मुताबिक एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर के जिस हॉल में इस बार सुलतान फौजी को शिफ्ट किया गया है, वह बहुत सुरक्षित हॉल कमरा है। उसके चारों तरफ बड़े जबरदस्त सिक्योरिटी डेवायसिज फिट हैं। अगर कोई भी आदमी उस हॉल कमरे तक पहुँचने की कोशिश करेगा, तो वह उस हॉल तक तो क्या पहुंचेगा, उससे पहले ही मारा जायेगा।"

"यानि उस हॉल के चारों तरफ मौत-ही-मौत बिछी है ?"

"बिल्कुल।"

"कमाल है !" कमाण्डर करण सक्सेना के नेत्र हैरत से फटे- "बड़ा जबरदस्त सुरक्षा-चक्र है।"

"जबरदस्त सुरक्षा चक्र है, तभी तो वहाँ फौजी को शिफ्ट किया गया है।"

"ऐसे क्या डेवायसिज उस हॉल के चारों तरफ फिट किये गये हैं ?"

"इस बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं।" रजिया बोली- "हैदर से कोई सवाल भी ज्यादा खोद-खोदकर इसलिये नहीं पूछती कि कहीं उसे मेरे ऊपर शक न हो जाये। इसलिये मैं यह भी नहीं बता सकती कि इतने बड़े एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर में वो हॉल कमरा किस जगह है। मुझे जो जानकारी हासिल हुई थी, वह मैंने तुम्हें सर्कुलेट कर दी

। मैं समझती हूं कि अब आगे की जानकारी तुम खुद हासिल कर सकते हो ।"

कार धीमी रफ़्तार से दौड़ रही थी ।

जबकि कमाण्डर करण सक्सेना का दिमाग अब काफी तेज स्पीड से दौड़ने लगा था ।

"इसके अलावा तुम कुछ नहीं जानती ?"

"नहीं ।"

"ठीक है ।" कमाण्डर ने डनहिल का छोटा-सा कश लगाया और सिगरेट की राख खिड़की से बाहर झाड़ी- "मैं इसी सिलसिले में तुमसे कुछ और सवाल पूछना चाहता हूं ।"

"अगर मुझे उनके बारे में कुछ जानकारी होगी ।" रजिया बिल्कुल सपाट लहजे में बोली- "तो जरूर जवाब दूंगी । पूछो ।"

"पहला सवाल आई.एस.आई. से संबंधित है ।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "आई.एस.आई. के एजेंट वर्दी कैसी पहनते हैं ? मेरा मतलब उनकी वर्दी का रंग कैसा होता है ? स्टाइल कैसी होती है ?"

"स... सुलतान फौजी की मौजूदा हालत से इस सवाल का क्या ताल्लुक ?" रजिया चौंकी ।

"ताल्लुक है ! बहुत गहरा ताल्लुक है । तुम मेरे इस सवाल का जवाब दो । बाद में वजह भी मालूम हो जायेगी ।"

"यह तो तुम भी जानते ही होंगे कि जब किसी देश का जासूस दूसरे देश में जाकर जासूसी करता है, तो उस समय वह सिविल ड्रेस में ही होता है । फिर चाहे वह आई.एस.आई. का एजेंट ही क्यों न हो ?"

"मैं जानता हूं । लेकिन मैं यह पूछ रहा हूं कि पाकिस्तान में उनकी ड्रेस कैसी होती है ?"

"यहाँ ख़ास मौकों पर जब वो ड्रेस पहनते हैं ।" रजिया बोली- "तो आई.एस.आई. एजेंटों की ड्रेस का रंग सफेद होता है । वह काली बेल्ट बांधते हैं और कंधे पर तीन काले फीते लगे रहते हैं, जिन

पर पीतल का पाकिस्तानी बैज भी होता है।"

"गुड ! क्या ऐसी एक ड्रेस सिलवाई जा सकती है ?"

"नहीं।" रजिया की आंखों में आतंक की छाया तैर गयी- "ऐसी ड्रेस सिलवाना यहाँ बहुत खतरे का काम है।"

"क्यों ?"

"क्योंकि पाकिस्तान में सभी जानते हैं कि यह आई.एस.आई. की ड्रेस है। इसलिये यहाँ कोई भी दर्जी इस ड्रेस को सीने के लिये तैयार नहीं होगा। उल्टा ये भी मुमकिन है कि वो हमारी रिपोर्ट पुलिस में कर दे और हमें अरेस्ट करा दे।"

"आई.एस.आई. एजेंटों को ड्रेस कहाँ से हासिल होती है ?"

"उन्हें अपने डिपार्टमेंट से हासिल होती है।"

"ओह !"

"लेकिन तुम्हें ड्रेस का क्या करना है ?"

"मुझे किसी भी हालत में एक आई.एस.आई. एजेंट की ड्रेस चाहिये, जो मेरे बिल्कुल फिट आ सके।"

"अगर ड्रेस जरूरी ही चाहिये।" रजिया बोली- "तो ड्रेस हासिल करने का एक ही तरीका है, जो सबसे ज्यादा बैटर है।"

"क्या ?"

"किसी आई.एस.आई. एजेंट से उसकी ड्रेस छीन लो।"

कमाण्डर ने अचरजपूर्ण निगाहों से रजिया की तरफ देखा, फिर बोला- "तुम किसी एजेंट को पहचानती हो ?"

"हाँ।" रजिया के हाथ अभी भी कार के स्टेयरिंग पर घूम रहे थे- "खुर्शीद नाम का एक आई.एस.आई. एजेंट है, जो हमारी कोठी के नजदीक ही एक फ्लैट में रहता है। तुम्हारे लिये एक खुशखबरी है। आजकल उसकी कहीं नाइट डयूटी चल रही है। वह रात के दस बजे के आसपास वर्दी पहनकर कहीं मोटर साइकिल पर जाता है। उसकी कद-काठी भी बिल्कुल तुम्हारी ही तरह है, इसलिये उस एजेंट की वर्दी तुम्हारे काफी फिट आयेगी। आगे तुमने क्या करना है, यह तुम खुद बेहतर समझ सकते हो।"

कमाण्डर करण सक्सेना के होंठों पर मुस्कान तैर गयी ।

उसने डनहिल का एक और कश लगाकर सिगरेट का टोटा बाहर की तरफ उछाल दिया ।

"मेरे एक सवाल का जवाब और दो ।"

"पूछो ।"

"पाकिस्तान के एयर चीफ मार्शल का क्या नाम है ?"

रजिया ने अब बेहद भौंचक्की निगाहों से कमाण्डर की तरफ देखा । उसके चेहरे पर अचम्भे के निशान तैर गये थे ।

"त... तुम यह सवाल क्यों पूछ रहे हो ?"

"यूँ ही पूछ रहा हूँ ।"

"कमाण्डर ! मैं जानती हूँ कि तुम कोई भी सवाल यूँ ही नहीं करते ।" रजिया ने अब अपनी कार निर्जन सड़क के किनारे रोक दी थी, क्योंकि एक मोड़ क्रॉस करने के बाद फिर शहर की घनी आबादी शुरु हो जानी थी- "लेकिन एक बात का ख्याल रखो कमाण्डर ! आई.एस.आई. का मामूली एजेंट होने में और एयरफ़ोर्स का सबसे बड़ा अधिकारी होने में जमीन-आसमान का फर्क होता है ।"

"मैं जानता हूँ ।"

"तो फिर तुम्हें यह भी जानना चाहिये कि एयर चीफ मार्शल जैसी हस्ती पर हाथ डालना तुम्हारे लिये खतरनाक साबित हो सकता है ।"

"रजिया !" कमाण्डर करण सक्सेना ने बेचैनीपूर्वक पहलू बदला- "बेहतर ये होगा कि तुम मुझे उसका नाम बताओ ।"

"उसका नाम खलील अहमद है ।"

"वो रहता कहाँ है ?"

रजिया ने उसका एड्रेस भी बताया ।

"थैंक्यू ! मुझे सिर्फ यही सवाल पूछने थे । अब मुझे चलना चाहिये ।" कमाण्डर करण सक्सेना कार के दरवाजे की तरफ बढ़ गया ।

"सुनो !" रजिया फौरन बोली- "मैं तुम्हें वापस पाशा स्ट्रीट छोड़

देती हूँ ।"

"नहीं । हमें इस मामले में कोई रिस्क नहीं लेना चाहिये । मैं खुद चला जाऊँगा ।"

कमाण्डर करण सक्सेना ने कार का दरवाजा खोला और बाहर निकल गया ।

फिर उन्होंने मुस्कुराते हुए एक-दूसरे से विदा ली ।

□□□

खुर्शीद !

लगभग पच्चीस साल का नौजवान ।

वह सिर्फ दो साल पहले ही आई.एस.आई. में भर्ती हुआ था । आई.एस.आई. में भर्ती होना उसकी जिंदगी का सबसे बड़ा सपना था और जिस दिन उसे उस डिपार्टमेंट में नौकरी मिली, तो वह बेपनाह खुश था । इतना खुश था कि उसने फ़ौरन दोस्तों और रिश्तेदारों को इस्लामाबाद के सबसे बड़े होटल में पार्टी दे डाली थी ।

आजकल उसी खुर्शीद की पाकिस्तान के राष्ट्रपति भवन में नाइट ड्यूटी लगी हुई थी, जहाँ उसे रात के साढ़े दस बजे तक पहुँचना होता था ।

उस दिन भी खुर्शीद रात के ठीक दस बजे अपने फ्लैट से बाहर निकला ।

वह बहुत खुश था ।

रोजाना ही तरह उसने आज भी साफ-सुथरी वर्दी पहनी हुई थी । वह बड़ी शान से अपनी मोटरसाइकिल पर सवार हुआ । उसने मोटरसाइकिल स्टार्ट की और अगले ही पल वह मोटर साइकिल सड़क को रौंदती हुई तूफानी गति से दौड़ने लगी ।

□□□

रात अंधेरी थी और सड़क सुनसान थी । वह क्योंकि पॉश

कालोनी थी, इसलिये वहाँ जल्दी ही सन्नाटा छा जाता था।

सिर्फ खुर्शीद की मोटर साइकिल ही उस सुनसान पड़ी सड़क पर दौड़ी जा रही थी।

तभी खुर्शीद चौंका।

उसने देखा कि सड़क के बिल्कुल बीच में एक व्यक्ति खड़ा है, जिसकी एक टांग खून से बुरी तरह लथपथ है और वह अपने दोनों हाथ उठाकर जोर-जोर से हिलाता हुआ मोटर साइकिल रोकने का इशारा कर रहा है।

"प्लीज ! मेरी मदद करो। मेरी मदद करो।"

खुर्शीद की मोटर साइकिल उस आदमी के नजदीक पहुँची, तो उसकी करुणामयी आवाज़ खुर्शीद के कानों में पड़ी।

खुर्शीद ने एक क्षण कुछ सोचा और फिर मोटर साइकिल उस जख्मी आदमी के करीब रोक दी।

"क्या बात है ?" खुर्शीद ने पूछा।

"मेरा एक स्कूटर से एक्सीडेंट हो गया है।" जख्मी आदमी, जोकि कमाण्डर करण सक्सेना था, पहले की तरह ही करुणामयी स्वर में बोला- "एक स्कूटर वाला मेरी टांग कुचलकर भाग खड़ा हुआ। क्या तुम मुझे किसी हॉस्पिटल पहुँचा सकते हो दोस्त ?"

"लेकिन मुझे फौरन अपनी ड्यूटी पर पहुँचना है।"

"मगर मेरी हालत बहुत खराब है। अगर मुझे फौरन मेडिकल एड हासिल न हुई, तो कुछ भी हो सकता है।"

खुर्शीद हिचकिचाया।

वह अजीब उलझन में फंस चुका था।

"दोस्त, तुम मुझे किसी हॉस्पिटल में छोड़ते हुए भी तो अपनी ड्यूटी पर जा सकते हो।"

"ठीक है।" खुर्शीद व्यग्रतापूर्वक बोला- "तुम जल्दी मोटरसाइकिल की पिछली सीट पर बैठो, मेरे पास ज्यादा वक़्त नहीं है।"

"इसमें कोई शक नहीं दोस्त, तुम्हारे पास सचमुच ज्यादा वक़्त

नहीं है ।"

कमाण्डर एक टांग पर उछलता हुआ खुर्शीद की तरफ बढ़ा ।

यही वो पल था, जब खुर्शीद भी मोटर साइकिल दोबारा स्टार्ट करने के लिये झटके से ऊपर उठा ।

लेकिन फिर वो उठा-का-उठा रह गया ।

कमाण्डर करण सक्सेना की एक प्रचंड लात भड़ाक से खुर्शीद के मुँह पर पड़ी थी ।

सिसकारी छूटी खुर्शीद के मुँह से ।

वह मोटर साइकिल छोड़कर हवा में उछला और फिर पीछे सड़क पर जाकर गिरा ।

मोटर साइकिल भी अब धड़ाम से नीचे गिर पड़ी थी और उसका अगला पहिया जोर-जोर से घूमने लगा ।

खुर्शीद उठता, उससे पहले ही कमाण्डर करण सक्सेना फिर उसके सिर पर जा सवार हुआ ।

इतना ही नहीं उसने खुर्शीद का चेहरा भी अब दोनों हथेलियों में कसकर जकड़ लिया ।

"त... तुम्हारी टांग तो बिल्कुल ठीक है ?" खुर्शीद के दहशत से नेत्र फटे ।

"हाँ, मेरी टांग बिल्कुल ठीक है ।"

"फिर... फिर तुमने एक्सीडेंट का यह सारा नाटक किसलिये किया ?"

"अफसोस इतनी लम्बी कहानी सुनने का तुम्हारे पास वक़्त नहीं है, क्योंकि तुम्हारी मौत आ चुकी है ।"

"ल... लेकिन... ।"

खुर्शीद के शब्द पूरे हो पाते, उससे पहले ही कमाण्डर ने झटके से उसकी गर्दन घुमा डाली ।

एक तड़ की आवाज़ हुई ।

फौरन उसकी गर्दन टूटकर दूसरी तरफ जा लटकी ।

वह चीख तक न सका था ।

उसके बाद कमाण्डर करण सक्सेना ने कुछ काम और बड़े आनन-फानन किये।

जैसे वहीं एक मछली सप्लाई करने वाला टैम्पो खड़ा था, जिसमें से बेपनाह सड़ांध आ रही थी।

कमाण्डर करण सक्सेना खुर्शीद के शव को घसीटता हुआ उसी टैम्पो के पीछे ले गया।

उसके बाद उसने बेहद तेजी से खुर्शीद की वर्दी उतारकर खुद पहनी। काली बेल्ट कसी और कंधे पर लगे सरकारी बैज दुरुस्त किये।

वह वर्दी उसके कसरती शरीर पर बिल्कुल फिट आयी, जैसे मानों उसी के लिये बनी हो।

फिर उसने फुर्ती के साथ वर्दी के अंदर से खुर्शीद का आई-कार्ड निकाला। उसमें से खुर्शीद का फोटो फाड़कर फेंक दिया और उसकी जगह अपना फोटो चिपका लिया।

अब वह पूरी तरह आई.एस.आई.एजेंट बन चुका था।

फिर उसने एक अन्तिम काम और किया।

खुर्शीद के अर्द्धनग्न शव को उठाकर टैम्पो के अंदर फेंक दिया।

फिर मोटरसाइकिल सीधी करके स्टार्ट की। उसके बाद वो खुर्शीद की तरह ही मोटरसाइकिल पर बैठकर सड़क को रौंदता हुआ तूफानी गति से आगे बढ़ गया।

□□□

सुलतान फौजी इस समय सीक्रेट हाउस में था और उसे वहाँ शिफ्ट हुए बाइस घण्टे से ज्यादा समय हो चुका था। सीक्रेट हाउस में उसकी सुरक्षा के लिये वहाँ पांच हथियारबंद गार्ड और मौजूद थे।

हॉल पार करके सीक्रेट हाउस तक किस तरह पहुँचा ज़ाता है, यह राज़ भी अब सुलतान फौजी को मालूम पड़ चुका था।

हालांकि यह राज़ आसानी से किसी को बताया नहीं जाता था। लेकिन क्योंकि सुलतान फौजी को वहाँ शिफ्ट करना था, इसलिये

उसे यह राज़ बताया जाना जरूरी हो गया था।

रहस्य चौंका देने वाला था।

बेहद चौंका देने वाला।

दरअसल हॉल के फर्श पर जो काले-सफेद खाने बने थे, उन खानों पर दो व्यक्ति एक साथ चलते थे।

इसके अलावा उन्हें जबरदस्त बैलेंस बनाकर चलना होता था।

मान लो अगर एक व्यक्ति अपना पैर काले खाने पर रखता है- तो ठीक उसी पल, बिना एक सेकेण्ड के सौंवे हिस्से का भी अंतर किसी दूसरे व्यक्ति ने अपना पैर सफेद खाने पर रखना होता था।

फिर जब पहला व्यक्ति अपना पैर सफेद खाने पर रखता, तो ठीक उसी पल दूसरा व्यक्ति अपना पैर काले खाने पर रखता।

एक लम्हें की गड़बड़ का मतलब था- मौत !

सिर्फ मौत !

दरअसल यह पूरी तरह बैलेंस सिस्टम था।

जब काले ओर सफेद दोनों खाने प्रेशर से एक साथ दबते थे, तो दोनों का ही अटेकिंग सिस्टम बेकार हो जाता था और फिर वह कोई हरकत नहीं करते थे।

इसीलिये उन खानों पर कोई अकेला व्यक्ति नहीं चल सकता था।

क्योंकि किसी भी एक व्यक्ति के लिये यह नामुमकिन काम है कि वह अपने दोनों पैर एक साथ उठाकर काले-सफेद खाने पर रखे।

अगर वह कूदता हुआ चलेगा, तब भी उससे पैर रखने में कहीं-न-कहीं चूक जरूर होगी।

और चूक होने का मतलब है- हमला।

जबरदस्त हमला !

सुलतान फौजी उस पूरे सिस्टम को देखकर चमत्कृत रह गया। वह दो-दो के जोड़े बनाकर ही सीक्रेट हाउस के अंदर आये थे।

पांच गार्ड- एक वह खुद !

यानि कुल छः व्यक्ति !

दो-दो के तीन जोड़े !

हालांकि सुलतान फौजी को उस पूरे सिस्टम के बारे में पहले ही बता दिया गया था।

लेकिन फिर भी वो काले-सफेद खानों पर पैर रखता हुआ यूँ डर रहा था कि अभी वो उन खानों पर पैर रखेगा और अभी मौत उसके ऊपर चील की तरह झपटेगी।

लेकिन फिर भी शुक्र था कि कुछ न हुआ।

कोई गोली न चली।

कोई गैस न छूटी।

उसने एक-एक खाने पर थर-थर कांपते हुए कदम रखा था।

पांच गार्डों को भी उस सीक्रेट हाउस में बड़े ढंग से तैनात किया गया था।

सीक्रेट हाउस के बीच में इस्पात की जो तीन विशाल अलमारियाँ बनी थीं, उन अलमारियों में से पहले ही सारे सीक्रेट पेपर निकाले जा चुके थे।

इसके अलावा उन अलमारियों में कुछ मामूली परिवर्तन करके उन्हें इस योग्य बनाया गया था कि उनके अंदर सभी पांच गार्ड छिप सकें।

जैसे अलमारियों के बीच में जो रैक लगे थे, उन्हें वहाँ से हटा दिया गया। रैक चूंकि फोल्डिंग थे, इसलिये उन्हें वहाँ से हटाने में कोई परेशानी न आयी। रैक हटाने से यह सहूलियत हो गयी कि अब गार्ड उस अलमारी में सीधे खड़े हो सकते थे और नीचे इत्मीनान से लेट भी सकते थे। उनमें काफी जगह थी।

तीनों अलमारियों की छत में एक-एक टेबिल फैन भी फिट किया गया था।

इसके अलावा अंदर सांस लेने के लिये ऑक्सीजन सिलेण्डर और ऑक्सीजन मास्क की भी व्यवस्था की गयी थी।

यह प्वाइंट कर्नल नासिर ने ही सोचा था कि कुछ गार्डों को उन अलमारियों के अंदर छिपाकर रखा जाये, ताकि कमाण्डर करण

सक्सेना अगर इत्तेफाक से वहाँ तक भी घुस आये, तो वह गार्ड उस पर एकदम से हमला कर सकें और उसे मार सकें।

कर्नल नासिर का उन गार्डों के लिये खास आदेश था। वह नाश्ता करने या फिर खाना खाने के लिये ही उन अलमारियों से बाहर निकलें, वरना बाकी वक़्त अंदर ही रहें।

कुल मिलाकर सुलतान फौजी जबरदस्त सुरक्षा-घेरे में था।

□□□

रात के साढ़े नौ बजे का समय था।

यह वो समय था, जब दो व्यक्ति उन सबका खाना लेकर सीक्रेट हाउस के अंदर आये।

अलमारियाँ खटखटाकर गार्डों को सूचित किया गया कि उनका खाना आ चुका है।

तुरंत धड़ाधड़ अलमारियों के दरवाजे खुले। पहली दो अलमारियों में से दो-दो गार्ड बाहर निकले, जबकि तीसरी अलमारी में से सिर्फ एक गार्ड बाहर निकला।

वह सभी पसीनों से लथपथ थे।

"तौबा !" एक गार्ड बाहर आते ही अपने बालों को झाड़ता हुआ बोला- "ऐसा लग रहा है, जैसे दोजख की सजा भुगतनी पड़ रही हो। अगर अंदर टेबिल फैन न लगे होते, तो अब तक तो हम सब जहन्नुम पहुँच जाते। टेबिल फैन के बावजूद हम सबके पसीने की यह हालत है।"

"मैं समझता हूँ।" तभी दूसरा गार्ड भी थोड़ा झुंझलाकर बोला- "हम सबको खामखाह इन अलमारियों में बंद रहने की सजा दी जा रही है। कमाण्डर करण सक्सेना किसी भी हालत में इस सीक्रेट हाउस में नहीं पहुँच सकता।"

"क्यों नहीं पहुँच सकता ?" सुलतान फौजी बोला- "क्या गारण्टी है ?"

"बहुत बड़ी गारंटी है।" पहले वाले गार्ड ने ही कहा- "सबसे

पहले तो उसके लिये यही पता लगाना मुश्किल होगा कि तुम इस सीक्रेट हाउस के अंदर हो। और अगर उसने यह पता लगा भी लिया, तो फिर उसके लिये यह पता लगाना तो और मुश्किल होगा कि इस सीक्रेट हाउस तक किस तरह पहुँचा जायेगा ? और अगर किसी करिश्मे की बदौलत उसे यह भी मालूम हो गया।" गार्ड ने एक-एक शब्द चबाते हुए कहा- "तब भी उसके लिये इस सीक्रेट हाउस तक आना नामुमकिन होगा।"

"क्यों, तब क्यों नामुमकिन होगा ?"

"क्योंकि मिस्टर फौजी- तुम देख ही चुके हो, यहाँ तक आने के लिये कम से कम दो आदमी चाहियें। तभी इन काले-सफेद खानो पर बैलेंस बनाया जा सकता है। तभी यहाँ आया जा सकता है। जबकि कमाण्डर करण सक्सेना अकेला है, बिल्कुल अकेला।"

"एकदम ठीक बात है।" एक दूसरा गार्ड भी बोला- "कमाण्डर करण सक्सेना सचमुच यहाँ तक नहीं आ सकता। वैसे भी अगर हमें तैनात ही करना था, तो इन सीक्रेट हाउस के अंदर ही तैनात किया जा सकता था। तब हम कम से कम इस दोजख की सजा को तो भुगतने से बच जाते। कमाण्डर करण सक्सेना को खामखाह इतना बड़ा हव्वा बना लिया गया है।"

"वह सचुमच हव्वा ही है बेवकूफों !" सुलतान फौजी ने दांत किटकिटाये।

"य... यानि तुम यह कहना चाहते हो।" एक गार्ड की आवाज़ कंपकंपा उठी- "क... कि वो यहाँ तक भी आ जायेगा ?"

"बिल्कुल।" सुलतान फौजी के माथे पर पसीने की बूंदे चुहचुहा उठी थीं- "मुझे न जाने क्यों ऐसा लग रहा है कि वो यहाँ भी पहुँच जायेगा। हमारी तमाम कौशिशों के बावजूद पहुँच जायेगा। इतना ही नहीं, मैं गारंटी से कह सकता हूँ कि वो इस वक्त भी खामोश नहीं बैठा होगा बल्कि हण्ड्रेड परसेंट इस जगह का पता लगाने की कौशिश में जुटा होगा। तुम देख लेना, वह कुछ न कुछ जरूर करेगा। उसका नाम कमाण्डर करण सक्सेना है। वह आसानी से हार

मानने वाले इंसानों में से नहीं।"

सुलतान फौजी के उन शब्दों ने सबके बीच दहशत की लहर दौड़ा दी।

सब घबरा उठे।

तभी जो दो आदमी खाना लेकर आये थे, उनमें से एक ने सब्जैक्ट बदला- "अब कमाण्डर करण सक्सेना की इस बातचीत को यहीं खत्म करो और सब इत्मीनान से बैठकर खाना खाओ। वैसे भी काफी रात हो चुकी है।"

फिर वह सब वहीं सीक्रेट हाउस में पड़ी एक चटाई पर बैठ गये और उसके बाद उन्होंने खाना खाना शुरू किया।

लेकिन खाने में किसी का दिल न था।

सबके दिमाग में एक ही नाम हथौड़े की तरह बज रहा था।

कमाण्डर करण सक्सेना !

कमाण्डर करण सक्सेना ! !

कमाण्डर करण सक्सेना ! ! !

वह इकलौता नाम उनके बीच डर का पर्याय बन चुका था।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना की मोटर साइकिल एयर चीफ मार्शल खलील अहमद की कोठी के सामने जाकर रुकी।

वहाँ जबरदस्त पहरा था।

रात के समय भी पुलिस की दो पेट्रोलिंग कारें बाहर खड़ी थीं और कोई एक दर्जन के आसपास सुरक्षाकर्मी गेट पर इधर-उधर टहल रहे थे।

कमाण्डर करण सक्सेना ने बेधड़क मोटरसाइकिल स्टैण्ड पर खड़ी की, फिर बड़े गर्वीले अंदाज में उतरा और लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ सुरक्षाकर्मियों की तरफ बढ़ा।

उसी पल खलील अहमद के विशालकाय देह वाले बॉडीगार्ड ने आगे बढ़कर उसे रोक लिया।

"हैलो हैंडसम- कहो, क्या बात है ?"

"मेरा नाम खुर्शीद है ।" कमाण्डर करण सक्सेना ने थोड़ी व्याकुलता दर्शाई- "मैं आई.एस.आई. एजेंट हूँ और मुझे फौरन खलील साहब से मिलना है। मुझे आई.एस.आई. के चीफ ने उनसे मुलाकात करने के लिये भेजा है ।"

इस बीच कमाण्डर करण सक्सेना ने अपना आई.कार्ड. भी निकालकर बॉडीगार्ड को दिखाया ।

बॉडीगार्ड ने एक सरसरी सी निगाह उस कार्ड पर डाली ।

"खलील साहब से क्या काम है ?"

"काम बहुत ही ख़ास है, जो सिर्फ खलील साहब को ही बताया जा सकता है ।" कमाण्डर करण सक्सेना पहले की तरह ही व्याकुलतापूर्वक बोला- "आप प्लीज टाइम बर्बाद न करें, इस वक्त एक-एक सेकेंड बहुत कीमती है । आप फौरन खलील साहब से जाकर कहिये, सुलतान फौजी के बारे में एक अर्जेंट मैसेज है, जो अगर उन्हें फ़ौरन न दिया गया, तो बहुत भारी गड़बड़ हो जायेगी ।"

कमाण्डर करण सक्सेना ने आई.कार्ड. वापस जेब में रख लिया था ।

"कैसी गड़बड़ ?" बॉडीगार्ड ने पूछा ।

"कहा न, इस बारे में कोई भी बात सिर्फ खलील साहब को ही बतायी जा सकती है । आप फौरन मेरी उनसे बात कराने का इंतजाम कीजिए ।" कमाण्डर करण सक्सेना की आवाज़ में गर्मी थी ।

"लेकिन इस समय रात के ग्यारह बज रहे हैं, खलील साहब सोने के लिये जा चुके होंगे ।" बॉडीगार्ड बोला ।

"वह चाहे कुछ भी कर रहे होंगे ।" कमाण्डर शब्दों पर जोर देकर बोला- "मेरा उनसे फौरन बात करना बेइन्तहा जरूरी है । मैं पहल ही कह चुका हूँ कि अगर मेरी उनसे जल्दी बात न हुई, तो बहुत भारी गड़बड़ हो जायेगी ।"

"ल... लेकिन... ।"

"अगर तुम मेरी बात नहीं कराना चाहते, तो न सही।" कमाण्डर करण सक्सेना झल्लाकर बोला- "मैं यही रिपोर्ट अपने चीफ को जाकर दे दूंगा। फिर अगर कोई गड़बड़ होती है, तो उसके जिम्मेदार सिर्फ तुम होओगे।"

अब बॉडीगार्ड सकपका उठा।

जबकि कमाण्डर करण सक्सेना वापस जाने के लिये पलट चुका था। फिर वो अपनी मोटरसाइकिल की तरफ बढ़ा।

"सुनो... सुनो।" पीछे से बॉडीगार्ड चिल्लाया।

"क्या है ?" कमाण्डर आंदोलित अंदाज में ठिठका।

"त... तुम तो एकदम चल दिये।" बॉडीगार्ड व्यग्र स्वर में बोला- "ए... एक मिनट ठहरो, मैं अभी खलील साहब से बात करता हूँ।"

"ठीक है, जल्दी बात करो।" कमाण्डर करण सक्सेना ने उस पर मानों बड़ा भारी अहसान किया था।

□□□

बॉडीगार्ड ने अब फौरन जेब से मोबाइल फोन निकाल लिया। उस पर कुछ नम्बर डायल किये और फिर वो फोन लेकर एक कोने में चला गया।

कुछ देर वो फोन पर बातें करता रहा।

फिर उसने फोन बंद किया। उसे वापस जेब में रखा और उसके बाद फिर कमाण्डर के नजदीक आ गया।

"ठीक है, आओ मेरे साथ।" बॉडीगार्ड बोला- "मैंने खलील साहब से बात कर ली है, वह अब तुम्हारा ही इंतजार कर रहे हैं।"

"चलो।"

कमाण्डर उस बॉडीगार्ड के पीछे-पीछे कोठी के अंदर दाखिल हो गया।

वहाँ सचमुच बड़ा जबरदस्त पहरा था।

गार्ड कदम-कदम पर बिछे पड़े थे।

कमाण्डर करण सक्सेना उस गार्ड के साथ तीन-चार लम्बे-लम्बे

गलियारे के अंदर से होता हुआ एक हॉल में दाखिल हुआ।

□□□

वह काफी सजा-धजा हॉल था।

फर्श पर कीमती कालीन बिछा था और सामने ही सोफे पर एक चालीस-पैंतालीस साल का आदमी बैठा था, जिसके सिर के आधे से ज्यादा बाल उड़े हुए थे। बदन थोड़ा भारी था और निचला जबड़ा लटका हुआ था। नाइट गाउन से साफ जाहिर था कि वह आदमी बस बिस्तर से ही उठकर आया है।

"सर !" बॉडीगार्ड ने उस आदमी को जोरदार सैल्यूट मारा- "यही वो आदमी है, जो आपसे मिलना चाहता है।"

खलील अहमद ने एक भरपूर नजर कमाण्डर पर डाली।

"कहो।" फिर वो रूखे स्वर में बोला- "क्या बात है ?"

"बात बहुत खतरनाक है सर !" कमाण्डर बोला- "मैं अकेले में आपसे बात करना चाहता हूँ।"

"ठीक है, आप लोग बात करें।" बॉडीगार्ड बोला- "मैं दरवाजे के बाहर ही खड़ा हूँ।"

बॉडीगार्ड फौरन ही हॉल से बाहर निकल गया।

जाते-जाते उसने दरवाजा भी बंद कर दिया।

"हाँ, अब बोलो।" खलील अहमद भी सस्पैंस के वशीभूत सोफा छोड़कर खड़ा हो गया- "क्या बात है ? कर्नल नासिर ने इतनी रात को तुम्हें मेरे पास किसलिये भेजा है ?"

"बहुत धमाकेदार खबर है सर !" कमाण्डर करण सक्सेना, खलील अहमद के थोड़ा करीब पहुँच गया और धीमे स्वर में फुसफुसाकर बोला- "आपको सुनकर हैरानी होगी कि किसी तरह कमाण्डर तक यह खबर लीक होकर पहुँच चुकी है कि सुलतान फौजी को एयरफ़ोर्स के हैडक्वार्टर में शिफ्ट कर दिया गया है।"

"क... क्या कह रहे हो ?" खलील अहमद के मुँह से तेज सिसकारी छूटी।

"इसके अलावा एक और सनसनीखेज खबर है सर !" कमाण्डर अपनी आवाज़ को हद दर्जे तक रहस्यमयी बनाता हुआ बोला- "जिसे सुनकर आप और ज्यादा बुरी तरह उछल पड़ेंगे।"

"क... क्या ?"

"आई.एस.आई. को थोड़ी देर पहले ही रिपोर्ट मिली है कि वो भारतीय जासूस कमाण्डर करण सक्सेना आपकी कोठी में भी दाखिल हो चुका है।"

"म... मेरी कोठी में !" खलील अहमद के मुँह से चीख निकली।

"यस सर !"

"ल... लेकिन उसे तो यहाँ किसी ने नहीं देखा ?"

"दरअसल वह आपके ही किसी खास आदमी का मेकअप करके कोठी में घुसा है।" कमाण्डर बोला- "इसलिये उसके पकड़े जाने का सवाल ही नहीं उठता। वह आपके किसी सिक्योरिटी गार्ड के रूप में भी हो सकता है। ड्राइवर के रूप में भी हो सकता है। बावर्ची के रूप में भी हो सकता है या फिर उस बाडीगार्ड के रूप में भी हो सकता है, जो इस समय हॉल के बाहर खड़ा है। इसके अलावा आई.एस.आई. को एक और रिपोर्ट मिली है सर !"

"क... क्या ?"

"हमें पता चला है कि कमाण्डर किसी तरह आपकी टेलीफोन कॉल भी सुन रहा है, इसीलिये कर्नल नासिर साहब ने आपसे फोन के ज़रिये बात नहीं की। क्योंकि वो नहीं चाहते थे कि कमाण्डर को इस राज का पता चले कि उसका राज खुल चुका है।"

"ओह ! लेकिन सवाल ये है कि वो मेरी कोठी में आखिर घुसा किस मकसद से है ?"

"आज की तारीख में तो उसका एक ही मकसद है सर !" कमाण्डर फुसफुसाये स्वर में बोला- "और वो है, सुलतान फौजी ! वह जरूर आपको जरिया बनाकर किसी तरह सुलातन फौजी तक पहुँचना चाहता होगा। बहरहाल उसका मकसद चाहे जो है, लेकिन कर्नल साहब फौरन आपसे इसी सिलसिले में मिलना चाहते हैं और

इसीलिये उन्होंने आपको फ़ौरन अपने पास बुलाया है। वह खुद ही चलकर यहाँ आते और यहीं आपसे बात करते, लेकिन क्योंकि कमाण्डर करण सक्सेना यहाँ मौजूद है, इसलिये वो इस जगह को बातचीत के लिये ठीक नहीं समझते।"

"उनका सोचना बिल्कुल सही है।" खलील अहमद ने बेचैनी के आलम में अपने गंजे सिर पर हाथ फेरा- "अगर सचमुच यहाँ कमाण्डर मौजूद है, तो वाकई यह जगह बातचीत के लिये मुनासिब नहीं।"

"तो फिर आप फौरन मेरे साथ आई.एस.आई. हैडक्वार्टर चलें सर, वहाँ कर्नल साहब आपका बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।"

"ठीक है, मैं अभी दो मिनट में कपड़े चेंज करके आता हूँ।"

"एक बात और सर !"

"क्या ?"

"चीफ ने मुझे आदेश दिया है, मैं आपको बिल्कुल अकेले हैडक्वार्टर लेकर आऊं। आपके साथ आपका कोई सिक्योरिटी गार्ड, कोई बॉडीगार्ड, यहाँ तक कि आपका ड्राइवर भी न हो। क्योंकि मौजूदा हालात में किसी पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता।"

"मैं तुम्हारी बात समझ रहा हूँ।" खलील अहमद बेचैनीपूर्वक ही बोला- "टेंशन न लो, मैं बिल्कुल अकेला ही तुम्हारे साथ चलूंगा।"

"थैंक्यू सर !"

फिर खलील अहमद कपड़े बदलने के लिये अंदर की तरफ चला गया।

जबकि कमाण्डर करण सक्सेना के होठों पर अब खतरनाक किस्म की मुस्कान मटरगश्ती करने लगी थी।

यह योजना का हर पत्ता सोच-समझकर चल रहा था।

खूब सोच-समझकर।

□□□

जल्द ही खलील अहमद ड्रेस चेंज करके आ गया, फिर वह कमाण्डर करण सक्सेना के साथ लम्बे-लम्बे डग रखता हुआ हॉल से बाहर निकला।

बॉडीगार्ड अभी भी वहीं बड़ी अलर्ट पोजीशन में खड़ा था।

"आप कहीं जा रहे हैं सर ?" खलील अहमद को फुल ड्रेस में देखकर वह उसके पीछे-पीछे लपका।

"हाँ, मुझे एकाएक आई.एस.आई. हैडक्वार्टर जाना पड़ रहा है। मैं एक घण्टे के अंदर-अंदर लौट आऊंगा।" खलील अहमद गलियारे में लम्बे-लम्बे डग रखता हुआ बोला।

"ठीक है सर ! मैं ड्राइवर को बुलाता हूँ।"

"नहीं।" खलील अहमद तुरंत बोला- "ड्राइवर को बुलाने की कोई जरूरत नहीं है।"

"क... क्यों सर ?" बॉडीगार्ड बुरी तरह चौंका।

"क्योंकि ड्राइवर मेरे साथ नहीं जा रहा है। इस समय कोई भी मेरे साथ नहीं जा रहा है।" खलील अहमद ने लम्बे-लम्बे डग रखते हुए अपना फैसला सुनाया- "मुझे एक बहुत जरुरी काम से अभी वहाँ अकेले पहुँचना है।"

"य... यह आप क्या कह रहे हैं सर ? ब... बिल्कुल अकेले ?" बॉडीगार्ड के मुँह से आश्चर्यमिश्रित आवाज़ निकली- "क... क्या मैं भी आपके साथ नहीं जा रहा हूँ ?"

"नहीं, तुम भी नहीं।" खलील अहमद ने दृढ़ लहजे में कहा- "कोई बॉडीगार्ड नहीं।"

तब तक खलील अहमद गलियारा पार करके बाहर लॉन में खड़ी अपनी उस कार के नजदीक पहुँच चुका था, जिसकी छत पर लाल बत्ती लगी थी।

कमाण्डर उसके साथ-साथ था, जबकि बॉडीगार्ड पीछे-पीछे दौड़ा चला आ रहा था।

खलील अहमद को देखकर फौरन उसको कई सारे और

बॉडीगार्डों ने चारों तरफ से घेर लिया।

"ल... लेकिन आपका इस तरह कहीं भी अकेले जाना ठीक नहीं है सर !" बॉडीगार्ड बोला।

"मैं अकेले कहाँ हूँ, मेरे साथ आई.एस.आई. का एक एजेन्ट है।" खलील अहमद बोला- "जो खुद जबरदस्त कमाण्डो होता है। मैं इसके साथ जिस तरह जा रहा हूँ, उसी तरह बिल्कुल ठीक-ठाक वापस लौट आऊंगा। तुम लोग टेंशन न लो।"

"बिल्कुल।" कमाण्डर ने भी यकीन के साथ कहा- "आप लोगों को वाकई परेशान होने की कोई जरूरत नहीं। अगर इनके ऊपर कोई आंच आती है, तो मैं अपनी जान दांव पर लगा दूंगा। वैसे भी ड्राइवर की इसलिये जरूरत नहीं है, क्योंकि इनकी कार मैं ही ड्राइव करने वाला हूँ।"

वह शब्द कहने के बाद कमाण्डर ने कार का ड्राइविंग डोर खोला और खुद ड्राइविंग सीट पर जा बैठा।

उसी पल खलील अहमद भी कार की पिछली सीट पर बैठ गया।

तब कमाण्डर ने मुस्कुराते हुए बॉडीगार्ड की तरफ देखा- "मेरी मोटरसाइकिल बाहर खड़ी है, जब तक मैं लौट न आऊं- प्लीज़ उसका ख्याल रखना।"

"मोटरसाइकिल की फ़िक्र न करो।"

"थैंक्यू !"

अब कार का इंजन गरज उठा था। कार का इंजन गरजते ही वह तूफानी गति से कोठी का दरवाजा पार करके बाहर निकल गयी।

पीछे सब हक्के-बक्के खड़े रह गये।

पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था, जब खलील अहमद जिद करके खुद इस तरह अकेला बाहर गया हो।

वह तो खुद अपनी सुरक्षा के लिये बहुत अलर्ट रहता था।

फिर आज क्या हुआ ?

क्यों हुआ ?

सब सन्न थे ।

□□□

खुद खलील अहमद के दिमाग में भी यह बात काफी देर बाद आयी कि वह किस तरह एक आदमी के हाथों बेवकूफ बन गया है ।

वह उस समय चौंका था, जब उसने कार आई.एस.आई. हैडक्वार्टर की तरफ जाने की बजाय एक ऐसी वीरान सड़क की तरफ जाते देखी, जिस सड़क पर ट्रेफिक नाममात्र के लिये ही चलता था ।

"य... यह तुम मुझे कहाँ लेकर जा रहे हो ?" खलील अहमद चिल्ला उठा ।

कमाण्डर करण सक्सेना फौरन अपने असली रंग में आ गया ।

वह जवाब देने की बजाय खिलखिलाकर हँसा ।

"त... तुम आई.एस.आई. एजेंट नहीं हो सकते ।" खलील अहमद का रंग एकदम दहशत से पीला पड़ गया- "त... तुम जरूर कोई और हो ? कोई और ही हो ?"

कमाण्डर फिर हँसा ।

उसी पल खलील अहमद का हाथ तेजी से अपनी रिवॉल्वर की तरफ झपटा था, कमाण्डर उसे रोक पाता, उससे पहले ही खलील अहमद ने बेपनाह फुर्ती से अपनी रिवॉल्वर निकाल ली ।

इतना ही नहीं, रिवॉल्वर निकालते ही उसने धांय से गोली भी चलायी ।

कार के पहिये सर्र-सर्र करते हुए काफी दूर तक घिसटते चले गये । फिर कार झटके से रुकी ।

कार रोकते ही कमाण्डर ने अपना शरीर सीट पर गिरा दिया था ।

इसीलिये गोली सनसनाती हुई उसके ऊपर से गुजरी और विण्ड स्क्रीन को फाड़ती हुई पार निकली गयी ।

खलील अहमद दूसरी गोली चला पाता, उससे पहले ही कमाण्डर का बदन जम्प लेकर ऊपर की तरफ उछला । हालांकि ऊपर उछलने के लिये जगह काफी कम थी ।

लेकिन न सिर्फ वो उछला, बल्कि उछलते ही वह टाइगर क्लान के एक्शन में भी आ गया था । उसी पल खलील अहमद की रिवॉल्वर भी उसकी तरफ तनी ।

उंगली ट्रेगर की तरफ दौड़ी ।

मौत से मुकाबला था- साक्षात् मौत से !

लेकिन खलील अहमद की रिवॉल्वर दूसरी बार भी बारूद उगल पाती, उससे पहले ही कमाण्डर की प्रचण्ड लात उसके सीने पर पड़ी ।

चिंघाड़ उठा खलील अहमद !

उसकी खोपड़ी धड़ाक से कार की सीट में जाकर लगी ।

उसी पल धड़ाधड़ दो प्रचण्ड घूंसे खलील अहमद के चेहरे पर पड़े ।

बिलबिला उठा खलील अहमद । उसे ऐसा लगा, जैसे भारी-भरकम लोहे के हथौड़े उसके चेहरे पर पड़ गये हों ।

वह सीट पर ही ढेर हो गया ।

वह फिर हरकत में आता, उससे पहले ही कमाण्डर करण सक्सेना ने उसके हाथ से रिवॉल्वर छीन ली । तुरंत रिवॉल्वर उसकी उंगलियों के गिर्द घूमी और फिर खलील अहमद की पसलियों में जा घुसी ।

सब कुछ एक सेकण्ड में हो गया था, सिर्फ एक सेकण्ड में ।

पसीने में लथपथ हो गया खलील अहमद !

जिस्म पत्ते की तरह कंपकपाने लगा ।

पूरी कार के अंदर छत में लगी डोम लाइट का प्रकाश फैला था ।

"क... कौन हो तुम ?" खलील अहमद दहशतनाक नजरों से उसे देखता हुआ बोला- "क... कौन हो ? त... तुम्हें कर्नल नासिर ने नहीं भेजा था । त... तुम आई.एस.आई. एजेंट भी नहीं हो ।"

"बिल्कुल ठीक ।" कमाण्डर ने दांत किटकिटाये- "बिल्कुल ठीक । एयर चीफ मार्शल, मुझे न कर्नल नासिर ने तुम्हारे पास भेजा था और न ही मैं आई.एस.आई. एजेंट हूं ।"

"य... यानि तुमने मुझे पूरी कहानी झूठी सुनायी थी ?" खलील

अहमद ने कहा- "तुमने मुझसे यह भी झूठ बोला कि कमाण्डर करण सक्सेना मेरी कोठी में घुस आया है ? तुमने यह भी झूठ बोला कि कमाण्डर करण सक्सेना को सुलतान फौजी के एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर में होने का पता चल गया है ?"

"गलत, बिल्कुल गलत । मैंने तुमसे सिर्फ एक झूठ बोला एयर चीफ मार्शल, वो यह कि मैं आई.एस.आई. एजेंट हूँ । इसके अलावा मैंने तुमसे कोई झूठ नहीं बोला ।"

"य... यानि !" खलील अहमद बेपनाह हैरानी से बोला- "यानि यह बात ठीक थी कि कमाण्डर मेरी कोठी में घुस आया है ? यह भी सच था कि कमाण्डर को सुलतान फौजी के एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर में होने का पता चल गया है ?"

"बिल्कुल ।"

"ल... लेकिन तुम यह सब कैसे जानते हो ?" उसने आश्चर्य से पूछा ।

"क्योंकि मैं ही कमाण्डर करण सक्सेना हूँ बेवकूफ आदमी !" कमाण्डर ने उसे भस्म कर देने वाली खतरनाक नजरों से घूरा- "मेरा ही नाम कमाण्डर करण सक्सेना है ।"

दंग रह गया खलील अहमद- दंग !

उसके दिल-दिमाग पर भीषण बिजली-सी गड़गड़ाती हुई गिरी ।

□□□

खलील अहमद अभी भी फटी-फटी नजरों से कमाण्डर करण सक्सेना को ही देख ही रहा था, जैसे किसी अजूबे को देख रहा हो ।

"अब जवाब दो !" कमाण्डर हिंसक लहजे में बोला- "क्या यह सच नहीं है कि कमाण्डर तुम्हारी कोठी के अंदर घुस गया था ? और क्या यह बात भी सच नहीं है कि कमाण्डर करण सक्सेना को यह राज़ मालूम हो गया है कि सुलतान फौजी एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर में है ? इस बात का सबसे बड़ा सबूत ये है एयर चीफ मार्शल कि यह बात खुद कमाण्डर करण सक्सेना बोल रहा है ।"

"ल... लेकिन तुम मुझे यहाँ क्यों लेकर आये हो ?" खलील अहमद के जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा था- "त... तुमने मेरा किडनैप क्यों किया है ?"

"तुम्हारा सबसे बड़ा गुनाह ये है कि तुम एयरफ़ोर्स के सबसे बड़े अधिकारी हो। उस एयरफ़ोर्स के, जिसके हैडक्वार्टर में फौजी को छिपाया गया है।"

"ल... लेकिन इसमें मैं क्या कर सकता हूँ ? यह आई.एस.आई. फैसला था। कर्नल नासिर का फैसला था।"

"फैसला जरूर कर्नल नासिर का था, लेकिन अब संकट के घेरे में तुम आ गये हो खलील अहमद !" कमाण्डर करण सक्सेना जहरीले सांप की तरह फुंफकारकर बोला- "मैं यह राज़ जरूर जानता हूँ कि सुलतान फौजी को एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर में छिपाया गया है, लेकिन अभी यह राज़ नहीं जानता कि उसे वहाँ किस हॉल में छिपाया गया है और उस हॉल के चारों तरफ क्या सिक्योरिटी है ? अब यह राज़ तुम मुझे बताओगे। इसीलिये मैं तुम्हें इस वीरान इलाके में लेकर आया हूँ।"

खलील अहमद की दहशत और बढ़ गयी।

"न... नहीं।" उसकी आवाज़ कंपकंपायी- "म... मैं तुम्हें उस हॉल के बारे में कुछ नहीं बताऊंगा।"

"तुम्हें बताना होगा।" कमाण्डर वहशियों की तरह चिल्लाया।

"न... नहीं।"

उसी पल रिवॉल्वर उसकी पसलियों से हटकर जांघ के पास पहुँची और फिर धांय से गोली चली।

चिंघाड़ उठा खलील अहमद।

गोली उसकी जांघ को चीरती चली गयी थी और तुरंत वहाँ से भलभल खून बहने लगा।

"मुझे उस हॉल के बारे में जानकारी चाहिये खलील अहमद ! एकदम पूरी जानकारी।" कमाण्डर करण सक्सेना साक्षात् दरिन्दा बन चुका था- "और वह जानकारी तुम ही मुझे दोगे।"

रिवॉल्वर कमाण्डर की उंगलियों के गिर्द घूमी तथा फिर गोली चली ।

इस बार गोली खलील अहमद की दूसरी जांघ में लगी, फिर दहाड़ा खलील अहमद !

वह सीट से कोई आधा फुट ऊपर उछला ।

"तुम्हारी जिंदगी के मेरे लिये कोई मायने नहीं है एयर चीफ मार्शल !" कमाण्डर जुनून में विक्षिप्तों की तरह बोला- "कोई मायने नहीं है । तुम अगर मुझे जानकारी दिये बिना मर भी गये, तब भी मुझे चिंता नहीं । क्योंकि फिर मैं एयरफ़ोर्स के किसी दूसरे बड़े अधिकारी का किडनैप करूँगा, उसे भी इसी तरह से टॉर्चर करूँगा । यह सिलसिला तब तक जारी रहेगा, जब तक कोई अधिकारी टूट नहीं जाता । मुझे सब कुछ बता नहीं देता । अलबत्ता तुम्हारा नाम जरूर खामखाह शहीदों में दर्ज हो जायेगा । जल्दी बोलो, तुम मुझे उस हॉल के बारे में बता रहे हो या नहीं ?"

"न... नहीं ।"

"धांय ।"

इस बार गोली खलील अहमद के बाजू में लगी ।

पुनः डकराया खलील अहमद !

वह फिर सीट के ऊपर उछला ।

उसका शरीर अब खून में लथपथ होता जा रहा था ।

"मेरे सवाल का जल्दी जवाब दो एयर चीफ मार्शल !" कमाण्डर का चेहरा ज्वालामुखी का दहाना बन चुका था- "जल्दी ! मेरे सब्र का बांध टूटता जा रहा है ।"

इस बार कमाण्डर ने रिवॉल्वर खलील अहमद के सीने पर ठीक उस जगह रखी, जहाँ दिल होता है ।

फिर उसकी उंगली ट्रेगर की तरफ दौड़ी ।

"न... नहीं ।" खलील अहमद दहशत से चिल्लाया- "न... नहीं, गोली मत चलाना । ग... गोली नहीं ।"

"तो फिर जल्दी उस हॉल के बारे में बताओ ।"

"उ... उसका नाम सीक्रेट हाउस है, सीक्रेट हाउस !" खलील अहमद एकदम आतंकित होकर बोला।

"सीक्रेट हाउस !" कमाण्डर ने दांत किटकिटाये- "मैंने सुना है कि उसे सीक्रेट हाउस के चारों तरफ ऐसी जबरदस्त सिक्योरिटी है कि जो भी आदमी उस सीक्रेट हाउस में जाने की कोशिश करेगा, वही मारा जायेगा।"

"बिल्कुल ठीक सुना है तुमने।"

"क्या सिक्योरिटी है, जल्दी बोलो।"

फिर खलील अहमद एक ही सांस में उसे पूरी सिक्योरिटी बताता चला गया था।

उसने सीक्रेट हाउस के चारों तरफ बने सभी चार हॉलों के बारे में बताया।

उनके काले सफेद खानों के बारें में बताया।

यह भी बताया कि काले खाने पर पैर रखने से क्या होता है और सफेद खाने पर पैर रखने से क्या होता है ?

सिक्योरिटी वाकई अद्भुत थी।

कमाण्डर करण सक्सेना भी उस सिक्योरिटी के बारे में जानकर हैरान रह गया।

□□□

अब कमाण्डर करण सक्सेना, खलील अहमद के शरीर से थोड़ा पीछे हो गया था और उसके सीने से रिवॉल्वर भी हटा ली थी।

"हूँ।" कमाण्डर ने हुंकार सी भरी- "इसमें कोई शक नहीं कि आई.एस.आई. ने इस बार सुलतान फौजी को एक लाजवाब जगह बंद किया है। लेकिन कोई बात नहीं, तुम मुझे यह बताओ कि उन काले सफेद खानों को पार करके किस तरह सीक्रेट हाउस तक पहुँचा जायेगा ?"

"य... यह राज़ मैं भी नहीं जानता।" खलील अहमद ने कंपकंपायें स्वर में कहा।

"तुम झूठ बोल रहे हो।" कमाण्डर चिल्ला उठा।

उसके तेवर पुनः चढ़ गये थे।

"न... नहीं, मैं झूठ नहीं बोल रहा।" खलील अहमद डरते-डरते बोला- "मेरी बात का यकीन करो। एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर में सीक्रेट हाउस का डिपार्टमेंट बिल्कुल अलग है। एयर चीफ मार्शल हर पाँच साल बाद बदल जाते हैं, जबकि सीक्रेट हाउस का डिपार्टमेंट कभी नहीं बदलता। एक बार जिस आदमी की सीक्रेट हाउस के ख़ास दस्ते में ड्यूटी लग जाती हैं, फिर तमाम उम्र उसी दस्ते में लगी रहती हैं। इसी वजह से सीक्रेसी बनाये रखने के लिये यह राज़ किसी दूसरे आदमी को नहीं बताया जाता।"

"तुम मुझे बेवकूफ बनाने की कौशिश कर रहे हो खलील अहमद ?"

"न... नहीं, मैं बेवकूफ नहीं बना रहा।"

"ऐसा नहीं हो सकता।" कमाण्डर गुर्राकर बोला- "कि पाकिस्तान का एयर चीफ मार्शल इतने मामूली राज़ से वाकिफ न हो।"

"यह सच है। और यह कोई मामूली राज़ नहीं कमाण्डर !"

कमाण्डर करण सक्सेना की आखें अब फिर आक्रोश से धधकने लगी थीं।

उसने फिर रिवॉल्वर खलील अहमद के सीने पर रख दी।

"य... यानि तुम मुझे इस राज़ के बारे में कुछ नहीं बताओगे ?" कमाण्डर ने दांत किटकिटाये।

"मुझे अगर मालूम होता, तो मैं जरूर बताता।"

कमाण्डर ने रिवॉल्वर का सैफ्टी लॉक पीछे खींचा।

उसके चेहरे की मांसपेशियां सख़्त हो गयीं।

"तुम्हारे लिये आखिरी मौका है खलील अहमद, सोच लो।"

खलील अहमद के चेहरे से पसीने की धारायें बह निकलीं।

"जल्दी फैसला करो।"

उसी पल घटना घटी।

कमाण्डर कोई सख्त कदम उठाता, उससे पहले ही उस वीरान सड़क पर रात के अंधेरे में एक ट्रक नमूदार हुआ था। उसने दूर से ही जोरदार हॉर्न बजाया।

हॉर्न की आवाज़ सुनते ही कमाण्डर करण सक्सेना का ध्यान भंग हुआ। उसने तेजी से गर्दन घुमाकर ट्रक की दिशा में देखा।

मुश्किल से एक सेकंड का मौका मिला खलील अहमद को। वह तड़ंग भरकर एकदम हवा में उछला और उसके फौलादी सिर की प्रचण्ड टक्कर कमाण्डर के चेहरे पर पड़ी।

बिलबिला उठा कमाण्डर करण सक्सेना ! उसकी आंखों के गिर्द रंग-बिरंगे तारे नाच गये।

वह उछलकर अगली सीट पर लुढ़क गया था।

वह संभलता, उससे पहले ही खलील अहमद ने कार का दरवाजा खोला और फुर्ती के साथ बाहर सड़क पर छलांग लगा दी।

लेकिन वाह रही किस्मत !

वह कमाण्डर करण सक्सेना के फंदे से निकलकर फरार हो पाता, उससे पहले ही तूफानी गति से दौड़ता ट्रक उसके बिल्कुल सिर पर आ गया था और वह उसे बुरी तरह कुचलता चला गया।

खलील अहमद की एक अत्यंत कष्टप्रद और करुणामयी चीख रात के उस सन्नाटे में गूंजी तथा फिर गूँजती ही चली गयी।

सड़क एकदम खून में नहा गयी थी।

खलील अहमद का भेजा निकलकर बाहर जा गिरा।

कमाण्डर करण सक्सेना ने बेहद हताश अंदाज में खलील अहमद की सड़क से चिपकी लाश को देखा और फिर धम्म से वहीं कार की सीट पर बैठ गया।

□□□

रजिया जल्दी-जल्दी हैदर अली के लिये नाश्ता तैयार करने में जुटी थी। फ्राइपेन के अंदर आमलेट पड़ा था, जिसकी छन-छन की आवाज़ पूरे किचन में गूँज रही थी।

हैदर अली आनन-फानन तैयार हो रहा था।

लेकिन वह आज कुछ ज्यादा ही शरारत के मूड में था। शायद इसीलिये वह पूरी तरह तैयार होने के बाद किचन में जा घुसा और वहाँ घुसते ही उसने रजिया को अपनी बाहों में भर लिया।

"क्या कर रहे हो ?" रजिया ने फ्राइपेन में पड़ा आमलेट घुमाया- "छोड़ो, आमलेट जल जायेगा।"

"हम इतनी आसानी से छोड़ने वाले कहाँ है डार्लिंग ! आखिर हम पठान हैं, पठान !" हैदर अली ने उसे और ज्यादा कसकर अपन बांहों में जकड़ लिया और फिर उसके गाल का एक चुम्बन ले डाला।

"लगता है, तुम सुबह-ही-सुबह पागल हो गये हो।" रजिया झुंझलाई- "सारी रात क्या कम परेशान किया है, जो दिन निकलते ही फिर शुरु हो गये।"

"तुम चीज ही ऐसी हो डार्लिंग !" हैदर अली ने बड़े प्यार से बालों की लटें उसके चेहरे से पीछे सरकाई- "जितना तुम्हें हासिल करता हूँ, उतनी ही मेरी भूख बढ़ जाती है। बढ़ती ही चली जाती है।"

"अगर तुम्हारा यही हाल रहा, तो वह दिन दूर नहीं, जब तुम एकदम पागल हो जाओगे।"

"अगर हम तुम्हारे प्यार में पागल हुए, तो यह भी हमारी किस्मत ही होगी जनाब !"

"ठीक है, अब शायरी भी करने लगे।" रजिया जबरदस्ती उसकी बांहों के शिकंजे से आजाद हुई- "पीछे हटो, क्या चिपके जा रहे हो।"

रजिया ने फ्राइपेन में पड़े आमलेट को पलट दिया था।

"अच्छा जी, तो अब आमलेट हमसे ज्यादा कीमती हो गया।"

हैदर अली ने उसे फिर बाहों में भर लेना चाहा।

तभी घटना घटी।

एकाएक रजिया को खड़े-खड़े जोर से उबकाई आयी थी।

उसने जल्दी से फ्राईपेन गैसे से नीचे उतारा और हैदर अली को धक्का देकर लगभग दौड़ती हुई वाशबेसिन के करीब पहुँची।

वहाँ पहुँचते ही उसने धड़ाधड़ दो बड़ी-बड़ी उल्टियां कर दीं।

□□□

हैदर अली के छक्के छूट गये।

अभी तक जहाँ वो मजाक के मूड में था, रजिया की हालत देखते ही परेशान हो उठा।

जबकि उल्टियां करने के बाद रजिया के हाथ-पैर एकदम से लटक गये थे और वो काफी बीमार नजर आने लगी थी।

हैदर अली ने उसे गोद में उठा लिया तथा बिस्तर पर ले जाकर लिटाया।

"म... मैं अभी डॉक्टर को फोन करता हूँ।"

"न... नहीं।" रजिया ने फौरन उसका हाथ पकड़ लिया- "नहीं।"

"क्यों नहीं ?" हैदर अली चिंतित मुद्रा में बोला- "देख नहीं रहीं, तुम्हारी एकाएक कितनी बुरी हालत हो गयी है। पहले तो कभी तुम्हें इस तरह की उल्टियां नहीं हुईं। मैं डॉक्टर को बुलाता हूँ।"

"पागल मत बनो।" रजिया ने उसे जबरदस्ती बिस्तर पर बिठा लिया- "मैंने कहा न, डॉक्टर की जरूरत नहीं है।"

"क्यों जरूरत नहीं है ?"

मुस्कुरायी रजिया।

उसने शर्म से पलकें झुका लीं और मुस्कुराते हुए अपने पेट पर हाथ फेरा।

"क्या अभी भी नहीं समझे ?"

"क्या नहीं समझा ?"

"बुद्धु !" रजिया ने उसकी नाक पकड़कर हिलाई और कसकर उसके सीने से चिपट गयी। फिर हँसती हुई बोली- "अभी तक मैं मजाक कर रही थी कि तुम पागल हो। लेकिन तुम तो सचमुच पागल हो। एकदम बुद्धु !" उसने जोर से हैदर अली की पीठ पर मुक्का जमाया।

"लेकिन हुआ क्या महारानी साहिबा, कुछ इस बे-अक्ल को पता तो चले।"

"बेवकूफ !" रजिया उसके कान में धीरे-धीरे से फुसफुसाई- "तुम बाप बनने वाले हो।"

हैदर अली के नेत्र अचम्भे से फैल गये।

"स...सच ?" फिर एकाएक वो खुशी से चिल्लाया।

"हाँ, सच।"

हैदर अली ने फौरन झपटकर उसे अपनी बांहों में भर लिया, फिर आनन-फानन अपने कपड़े उतारने लगा।

"क्या कर रहे हो ?" रजिया हकबका उठी- "क्या कर रहे हो ?"

"अपने आपको शाबासी दे रहा हूँ।" हैदर अली ने हाथ घुमाकर अपनी पीठ ठोकी- "आखिर मैंने ऐसा बहादुरी से भरा कारनामा अंजाम दे दिया, इसी खुशी से हम दोनों के बीच एक-एक जंग और हो जाये।"

"फिर वही हरकत।" रजिया ने उसकी तरफ आँखे तरेरी और एकदम बिस्तर से उठ बैठी- "फिर वहीं पहुँच गये। मालूम है, मैं कल लेडी डॉक्टर से मिली थी। उसने मुझे हिदायत दी है कि अभी बच्चे की पोजीशन के बारे में ठीक से कुछ भी नहीं कहा जा सकता, इसलिये मैं थोड़े दिन तुमसे दूर रहूँ, वरना एबॉर्शन भी हो सकता है।"

"तौबा, ऐसा बोली लेडी डॉक्टर ?"

"हाँ।"

"कितने दिन दूर रहना होगा मुझे तुमसे ?"

"कम से कम पन्द्रह दिन या फिर एक महीना भी।"

"अल्लाह !" हैदर अली के नेत्र हद दर्जे तक फैल गये- "इतने दिन मेरा क्या होगा ?"

"कुछ नहीं होगा।" रजिया हँसते हुए बोली- "इतने दिन जंग के मैदान में शांति होगी। कोई तोप नहीं चलेगी। कोई राइफल नहीं गरजेगी। कोई बम भी नहीं छूटेगा। बस सब कुछ अच्छा-ही-अच्छा होगा। चलो, अब अपनी इस शैतान खोपड़ी में भी कुछ

अच्छे ख्याल लेकर आओ और उठकर नाश्ता करो। वह किचन में रखा ठंडा हो रहा है।"

फिर रजिया तेज-तेज कदमों से किचन की तरफ बढ़ गयी।

□□□

एयर चीफ मार्शल खलील अहमद की मौत ने एक बार फिर पूरे इस्लामाबाद को झंझोड़ डाला था।

कमाण्डर करण सक्सेना के इस्लामाबाद पहुँचने के बाद से जो बिजली के झटके वहाँ के ऑफिसर्स को लग रहे थे, वह झटके लगने अभी भी जारी थे। एक हंगामा कम होता नहीं था कि उससे पहले ही कोई नई घटना तहलका मचा डालती।

खलील अहमद की मौत का समाचार वहाँ के ऑफिसर्स को सुबह के चार बजे मिला, जब उसी रास्ते से दूध लेकर आती एक वैन के ड्राइवर ने पुलिस स्टेशन में इस बात की सूचना दी कि उस रास्ते पर सड़क के बिल्कुल बीचो-बीच एक आदमी कुचला पड़ा है और उसके पास ही लाल बत्ती की एक कार भी खड़ी है।

लाल बत्ती की कार!

खतरे की घंटियां बज गयीं पुलिसकर्मियों के दिमाग में। यह जानकारी उन्हें पहले से ही थी कि एयर चीफ मार्शल के बॉडीगार्ड रात से ही उन्हें ढूँढते फिर रहे हैं, क्योंकि रात के ग्यारह बजे एयर चीफ मार्शल आई.एस.आई. हैडक्वार्टर में जाने के लिये निकले थे, जहाँ वो नहीं पहुँच सके थे।

बहरहाल सूचना मिलते ही पुलिस की पेट्रोलिंग कारें घटनास्थल की तरफ दौड़ पड़ी।

वायरलैस द्वारा खलील अहमद के बॉडीगार्डों को भी सूचना सर्कुलेट की गयी कि वो भी फौरन वहाँ पहुँचे।

देखते ही देखते उस वीरान सड़क पर गाड़ियों का जमघट जमा हो गया था।

दोनों तरफ से रोड ब्लॉक कर दिया गया।

फिर उन तमाम लोगों के वहाँ पहुँचते ही साबित हो गया था कि वो लाश किसकी है ?

□□□

लम्बे-चौड़े शरीर वाले कर्नल नासिर को भी उस घटना ने एकदम हिलाकर रख दिया था।

वह और ज्यादा परेशान हो उठा तथा बार-बार अपना सिर ठोकने लगा।

"लेकिन यह जरूरी तो नहीं सर।" एक अधिकारी कर्नल नासिर से बोला- "कि इस वारदात के पीछे भी कमाण्डर का ही हाथ हो। खलील साहब का यह एक्सीडेंट एक सिम्पल एक्सीडेंट भी हो सकता है, आखिर इस्लामाबाद की सड़कों पर इस तरह के एक्सीडेंट आये दिन होते रहते हैं।"

"गलत, बिल्कुल गलत कह रहे हो तुम।" कर्नल नासिर गुर्राकर बोला- "यह सिम्पल एक्सीडेंट नहीं है। यह सिम्पल एक्सीडेंट हो भी नहीं सकता। मत भूलो, खलील साहब के शरीर में तीन गोलियां लगी हुई पायी गयी हैं। दो जांघों में। एक बाजू में। अगर यह एक्सीडेंट था।" कर्नल नासिर गरजता हुआ बोला- "अगर यह सिम्पल एक्सीडेंट था, तो खलील साहब के जिस्म में वह तीन गोलियां किसने मारीं ?"

सब सन्न बैठ रहे।

बिल्कुल सन्न।

"अगर यह एक्सीडेंट था।" कर्नल नासिर दोबारा गरजता हुआ बोला- "तो फिर खलील साहब की कार का एक्सीडेंट क्यों नहीं हुआ ? वह सड़क के किनारे बिल्कुल सुरक्षित हालत में खड़ी क्यों पायी गयी ? उस पर एक खरोंच तक नहीं थी। जबकि खलील साहब की लाश कार से कुछ फुट दूर सड़क के बिल्कुल बीचो-बीच कुचली पड़ी थी। फिर कार की पिछली सीट पर भी खलील साहब का काफी सारा खून पड़ा था, वह खून वहाँ पर किस तरह आया ?

ऐसे और ऐसे कई सारे सवाल हैं, जो इस मौत की तरफ साफ-साफ उंगली उठाते हैं।"

"और क्या सवाल है ?" कई सारे ऑफिसर्स ने सस्पेंसफुल स्वर में पूछा।

"जैसे खलील साहब की कोठी से रिपोर्ट मिली है कि कल रात वहाँ एक आई.एस.आई. एजेंट पहुँचा था।" कर्नल नासिर बोला- "उसने वहाँ पहुँचकर खलील साहब के बाडीगार्ड को अपना आई-कार्ड दिखाया। उससे कहा कि उसे मैंने यानि कर्नल नासिर ने वहाँ भेजा है और उसने खलील साहब को सुलतान फौजी के बारे में फौरन एक रिपोर्ट देनी है।"

"उ... उसने ऐसा कहा ?"

"जी हाँ, उसने ऐसा कहा। जबकि मैंने किसी आई.एस.आई. एजेंट कों वहाँ नही भेजा। मेरे किसी को वहाँ भेजने का सवाल ही नहीं उठता। हकीकत यह है कि वो आदमी आई.एस.आई. का एजेंट ही नहीं था। वो फ्रॉड था। एक धोखेबाज था।"

"फ... फिर क्या हुआ ?" ऑफिसर्स का सस्पेंस हर पल बढ़ता जा रहा था।

"बॉडीगार्ड बताते हैं।" कर्नल नासिर आंदोलित लहजे में बोला- "कि उस आदमी ने खलील साहब से अकेले में बातें कीं। क्या बातें कीं, यह उन्हें नहीं मालूम। लेकिन उस बातचीत के बाद खलील साहब उसके साथ आई.एस.आई. हैडक्वार्टर चलने के लिये तैयार हो गये। वो भी बिल्कुल अकेले ही। बिना किसी सिक्योरिटी गार्ड को साथ लिये। बिना ड्राइवर को साथ लिये। बिना किसी बॉडीगार्ड को साथ लिये।"

"ऐसा क्यों ?" सबके नेत्र फटे।

"पता नहीं क्यों ?" कर्नल नासिर बोला- "इस सवाल का जवाब या तो खलील साहब दे सकते थे या फिर वो फर्जी आई.एस.आई. एजेंट दे सकता था, जो खलील साहब की कार चलाता हुआ वहाँ से ले गया था। वह खुद वहाँ मोटर साइकिल पर पहुँचा था, लेकिन

उसकी वो मोटरसाइकिल अभी भी वहीं उसी जगह खड़ी है।"

"फिर उस एजेंट का क्या हुआ ?"

"वह एजेंट तभी से गायब है।" कर्नल नासिर बोला- "सवाल ये है कि अगर एक्सीडेंट के समय भी वही फर्जी आदमी खलील साहब की कार चला रहा था, तो फिर उसका एक्सीडेंट क्यों नहीं हुआ ? और अगर एक्सीडेंट नहीं हुआ, तो फिर वह कहाँ गया ? फिर वो खलील साहब की कार उस वीरान इलाके में क्यों लेकर गया था ? कुल मिलाकर शक की पूरी सुई उसी एक आदमी की तरफ घूम रही है।"

सब हतप्रभ-सी मुद्रा में बैठे कर्नल नासिर की एक-एक बात सुनते रहे।

वाकई पूरा घटनाक्रम चौंका देने वाला था।

"अब एक नई कहानी और सुनो।" कर्नल नासिर थोड़ा रुककर बोला।

"कैसी कहानी ?"

"थोड़ी देर पहले ही मुझे एक रिपोर्ट और मिली है।" कर्नल नासिर बोला- "मुझे पता चला है कि कल रात ही एक आई.एस.आई. एजेंट की गर्दन तोड़कर हत्या कर दी गयी। किसी की गर्दन तोड़ डालना मजाक नहीं होता।"

"उस एजेंट का नाम क्या था ?"

"खुर्शीद नाम था। उसकी लाश मछली सप्लाई करने वाले एक टैम्पो के अंदर पड़ी पायी गयी। इतना ही नहीं उस एजेंट खुर्शीद के जिस्म से उसकी वर्दी भी गायब थी। आई.एस.आई. का कार्ड गायब था और मोटर साइकिल भी गायब थी। इन तीनों चीजों के गायब होने से आप लोगों ने कुछ अंदाजा लगाया या नहीं लगाया ?"

एक अधिकारी चौंका।

"क... कहीं आप यह तो नहीं कहना चाहते कि जिस आदमी ने खुर्शीद की हत्या की, वही आदमी खलील साहब को भी उसकी

कोठी से लेकर गया ?"

"एब्सोल्यूटली राइट ।" कर्नल नासिर जोर से मेज पर घूंसा मारकर बोला- "मैं यही बात कहना चाहता हूँ और सिर्फ कहना ही नहीं चाहता बल्कि यही हकीकत भी है । जिसने खुर्शीद की हत्या की, वह कमाण्डर करण सक्सेना था और जिसने खलील साहब को मारा, वह भी कमाण्डर करण सक्सेना ही था । कमाण्डर ने सिर्फ वर्दी, आईकार्ड और मोटरसाइकिल हासिल करने के लिये खुर्शीद की हत्या की और फिर आई.एस.आई. एजेंट बनकर खलील साहब की कोठी पर जा पहुँचा । उसके बाद जो हुआ, वह मैं आप लोगों को पहले ही डिटेल में बता चुका हूँ । इसके अलावा खलील साहब की कोठी पर जो मोटरसाइकिल खड़ी है, उस मोटरसाइकिल से भी इस पूरी कहानी की हकीकत साबित होती है, क्योंकि जांच-पड़ताल के बाद साबित हो गया है कि वो खुर्शीद की ही मोटरसाइकिल है ।"

"ओह, सचमुच एक-एक प्वाइंट काफी चौंका देने वाला है ।"

"अगर वो आदमी कमाण्डर करण सक्सेना ही था सर !" दूसरा एक अधिकारी बेहद आतंकित स्वर में बोला- "तब तो इससे यह भी साबित होता है कि कमाण्डर को सुलतान फौजी के एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर में होने का राज़ भी पता चल चुका है, तभी तो उसने एयर चीफ मार्शल पर अटैक किया ।"

"बिल्कुल ठीक ।" कर्नल नासिर बोला- "उसे हण्ड्रेड परसेंट सुलतान फौजी के वहाँ होने का राज़ पता चल चुका है ।"

"तौबा ! तौबा ! ! वह आदमी है या भूत है सर ?"

"वह चाहे जो भी है, लेकिन अब हमें फौरन एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर में यह रिपोर्ट भेजनी होगी, ताकि वहाँ सिक्योरिटी और मजबूत की जा सके । ताकि वहाँ के गार्ड और ज्यादा अलर्ट हो सकें और यह काम हमें फ़ौरन करना होगा । बिना एक भी सेकण्ड गंवाये ।"

"आप ठीक कह रहे हैं सर !"

उसक बाद वहाँ रिपोर्ट भेजने की कार्यवाई शुरू हो गयी थी ।

***



9. एयरफोर्स हैडक्वार्टर

एक बेहद विशाल भूखण्ड में बना वो हैडक्वार्टर, जहाँ से पाकिस्तानी एयरफ़ोर्स को सभी ऑर्डर प्राप्त होते थे । जहाँ बैठकर युद्ध से सम्बन्धित रणनीतियां तैयार की जाती थीं । रक्षा और आक्रमण पंक्ति के प्लान बनते थे ।

एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर कितने बड़े क्षेत्र में फैला है, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वहाँ एक हवाई पट्टी भी बनी थी, जिस पर कई बमवर्षक विमान खड़े रहते हैं । इसके अलावा एक हैलीपैड भी बना था, जिस पर हैलीकॉप्टर मौजूद थे ।

कुल मिलाकर वह एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर एक अच्छा-खासा बड़ा सैनिक हवाई अड्डा भी था ।

जब एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर में यह रिपोर्ट पहुँची कि कमाण्डर करण सक्सेना को सुलतान फौजी के वहाँ होने का राज़ पता चल गया है, तो वहाँ चारों तरफ सनसनी फैल गयी ।

जिसने भी यह खबर सुनी, वही हैरान हुआ, वहीं चौंका । सभी पांच गार्ड तो उस खबर को सुनने के बाद बेहद आतंकित हो उठे थे ।

"म... मैं क्या कहता था ।" सुलतान फौजी खौफ से थर-थर कांपता हुआ बोला- "मैं क्या कहता था, वह बहुत ज्यादा खतरनाक

है । वो यहाँ भी आ जायेगा और देखो, देखो वही हुआ । उसने आखिरकार मेरे यहाँ होने का राज़ भी पता लगा ही लिया ।"

पांचो गार्डों की हवा खराब थी ।

वह भी स्तब्ध खड़े थे ।

कमाण्डर से पहले उसकी दहशत वहाँ पहुँच गयी थी ।

"व... वो मुझे नहीं छोड़ेगा ।" सुलतान फौजी कलपता हुआ बोला- "वह अब मुझे मौत की सजा देकर रहेगा । वह साबित करके रहेगा कि वह जल्लाद है और मुझे फाँसी देने ही यहाँ आया है ।"

"मिस्टर फौजी ।" तभी एक गार्ड उसे सांत्वना देता हुआ बोला- "मैं समझता हूँ कि तुम्हें अभी से इतना डरने की जरूरत नहीं है ।"

"क... क्यों ?"

"यह बात अलग है कि कमाण्डर करण सक्सेना ने तुम्हारे यहाँ होने का राज़ पता लगा लिया है । लेकिन सिर्फ राज़ पता लगा लेना ही काफी नहीं है । उसका सीक्रेट हाउस के अंदर तक आ जाना हंसी-खेल नहीं होगा ।"

"व... वो यहाँ भी आ जायेगा ।" सुलतान फौजी का पूरा शरीर पत्ते की तरह थर-थर कांप रहा था- "मत भूलो, उसका नाम कमाण्डर करण सक्सेना है । वो अंदर आने का भी कोई न कोई तरीका ढूंढ ही लेगा और यह काम वो जल्दी करेगा, बहुत जल्दी ।"

सुलतान फौजी, कमाण्डर की वजह से इस कदर डरा हुआ था कि उस दिन उसने दोपहर का खाना भी न खाया ।

□□□

उधर कमाण्डर करण सक्सेना ने उम्मीद से पहले, बल्कि बहुत पहले अपनी चाल चल दी ।

हालांकि वो सीक्रेट हाउस में घुसने का तरीका अभी भी नहीं जानता था, मगर फिर भी उसने उसी रात वहाँ धावा बोल दिया ।

रात के साढ़े बारह बज रहे थे, जब कमाण्डर एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर के सामने पहुँच गया ।

रात बिल्कुल अंधेरी थी, एकदम काली। आसमान में चांद नाममात्र के लिये ही नजर आ रहा था।

कमाण्डर ने देखा, वहाँ बाउंड्री वॉल के आसपास सिक्योरिटी कुछ बढ़ा दी गयी थी। इस समय वहाँ चार-चार के ग्रुप में सिक्योरिटी गार्ड पहरा दे रहे थे और सभी बहुत चौकन्ने थे, जैसे उन्हें कमाण्डर के वहाँ आने का एडवांस में पता चल गया हो।

चार गार्डों का एक ग्रुप एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर के गेट पर भी खड़ा था। वहीं एक डबल साइड रोड लैम्प भी जल रहा था, जिसका प्रकाश दूर-दूर तक फैला था।

तभी कमाण्डर की नजर एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर के नजदीक ही बने एक छोटे से सिक्योरिटी केबिन पर भी पड़ी, जो उस वक्त खाली था।

कुछ देर कमाण्डर अलर्ट पोजीशन में खड़ा रहा।

फिर वो अंधेरे का एक हिस्सा बना दबे दांव चलता हुआ चुपचाप उस सिक्योरिटी केबिन के अंदर जा घुसा।

केबिन में घुसते ही कमाण्डर करण सक्सेना के हाथ में अपनी कोल्ट रिवॉल्वर नजर आने लगी।

फिर उसने रिवॉल्वर की नाल पर साइलेंसर फिट किया।

साइलेंसर फिट करते ही वह और भी ज्यादा अलर्ट हो गया था।

सिक्योरिटी केबिन की खिड़की के पास पहुँचकर उसने रोड लैम्प का निशाना लगाया तथा फिर आहिस्ता से ट्रेगर दबाया।

पिट्!

गोली चलने की बेहद मामूली सी आवाज़ हुई और तत्काल रोड लैम्प की एक साइड के परखच्चे उड़ गये।

गार्ड हरकत में आते, उससे पहले ही कमाण्डर ने रोड लैम्प की दूसरी साइड की भी धज्जियां बिखेर दीं।

फौरन वहाँ चारों तरफ घुप्प अंधेरा फैल गया।

"कौन है- कौन है ?"

गार्ड बुरी तरह चीखते-चिल्लाते अंधेरे में ही इधर-से-उधर भागे।

"जरूर कोई है ।" एक गार्ड हलक फाड़कर चिल्लाया- "जरूर कोई यहाँ घुस आया है ।"

"लगता है किसी ने रोड लैम्प में गोली मारी है ।"

"देखो !" एक अन्य की चीखती आवाज़ - "देखो, कोई हैडक्वार्टर में घुसने न पाये ।"

"चिन्ता मत करो ।" एक और गार्ड की आवाज़- "मैं गेट के कुण्डे के पास ही खड़ा हूँ, अगर किसी ने अंधेरे का फायदा उठाकर कुण्डा खोलने की कोशिश की, तो फौरन गोली उसकी खोपड़ी में लगेगी ।"

गार्ड के इधर-से-उधर दौड़ने की लगातार आवाजें आ रही थीं ।

अंदर से भी गार्ड चीख-चीखकर पूछ रहे थे- "क्या हुआ- क्या हुआ ?"

□□□

तभी एक घटना और घटी ।

एक सिक्योरिटी गार्ड अंधेरे में ही दौड़ता हुआ उस सिक्यारिटी केबिन के अंदर जा घुसा, जिसमें कमाण्डर छिपा था ।

उसे न जाने क्यों शक हुआ कि कोई उसके अंदर है ।

"कौन है ?" फिर वो चीखकर बोला- "कौन है यहाँ ?"

कमाण्डर तुरंत दीवार के सहारे चिपक गया ।

"जवाब क्यों नहीं देता, कौन है ?" वह व्यक्ति पहले से भी ज्यादा जोर से चिल्लाता हुआ कमाण्डर करण सक्सेना के सामने से गुजरा ।

तभी कमाण्डर हरकत में आ गया था ।

वह एकदम हवा में उछला और गिद्ध की तरह गार्ड के ऊपर झपटा ।

गार्ड ने चीखने के लिये जैसे ही हलक पड़ा, उसी पल कमाण्डर ने साइलेंसरयुक्त रिवॉल्वर की लम्बी नाल गार्ड के हलक में अंदर तक घुसा दी और फिर बेहिचक ट्रेगर दबाया ।

तत्काली गोली उसके सिर को फाड़ती चली गयी ।

वह बिना चीख-पुकार मचाये पीछे गिर पड़ा और गिरते ही मर गया।

उसके बाद कमाण्डर ने एक काम और बेहद आनन-फानन किया।

उसने उस गार्ड की वर्दी उतारकर खुद पहनी तथा फिर सिक्योरिटी केबिन से बाहर निकल आया।

बाहर उस समय भी अफरा-तफरी मची हुई थी।

गार्ड इधर-से-उधर उसकी तलाश में भागे-भागे फिर रहे थे। अलबत्ता अब उनके पास अंदर से दो टॉर्च भी आ चुकी थीं।

कमाण्डर करण सक्सेना भी फौरन बड़ी लगन से उस तलाशी अभियान में उनके साथ जुट गया।

वह भी ऐसा ही शो कर रहा था, मानों किसी को तलाश रहा हो।

काफी देर तक वो भागे-भागे फिरते रहे और अंत मे थक-हारकर बैठ गये।

"इधर तो कोई नहीं है।" सबसे पहले एक गार्ड टॉर्च का प्रकाश चारों तरफ बिखेरता हुआ बोला।

"लगता है, जो आदमी था- वह डरकर भाग गया।"

"बिल्कुल यही बात है।" गेट पर बड़ी अल्लर्ट मुद्रा में खड़ा गार्ड बोला- "कम-से-कम वो हैडक्वार्टर के अंदर तो नहीं घुसा है, इस बात की तो मेरी गारंटी है।"

"चलो जो हुआ, ठीक हुआ।" कमाण्डर भी उनके सुर-में सुर मिलाकर ही बोला- "आज रात तो अंधेरे में ही पहरा देना पड़ेगा।"

"सही कह रहे हो।" एक अन्य गार्ड की आवाज़- "अब तो सुबह तक ही लाइट ठीक हो पायेगी।"

पूरी तरह शांति रही।

कमाण्डर उन गार्डों के साथ ही बड़ी अलर्ट पोजीशन में हैडक्वार्टर के बाहर पहरा देता रहा था।

चारों तरफ घुप्प अंधेरे की वजह से किसी की नजर उसके चेहरे पर न पड़ी।

फिर कमाण्डर ने बेहद खामोश माहौल में अगली चाल चली ।

उसने सिरदर्द का नाटक किया ।

वह अपना सिर पकड़कर वहीं एक गार्ड के पास बैठ गया था ।

"क्या हुआ ?" गार्ड हड़बड़ा उठा- "क्या हुआ, तुम बैठ क्यों गये दोस्त ?"

"क... कुछ नहीं, मेरे सिर में दर्द हो रहा है ।" कमाण्डर पीड़ा से छटपटाता हुआ बोला- "कभी-कभी एक गोला-सा मेरे सिर में जाकर टकराता है, इस वक्त भी ऐसा ही हो रहा है ।"

"ओह !" गार्ड परेशान हो उठा- "क्या सचमुच तुम्हारी काफी बहुत बुरी हालत है ?"

"ह... हाँ ।" कमाण्डर करण सक्सेना थोड़ा और छटपटाया- "मेरे दिमाग की नसें चटक रही हैं, म... मुझे हल्के-हल्के चक्कर आ रहे हैं । मैं थोड़ी देर आराम करना चाहता हूँ ।"

उस गार्ड ने अब अपने बाकि साथियों की तरफ देखा ।

वह भी तब तक कमाण्डर के करीब ही सिमट आये थे और कुछ परेशान नजर आ रहे थे ।

"म... मैं अंदर जा रहा हूँ ।" तभी कमाण्डर करण सक्सेना अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ और उसने अपना सिर कसकर पकड़ लिया- "थोड़ी देर आराम करूँगा, तो मुझे सुकून मिल जायेगा । अपनी जगह मैं किसी और गार्ड को ड्यूटी पर भेज रहा हूँ ।"

"नहीं, किसी और गार्ड को डयूटी पर मत भेजना ।" फौरन एक दूसरा गार्ड बोला- "तुम जाकर आराम करो, यहाँ हम लोग ही ड्यूटी संभाल लेंगे ।"

"ठ... ठीक है, मैं सिरदर्द सही होते ही वापस आ जाऊँगा ।"

"फ़िक्र की कोई बात नहीं, आराम से आना ।"

"थ... थैंक्यू !"

तभी एक गार्ड ने आगे बढ़कर उसके लिये फाटक खोल दिया ।

कमाण्डर अपना सिर पकड़े-पकड़े ही एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर के अंदर दाखिल हो गया था ।

इस तरह उसने पहली मुश्किल बड़ी आसानी के साथ पार कर ली ।

□□□

अंदर भी कमाण्डर करण सक्सेना को कोई खास मुश्किल का सामना नहीं करना पड़ा ।

वह क्योंकि गार्ड की ड्रेस में था, इसलिये किसी भी दूसरे गार्ड ने रोककर उससे कैसी भी कोई पूछताछ नहीं की ।

वह आसानी के साथ एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर की विशाल इमारत में दाखिल हो गया था ।

वहाँ पहुँचते ही खतरनाक खेल शुरु हुआ ।

कमाण्डर करण सक्सेना जो सचमुच अभी तक सिरदर्द से पीड़ित व्यक्ति ही नजर आ रहा था, इमारत में घुसते ही एकाएक बेहद फुर्तीला और दुर्दांत किस्म का इंसान नजर आने लगा ।

उसकी आँखें तेजी से चारों तरफ घूमी थीं ।

जल्द ही उसे सुनसान गलियारे के आखिरी कोने पर एक ऐसा कमरा नजर आ गया, जिसके दरवाजे पर लिखा था- फायर कंट्रोल रूम !

कमाण्डर करण सक्सेना लपककर उस कमरे के सामने जा खड़ा हुआ ।

उस कमरे पर ताला पड़ा था ।

एक सेकण्ड भी नहीं लगा, कमाण्डर करण सक्सेना के हाथ में एक लोहे की सलाई जैसी चीज नजर आने लगी और फिर उसने पलक झपकते ही उस कमरे का ताला खोल दिया ।

ताला खोलते ही वह अंदर जा घुसा ।

वह पूरा कमरा आग बुझाने वाले सामान से भरा पड़ा था ।

कमाण्डर ने अंदर घुसते ही दरवाजा वापस बंद कर लिया और फिर अपनी दृष्टि उस कमरे में चारों तरफ घुमाई । वहाँ एस्बेस्टस की कई सारी ड्रेसें थीं, जिन्हें पहनने के बाद इंसान के शरीर को आग नहीं

लगती। छोटे-बड़े आग बुझाने वाले ढेरों अग्निशमन यंत्र भरे पड़े थे। इसके अलावा वहाँ ऐसी कई सारी बुलेटप्रूफ ड्रेसें भी थीं, जिन पर न गोलियां असर करती हैं और न आग।

वह बुलेटप्रूफ ड्रेसें उस विशेष माहौल के लिये थी, जब दुश्मन कहीं आग लगाने के साथ-साथ जबरदस्त फायरिंग भी कर रहा हो, तो वह बुलेटप्रूफ ड्रेस पहनकर न सिर्फ आग में कूदा जा सकता था बल्कि दुश्मन की गोलियों का भी सामना किया जा सकता था। उस बुलेटप्रूफ ड्रेस की सबसे बड़ी विशेषता ये थी कि उसमें पैर की उंगलियों से लेकर हाथ तक पूरी तरह ढक जाते थे।

सिर पर पहनने के लिये बुलेटप्रूफ हेलमेट भी थे।

ऑक्सीजन सिलेण्डर भी थे।

ऑक्सीजन मास्क भी थे।

वह सारा सामान भी बुलेटप्रूफ था।

इसके अलावा उस कमरे में आग बुझाने का और भी काफी सामान था।

उस सामान को देखकर कमाण्डर करण सक्सेना की आंखे जंगली बिल्ली की तरह चमकने लगीं।

फौरन सीक्रेट हाउस के अंदर घुसने की उसके दिमाग में एक लाजवाब योजना कौंध उठी थी।

उसने एक पल कुछ सोचा।

फिर अगले ही क्षण वो एक बुलेटप्रूफ ड्रेस की तरफ झपट पड़ा।

पलक झपकते ही उसने वो ड्रेस पहन ली, उसके हाथ-पैर सब उस बुलेटप्रूफ ड्रेस के अंदर छिप गये।

उसके बाद उसने एक बुलेटप्रूफ हेलमेट भी अपने सिर पर पहना।

छोटा ऑक्सीजन सिलेण्डर पीठ पर बाँधा और मुँह पर ऑक्सीजन मास्क कसा।

अब वह सीक्रेट हाउस के अंदर जाने के लिये पूरी तरह तैयार था।

□□□

फिर कमाण्डर करण सक्सेना बड़ी खामोशी के साथ फायर कंट्रोल रुम से बाहर निकला और गार्डों की नजरों से छिपता-छिपाता हुआ उस हॉल कमरे के सामने पहुँचा, जिसके अंदर काले-सफेद खाने बने हुए थे और जो सीक्रेट हाउस तक पहुँचने का रास्ता था।

कमाण्डर ने देखा, उस हॉल कमरे के बाहर चार हथियारबंद गार्डों का एक ग्रुप खड़ा है।

हालांकि वहाँ उनकी कोई जरुरत नहीं थी, लेकिन थोड़ी देर पहले ही कमाण्डर से सम्बन्धित जो खबर वहाँ पहुँची थी, उसे देखते हुए उन गार्डों को सुरक्षा के तौर पर वहाँ तैनात कर दिया गया था।

कमाण्डर करण सक्सेना छिपता-छिपाता दूसरे हॉल के सामने पहुँचा।

वहाँ की भी यही हालत थी।

अब कमाण्डर करण सक्सेना के माथे पर कुछ सिलवटें पड़ गयीं।

उसने एक पल कुछ सोचा, फिर एकदम उन चारों के सामने पहुँच गया।

किसी आदमी को बुलेट प्रूफ ड्रेस में देखकर वह चारों हकबकाये, उनकी राइफलें झटके से कमाण्डर करण सक्सेना की तरफ तनी और फिर उन्होंने 'धांय...धांय....धांय' गोलियाँ बरसानी शुरु कर दीं।

लेकिन कमाण्डर पर उन गोलियों का क्या असर होना था ?

वह गोलियां उसकी ड्रेस से टकराकर यूँ नीचे गिरीं, जैसे पटाखे टकराकर नीचे गिर रहे हों।

जबकि उन गार्डों के सामने पहुँचते ही कमाण्डर की रिवॉल्वर भी बेपनाह फुर्ती से उन गार्डों की तरफ तनी थी और फिर 'पिट-पिट-पिट-पिट' चार गोलियां चलीं, तत्काल वह चारों गार्ड चीखते हुए कटे वृक्ष की तरह नीचे जा गिरे।

कमाण्डर की रिवॉल्वर खाली हो चुकी थी।

उसने अब अपनी रिवॉल्वर जेब में रख ली और वहीं पड़ी एक गार्ड की राइफल उठा ली।

फिर उसकी नजर हॉल के दरवाजे पर गयी।

वहाँ भी सुरक्षा के लिहाज से एक मजबूत ताला डाल दिया गया था, जिसे लोहे की सलाई से खोल पाना असंभव था।

कमाण्डर करण सक्सेना ने फौरन राइफल की नाल ताले के ऊपर रखी और ट्रेगर दबा दिया।

तुरंत ताले के परखच्चे उड़ गये।

कमाण्डर अब दरवाजा खोलकर अंदर जा घुसा।

उसने सबसे पहले फर्श के उस सफेद खाने पर कदम रखा, जो सुरक्षित था।

लेकिन अगले ही पल उसने बेधड़क काले खाने पर कदम रख दिया।

फौरन 'धांय-धांय-धांय' उस पर इतनी बुरी तरह गोलियां चलने लगीं, जैसे वह दर्जनों फौजियों से घिर गया हो।

मगर फिर भी रुका नही कमाण्डर, वह लगातार कॉले खानों पर बेपनाह तेजी से दौड़ता हुआ सीक्रेट हाउस के दरवाजे के सामने वाले सुरक्षित खाने पर पहुँच गया।

गोलियां चलनी फौरन बंद हो गयीं।

उसी पल कमाण्डर ने अपने मुँह पर चढ़ा ऑक्सीजन मास्क भी हटा दिया।

वह मास्क उसने इसलिये पहना था कि कहीं उसका पैर गलती से सफेद खाने पर न पड़ जाये और उसके ऊपर रासायनिक गैस का हमला न होने लगे।

बहरहाल शुक्र था कि ऐसी कोई नौबत नहीं आयी थी।

कोई इस तरह भी उस हॉल को पार कर सकता है, यह बात शायद एयरफोर्स हैडक्वार्टर के ऑफिसर्स ने सपने में भी न सोची होगी।

सुरक्षित खाने पर पहुँचने के बाद कमाण्डर की नजर सीक्रेट हाउस

के दरवाजे पर पड़ी।

वहाँ भी थोड़ी देर पहले ही सुरक्षा के लिहाज से ताला डाल दिया गया था।

कमाण्डर करण सक्सेना ने राइफल सीधी करके गोली चलायी, तुरंत उस ताले की भी धज्जियां बिखर गयीं।

फिर वह सीक्रेट हाउस का दरवाजा खोलकर धड़धड़ाता हुआ अंदर जा घुसा था।

□□□

धुआंधार गोलियाँ चलने और गार्डों के चीख-पुकार की आवाजों ने पूरे एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर में हड़कम्प मचा दिया था।

जिस गार्ड ने भी वह आवाजें सुनीं, वहीं चौंका। वही हैरान हुआ।

"अरे!" एक गार्ड उन आवाजों को सुनकर चिल्लाया- "गोलियां चलने की यह आवाजें तो सीक्रेट हाउस की तरफ से आ रही हैं।"

"जरूर सीक्रेट हाउस के अंदर कुछ हो रहा है?" दूसरा गार्ड भी हलक फाड़कर चिल्लाया।

"ल... लगता है, कमाण्डर करण सक्सेना हैडक्वार्टर में घुस आया है।"

"जरूर यही बात है, जरूर कमाण्डर ही है।" कुछ और आवाजें।

"जल्दी देखो- जल्दी।"

फिर दर्जनों की संख्या में सिक्योरिटी गार्ड सीक्रेट हाउस की तरफ दौड़ पड़े।

हर गार्ड बेहद जूनूनी अंदाज में उसी तरफ भागता नजर आ रहा था।

□□□

उधर फौलाद जैसे दिल वाला कमाण्डर करण सक्सेना न सिर्फ अकेले ही सीक्रेट हाउस के अंदर दाखिल हो चुका था बल्कि अंदर दाखिल होते ही उसका सामना एकदम अपने शिकार से हुआ।

उस शिकार से जिसकी खातिर उसने इतना बड़ा रिस्क लिया था ।

कमाण्डर ने फौरन राइफल सुलतान फौजी की तरफ तान दी ।

उधर निहत्था सुलतान फौजी भी नहीं था ।

उसे भी पाकिस्तानी सरकार ने अपनी आत्मरक्षा के लिये रिवॉल्वर दी हुई थी ।

जितनी तेजी से कमाण्डर ने राइफल सुलतान फौजी की तरफ तानी, उतनी ही तेजी से सुलतान फौजी ने अपनी रिवॉल्वर भी निकालकर कमाण्डर करण सक्सेना के हेलमेट के अंदर से झांकते हुए चेहरे की तरफ तान दीं ।

यही वो पल था, जब तीनों अलमारियां एकाएक धड़ाधड़ खुलीं और उनके अंदर मौजूद सभी पांच गार्डों ने बड़े अप्रत्याशित ढंग से एकदम बाहर छलांग लगा दी ।

बाहर छलांग लगाते ही उन्होंने भी अपनी-अपनी गनें कमाण्डर के चेहरे की तरफ तान दी थीं ।

पलक झपकते ही कमाण्डर करण सक्सेना के सामने सुलतान फौजी का पलड़ा भारी हो गया ।

हँसा, अपना पलड़ा भारी देखकर जोर से खिलखिलाकर हँसा सुलतान फौजी !

उसने कंधे पर पड़े बाल पीछे झटके ।

"आगे मत बढ़ना कमाण्डर !" वह हँसता हुआ ही दहाड़ा था- "आगे मत बढ़ना, तुमने बुलेटप्रूफ ड्रेस जरूर पहनी हुई है, लेकिन तुम्हारा चेहरा खुला है । अगर तुमने एक कदम भी आगे बढ़ाया, तो तुम्हारे चेहरे की धज्जियाँ बिखर जायेंगी ।"

मुस्कुराया कमाण्डर, सुलतान फौजी की धमकी सुनकर भी मुस्कुराया ।

और कमाण्डर मुस्कराते देखकर सुलतान फौजी के छक्के छूट गये थे । उसकी कंजी आंखों में खौफ उभर आया ।

"त... तुम मुस्करा क्यों रहे हो ?"

"तुम्हारी धमकी सुनकर मुस्करा रहा हूँ फौजी ! यह देखकर मुस्कुरा रहा हूँ कि कोई मुर्दा भी किसी को धमकी दे सकता है ।"

"म... मुर्दा ?" कांप गया फौजी !

"हाँ, तुम मुर्दा ही तो हो फौजी । एक ऐसा मुर्दा, जो बस जिन्दगी की आखिरी दहलीज पर खड़ा है । जिसे अदालत मौत की सजा सुना चुकी है । जिसकी फाँसी का दिन भी फाइनल कर दिया गया था और अब जिसे सजा देने के लिये एक जल्लाद भी तैनात कर दिया गया है । बेहद खतरनाक किस्म का जल्लाद । तुम क्या समझते हो फौजी- ऐसा आदमी मुर्दा नहीं होगा, तो क्या होगा ?"

पसीने में लथपथ हो गया फौजी !

उसका रंग दहशत से पीला पड़ गया था ।

"न... नहीं ।" सुलतान फौजी आंदोलित स्वर में बोला- "नहीं । त... तुम मुझे नहीं मार सकते । म... मुझे मारना इतना आसान नहीं है, मेरा नाम सुलतान फौजी है । य... यह देखो, पांच राइफलें तुम्हारी तरफ तनी हुई है । मेरे हाथ में भी रिवॉल्वर है । तुम एक गोली चलाओगे, तो हमारी तरफ से छः गोली चलेंगी, छः गोली ।"

"मुझे अपनी मौत की परवाह नहीं फौजी !" कमाण्डर करण सक्सेना बिल्कुल दीवानों की तरह बोला- "अगर मैं मर भी गया, तो मुझे फिक्र नहीं । लेकिन तुम्हारी छः गोलियों के जवाब में मेरी तरफ से जो एक गोली चलेगी, वह एक गोली !" कमाण्डर करण सक्सेना गरजकर बोला- "वह सिर्फ एक गोली तुम्हारी जिंदगी पर मौत के दस्तखत कर देगी । अगर मेरी बात पर यकीन नहीं आता, तो चलाओ गोली । और अपने इन पाकिस्तानी कुत्तों से भी कहो कि वह भी मेरे ऊपर गोलियां चलायें ।"

पसीनों में नहा गये वह सब ।

पहली बार, जिंदगी में पहली बार उन्हें यह अद्भुत अहसास हुआ कि जब उनके हाथ में भरी हुई गनें भी थीं और वह तब भी अपने आपको निहत्थे महसूस कर रहे थे ।

किसी की हिम्मत न हुई, जो गोली चलाये ।

□□□

तभी घटना ने एक और नया मोड़ लिया।

सीक्रेट हाउस के चारों तरफ जो चार हॉल बने हुए थे, एकाएक उनके अंदर से दौड़ते हुए कदमों की बेशुमार आवाजें आने लगीं। जो हर पल नजदीक आती जा रही थीं।

कमाण्डर भांप गया, सिक्योरिटी गार्ड आ रहे हैं।

"य...यह कैसी आवाजें हैं ?" एक गार्ड ने शुष्क स्वर में पूछा।

"तुम क्या समझते हो मूर्खों !" करण सक्सेना ने फौरन एक चाल चली और उस बेहद खतरनाक परिस्थिति में भी वो खिलखिलाकर हँसा- "कि इस एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर के अंदर मैं अकेला घुसा हूँ, हर्गिज नहीं ! मेरे साथ यहाँ बीस हिन्दुस्तानी जासूस और घुसे हैं। अब तक उन्होंने तमाम सिक्योरिटी गार्डों का सफाया कर दिया होगा और इस समय वही लोग यहाँ आ रहे हैं।"

"न... नहीं।" सुलतान फौजी और ज्यादा आतंकित हो उठा- "वह तुम्हारे साथी नहीं है, यह जरूर पाकिस्तानी गार्ड हैं।"

"ठीक है।" कमाण्डर करण सक्सेना मुस्कराकर ही बोला- "उन्हें अंदर आने दो, अभी साबित हो जायेगा कि कौन क्या है।"

तभी धड़ाधड़ दरवाजे खुले और सिक्योरिटी गार्ड अंदर घुस आये
।

वहाँ पहले से मौजूद पांचों गार्ड क्योंकि हौपलैस थे, इसलिये उन्होंने झटके से उन गार्डों की तरफ गर्दन घुमाकर देखा कि वह कौन है ?

कमाण्डर करण सक्सेना को जैसे उसी एक पल का इंतजार था।

उसने 'धायं-धांय-धांय' उन सभी पांच गार्डों को गोलियों से उड़ा दिया।

उन सबसे पहले उसने सुलतान फौजी को गोली से उड़ाना चाहा था।

लेकिन मात खा गया।

बुरी तरह मात खा गया।

सुलतान फौज हद से ज्यादा चालाक आदमी साबित हुआ।

दरअसल उसके दिमाग में पहले से ही यह बात स्थापित हो गयी थी कि कमाण्डर के और साथी आ रहे हैं।

इसलिये जैसे ही धड़ाधड़ दरवाजे खुले, उसने उन गार्डों की तरफ देखने की बजाय एकदम सेकण्ड के सौंवे हिस्से में ही एक अलमारी की तरफ छलांग लगा दी और फौरन उसमें बंद हो गया।

सन्न रह गया करण सक्सेना।

बुरी तरह सन्न्।

उसने सोचा भी नहीं था कि सुलतान फौजी ऐसा करेगा।

वह तो यह सोच रहा था कि वह भी उन गार्डों की तरह पीछे मुड़कर देखेगा और उसी पल वह उसे भून डालेगा।

मगर ऐसा हुआ नहीं।

जो हुआ, वह उसकी कल्पना से भी परे था।

□□□

एकाएक सारे पत्ते पलट चुके थे।

अंदर आये पाकिस्तानी गार्डों ने कमाण्डर को निशाना बनाकर उस पर धुआंधार गोलियों की बारिश शुरु कर दी।

कमाण्डर करण सक्सेना ने फौरन ही अपने चेहरे पर बुलेटप्रूफ ऑक्सीजन मास्क चढ़ा लिया था।

अब वह पूरी तरह सुरक्षित हो गया।

गोलियां उसके जिस्म से टकराकर नीचे गिरने लगीं।

फिर वह दौड़ता हुआ उस अलमारी के करीब पहुँचा, जिसमें सुलतान फौजी बंद हुआ था।

उसने अपनी सम्पूर्ण शक्ति से उस अलमारी का पल्ला पकड़कर झंझोड़ा, लेकिन वह एक सूत भी अपनी जगह से न हिला।

जरुर फौजी ने अंदर पहुँचने के बाद दरवाजे का बोल्ट चढ़ा लिया था।

कमाण्डर करण सक्सेना झुंझला उठा।

उसने जोर से लोहे के मजबूत दरवाजे पर घूंसा मारा।

सुलतान फौजी एक बार फिर उसकी तमाम कोशिशों के बावजूद बच गया था।

उसने पलटकर देखा।

पाकिस्तानी गार्डों की संख्या हर पल बढ़ती ही जा रही थी, गोलियों की उसके ऊपर ऐसी विहंगमकारी बारिश हो रही थी, जैसी उसने अपनी पूरी ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं देखी थी।

तभी कमाण्डर करण सक्सेना ने तीन पाकिस्तानी गार्डों को गोलियों की बारिश करते हुए धीरे-धीरे अपनी तरफ बढ़ते देखा।

कमाण्डर ने उन तीनों को गोलियों से भून डाला।

इससे पहले कि कुछ और गार्ड भी वैसा ही कदम उठाते, कमाण्डर उनके ऊपर धुआंधार गोलियां चलाता हुआ सीक्रेट हाउस से निकलकर भागा और फिर काले खानों पर पैर रखकर दौड़ता चला गया।

गार्डों की फौरन ही उसके पीछे दौड़ने की हिम्मत न हुई।

क्योंकि काले खानों पर पैर रखने की वजह से पूरे हॉल में गोलियां चल रही थीं।

लेकिन जैसे ही कमाण्डर करण सक्सेना ने हॉल पार किया, वह गार्ड भी उसके पीछे-पीछे लपके।

□□□

जल्द ही कमाण्डर करण सक्सेना एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर की इमारत से निकलकर उस विशाल ग्राउण्ड में पहुँच चुका था, जहाँ रन-वे और हैलीपैड बना था।

गार्ड चारों तरफ से भागते हुए उसके करीब आ रहे थे।

हर तरफ से गोलियां चलाई जा रही थीं।

उस शोर-शराबे के कारण मेन गेट पर खड़े तीनों गार्ड भी गेट खोलकर अंदर आ गये थे और अब अंधेरे में आँखें फाड़कर उस नजारे

को देख रहे थे ।

"तुम अंदर क्यों आ गये मूर्खों !" तभी एक अधिकारी ने टॉर्च का तीखा प्रकाश उनके ऊपर डाला और चिल्लाया- "जल्दी यहाँ से बाहर जाओ और बाहर से गेट बंद कर दो । कमाण्डर यहाँ से बाहर न निकलने पाये । उसके पास सिर्फ एक राइफल है, वह ज्यादा देर हमारा सामना नहीं कर पायेगा ।"

फौरन वह तीनों गार्ड दौड़ते हुए बाहर निकल गये ।

न सिर्फ बाहर निकल गये बल्कि बाहर निकलते ही उन्होंने दरवाजा भी बंद कर दिया और भारी-भरकम लोहे के कुण्डे की सांकल भी चढ़ा दी ।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना जो तूफानी गति से दौड़ता हुआ मेन गेट की तरफ ही बढ़ रहा था, एकाएक ठिठक गया ।

वह उनकी योजना भांप चुका था ।

इसमें कोई शक नहीं, अगर उसने जल्दी कोई चमत्कारी कदम न उठाया, तो उसने फंस जाना था ।

कमाण्डर की गर्दन चारों दिशाओं में घूमी । ग्राउण्ड में दर्जनों के हिसाब से गार्ड जमा हो चुके थे और वह गोलियां चलाते हुए उसी की तरफ बढ़ रहे थे ।

कमाण्डर का दिमाग बड़ी तेजी से एक्टिव हो गया ।

एकाएक उसकी निगाहें रन-वे पर खड़े अमरीका के थ्री नॉट थ्री एक्स एल बमवर्षक विमान पर जाकर टिक गयीं ।

एक क्षण, सिर्फ एक क्षण के लिये कमाण्डर करण सक्सेना ने कुछ सोचा और अगले ही पल वो किसी तेज धावक की तरह दौड़ता हुआ उस बमवर्षक विमान की तरफ बढ़ गया ।

पाकिस्तानी गार्ड कुछ समझ पाते, उससे पहले ही वो उस बमवर्षक विमान में चढ़ गया था । वह सीधा विमान के कॉकपिट में जा घुसा और उसने विमान स्टार्ट कर दिया ।

श्री नॉट थ्री एक्स एल बमवर्षक विमान फौरन ही रन-वे पर तूफानी गति से दौड़ने लगा था ।

पायलेट की सीट पर बैठे-बैठे कमाण्डर की निगाह वहीं लगी एक कम्प्यूटर स्क्रीन पर जाकर फिक्स हो गयी ।

उसने एक बटन दबाया ।

जल्द ही कमाण्डर को मालूम हो गया कि उस बमवर्षक विमान के स्टोर में बीस बेहद शक्तिशाली बम हैं ।

मुस्करा दिया कमाण्डर !

उसने तुरंत एक लाल बटन दबा दिया था ।

फौरन वह बीस शक्तिशाली बम विमान के स्टोर में-से निकलकर धीरे-धीरे हमले वाली जगह पर पहुँचने लगे ।

यही वो पल था, जब अमरीका में बना वो श्री नॉट थ्री एक्स एल बमवर्षक विमान रन-वे पर उड़ गया और आकाश की तरफ परवाज करने लगा ।

उस आकाश की तरफ, जहाँ अभी भी रात की काली स्याही फैली थी ।

□□□

नीचे ग्राउंड में खड़े पाकिस्तानी गार्ड जबरदस्त उलझन में थे ।

विमान को आकाश में उड़ते देखकर वह चक्कर में पड़ गये थे और समझ नहीं पा रहे थे कि वह क्या करें ?

"अब हम कमाण्डर को किस तरह रोकें सर ?" एक गार्ड ने अपने अधिकारी से पूछा ।

"उसे रोकने का इस समय सिर्फ एक ही तरीका बचा है।" अधिकारी चीखकर बोला- "विमान को बम से उड़ा दो ।"

"ल... लेकिन वह विमान हमारी एयरफ़ोर्स के लिये बहुत ख़ास है सर ।"

"मैं जानता हूँ, वह विमान हमारी सेना के लिये ख़ास है, मगर करण सक्सेना की मौत से ज्यादा ख़ास नहीं । इसलिये हरीअप,

जल्दी करो। वरना विमान हमारी रेंज से दूर निकल जायेगा।"

अधिकारी के आदेश की देर थी, फौरन कुछ गार्ड अंदर की तरफ दौड़ पड़े और शीघ्र ही वह दो एण्टी टैंक गन निकाल लाये थे।

तब तक बमवर्षक विमान थोड़ा ही ऊपर गया था।

उसी पल पाकिस्तानी गार्डों ने उस पर एंटी टैंक गन से गोले बरसा डाले।

गोले धाड़-धाड़ बिमान के पिछले हिस्से में जाकर लगे।

एक गोला विमान के ऑयल टैंक में भी जाकर लगा था।

वह धूं-धूं करके जलने लगा।

परन्तु उसी पल विमान के अंदर से भी गोलाबारी शुरू हो गयी थी।

बड़े-बड़े शक्तिशाली बम तीर की तरह सर्राटे के साथ दौड़ते हुए एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर पर गिरने लगे।

वहाँ तबाची मच गयी, भयंकर तबाही।

पाकिस्तानी गार्ड चीखते-चिल्लाते इधर-से-उधर भागने लगे, उनकी लाशें बिछने लगीं।

हैडक्वार्टर की इमारत गड़गड़ाती हुई नीचे गिरने लगी।

जबकि धूं-धूं करके जलते ही नॉट थ्री एक्स एल विमान के अंदर से बमों की बारिश अभी भी हो रही थी।

यह मौत का मंजर था, साक्षात मौत का मंजर।

फिर जब विमान के अंदर से बम खत्म हो गये, तो वह विमान दूर अनन्त आकाश में उड़ता चला गया।

इस समय आग की लपटों ने उसे चारों तरफ से घेर रखा था।

ऐसा लग रहा था, जैसे रात के उस काजली अंधेरे में कोई आग का गोला आसमान में उड़ रहा हो।

फिर एक तेज धमाके के साथ वो आग का गोला फटा।

उसके चीथड़े-चीथड़े होकर चारों तरफ बिखर गये।

***



10. कमाण्डर की दहशत

आई.एस.आई. हैडक्वार्टर में मातमी माहौल छाया हुआ था। एक एजेंट, कर्नल नासिर के सामने खड़ा उसे रिपोर्ट दे रहा था- "कमाण्डर करण सक्सेना ने एक बार फिर जबरदस्त तबाही मचायी है सर ! पूरा एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर तबाह हो गया। वहाँ कुछ नहीं बचा। कल रात वहाँ दो सौ के आसपास एयरफ़ोर्स के अधिकारी और सैनिक थे, सबके सब मारे गये। पूरी इमारत तबाह हो गयी। सिर्फ वहाँ चार आदमी बचे हैं।"

"कौन-कौन ?"

"नम्बर एक, सुलतान फौजी। सुलतान फौजी इसलिये बच गया, क्योंकि वह कमाण्डर करण सक्सेना के खौफ से 'सीक्रेट हाउस' के अंदर बनी अलमारी में बंद हो गया था, जो बेहद मजबूत इस्पाती चादर से बनी थी। एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर के पूरी तरह तबाह होने के बाद भी वह उस अलमारी से बाहर नहीं निकला, वह इसी खौफ से अंदर दुबका बैठा रहा कि अगर वो बाहर निकलेगा, तो फौरन कमाण्डर करण सक्सेना उसे मार डालेगा। वह तब बाहर निकला, जब सुबह हम लोग वहाँ पहुँच गये।"

"उसके अलावा तीन आदमी कौन-कौन बचे हैं ?"

"तीन वह गार्ड बच गये।" एजेंट बोला- "जो मेन गेट के बाहर ही खड़े पहरा दे रहे थे। जैसे ही कमाण्डर ने पहला बम एयरफ़ोर्स

हैडक्वार्टर के अंदर गिराया, तो वह तुरंत वहाँ से भाग खड़े हुए । बाकि सुलतान फौजी को छोड़कर जितने भी आदमी थे, वह सब उस हमले में मारे गये ।"

"ओह !"

"इसके अलावा एक खुशखबरी भी है सर !" इस बार आई.एस.आई. एजेंट थोड़ा उत्साह के साथ बोला ।

"कैसी खुशखबरी ?"

"कमाण्डर करण सक्सेना भी इस भयंकर तबाही का शिकार होकर मारा गया है । वह दरअसल जिस बमवर्षक विमान में वहाँ से भागा था, उस विमान में बड़ी जबरदस्त आग लग गयी और उसके चीथड़े-चीथड़े होकर हवा में चारों तरफ बिखर गये ।"

"नामुमकिन, बिल्कुल नामुमकिन ।" भारी-भरकम जिस्म वाला कर्नल नासिर उस खबर को सुनकर चिल्ला उठा- "मैं इस बात को किसी हालत में नहीं मानता कि कमाण्डर करण सक्सेना मारा गया । उस जैसा आदमी किसी भी हालत में इतनी आसानी से नहीं मर सकता ।"

"ल... लेकिन हम लोगों ने उस विमान के चीथड़े उड़ते खुद अपनी आंखों से देखे हैं सर ।"

"विमान के चीथड़े ।" कर्नल नासिर ने तुरत उसका शब्द पकड़ा- "सिर्फ विमान के चीथड़े ! क्रमाण्डर करण सक्सेना के चीथड़े तो तुम लोगों को नहीं मिले ?"

आई.एस.आई. एजेंट हिचकिचाया ।

"जवाब दो ।" कर्नल नासिर आंदोलित लहजे में चिल्लाया- "तुम्हें उसके चीथड़े मिले या नहीं ?"

"न... नहीं सर !" एजेंट शुष्क स्वर में बोला- "उ... उसके चीथड़े तो हमें नहीं मिले ।"

"और इसीलिये मैं दावे के साथ कह रहा हूँ ।" कर्नल नासिर जोर से मेज पर घूंसा मारकर चिंघाड़ा- "कि अभी वो जिन्दा है, हर हालत में जिंदा है ।"

□□□

उसी पल वहाँ एक सनसनी का सूत्रपात और हुआ।

वह आई.एस.आई.एजेंट अभी कर्नल नासिर को अपनी रिपोर्ट पूरी तरह से दे भी नहीं पाया था कि तभी वहाँ एक अन्य एजेंट लगभग दौड़ता हुआ आया।

उस एजेंट के हाथ में एक छोटा सा पैकिट था और वह बुरी तरह हाँफ रहा था।

"क्या बात है ?"

"सर... सर !" वह एजेंट बेदह आतंकित स्वर में बोला- "हमें यह पैकिट आई.एस.आई. हैडक्वार्टर के बाहर पड़ा मिला है।"

"प... पैकिट !" कर्नल नासिर एकदम अपनी कुर्सी से उछला।

"यस सर ! यह पैकिट एक सफेद कपड़े में बंधा हुआ था। शुरु में हम लोगों ने समझा कि इसके अंदर जरुर बम है। बहरहाल हमारे बम स्क्वायड दस्ते ने फौरन यह पैकिट खोलकर देखा, तो पता चला कि इसके अंदर पैन ड्राइव थी।"

"प... पैन ड्राइव !"

"यस सर, कमाण्डर करण सक्सेना ने यह पैन ड्राइव खासतौर से आपके लिये भेजी है। यह देखिये सर !"

कर्नल नासिर ने पैकिट अब उस एजेंट के हाथ से झपट लिया। पैन ड्राइव अभी भी एक अखबार के कागज में लिपटी हुई थी और उसके ऊपर तक स्लिप चिपकी थी, जिस पर लिखा था-

कर्नल नासिर को कमाण्डर का एक ख़ास तोहफा, जरूर देखें।

□□□

आनन-फानन कर्नल नासिर के ऑफिस में ही उस पैन ड्राइव को देखने का इंतजाम किया गया।

वहाँ टेलीविजन सैट पहले से मौजूद था, एक एजेंट ने तुरंत लपककर पैन ड्राइव, टी.वी. के पैनल में लगाकर उसे स्टार्ट किया।

कुछ देर टेलीविजन सैट पर आड़ी-तिरछी लकीरें आती रहीं, उसके बाद कमाण्डर करण सक्सेना की बिल्कुल साफ तस्वीर पर्दे पर नजर आयी।

कमाण्डर करण सक्सेना उस समय एक कुर्सी पर बैठा हुआ था। वह अपनी चिर परिचित ड्रेस में था, काला लम्बा ओवरकोट और काला गोल क्लेंसी हैट।

"हैलो कर्नल !" करण सक्सेना ने मुस्कुराते हुए अपनी एक टांग दूसरी टांग के ऊपर रख ली और थोड़ा फैलकर बैठ गया- "तुम लोग शायद मेरी मौत का जश्न मना रहे होओगे, इसलिये मैंने सोचा कि क्यों न यह पैन ड्राइव भेजकर तुम लोगों की तमाम खुशियों पर पानी फेर दूं। क्योंकि मुझे यह पसंद नहीं कर्नल, तुम्हारे जैसा राक्षस आदमी मुस्कराये। मैं हमेशा तुम्हारे चेहरे पर खौफ की छाया देखना चाहता हूँ, खौफ की छाया।"

एक पल के लिये रुका कमाण्डर करण सक्सेना ! जबकि कर्नल नासिर के चेहरे पर अब जलजले के भाव नजर आने लगे थे।

"इसमें कोई शक नहीं कर्नल।" कमाण्डर आगे बोला- "तुमने सुलतान फौजी की सुरक्षा का इस बार काफी जबरदस्त इंतजाम किया था। तुम्हारे इंतजामों की मैं दाद देता हूँ। मैंने तो फौजी तक पहुँचने की भरपूर कौशिश की, मैं पहुँच भी गया, लेकिन फिर भी नाकाम रहा। कोई बात नहीं कर्नल, यह खेल इसी तरह चलता रहेगा। तब तक चलता रहेगा, जब तक मैं अपने शिकार को मार नहीं डालता। इसलिये एक बार फिर हम दोनों के बीच शतरंज की बिसात बिछ जानी चाहिये। तुम सुलतान फौजी की सुरक्षा के जितने जबरदस्त इंतजाम कर सकते हो, कर लो। तुम उसे जहाँ छिपाना चाहते हो, छिपा लो। लेकिन मेरा दावा है कि मैं एक बार फिर उस तक पहुँचूँगा, उसकी मौत बनकर पहुँचूँगा। अब सिर्फ यह देखना है कि जीत किसकी होती है। इस बार मेरा हमला जल्द होगा। बहुत जल्द ! सावधान रहना कर्नल, सावधान ! अलविदा !"

उसी पल टी.वी. स्क्रीन पर फिर पहले की तरह आड़ी-तिरछी

लकीरें नजर आने लगी थीं।

"साला हरामी!" कर्नल नासिर एकाएक गुस्से में चिल्लाता हुआ कुर्सी से उठा, फिर उसने मेज पर रखा पेपर उठाकर टी.वी. स्क्रीन में इतनी जोर से मारा कि उसकी धज्जियां बिखर गयीं।

"चैलेंज देता हूँ तुझे, चैलेंज!" कर्नल नासिर पागलों की तरह मेज पर जोर-जोर से घूंसे बरसाने लगा।

आई.एस.आई. एजेंट भौंचक्की निगाहों से कर्नल नासिर को देख रहे थे। उस पर गुस्से का ऐसा भयानक दौरा पड़ता उन्होंने ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं देखा था।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना उस समय होटल के अपने कमरे में पैर पसारे लेटा था और उसके हाथ में पाकिस्तान के सबसे ज्यादा बिकने वाले अखबार 'डॉन' की एक कॉपी थी, जिसमें वो अपने ही रात वाले कारनामें को बड़ी दिलचस्पी के साथ पढ़ रहा था।

'डॉन' के कवर पेज पर ही एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर का भी एक चित्र छपा था। वह जगह अब पहचानने में भी नहीं आ रही थीं, क्योंकि वहाँ मलबे का ढेर था। सिर्फ और सिर्फ ढेर। उस चित्र को देखकर कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि कभी वहाँ एक बेहद खूबसूरत और विशाल इमारत भी रही होगी।

तभी उसकी ट्रांसमीटर पर रजिया से बात हुई।

ब्लिप-ब्लिप की आवाज़ सुनकर उसने अपनी जेब से घड़ी निकाली और फिर उसे ऑन किया।

"यस कमाण्डर स्पीकिंग, कमाण्डर स्पीकिंग।"

"म... मैं रजिया बोल रही हूँ कमाण्डर!" उसी पल रजिया की घबराई सी आवाज़ कमाण्डर के कानों में पड़ी- "मुझे अभी-अभी रात वाली घटना के बारे में मालूम हुआ। मुझे यह भी मालूम हुआ कि तुम रात एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर से जिस बमवर्षक विमान में भागे थे, उस विमान के भी परखच्चे उड़ गये। तुम ठीक तो हो न

कमाण्डर ?"

"ठीक हूँ।" कमाण्डर करण सक्सेना हँसा- "तभी तो इस समय तुमसे बात भी कर रहा हूँ रजिया।"

"मेरा मतलब यह नहीं, तुम्हारा ज्यादा बड़ा एक्सीडेंट तो नहीं हुआ न ?"

"नहीं, मुझे कुछ नहीं हुआ। मैं बिल्कुल पहले की तरह हूँ।"

"लेकिन जब उस बमवर्षक विमान के इतनी बुरी तरह परखच्चे उड़ गये थे, तो तुम बचे किस तरह कमाण्डर ?" रजिया ने कौतुहलतापूर्वक पूछा।

"सब किस्मत का खेल है।" कमाण्डर करण सक्सेना की आंखों के गिर्द रात का नजारा घूमने लगा था-"दरअसल जब एण्टी टैंक गन से विमान पर गोले बरसाये गये और 'आयल टैंक' फटने की वजह से विमान धूं-धूं करके जलने लगा, तो मैं तभी समझ गया था कि मुझे अपने बचाव के लिये जल्दी कुछ करना होगा। इसलिये मैंने बमवर्षक विमान में आग लगने के बावजूद एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर पर बमबारी शुरु कर दी और हैडक्वार्टर को पूरी तरह नेस्तनाबूद करने के बाद विमान लेकर अनंत आकाश में उड़ता चला गया। लेकिन इस बीच मैं अपने बचाव के लिये एक ख़ास काम कर चुका था।"

"क्या ?"

"मैं पैराशूट बांध चुका था।"

"ओह !"

"जैसे ही धूं-धूं करके जलता हुआ विमान हैडक्वार्टर से कुछ दूर गया, मैंने फौरन उसके अंदर से बाहर छलांग लगा दी। लेकिन इस बीच एक और गड़बड़ हो गयी।"

"क... कैसी गड़बड़ ?"

"दरअसल विमान क्योंकि बुरी तरह जल रहा था।" कमाण्डर करण सक्सेना गहरी सांस लेकर बोला-"इसलिये बाहर कूदते समय पैराशूट ने भी आग पकड़ ली। यही वजह रही, जो पैराशूट खुल न सका और मैं एक पेड़ की झाड़ियों में जाकर गिरा। इसी कारण

शरीर पर सिर्फ कुछ मामूली खरोंचे आयीं, इसके अलावा कुछ न हुआ।"

"माई गॉड !" रजिया हैरत से बोली- "तुम तो इतनी बड़ी घटना को इस तरह बयान कर रहे हो कमाण्डर, जैसे सड़क पर तुम्हारी किसी से मामूली भिड़न्त हो गयी हो। जबकि रात तुम मर भी सकते थे।"

कमाण्डर करण सक्सेना हँसने लगा।

"एक सवाल पूंछूं कमाण्डर ?" रजिया की आवाज़ एकाएक किसी गहरे अंधकूप के अंदर से निकली थी।

"पूछो।"

"त... तुम्हें मौत से डर नहीं लगता ?"

इस बार पहले से भी ज्यादा जोर से खिलखिलाकर हँसा कमाण्डर !

"त... तुम हँस क्यों रहे हो ?" रजिया की चौंकती आवाज़ ट्रांसमीटर में-से निकली।

"क्योंकि तुम्हारे इस सवाल का जवाब भी बड़ा अजीब है रजिया !" कमाण्डर करण सक्सेना गंभीर हो गया था- "जानती हो, मेरे दिल में जब तक मौत का कोई खौफ नहीं, मैं तभी तक जिंदा हूँ। जिस दिन मैंने मौत से डरना सीख लिया, उसी दिन मेरा अंत भी हो जायेगा।"

"न... नहीं।" रजिया की आवाज़ काँप गयी- "नहीं। तुम्हारा अंत कभी नहीं होगा कमाण्डर, कभी नहीं।"

"ऐनी वे।" कमाण्डर पहले की तरह ही गंभीरतापूर्वक बोला- "अब इस सब्जेक्ट को यहीं बंद करो और बताओ, क्या तुम्हें सुलतान फौजी के बारे में कोई नई रिपोर्ट मिली ? उसे अब कहाँ शिफ्ट किया जा रहा है ?"

"नहीं, फिलहाल मुझे इस बारे में कोई जानकारी नहीं है। लेकिन जैसे ही मुझे कोई रिपोर्ट मिलेगी, मैं तुम्हें इन्फॉर्मेशन दूंगी।"

फिर वह वार्तालाप वहीं खत्म हो गया।

कमाण्डर ने बिस्तर पर लेटे-लेटे डनहिल सुलगा ली और वह उसके छोटे-छोटे कश लगाने लगा ।

धुएं के गोल-गोल छल्ले हवा में उड़ने लगे थे ।

सुलतान फौजी !

यह नाम कमाण्डर के दिमाग में अब डंके की तरह बजने लगा-सुलतान फौजी ।

उस एक अकेले आदमी को मारना उसके लिये चुनौती बनता जा रहा था ।

जबरदस्त चुनौती ।

वह काफी देर तक बिस्तर पर लेटा सिर्फ और सिर्फ सुलतान फौजी के बारे में ही सोचता रहा ।

□□□

दोपहर का समय !

वह आई.एस.आई. हैडक्वार्टर में ही बना एक छोटा-सा कमरा था, जिसमें तीन आदमी बड़ी सस्पैंसफुल स्थिति में जमा हुए । अंदर घुसते ही कमरा भी लॉक्ड कर दिया गया ।

फिर इस बात की बड़ी बारीकी से चैकिंग की गई कि कहीं कोई आदमी वहाँ पहले से ही तो छिपा हुआ नहीं है ।

लेकिन कहीं कोई न था ।

जिस कमरे में वह तीनों जमा हुए थे, वह कमरा भी साउण्डप्रूफ था । इतना जबरदस्त साउण्डप्रूफ कि अगर उसके अंदर बम भी फट जाये, तब भी बाहर खबर न हो ।

आइए अब उन आदमियों का भी परिचय हो जाये, जो उस साउण्डप्रूफ कमरे में जमा हुए थे ।

पहला आदमी था कर्नल नासिर ।

दूसरा आदमी लम्बे कद और बुलगारियन कट दाढ़ी वाला आई.एस.आई. का एक अधिकारी था ।

जबकि तीसरा आदमी उन दोनों के मुकाबले काफी छोटे कद का

था और इसीलिये उन दोनों के बीच 'बच्चा' सा नजर आ रहा था। लेकिन वह भी आई.एस.आई. ग्रुप की ही एक महत्वपूर्ण हस्ती था।

वह तीनों एक गोलमेज के इर्द-गिर्द कुछ इस तरह बैठ गये कि उनके चेहरे आमने-सामने रहें।

"क्या बात है सर !" कुर्सी पर बैठते ही बुल्गारियन कट दाढ़ी वाला आदमी बोला- "आपने हम दोनों को इस कमरे में किसलिये बुलाया है ?"

"मैं दरअसल इस वक़्त एक बहुत ख़ास सब्जैक्ट पर तुम दोनों से बात करना चाहता हूँ।" कर्नल नासिर भी इत्मीनान के साथ कुर्सी पर बैठ गया था।

"किस सब्जेक्ट पर ?"

"पेशंस रखो, मैं सब कुछ बताने वाला हूँ। दरअसल सुलतान फौजी का मामला है।"

"स... सुलतान फौजी !" दोनों के मुँह से तेज सिसकारी छूट गयी थी।

"हाँ।" कर्नल नासिर ने बड़ी संजीदगी के साथ गर्दन हिलाई- "यह बात तो अब तमाम लोग समझ ही चुके हैं कि यह केस दिन-ब-दिन काफी खतरनाक मोड़ लेता जा रहा है। लेकिन इस पूरे केस में अब एक बात मुझे बुरी तरह चौंका रही है, जिसकी तरफ अभी तक शायद किसी का भी ध्यान नहीं गया है।"

"क... कौन-सी बात ?"

"यह एक हैरानी की बात है कि हम लोग आई.एस.आई. के इस हैडक्वार्टर में बैठकर सुलतान फौजी की सिक्योरिटी का जो प्लान बनाते हैं, वह प्लान बहुत जल्द हम लोगों के बीच में-से लीक होकर कमाण्डर तक पहुँच जाता है। जबकि हम लोग पूरी कौशिश करते हैं कि वह प्लान गुप्त रहे। पूरी तरह सीक्रेट रहे। लेकिन फिर भी हमारी कौशिश कामयाब नहीं हो पाती। इस सिलसिले में, मैं तुम लोगों को एक एग्जामपल भी देता हूँ।" कर्नल नासिर

बोला- "आज से कुछ दिन पहले ही जब हमने सुलतान फौजी को एयरफ़ोर्स हैडक्वार्टर के सीक्रेट हाउस में शिफ्ट किया था, तो हमारी यह पूरी कोशिश थी कि उस बारे में कमाण्डर को कुछ भी न पता चले । लेकिन फिर भी उसी दिन यह रिपोर्ट कमाण्डर को मिल गयी थी और इस बात का सबसे बड़ा सबूत ये है कि उसने उसी दिन न सिर्फ खुर्शीद को मारा बल्कि एयर चीफ मार्शल खलील साहब की भी हत्या कर दी ।"

"क... कहीं आप यह तो कहना नहीं चाहते हैं सर ।" ठिगने कद वाला व्यक्ति एकाएक भौंचक्के स्वर में बोला- "कि हम लोगों में-से कोई कमाण्डर से मिला हुआ है ?"

"नहीं, मैं यह नहीं कहना चाहता ।" कर्नल नासिर की गर्दन फौरन इंकार में हिली- "क्योंकि मीटिंग मे आज तक जितने भी लोग हिस्सा लेते रहे हैं, वह सभी बहुत यकीन वाले लोग हैं और वह पाकिस्तान से, अपने वतन से किसी भी कीमत पर गद्दारी नहीं कर सकते । गद्दारी की बात सोच भी नहीं सकते । लेकिन फिर भी मैं तुम लोगों से एक बात कहूँगा ।" कर्नल नासिर बोला- "कहीं-न-कहीं, कुछ-न-कुछ गड़बड़ तो जरूर है । क्योंकि अगर कहीं कुछ गड़बड़ न होती, तो इस तरह खबर लीक होने का सवाल ही नहीं था ।"

कर्नल नासिर के सामने बैठे दोनों ऑफिसर्स के चेहरे पर अब सस्पेंस के चिन्ह नजर आने लगे, मामला वाकई पेचीदा था ।

कर्नल नासिर की बात उन्हें भी काफी हद तक ठीक लगी, सचमुच कहीं-न-कहीं गड़बड़ तो जरूर थी ।

"इसीलिये मैंने इस बार मीटिंग में तमाम लोगों को बुलाने की बजाय सिर्फ तुम दोनों को बुलाया है ।" कर्नल नासिर कुर्सी पर थोड़ा पहलू बदलकर बोला- "क्योंकि तुम दोनों पर मुझे हद से ज़्यादा यकीन है और मैं महसूस करता हूँ कि हम तीनों के बीच आज इस साउण्डप्रूफ कमरे के अंदर बैठकर जो बातें होंगी, वह किसी भी हालत में कमाण्डर तक नहीं पहुँच पायेंगी ।"

"ओह !"

अगला सवाल ठिगने ने पूछा- "अब सुलतान फौजी को कहाँ शिफ्ट करने का प्लान है ?"

"अभी मैंने इस सिलसिले में कुछ नहीं सोचा है ।" कर्नल नासिर अपने शब्दों पर जोर देता हुआ बोला- "दरअसल मैंने इसी सब्जैक्ट पर बात करने के लिये तुम दोनों को यहाँ बुलाया है । हमें इस सिलसिले में जो भी कदम उठाना है, अब जल्द-से-जल्द उठाना है । फौरन उठाना है । क्योंकि थोड़ी-सी भी कोताही हमारे लिये खतरनाक साबित हो सकती है । दरअसल कमाण्डर करण सक्सेना ने मुझे चेतावनी दी है कि वो सुलतान फौजी के ऊपर अपना अगला हमला बहुत जल्द करने वाला है । अब तुम लोग मुझे ऐसी किसी जगह का नाम सुझाओ, जहाँ सुलतान फौजी को एकदम से शिफ्ट किया जा सके और जो जगह बेहद महफ़ूज़ भी हो । याद रहे, अगर इस बार कमाण्डर करण सक्सेना, सुलतान फौजी तक पहुँच गया, तो शायद वह अपने मिशन में कामयाब ही हो जाएगा ।"

उन दोनों के चेहरे सोचनीय मुद्रा में डूब गये ।

मुश्किल एक बार फिर उन लोगों के सामने मुँह उठाये खड़ी थी ।

□□□

वह दोनों काफी देर तक सोचते रहे ।

फिर उन्होंने कर्नल नासिर को कुछ ऐसी जगहों के नाम सुझाये, जहाँ सुलतान फौजी को फौरन शिफ्ट किया जा सकता था ।

लेकिन उनमें से कोई भी स्थान कर्नल नासिर को न जंचा । हर जगह सुलतान फौजी की जान को खतरा था, हर जगह कमाण्डर पहुँच सकता था ।

"मत भूलो, मुझे कोई बहुत सॉलिड जगह चाहिये ।" कर्नल नासिर बुरी तरह झुंझला उठा- "हद से ज्यादा सॉलिड जगह । मैं इस बार सुलतान फौजी को सीक्रेट हाउस से भी ज्यादा जबरदस्त सिक्योरिटी देना चाहता हूँ ।"

"सर !" तभी ठिगना प्रफुल्लित होकर बोला- "मेरी निगाह में

ऐसी एक जगह है, जहाँ सुलतान फौजी को 'सीक्रेट हाउस' से भी ज्यादा जबरदस्त सिक्योरिटी हासिल हो सकती है ।"

"कौन-सी जगह ?" कर्नल नासिर ने बेपनाह उत्सुकता से ठिगने की तरफ देखा ।

"मिलट्री की उस जेल के बारे में तो आप सभी लोग जानते ही हैं ।" ठिगना बोला- "जहाँ ज्यादातर ऐसे विदेशी जासूसों को बंद किया जाता है, जो पाकिस्तान में जासूसी करने आते हैं और यहाँ आकर पकड़े जाते हैं या फिर विदेशी युद्धबंदियों को भी मिलट्री की उस जेल में बंद रखा जाता है ।"

"तुम आगे बोलो, क्या कहना चाहते हो ?"

"दरअसल मिलट्री की उस जेल में एक बड़ी अद्भुत किस्म की गुप्त जेल भी बनी हुई है सर, जिसके बारे में पता नहीं आप लोग जानते हैं या नहीं जानते ।"

"क... कैसी गुप्त जेल ?"

कर्नल नासिर के साथ-साथ लम्बे आदमी ने भी हैरानी से ठिगने की तरफ देखा ।

"इसका मतलब आप लोग उस 'गुप्त जेल' के बारे में कुछ नहीं जानते ।" ठिगना बोला- "ठीक है, मैं उस गुप्त जेल की पूरी डिटेल बताता हूँ । दरअसल वह बडी अजीबोगरीब किस्म की जेल है और ऐसी जेल शायद ही पूरी दुनिया में कहीं और आपको देखने को मिले । मिलट्री की जेल में कैदियों की जो बैरकें बनीं हुई हैं, उन्हीं बैरकों की बैक साइड में एक काफी बड़ा तालाब भी है और उसी तालाब के अंदर वह जेल बनी हुई है ।"

"तालाब के अंदर ?" लम्बे आदमी के मुँह से जबरदस्त सिसकारी छूटी ।

"जी हाँ, तालाब के अंदर !" ठिगना शुष्क लहजे में बोला- "इतना ही नहीं, उस तालाब में बड़े-बड़े खतरनाक किस्म के मगरमच्छ, आक्टोपस और तरह-तरह के खौफनाक पानी के जानवर हैं, जो इंसान को देखते ही उसके ऊपर गिद्ध की तरह झपटते हैं और

फिर उसे मारने में ज्यादा वक़्त नहीं लगाते । तालाब काफी बड़े एरिये में फैला हुआ है और उस तालाब के चारों तरफ तारों की बाड़-सी लगी है, ताकि वह नरभक्षक जलीय जानवर तालाब के अंदर से निकलकर बाहर न जा सके ।"

"एक बात समझ नहीं आयी ।" तभी भारी-भरकम जिस्म का मालिक कर्नल नासिर बोला- "जब उस बड़े तालाब में ऐसे-ऐसे खतरनाक जानवर हैं, तो फिर उसके अंदर जेल क्यों बनायी गयी है ? उन जलीय जानवरों के बीच तो कैदी वैसे ही मर जायेगा ?"

"नहीं, इतनी आसानी से नहीं मरेगा ।" ठिगने के होठों पर हल्की सी मुस्कान दौड़ी- "दरअसल उस 'गुप्त जेल' का पूरा इंतजाम बड़े अच्छे ढंग से किया गया है । पहली बात, वह गुप्त जेल पारदर्शी शीशे का एक केबिन है, जो सिर्फ एक कैदी के लिये बनाया गया है । शीशे का वह केबिन इतना बड़ा है कि उसमें कोई भी बेहद कैदी आराम से बैठ सकता है, खड़ा हो सकता है और फिर लेट भी सकता है । इसके अलावा वह केबिन चारों तरफ से बिल्कुल बंद है । उसमें ऑक्सीजन का इन्तिज़ाम भी किया गया है, ताकि कैदी उसके अंदर सहूलियत से सांस ले सके ।"

"क... कहीं तुम यह तो कहना नहीं चाहते ।" तभी लम्बे कद का आदमी जल्दी से बोला- "कि शीशे का वह केबिन तालाब के अंदर है ?"

"बिल्कुल यही कहना चाहता हूँ । उस तालाब की गहराई इतनी है कि उसमें शीशे का वो केबिन आसानी के साथ अंदर समां जाता है । इतना ही नहीं, तालाब में समाने के बाद पता भी नहीं चलता कि शीशे का कोई केबिन उसके अंदर है भी या नहीं, फिर तो उसमें चारों तरफ पानी-ही-पानी नजर आता है या फिर जलीय जानवर तैरते हुए नजर आते हैं ।"

"उस 'गुप्त जेल' के अंदर क़ैदी को खाना किस तरह पहुँचाया जाता है ?"

"अच्छा सवाल है ।" ठिगना एक-एक बात विस्तार से समझाता

हुआ बोला- "दरअसल यह काम एक हैलीकॉप्टर के ज़रिये होता है।"

"ह... हैलीकॉप्टर के ज़रिये ? वो कैसे ?"

सस्पेंस हर पल बढ़ता जा रहा था।

वह दोनों अब उस अजीबोगरीब 'गुप्त जेल' के बारे में सब कुछ जानने को बैचैन थे।

"दरअसल उस तालाब में थोड़े फासले पर ही मिलट्री का एक हैलीकाप्टर खड़ा रहता है।" ठिगना बोला- "जब शीशे की उस 'गुप्त जेल' के अंदर बंद कैदी को खाना पहुँचाना होता है, तो एक पायलेट उस हैलीकॉप्टर को लेकर उड़ता है और जल्द ही वो हैलीकॉप्टर तालाब के ठीक ऊपर उस प्वाइंट पर मंडराने लगता है, जहाँ नीचे वो गुप्त जेल है। फिर हैलीकॉप्टर में बैठा पायलेट एक रिमोट कंट्रोल उठाकर अपना हाथ हैलीकॉप्टर से बाहर निकालता है और फिर रिमोट कण्ट्रोल का एक सफेद बटन दबाता है।"

"रिमोट कण्ट्रोल का बटन क्यों दबाता है ?" कर्नल नासिर ने पूछा।

"दरअसल उस 'गुप्त जेल' का पूरा ऑपरेटिंग सिस्टम उसी रिमोट कण्ट्रोल से होता है। वह शीशे की गुप्त जेल तालाब के नीचे स्प्रिंग के एक मजबूत स्टैंड पर कसी हुई है। जब ऊपर हैलीकॉप्टर में बैठा पायलेट रिमोट कंट्रोल का सफेद बटन दबाता है, तो फौरन वह स्प्रिंग का स्टैंड हरकत में आता है और वह गुप्त जेल किसी लिफ्ट की तरह चलती हुई तालाब की सतह से छः फुट ऊपर आ जाती है। फिर चालक रिमोट कण्ट्रोल का दूसरा बटन दबाता है, तो उस गुप्त जेल की ऊपर की साइड में लगा शीशे का ही एक पारदर्शी दरवाजा धड़ाक से खुल जाता है और फिर उसी खुले दरवाजे के अंदर से हैलीकॉप्टर में बैठा पायलट खाने के बंद पैकिट जेल के अंदर फैंक देता है। फिर और एक बटन दबाता है, तो शीशे का खुला दरवाजा वापस बंद हो जाता है। फिर एक और बटन दबाता है, तो वह शीशे की गुप्त जेल भी सरकती हुई वापस तालाब में नीचे चली जाती है

और उसका दिखाई देना बंद हो जाता है । सब कुछ ऑटोमेटिक सिस्टम है । जब कैदी को उस गुप्त जेल में बंद किया जाता है, तब भी इसी तरह होता है । क़ैदी को हैलीकॉप्टर से नीचे उस गुप्त जेल के अंदर उतार दिया जाता है । वह शीशे का केबिन क्योंकि हमेशा तालाब के अंदर छिपा रहता है, इसीलिये उसे गुप्त जेल का नाम दिया गया है ।"

"वैरी गुड !" लम्बे कद का आदमी खुशी से चहककर बोला- "सचमुच पूरा सिस्टम काफी शानदार है । बिल्कुल किसी एक्शन-पैक्ड फिल्म जैसा है ।"

"लेकिन इस 'गुप्त जेल' के अंदर बंद कैदी की तो बड़ी बुरी हालत होती होगी ।" कर्नल नासिर बोला- "आखिर उसे तालाब में नीचे रहकर मगरमच्छ, ऑक्टोपस और खतरनाक जानवरों के साथ वक़्त गुजारना पड़ता है ।"

"आपने ठीक कहा सर !" ठिगना बोला- "वाकई उसके अंदर बंद कैदी की बड़ी बुरी हालत रहती है । सच्चाई तो ये है कि कभी-कभी उस मिलट्री जेल का जेलर किसी कैदी को दिमागी रूप से टॉर्चर करने के लिये भी उस जेल में बंद करता है ।"

"ओह !"

"एक सवाल और !" लम्बा आदमी बोला- "अगर हैलीकॉप्टर में बैठा पायलेट 'गुप्त जेल' क़े अंदर मौजूद कैदी से बात करना चाहे, तो वह किस तरह बात करेगा ?"

"उसका भी पूरा इंतजाम वहाँ है । दरअसल शीशे की जेल में एक माइक और स्पीकर लगा हुआ है । जिसका संबंध मिलट्री के उस हैलीकॉप्टर से है, क्योंकि उस हैलीकॉप्टर के अंदर भी बिल्कुल वैसा ही माइक और स्पीकर फिट है । जब पायलेट को कैदी से बात करनी होती है, तो वह उसी माइक और स्पीकर के थ्रू बात करता है । इसी तरह कैदी को भी अपनी कोई बात कहनी होती है, तो वह कहता है ।"

"यानि पूरा सिस्टम लाजवाब है ।"

"बिल्कुल ।" ठिगना बेहिचक बोला- "बस इस पूरे सिस्टम में एक ही बड़ी गड़बड़ है ।"

"क्या ?" कर्नल नासिर की उत्सुकता गड़बड़ के नाम थोड़ी और बढ़ गयी ।

"अगर सुलतान फौजी को उस 'गुप्त जेल' के अंदर बंद किया जाता है ।" ठिगना एक-एक शब्द चबाता हुआ बोला- "तो उसके लिये वहाँ वक़्त गुजारना काफी मुश्किल काम होगा । लेकिन फिर भी मैं समझता हूँ कि वह गुप्त जेल सुलतान फौजी के छिपने के लिये सबसे बेहतरीन जगह है । कमाण्डर करण सक्सेना किसी भी हालत में उसके अंदर से सुलतान फौजी को नहीं निकाल पायेगा बल्कि निकालना तो बहुत बड़ी बात है, उसे यही पता नहीं चलेगा कि उस तालाब के नीचे जेल भी हो सकती है- जिसमें मगरमच्छ और ऑक्टोपास जैसे जानवर घूम रहे हैं ।"

कुछ देर के लिये उस साउंडप्रूफ कमरे में सन्नाटा छा गया ।

कर्नल नासिर के माथे पर उस 'गुप्त जेल' की फुल डिटेल सुनने के बाद कुछ सिलवटें पड़ गयी थीं ।

"क्या सोच रहे हैं सर ?" ठिगने ने थोड़े धीमें स्वर में पूछा ।

"क... कुछ नहीं ।" कर्नल नासिर ने अपने माथे की सिलवटों पर उंगलियां फेरीं ।

"सर !" उसी पल बुल्गारियन कट दाढ़ी वाला लम्बा आदमी अपनी टाई दुरूस्त करता हुआ बोला- "इसमें कोई शक नहीं है कि सुलतान फौजी के लिये वहाँ वक़्त गुजारना काफी मुश्किल काम होगा, लेकिन एक बात आखिरकार आपको भी माननी ही पड़ेगी ।"

"क्या ?"

"वह सुलतान फौजी के छिपने के लिये सबसे बेस्ट जगह है । वाकई वो वहाँ सबसे ज्यादा महफूज़ रहेगा । फिर इंसान की जान से ज्यादा तो कुछ भी कीमती नहीं होता सर, अगर सुलतान फौजी को अपनी जान बचाने के लिये वहाँ थोड़ी परेशानी उठानी भी पड़ती है, तब भी क्या बात है । वो वहाँ कमाण्डर करण सक्सेना के कहर से,

उसके जलाल से तो पूरी तरह महफूज रहेगा।"

"शायद तुम ठीक कह रहे हो।" कर्नल नासिर गहरी सांस लेकर बोला- "सुलतान फौजी को इस बार शिफ्ट करने के लिये शीशे की वही गुप्त जेल सबसे ज्यादा बेहतर होगी।"

ठिगने ने उत्साहित होकर कहा- "यानि इस बार सुलतान फौजी को उस 'गुप्त जेल' में शिफ्ट करना फाइनल ?"

"बिल्कुल फाइनल।"

"वैरी गुड।"

उसके बाद वो महत्वपूर्ण मीटिंग वहीं खत्म हो गयी।

इस फैसले के साथ खत्म हो गयी कि फिलहाल वो उस सब्जैक्ट पर किसी चौथे आदमी से बात नहीं करेंगे और यह बात तो किसी भी हालत में अपनी तरफ से लीक नहीं होने देंगे कि सुलतान फौजी को अब उस बेहद अद्भुत 'गुप्त जेल' के अंदर शिफ्ट किया जा रहा है।

बहरहाल !

इस बार कर्नल नासिर अपनी तरफ से पूरी सावधानी बरत रहा था
।

***

11. सुलतान फौजी का नया ठिकाना

सुबह का वक्त।

भोर का उजाला थोड़ी देर पहले ही चारों तरफ फैला था, लेकिन हैदर अली उस वक्त भी रजिया को बिस्तर पर अपने बाहुपोश में लिये सो रहा था।

तभी उस रोज का अखबार दरवाजे की झिरी के नीचे से सड़ाक की आवाज़ के साथ अंदर आया।

फौरन रजिया की निगाह अखबार के फ्रण्ट पेज पर पड़ी। पिछले कई दिन से पाकिस्तान के तमाम अखबारों के कवर पेज पर 'कमाण्डर करण सक्सेना' का नाम ही छाया हुआ था। उस दिन के फ्रण्ट पेज पर भी कमाण्डर के जीवित होने की खबर छपी थी।

"पीछे हटो।" रजिया ने फौरन हैदर अली को परे धकेला।

"कहाँ जा रही हो ?" हैदर अली ने फ़ौरन उसके गले में बाहें डालीं।

"देख नहीं रहे, अखबार के फ्रंट पेज पर क्या छपा है।" रजिया पूरी तरह अंजान बनती हुई बोली- "कमाण्डर करण सक्सेना जिन्दा है। वह इतने बड़े हादसे के बाद भी बच गया।"

"मैं जानता हूँ डार्लिंग ! मुझे कल ही यह बात मालूम हो गयी थी।"

"कमाल है। यह आदमी है या जिन्न है !" रजिया बोली- "यह तो पाकिस्तान सरकार के लिये आफत ही बनता जा रहा है।"

"ठीक कहा तुमने।" हैदर अली बोला- "वाकई यह आदमी आफत बनता जा रहा है। उसकी जुर्रत देखो, कल उसने कर्नल नासिर के पास एक वीडियो कैसेट भेजी और उन्हें सीना ठोककर चेतावनी दी कि वह सुलतान फौजी को चाहे कहीं भी छिपा लें, मगर वो फिर उस तक पहुँचेगा।"

रजिया की आँखों के गिर्द एक बार फिर अपने भाई अर्जुन ठक्कर

का चेहरा मंडराने लगा था।

अर्जुन ठक्कर !

जब भी वो कमाण्डर को देखती थी, तभी उसे अपना वही दिलेर और जांबाज भाई याद आ जाता था। जिसके बाजुओं में फौलाद था। जिसकी आँखों में शोले लपलपाते थे। जिसकी रंगों में लहू की जगह इस्पात दौड़ता था।

"क्या सोच रही हो रजिया ?" हैदर अली ने उसे झंझोड़ा।

"क... कुछ नहीं।" रजिया के दिमाग में षडयंत्र का काला नाग फुंफकारने लगा- "कमाण्डर करण सक्सेना के बारे में ही सोच रही हूँ। मेरे एक सवाल का जवाब दोगे हैदर ?"

"क्यों नहीं, पूछो।" हैदर अली उसकी नंगी पीठ पर हाथ फेरने लगा और फिर उसके हाथ आहिस्ता-आहिस्ता रेंगते हुए नीचे तक पहुँच गये।

"जिस तरह इस बार हिन्दुस्तान से कमाण्डर करण सक्सेना नाम का यह जासूस यहाँ आया हुआ है, उसी तरह पहले भी तो हिन्दुस्तान जासूस पाकिस्तान आते रहे होंगे।"

"क्यों नहीं, अक्सर आते रहे हैं। यह बात अलग है कि कमाण्डर करण सक्सेना ने सबसे ज्यादा हमारी सरकार को झंझोड़ डाला है।"

"क्या तुम बता सकते हो कि पिछले एक साल में कुल कितने हिन्दुस्तानी जासूस पाकिस्तान आये होंगे ?"

"ठीक फीगर तो कोई नहीं बता सकता।" हैदर अली बोला- "क्योंकि हमें तो सिर्फ उन्हीं जासूसों के बारे में पता चल पाता है, जिन्हें या तो हमारी फोर्स पकड़ लेती है या फिर मार डालती है।"

"अच्छा यह बताओ।" रजिया उससे और ज्यादा कसकर लिपट गयी- "पिछले एक साल से हमारे ऑफिसर्स ने कुल कितने हिन्दुस्तानी जासूस मार डाले होंगे ?"

"यह तो रिकार्ड देखने के बाद ही पता चलेगा।"

"क्या तुम रिकार्ड देखकर बता सकते हो डियर।" रजिया ने

बड़े प्यार से उसके बाल सहलाये- "कि पिछले एक साल में जो हिन्दुस्तानी जासूस मारे गये, उनके नाम क्या-क्या थे और उन्हें किन-किन पाकिस्तानी ऑफिसर्स ने मारा ?"

"तुम यह सब जानकर क्या करोगी ?" हैदर अली की आँखे सिकुड़ गयीं।

"मैं पाकिस्तान के उन जांबाज ऑफिसरों पर एक किताब लिखना चाहती हूँ डियर ! जिन्होंने अपने देश की हिफाजत के लिये बेधड़क हिन्दुस्तानी जासूसों को मार डाला।"

"सॉरी ! पाकिस्तान सरकार तुम्हें कभी भी यह किताब लिखने की इजाजत नहीं देगी, क्योंकि यह काफी सीक्रेट मामला होता है।"

"ठीक है, किताब न सही !" रजिया बोली- "मगर फिर भी तुम मुझे रिकार्ड देखकर बताओ, इससे कम-से-कम मेरे दिल में तो उन ऑफिसरों के लिये इज्जत बढ़ेगी।"

"नहीं रजिया डार्लिंग !" हैदर अली ने बड़े चंचल अंदाज में मुस्कराते हुए उसके गाल का चुम्बन लिया- "अगर किताब लिखने की इजाजत तुम्हें पाकिस्तान सरकार नहीं देगी, तो यह इजाजत तुम्हें मैं नहीं दूंगा कि तुम्हारे दिल में किन्हीं और ऑफिसर्स के लिये इज्जत बढ़े। इस मामले में, मैं काफी खुदगर्ज मर्द हूँ डार्लिंग !"

"ओफ्फो।" रजिया झुंझला उठी- "तुम हमेशा इस सवाल को टाल क्यों जाते हो हैदर ?"

"और अगर मैं यह पूछूं।" हैदर अली ने मुस्कराते हुए कहा- "कि तुम मुझसे बार-बार यह रिकार्ड देखने की जिद क्यों करती हो, तब तुम क्या कहोगी ?"

रजिया एकदम सहमकर चुप हो गयी।

वह पिछले छः महीने में दर्ज़नों बार घुमा-फिराकर हैदर अली से रिकार्ड दिखाने की जिद कर चुकी थी, लेकिन हैदर अली हर बार उसकी बात टाल जाता था।

"ठीक है, मत दिखाओ रिकार्ड !" रजिया नाक-भौं सिकोड़कर बोली- "यह बताओ, कमाण्डर करण सक्सेना से बचाने के लिये इस

बार सुलतान फौजी को कहाँ शिफ्ट किया जा रहा है ?"

"यह राज़ भी आज की तारीख में कोई नहीं जानता ।"

"क...क्यों ?" रजिया बुरी तरह से चौंकी ।

उसके दिमाग में जबरदस्त धमाका हुआ था ।

"दरअसल अभी तक हम लोगों के साथ एक बड़ी अजीब तरह की घटना घट रही थी ।" हैदर अली बोला- "हम लोग आई.एस.आई. हैडक्वार्टर के अंदर बैठकर जो योजना बनाते थे, वह योजना न जाने किस तरह लीक होकर कमाण्डर करण सक्सेना तक पहुँच जाती थी । इसलिये कर्नल साहब ने इस बार थोड़ी सावधानी बरती और मीटिंग में यह बात डिस्कस करने की बजाय कि सुलतान फौजी को कहाँ शिफ्ट करना है, उन्होंने खुद ही यह बात फाइनल कर ली ।"

"य... यानि आज की तारीख में यह बात सिर्फ कर्नल साहब ही जानते हैं ।" रजिया हैरत से बोली- "कि सुलतान फौजी को इस बार किस जगह शिफ्ट किया गया है ?"

"बिल्कुल ! और अगर कर्नल साहब के अलावा कुछ और लोग भी यह राज़ जानते हैं, तो यह बात भी सिर्फ कर्नल साहब को ही मालूम है ।"

"वाकई इससे तो साफ जाहिर है कि कर्नल साहब ने इस बार काफी सावधानी बरती है ।" रजिया के शरीर में झुरझुरी दौड़ी- "और जब इतनी सावधानी बरती है, तो गारन्टीड इस बार सुलतान फौजी को किसी बहुत जबरदस्त जगह शिफ्ट किया गया होगा ।"

"लगता तो ऐसा ही है ।" हैदर अली बोला- "बाकि आने वाले दिनों में पता चलेगा कि क्या हुआ है ?"

उसके बाद हैदर अली ने बिस्तर छोड़ दिया था । कपड़े वगैरा पहनने के बाद वो एक कुर्सी पर बैठ गया और उस दिन का अखबार पढ़ने लगा ।

□□□

दोनों तरफ से एक बार फिर अपनी-अपनी चालें चली जाने जानी शुरु हो गयी ।

सुलतान फौजी को उसी दिन रातों-रात गुप्त जेल के अंदर शिफ्ट कर दिया गया था । सुलतान फौजी उस क्षण हद से ज्यादा घबराया हुआ था । उसका चेहरा पीला जर्द था और दिलो-दिमाग पर कमाण्डर की दहशत बुरी तरह हावी थी ।

रात के उस समय दो बज रहे थे, जब सुलतान फौजी को वहाँ शिफ्ट किया गया ।

कर्नल नासिर ने उसे अपनी कार की डिक्की में किसी बोरे की तरह बंद कर दिया था और फिर खुद कार चलाता हुआ उसे लेकर मिलट्री जेल पहुँचा ।

वहाँ हसन साबरी उसका पहले से ही इंतजार कर रहा था ।

हसन साबरी !

लगभग चालीस-पैंतालीस साल का एक बड़े प्रभावशाली व्यक्तित्व का आदमी था । इस उम्र में ही उसके बाल एकदम सन जैसे सफेद थे और दिन हो या रात, वो अपनी आंखों पर हमेशा गहरे काले रंग का चश्मा चढ़ाये रहता था ।

हसन साबरी मिलट्री की उस जेल का जेलर था और बड़ा फुर्तीला आदमी था । इसके अलावा शीशे की वो 'गुप्त जेल' भी उसी की परिकल्पना थी । इसलिये उसे डील भी वही करता था ।

"हैलो सर !" हसन साबरी ने कर्नल नासिर को देखते ही सैल्यूट मारा और चीखकर बोला- "आप कैसे हैं सर ?"

उसे हमेशा चीखकर बोलने की आदत थी ।

"आई एम फाइन ।" कर्नल नासिर कार से उतरता हुआ मुस्कराया- "लेकिन तुम्हारे लिये मैं एक कैदी लाया हूँ, जो कैदी न होते हुए भी तुम्हारा कैदी होगा । इसलिये शायद थोड़े दिन के लिये तुम्हारी मुश्किलें कुछ बढ़ जायेंगी ।"

"नहीं सर, ऐसी कोई बात नहीं ।" हसन साबरी फिर मिलट्रीमैन

की तरह चीखा- "बल्कि मेरे लिये यह गर्व की बात है कि आपने मेरी जेल पर यकीन किया और मुझे इज्जत बख्शी। मैं अपनी जान की बाजी लगाकर भी सुलतान फौजी की हिफाजत करूँगा।"

"वैरी गुड !" कर्नल नासिर का सीना गर्व से दो इंच फूल गया- "मुझे तुमसे इसी तरह के बिहेव की उम्मीद थी हसन साबरी !"

उसके बाद सुलतान फौजी को कार की डिक्की से निकालकर बैरकों के पीछे ले जाया गया, वहाँ हरे रंग के एक हैलीकाप्टर में हसन साबरी, सुलतान फौजी के साथ बैठा। फिर जल्द ही हैलीकाप्टर तालाब के ऊपर मंडराने लगा।

उस तालाब के ऊपर जिसमें इस समय भी मगरमच्छ और आक्टोपस जैसे जानवर जोर-जोर से फुंफकारते हुए इधर-उधर विचरण कर रहे थे।

उन जानवरों को देखते ही सुलतान फौजी की रूह फना हो गयी।

फिर रिमोट कण्ट्रोल की सहायता से शीशे की वो 'गुप्त जेल' तालाब से छः फुट ऊपर लायी गयी।

उसका दरवाजा खोला गया और उसके बाद सुलतान फौजी को उसमें उतार दिया गया था।

फिर उस चमत्कारिक जेल ने पहले की तरह ही जल-समाधि ले ली।

मगरमच्छ और ऑक्टोपस भी पहले की तरह ही जोर-जोर से फुंफकारते हुए इधर-से-उधर विचरण करने लगे।

अब सचमुच उस तालाब को देखकर कोई नहीं कह सकता था कि उसके नीचे कोई जेल भी है।

वाकई पूरा सिस्टम लाजवाब था।

बेहद लाजवाब।

□□□

सुलतान फौजी को वहाँ शिफ्ट हुए अब सात घण्टे गुजर चुके थे
।

वह सात घंटे उस पर बड़े भारी गुजरे ।

हालांकि शीशे की उस जेल के अंदर लेटने के लिये बिस्तर का फुल इंतजाम था, लेकिन क्या मजाल जो सुलतान फौजी को जेल के अंदर एक पल के लिये भी नींद आयी हो ।

उसके चारों तरफ पानी-ही-पानी था, जिसमें तैरते बड़े खतरनाक मगरमच्छ, आक्टोपस और केकड़े उसे बिल्कुल साफ नजर आ रहे थे । सुलतान फौजी को ऐसा लगा, मानो वह पानी के अंदर जानवरों के बीच बैठा हो । और इसमें शक भी क्या था, वह अंदर उन्हीं जानवरों के बीच तो था ।

फिर उस क्षण तो सुलतान फौजी की जान ही हलक में आ फंसी, जब एक मगरमच्छ तैरता हुआ उसके नजदीक आया और फिर अपना दैत्याकार मुँह फाड़कर सुलतान फौजी के ऊपर झपटने की कौशिश करने लगा ।

कांप गया फौजी ! जिस्म का ऐसा कोई रोआं नहीं था, जो उस दृश्य को देखकर खड़ा न हो गया हो ।

□□□

रजिया इस समय कार ड्राइव कर रही थी ।

कार की स्पीड बेहद स्लो थी । कमाण्डर उसके बराबर में बैठा था ।

ये वही वीरान सड़क थी, जहाँ वह दोनों एक बार पहले भी जा चुके थे ।

“मामला काफी पेचीदा होता जा रहा है कमाण्डर !” सूनी-सूनी आंखों से विण्ड स्क्रीन के पार सड़क को देखते हुए रज़िया बोली- “सुलतान फौजी को इस बार कहाँ शिफ्ट किया गया है, यह बात अब हैदर अली भी नहीं जानता ।”

“क... क्यों ?” कमाण्डर करण सक्सेन बुरी तरह चौंका- “वह तो बड़ा ऑफिसर है ।”

“इसमे कोई शक नहीं है कि वह एक बड़ा ऑफिसर है

कमाण्डर ! मैंने बताया न कि मामले ने काफी पेचीदा मोड़ ले लिया है। कर्नल नासिर को इस बात का शक हो गया है कि वह आई.एस.आई. हैडक्वार्टर में बैठकर जो सीक्रेट प्लान बनाता है, कोई उन्हें लीक करके कमाण्डर तक पहुँचा देता है।"

"ओह, यह तो बड़ी खतरनाक खबर है।" कमाण्डर करण सक्सेना के शरीर में झुरझुरी दौड़ी।

"हाँ, खतरनाक खबर है। इसीलिये कर्नल ने इस बार बड़े-से-बड़े ऑफिसर को भी यह बात नहीं बतायी कि सुलतान फौजी को कहाँ शिफ्ट किया गया है ? यही वजह है कि हैदर भी इस बारे में कुछ नहीं जानता।"

"यानि कर्नल नासिर, सुलतान फौजी को बचाने के लिये अब पूरी तरह अपने दिमाग का इस्तेमाल कर रहा है।"

"बिल्कुल।" रजिया की गर्दन भी सहमति में हिली।

"ठीक है, कोई बात नहीं।"

"मगर अब तुम उस जगह का किस तरह पता लगाओगे कमाण्डर, जहाँ सुलतान फौजी को शिफ्ट किया गया है ?" रजिया के चेहरे पर अचरज के भाव नमूदार हुए थे।

"चिन्ता मत करो। उस ठिकाने का एड्रेस पता लगाने की मैं कोई-न-कोई तरकीब तलाश ही लूंगा।"

"कैसी तरकीब ?"

"देखती जाओ।" कमाण्डर कुछ सोचते हुए बोला- "हाँ, मेरा यह वादा जरूर है कि बहुत जल्द मुझे उस ठिकाने का पता चल जायेगा। बस कार यहीं रोक दो।"

रजिया ने फौरन कार के ब्रेक अप्लाई कर दिये।

तुरंत पहिये सड़क पर घिसटते चले गये और फिर रुक गये।

कमाण्डर कार का दरवाजा खोलकर बाहर निकला।

"बहुत जल्द शायद मेरी तुमसे फिर मुलाकात होने वाली है।" कमाण्डर बोला- "शायद आज ही कुछ घण्टे बाद मुझे तुम्हारी हैल्प की जरूरत पड़ सकती है।"

"अगर यह बात है ।" रजिया की आँखों में चमक कौंधी- "तो तुम्हारी मदद करके मुझे खुशी होगी । एक बात और, जो शायद तुम्हारे काम आये ।"

"क्या ?"

"हैदर आज सुबह ही फौज के एक काम के सिलसिले में लाहौर चला गया है ।" रजिया ने उत्साहपूर्वक बताया- "वह अब कल वापस आयेगा । इसीलिये जरूरत पड़ने पर कम-से-कम आज तुम मुझसे ट्रांसमीटर पर संबंध स्थापित कर सकते हो ।"

"अच्छी बात है, यह सूचना देकर तुमने काफी ठीक किया । आज बारह बजे के आसपास मेरी कॉल का इंतजार करना ।"

"ठीक है, मुझे इंतजार रहेगा ।"

उसके बाद कमाण्डर करण सक्सेना लम्बे-लम्बे डग रखता हुआ अपनी मंजिल की तरफ बढ़ गया ।

□□□

सुबह के उस समय नौ बज रहे थे, जब हसन साबरी हैलीकॉप्टर में बैठकर उड़ता हुआ तालाब के ऊपर पहुँचा और उसने शीशे की उस 'गुप्त जेल' को तालाब से बाहर निकाला ।

उस समय सुलतान फौजी जेल के बिल्कुल बीचो-बीच चूहे की तरह सिकुड़ा बैठा था और उसकी दहशत से बुरी हालत थी ।

जो आदमी कभी बड़े-बड़े धुंरधर पुलिस वालों से नहीं डरा था, उसकी उन जानवरों ने सिट्टी-पिट्टी गुम कर दी थी ।

"हैलो !" हसन साबरी हैलीकाप्टर में बैठा-बैठा अपनी आदत के मुताबिक माइक पर चीखकर बोला- "तुम कैसे हो फौजी ?"

"ऐसी की तैसी फौजी की ।" सुलतान फौजी एकदम गिद्ध की तरह माइक के ऊपर झपटा और वह भी चिल्लाया- "यहाँ तो मेरी मां-बहन एक हुई पड़ी है उस्ताद !"

"क... क्या मतलब ?" हसन साबरी चौंका और फिर पहले की तरह चिल्लाता हुआ बोला- "क्या रात तुम्हें नींद नहीं आयी ?"

"यहाँ नीद आ रही है।" हसन साबरी के उस सवाल पर सुलतान फौजी और झल्ला उठा- "इस जहन्नुम में नींद आ रही है? यह तुमने जेल बनायी है या दोजख बनाई है? हर पल ऐसा लगता है कि इन खतरनाक जानवरों ने अब फाड़ा, अब फाड़ा। मुझे इस जहन्नुम से निकालो। जल्दी निकालो। वरना कमाण्डर मुझे मारे या न मारे, यहाँ रहकर मैं जरूर मर जाऊँगा।"

"तुम्हें कुछ नहीं होगा फौजी, कुछ नहीं होगा।" हसन साबरी बोला- "यह तुम्हारे लिये सबसे ज्यादा महफ़ूज़ जगह है।"

"भाड़ में गयी महफ़ूज़ जगह !" सुलतान फौजी हिस्टीरियाई अंदाज में चीखा- "मैं कमाण्डर करण सक्सेना से बचने के लिये यहाँ आया था, लेकिन यहाँ तो मेरे आसपास कई सारे कमाण्डर करण सक्सेना हैं।"

हसन साबरी हँसने लगा। सफेद बाल और काले चश्मे में उसका व्यक्तित्व सचमुच काफी आकर्षक नजर आता था।

"मैं तुम्हारी बदहवासी को अच्छी तरह समझ सकता हूँ फौजी !" हसन साबरी हैलीकॉप्टर में उड़ता हुआ ऊंची आवाज़ में बोला- "लेकिन फिक्र मत करो। उनमें से कोई भी कमाण्डर तुम तक पहुँच नहीं पायेगा। बिल्कुल उसी तरह, जिस तरह शीशे की इस गुप्त जेल के अंदर रहते हुए असली कमाण्डर तुम तक नहीं पहुँच सकता।"

"मुझे फिर भी यहाँ नहीं रहना।" सुलतान फौजी ने आर्तनाद किया- "मुझे यहाँ से निकालो।"

"थोड़े पेशंस से काम लो फौजी !" हसन साबरी माइक पर चिल्लाता हुआ बोला- "पूरे पाकिस्तान में तुम्हारे लिये इससे ज्यादा महफ़ूज़ जगह और कोई नहीं है। सिर्फ कुछ घण्टे और इस गुप्त जेल के अंदर गुजारोगे, तो तुम्हें इन खतरनाक जानवरों के बीच रहने की आदत पड़ जायेगी। एक बात का यकीन रखो, यह मगरमच्छ और ऑक्टोपस शीशे के केबिन से चाहे कितनी ही टक्कर क्यों न मारें, लेकिन न यह शीशे के केबिन को हिला सकते हैं और न तोड़

सकते हैं।"

फिर भी सुलतान फौजी उसी एक बात को रटता रहा कि उसे शीशे की 'गुप्त जेल' से निकाला जाये, वहाँ से निकाला जाये।

हसन साबरी के काफी समझाने-बुझाने के बाद वो शांत हुआ। यह कहने के बाद शांत हुआ कि अगर उसे शाम तक भी उन जानवरों के बीच ऐसा ही डर लगता है, तो फिर उसे वहाँ से निकालने के बारे में कुछ सोचा जायेगा।

उसके बाद हसन साबरी ने नाश्ते का पैकिट जेल के अंदर डाला था और फिर जेल को वापस पहले की तरह तालाब की सतह से नीचे पहुँचा दिया गया।

हैलीकाप्टर भी पुनः हवा में परवाज़ करने लगा था।

□□□

कर्नल नासिर के साथ हंगामा शुरु हुआ।

ऐसा जबरदस्त हंगामा, जो किसी के भी दिमाग की नसों को बुरी तरह झंझोड़ डाले।

कर्नल नासिर क्योंकि रात साढ़े तीन बजे बिस्तर पर आकर लेटा था, इसलिये सुबह उसकी काफी देर से आँख खुली।

लेकिन आँख खुलने के बाद ही कर्नल नासिर के साथ वो बेहद अजीब खेल शुरु हो गया, जिसकी एक-एक बात चौंका देने वाली थी।

कर्नल नासिर ने अभी बिस्तर भी नहीं छोड़ा था कि तभी कोठी का वाचमैन लगभग दौड़ता हुआ उसके बैडरूम में आया। उसके चेहरे पर हड़बड़ाहट के निशान थे और वो चौंका हुआ था।

"साहब-साहब !" वाचमैन अंदर आते ही आतंकित स्वर में बोला।

"क्या हुआ ?"

"साहब, अभी-अभी एक बड़ी अजीब घटना घटी है।" वाचमैन बोला- "मैं कोठी के लॉन में पहरा दे रहा था कि तभी धड़ाम से

एक मोटा पत्थर मेरे नज़दीक आकर गिरा। यह देखो साहब, यह वो पत्थर है। सिर्फ यह पत्थर ही मेरे पास आकर गिरा होता, तब भी कोई बात नहीं थी। लेकिन इस पत्थर के ऊपर रबड़-बैंड से एक कागज भी चढ़ा हुआ है, जिसके ऊपर लिखा है कि इस कागज को सिर्फ आप ही खोलकर पढ़ें।"

वाचमैन के वो शब्द सुनते ही कर्नल नासिर एकदम बिस्तर से उछलकर खड़ा हो गया। फिर उसने लगभग झपटकर वॉचमैन के हाथ से वो पत्थर छीन लिया और उसके ऊपर लिखे शब्द पढ़े।

वहाँ वाकई वही बात लिखी थी, जो वाचमैन कह रहा था। पत्थर पर रबड़-बैंड से लिपटे कागज के ऊपर लिखा था-

इस कागज को सिर्फ कर्नल नासिर ही खोलकर पढ़ें।

कर्नल नासिर ने आनन-फानन रबड-बैंड हटाया और पत्थर पर चिपके कागज को अलग किया।

फिर उसने जैसे ही कागज खोला, उसके दिमाग में जबरदस्त विस्फोट हो गया।

उस कागज के अंदर और भी ज्यादा धमाकाखेज बात लिखी थी
।

कर्नल नासिर,

सचमुच तुम्हारे दिमाग की दाद देने को दिल चाहता है। तुमने सुलतान फौजी को इस बार ऐसी लाजवाब जगह छिपाया है, जहाँ उसके छिपे होने की कोई कल्पना भी न कर सकें। फिर उस जगह को पूरी तरह से गुप्त भी रखा है।

लेकिन मेरा नाम भी कमाण्डर करण सक्सेना है कर्नल नासिर। कमाण्डर करण सक्सेना! मुझे उस जगह के बारे में पता चल गया है कि और अब सुलतान फौजी के मरने की बारी है।

आधा घण्टा, सिर्फ आधा घण्टा में उसकी लाश तुम्हारे सामने होगी।

अलविदा!

तुम्हारा दुश्मन- कमाण्डर करण सक्सेना!

उस पत्र को पढ़ते ही पसीनों में नहा गया कर्नल नासिर !

"नहीं !" वह पत्र को मुट्ठी में भींचकर चिल्ला उठा- "नहीं, ऐसा नहीं हो सकता- कमाण्डर को उस जगह के बारे में पता नहीं चल सकता।"

□□□

अभी कर्नल नासिर उस आतंक से उभर भी नहीं पाया था कि तभी उसके दिमाग में हथौड़े की एक और भयंकर चोट पड़ी। इस बार एक दूसरा गार्ड चेहरे पर जबरदस्त सस्पैंस के भाव लिये हुए अंदर आया।

"सर !" वह आते ही बोला- "मैं अभी थोड़ी देर पहले जीप लेकर कोठी से बाहर गया था। मुझे रसोई का कुछ सामान लाना था। रास्ते में कैसी भी कोई घटना नहीं घटी, लेकिन जब मैं वापस आया और मैंने जीप कोठी के लॉन में खड़ी की तथा नीचे उतरा, उसी पल एकाएक मेरी नजर जीप के पीछे चिपके एक लिफाफे पर पड़ी।"

"लिफाफा !" कर्नल नासिर के नेत्र कौतुहलता से फैले।

"यस सर ! वह एक सफेद रंग का लिफाफा था और उस जगह वह टेप से चिपका था। इतना ही नहीं उस सफेद लिफाफे के ऊपर एक बड़ी अजीबोगरीब बात लिखी थी।"

"क... क्या ?" कर्नल नासिर का सस्पैंस अब और बढ़ गया।

"लिफाफे पर लिखा था, उसे सिर्फ आप ही खोलें।"

"लिफाफा कहाँ है ?" कर्नल नासिर पागलों की तरह चिल्ला उठा- "जल्दी मुझे दिखाओ, जल्दी।"

गार्ड ने तुरंत एक सफेद लिफाफा कर्नल नासिर की तरफ बढ़ा दिया।

कर्नल नासिर की निगाह सबसे पहले लिफ़ाफे के ऊपर पड़ी।

कर्नल नासिर को सप्रेम भेंट, इसे सिर्फ वही खोलें।

कर्नल नासिर ने आनन-फानन उस लिफाफे का सिरा फाड़ा और जल्दी से उसके अंदर रखा कागज बाहर निकाला।

उस कागज पर सिर्फ दो पंक्तियाँ लिखी थीं-

आधा घण्टा, सुलतान फौजी को मरने में सिर्फ आधा घंटा है।

-कमाण्डर करण सक्सेना

इन पंक्तियों को पढ़ते ही पसीनों में लथपथ हो गया कर्नल नासिर।

वो वहीं रखी एक कुर्सी पर धम्म से बैठ गया और जोर-जोर से हाँफने लगा।

उसकी हालत उस मरीज जैसी हो रही थी, जिसे बस हार्टअटैक का दौरा पड़ने वाला हो।

उसके नेत्र हद दर्जे तक फट चुके थे और शरीर से पसीना इस तरह बह रहा था, जैसे किसी ने नल खोल दिया हो।

उसे यकीन नहीं आ रहा था। वो विश्वास नहीं कर पा रहा था कि कमाण्डर करण सक्सेना को वाकई सब कुछ मालूम हो गया है।

□□□

तभी एक और वज्रपात हुआ।

टेलीफोन की घण्टी उस सस्पैंस के माहौल में इस तरह से बजी, जैसे नगाड़ा बज उठा हो।

कर्नल नासिर ने एकदम लपककर रिसीवर उठाया।

"हैलो।" फिर वह आन्दोलित लहजे में बोला- "कर्नल नासिर स्पीकिंग।"

"हैलो कर्नल।" तुरंत कोई जोर से खिलखिलाकर हँसा- "कैसे हो कर्नल ?"

"क...कौन ?" कर्नल नासिर का दिल जोर-जोर से धड़कने लगा- "क... कौन हो तुम ?" वह चिल्लाया।

"अपने दुश्मन को नहीं पहचाना कर्नल, मैं कमाण्डर करण सक्सेना !"

"क... कमाण्डर !"

कर्नल नासिर के सीने पर घूँसा-सा पड़ा। वह और ज्यादा पसीनों

मे लथपथ हो गया ।

"इस समय तुम्हारी क्या हालत हो रही है, इसका अंदाजा मैं अच्छी तरह से लगा सकता हूँ । मैं जानता हूँ कि तुम पसीने में लथपथ हो रहे हो । तुम्हारे दिल की रफ्तार बढ़ गयी होगी ।"

"तुमने मुझे किसलिये फोन किया है ?" कर्नल नासिर गुर्रा उठा- "क... क्या चाहते हो तुम ?"

"मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूँ ।" कमाण्डर दांत किटकिटाता हुआ बोला- "कि जिस सुलतान फौजी को तुमने सात पर्दों के पीछे छिपाया है, उसे मैंने खोज निकाला है और अब आधा घंटे बाद वो मर जायेगा । ठीक आधा घंटे बाद ।"

"तुम पागल हो गये हो ।" कर्नल नासिर चिंघाड़ उठा- "तुम्हारे दिमाग की नसें हिल गयी हैं बेवकूफ ।"

कर्नल नासिर ने टेलीफोन का रिसीवर जोर से क्रेडिल पर पटक दिया था ।

फिर वह गुस्से में सांड की तरह हाँफने लगा, उसकी आँखें आग उगल रही थीं ।

□□□

"क्या बात है सर !" तभी वाचमैन आगे बढ़ा- "यह कौन आदमी है, जो आपको बार-बार परेशान कर रहा है ?"

"चले जाओ ।" कर्नल नासिर दहाड़ा- "चले जाओ यहाँ से । मुझे कुछ देर के लिये बिल्कुल अकेला छोड़ दो ।"

"ल... लेकिन ।"

"सुना नहीं ।" कर्नल नासिर ज्वालामुखी की तरफ फट पड़ा था- "सुना नहीं तुम लोगों ने । मैं इस समय तुम्हारे किसी सवाल का जवाब नहीं देना चाहता, चले जाओ ।"

गार्ड और वाचमैन, वह दोनों चुपचाप बैडरूम से बाहर निकल गये थे ।

कर्नल नासिर ने अब अपना शरीर ढीला छोड़ दिया और आँखें बंद

कर लीं ।

हालात वाकई काफी संगीन होते जा रहे थे ।

कर्नल नासिर कितनी ही देर तक आँखें बंद किये ठण्डे दिमाग से तमाम हालातों पर गौर करता रहा ।

□□□

कुछ देर तक सोचने-विचारने के बाद कर्नल नासिर ने टेलीफोन अपनी तरफ खींचा और फिर कोई नम्बर डायल किया ।

"हैलो, मिलट्री जेल ।"

"यस सर !" तुरंत दूसरी तरफ से बड़ी तत्पर आवाज़ आयी ।

"मेरी फौरन हसन साबरी से बात कराओ ।"

"आपका नाम सर ?"

"मैं कर्नल नासिर ।"

"ओह आप !" दूसरी तरफ मौजूद व्यक्ति हड़बड़ा उठा- "वन मिनट होल्ड ऑन प्लीज सर ! मैं अभी जेलर साहब को बुलाता हूँ ।"

"कोई बात नहीं ।"

फिर पूरा एक मिनट भी नहीं लगा, हसन साबरी भी लाइन पर आ गया ।

"क्या बात है सर ?" हसन साबरी आदत के मुताबिक चीखता हुआ बोला- "आपने कैसे फोन किया सर ?"

"सुलतान फौजी इस समय कहाँ है ?"

"वह बिल्कुल महफूज़ है और जेल में है सर !" हसन साबरी बोला- "मैंने अभी-अभी उसे नाश्ता दिया है । लेकिन बात क्या है सर ?"

"एक बड़ी जबरदस्त गड़बड़ हो चुकी है हसन साबरी ।" कर्नल नासिर बड़े नपे-तुले शब्दों में बोला- "कमाण्डर करण सक्सेना को यह राज़ पता चल चुका है कि हमने सुलतान फौजी को शीशे की उस गुप्त जेल में शिफ्ट किया है, जो तालाब के नीचे बनी हुई है ।"

"य... यह आप क्या कह रहे हैं सर ?" हसन साबरी के मुँह से

चीख खारिज हुई- "लेकिन आपको यह बात कैसे पता चली ?"

"थोड़ी देर पहले ही कमाण्डर करण सक्सेना का फोन आया था । उसने मुझे धमकी दी है कि वो आधा घण्टे के अंदर-अंदर सुलतान फौजी की हत्या कर देगा । इसीलिये तुम फौरन पूरी मिलट्री जेल में सिक्योरिटी बढ़ा दो । जवानों को आदेश दे दो कि कुछ घण्टे तक किसी भी अजनबी को जेल के अंदर न जाने दिया जाये । पूरी जेल को एक मजबूत किले में बदल दो हसन साबरी ! कमाण्डर करण सक्सेना किसी भी हालत में सुलतान फौजी तक नहीं पहुँचना चाहिये ।"

"आप बेफिक्र रहें सर !" हसन साबरी दृढ़ लहजे में बोला- "मैं अभी सारे इंतजाम करता हूँ । करण सक्सेना किसी भी हालत में सुलतान फौजी तक नहीं पहुँच पायेगा ।"

"वैरी गुड । मुझे तुमसे यही उम्मीद थी हसन साबरी ।"

फिर कर्नल नासिर ने थोड़े इत्मीनान के साथ रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया । लेकिन अंदर-ही-अंदर दिल उसका अभी भी धड़क रहा था ।

उस समय वो नहीं जानता था कि कमाण्डर करण सक्सेना उसके साथ कितना बड़ा खेल, खेल रहा है ।

□□□

दरअसल कमाण्डर उस समय कर्नल नासिर की कोठी के पास ही था और टेलीफोन के उस पोल पर चढ़ा हुआ था, जहाँ से टेलीफोन की लाइन कर्नल नासिर की कोठी के अंदर गयी थी ।

इतना ही नहीं, उसने एक टेलीफोन का कनेक्शन पोल पर चढ़ने के बाद कर्नल नासिर के टेलीफोन से भी जोड़ दिया था ।

यही वजह थी कि अभी-अभी कर्नल नासिर और हसन साबरी की टेलीफोन पर जो बातचीत हुई थी, उस बातचीत को कमाण्डर करण सक्सेना ने बिल्कुल साफ-साफ सुना था ।

पहले तो वह नहीं जानता था कि सुलतान फौजी कहाँ है, लेकिन

अब जान चुका था ।

वह अपनी योजना पर मन-ही-मन खुश होता हुआ काफी तेजी के साथ पोल से नीचे उतर गया और फिर अपने होटल की तरफ बढ़ा ।

आधा घण्टे बाद सुलतान फौजी की हत्या करने का उसका कोई प्लान नहीं था ।

अभी उसने कुछ और काम निपटाने थे और काफी तेजी से निपटाने थे ।

□□□

होटल के अपने कमरे में पहुँचते ही उसने सबसे पहले रजिया से सम्पर्क स्थापित किया ।

"तुम जल्दी यहाँ पहुंचो रजिया ।" कमाण्डर करण सक्सेना ट्रांसमीटर पर बोला- "मुझे पता चल चुका है कि सुलतान फौजी कहाँ शिफ्ट किया गया है ।"

"क... कहाँ शिफ्ट किया गया है ?" रजिया ने भी कौतूहलतापूर्वक पूछा ।

"यहाँ आओ, फिर मैं तुम्हें सब कुछ डिटेल में बताता हूँ । दरअसल फौरन ही मुझे एक और काम करना है, जिसमें तुम्हारी हैल्प की जरूरत है ।"

"ठीक है, मैं अभी तुम्हारे होटल पहुँचती हूँ ।" कमाण्डर ने ट्रांसमीटर ऑफ कर दिया ।

□□□

उसे रजिया का ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा, जल्द ही रजिया वहाँ आ गयी ।

वो यह जानने को बहुत बैचैन थी कि सुलतान फौजी अब कहाँ है ? कमाण्डर ने सबसे पहले उसे मिलट्री जेल के बारे में बताया और फिर यह बताया कि उसने वो जानकारी किस तरह हासिल की थी ।

रजिया उस जगह के बारे में सुनकर भौंचक्की रह गयी ।

"अ... अब क्या करना है ?" रजिया ने सनसनाये स्वर में पूछा।

"अब हमने सबसे पहले शीशे की उस गुप्त जेल की पूरी डिटेल पता लगानी है, जो किसी तालाब के नीचे बनी है और जिसमें सुलतान फौजी बंद है।"

"वो डिटेल किस तरह पता लगेगी ?"

"उसका इंतजाम भी मैंने सोच लिया है।" कमाण्डर बोला- "फिलहाल हम दोनों हसन साबरी के घर जा रहे हैं।"

"हसन साबरी के घर !" रजिया के मुँह से चीख-सी खारिज हुई- "जो मिलट्री जेल का जेलर है, उसके घर ?"

"जी हाँ।"

"ल... लेकिन वहाँ क्यों ?"

"तुम सारा खेल देखती जाओ।" कमाण्डर एक-एक शब्द चबाता हुआ बोला- "हाँ, तुम एक काम जरूर करो। अपने चेहरे पर थोड़ा मेकअप जरूर कर लो, ताकि हसन साबरी या उसके फैमिली मैम्बर अगर कभी तुम्हें बाद में हैदर अली के घर में देख लें, तो चौंक न पड़ें।"

"ठीक है।" रजिया बोली- "मैं अभी अपने मेकअप का इंतजाम करती हूँ।"

रजिया वहाँ से चली गयी और जब तकरीबन आधा घण्टे बाद लौटी, तो अपने साथ कुछ मेकअप का सामान लायी थी।

कमरे में आते ही वो ड्रेसिंग टेबिल के सामने खड़ी हो गयी।

उसने सबसे पहले अपने सिर पर सुनहरी बालों का एक विग लगाया।

आंखों में नीले रंग के कॉन्टेक्ट लैंस लगाये।

अंदर दूसरे कमरे में जाकर अपनी छातियां को एक चौड़े कपड़े से कसकर बाँधा, जिससे वो काफी नीचे दब गयीं।

फिर रजिया ने अपने हाथ, पैर और चेहरे पर एक खास किस्म का लोशन भी लगा लिया था, जिससे उसकी रंगत थोड़ी स्याह हो गयी थी।

कुछ ही देर में रजिया का रूप पूरी तरह बदल चुका था।

अब वह आवारा टाइप की एक ब्लौंड गर्ल नजर आ रही थी।

"कहो कमाण्डर !" रजिया अपने सुनहरी बाल लहराती हुई करण सक्सेना के सामने आयी- "अब मैं कैसी लग रही हूँ ?"

"फण्टास्टिक !" कमाण्डर करण सक्सेना चहका- "सचमुच अब तुम्हें देखकर कोई नहीं कह सकता कि तुम रजिया हो।"

"यानि हसन साबरी के घर पर हमला बोलने के लिये तैयार।"

"बिल्कुल तैयार।"

□□□

हसन साबरी की कोठी इस्लामाबाद की एक पॉश कॉलोनी में बनी हुई थी।

हसन साबरी का ज्यादा लम्बा-चौड़ा परिवार नही था।

एक बीवी थी- शबाना !

हसन साबरी जितनी रौबदार पर्सनैलिटी का मालिक था, शबाना उतनी ही सींक-सलाई सी औरत थी। स्याह रंग, एकदम पतला-दुबला जिस्म, आँखें अंदर को धंसी हुई। वह उस आलीशान कोठी में बैठी ऐसी नजर आ रही थी, जैसे झाड़ू-पोंछा करने वाली कोई नौकरानी वहाँ बैठी हो।

हसन साबरी के पन्द्रह साल का एक बेटा भी था- जावेद !

हसन साबरी की किस्मत अच्छी थी, जो जावेद हु-ब-हू अपने बाप पर गया था और वह उसी की तरह रौबदार पर्सनैल्टी का मालिक था।

बस वहीं छोटा-सा परिवार हसन साबरी की खूबसूरत दुनिया थी
।

□□□

दोपहर के तीन बज रहे थे, जब हसन साबरी के परिवार पर आफत आयी।

कॉलबेल की आवाज़ सुनकर जावेद ने दरवाजा खोला था।

"कहिये !" वह सामने खड़े कमाण्डर करण सक्सेना और रजिया पर नज़र डालता हुआ बोला- "किससे मिलना है ?"

"हमें साबरी साहब से मिलना है।"

"डैडी तो यहाँ नहीं है।" जावेद ने नपा-तुला जवाब दिया।

"कोई और घर पर हों ?"

"जी नहीं, मम्मी और मेरे सिवा कोई नहीं है।"

"कमाण्डर की आँखें चमकने लगीं। हालांकि जो काम अब वो करने जा रहा था, वह उसे पसंद नहीं था। लेकिन कभी-कभी देश की खातिर, मिशन की खातिर, उसे ऐसे काम भी करने पड़ते थे, जो उसे पसंद नहीं थे।"

"क्या बात है जावेद।" तभी पीछे से शबाना भी आ गयी थी- "कौन हैं यह लोग ?"

"मालूम नहीं अम्मी, डैडी से मिलना चाहते हैं। मैंने बोल दिया, वह घर पर नहीं हैं।"

"क्या इस वक्त कोई नौकर-चाकर भी आपकी कोठी पर नहीं है ?" कमाण्डर ने कोई भी कदम उठाने से पहले पूरी तस्दीक करनी चाही।

"नहीं है।" शबाना बोली- "मगर नौकरों से आपको क्या मतलब है ?"

कमाण्डर ने फौरन उसे मतलब समझाया।

यह पता चलते ही कि कोठी पर वह दोनो अकेले हैं, उसने फौरन अपनी जेब से कोल्ट रिवॉल्वर निकाल ली थी।

रिवॉल्वर हाथ में आते ही उसकी उंगलियाँ के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी और फिर उसने एकदम दौड़कर शबाना को दबोच लिया तथा उसके गले के पास रिवॉल्वर रख दी।

"य... यह क्या हरकत है ?" शबाना दहशत से चिल्लायी- "क... कौन हो तुम लोग ?"

उसी पल रजिया के हाथ में भी बेरेटा पिस्टल नजर आने लगी थी,

वह जावेद को धकेलकर अंदर घुसी। उसने अंदर से दरवाजा बंद करके सिटकनी चढ़ाई और फिर उसने भी पलक झपकते ही जावेद को दबोचकर उसके ऊपर पिस्टल तान दी।

"तुम लोग जवाब क्यों नहीं देते ?" शबाना गला फाड़कर चीखी- "क... कौन हो तुम लोग ? कौन हो ?"

लेकिन कमाण्डर जवाब देने की बजाय उस चुहिया सी औरत को बेदर्दी से घसीटता हुआ एक कुर्सी के पास ले गया। फिर उसने शबाना को कुर्सी पर बुरी तरह पटका और फिर अपनी जेब से एक प्लास्टिक की डोरी निकालकर उसके हाथ-पैर कुर्सी के साथ कसकर बांध दिये।

रजिया ने उसका अनुसरण किया और जावेद के हाथ-पैर भी बिल्कुल उसी तरह एक कुर्सी के साथ बांध डाले। इतना ही नहीं, उसने जावेद का मुँह भी एक कपड़े से बांध दिया था।

जावेद कुर्सी पर बंधे-बंधे बुरी तरह उछलने लगा।

□□□

"तुम लोग कुछ बोलते क्यों नहीं ?" शबाना और ज्यादा हिस्टीरियाई ढंग से चिल्लायी- "कौन हो तुम लोग ? क्यों हमारे घर में घुसे हो ?"

कमाण्डर करण सक्सेना ने उसे भस्म कर देने वाली नजरों से घूरा और फिर उसके मुँह पर एक ऐसा झन्नाटेदार झापड़ मारा कि उसके अंतिम शब्द एक लम्बी दहशतनाक चीख में बदल गये।

"पहला सबक !" कमाडर ने उसके बाल पकड़कर बुरी तरह झंझोड़े- "धीमी आवाज़ में बात करो बेवकूफ औरत ! क्योंकि अगर तुम्हारे चीखने की आवाज़ तुम्हारे मौहल्ले पड़ोस वालों ने सुनी, तो इसका खामियाज़ा भी तुम्हें ही भुगतना पड़ेगा। जहाँ तक मेरे नाम का सवाल है, तो मुझे कमाण्डर करण सक्सेना कहते हैं। शायद पहले कभी तुमने मेरा नाम सुना हो।"

"कमाण्डर करण सक्सेना !" शबाना के मुँह से सिसकारी खारिज

हो गयी।

उसके नेत्र फैल गये।

पाकिस्तान में आज की तारीख में ऐसा कौन आदमी था, जो इस नाम से वाकिफ नहीं था।

कमाण्डर करण सक्सेना का नाम सुनकर जावेद का भी कुर्सी से उछलना एकदम रुक गया।

उनके बीच जबरदस्त आंतक की लहर दौड़ गयी थी।

□□□

"ल... लेकिन तुम यहाँ क्यों आये हो ?" शबाना ने बेहद धीमे और कंपकंपाते स्वर में पूछा।

"हाँ, तुम्हारा यह सुर मुझे पसंद आया।" कमाण्डर ने 'डनहिल' सुलगाई और फिर उसका ढेर सारा धुआं छत की तरफ उछाला- "पहले सारे हालात अच्छी तरह समझ लो।" कमाण्डर उसे एक मनगढ़ंत कहानी सुनाता हुआ बोला- "मैंने यहाँ आकर तुम्हारे शौहर हसन साबरी के बारे में जो सवाल पूछा था कि वो यहाँ है या नहीं, वह सवाल गलत पूछा था। नौकरों के बारे में इसलिये सवाल किया, ताकि यह मालूम हो सके कि कोठी में इस वक्त कितने आदमी हैं और उन्हें किस तरह काबू में किया जा सकता है। दरअसल तुम्हारा शौहर हसन साबरी इस वक्त मेरे कब्जे में है और मैंने उसे इस्लामाबाद में ही एक जगह बंदी बना रखा है।"

"न... नहीं।" शबाना के मुँह से तेज चीख निकली।

"चीखो मत।" कमाण्डर करण सक्सेना ने पुनः उसके बाल पकड़कर झंझोड़े- "चीखो मत।"

शबाना फिर दहशत से चुप हो गयी।

"अगर चिल्लाओगी तो तुम्हें गोली लग सकती है। तुम्हारे बेटे को गोली लग सकती है। या फिर तुम्हारा शौहर भी मारा जा सकता है।"

"ल...लेकिन तुमने मेरे शौहर को क्यों पकड़ रखा है ?"

"वही बता रहा हूँ। अगर तुम मेरे बारे में जानती हो, तो यह भी जानती होगी कि मैं यहाँ पाकिस्तान में सुलतान फौजी को मौत की सजा देने आया हूँ। मगर इत्तेफाक से वो अभी तक मेरी गोली का निशाना नहीं बना है। अब यह तुम्हारे शौहर की बदकिस्मती है कि उसी सुलतान फौजी को आई.एस.आई. ने मुझसे बचाने के लिये तुम्हारे शौहर की जेल में शिफ्ट कर दिया है।"

शबाना के नेत्र फैल गये- "त... तुम यह बात कैसे जानते हो ?"

"मैं सिर्फ इतना ही नहीं जानता मैडम !" कमाण्डर बोला- "बल्कि मैं यह भी जानता हूँ कि सुलतान फौजी को वहाँ शीशे की एक ऐसी गुप्त जेल में शिफ्ट किया गया है, जो किसी तालाब के नीचे है।"

शबाना के दिमाग में धमाके होने लगे- "ल... लेकिन यह बात तो पूरी तरह सीक्रेट रखी गयी थी।"

"जी हाँ, सीक्रेट रखी गयी थी।" कमाण्डर के होठों पर दिलकश मुस्कान दौड़ी- "मगर फिर भी मुझे यह बात मालूम है और इसी से साबित होता है कि पाकिस्तान की जासूसी संस्था कितनी मूर्ख है। अब एक दूसरी बात सुनो।"

"क... क्या ?" शबाना की आंखे सिकुड़कर गोल हो गयीं।

"मुझे यह तो मालूम है कि सुलतान फौजी को शीशे की किसी 'गुप्त जेल' में रखा गया है।" कमाण्डर बोला- "लेकिन मैं यह नहीं जानता कि वो जगह मिलट्री की उस जेल में कहा हैं और अगर वो गुप्त जेल किसी तालाब के नीचे है, तो उसमें घुसने का क्या तरीका है ? मैंने यही सब जानने के लिये हसन साबरी का किडनैप किया था और उसे बुरी तरह टॉर्चर भी किया। लेकिन अफसोस हसन साबरी हद से ज्यादा वतनपरस्त आदमी है। वह मुझे कोई इन्फोर्मेशन नहीं दे रहा है।" कमाण्डर ने गहरी सांस ली और फिर थोड़ा शबाना की तरफ झुककर बोला- "इसलिये अफसोस के साथ बता रहा हूँ कि मेरे आदमी अब उसे गोली मारने वाले हैं।"

"न... नहीं, तुम मेरे शौहर को नहीं मार सकते।" शबाना बेहद

आतंकित होकर धीमे स्वर में चिल्लाई- "तुम उसे नहीं मार सकते ।"

"चिंता मत करो ।" कमाण्डर ने डनहिल का कश लगाने के बाद बड़े ड्रामेटिक अंदाज़ में शबाना का कंधा थपथपाया- "चिंता मत करो । मेरी हसन साबरी से कोई दुश्मनी नहीं है । तुम्हारा शौहर अभी भी बच सकता है, मगर उसके लिये तुम्हें थोड़ी कुर्बानी देनी होगी ।"

"क... कैसी कुर्बानी ?" शबाना के जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो गया था ।

"शीशे की गुप्त जेल की फुल डिटेल जो मुझे हसन साबरी नहीं बता रहा है ।" कमाण्डर ने फौरन अपनी तुरुप चाल चली- "वह डिटेल तुम मुझे बता दो ।"

अब रजिया भी भौंचक्की निगाहों से कमाण्डर करण सक्सेना को देखती रह गयी थी, वाकई वह आदमी दिमाग का जबरदस्त खिलाड़ी था ।

किस तरह वह तमाम हालातों को अपने काबू में कर लेता था ।

किस तरह वो तेजी से शब्दजाल बुनता था ।

"ल...लेकिन... ।" शबाना ने कुछ कहना चाहा ।

"नहीं, सवाल कोई नहीं ।" कमाण्डर ने तुरंत शबाना को टोक दिया- "तुम्हारे पास सिर्फ पांच मिनट हैं । पांच मिनट के अंदर-अंदर या तो तुम मुझे उस गुप्त जेल की डिटेल बता दो, वरना ठीक पांच मिनट बाद मैं यहाँ से एक फोन करूँगा और फ़ौरन मेरे आदमी तुम्हारे शौहर को गोली मार देंगे । फिर तुम विधवा हो जाओगी । तुम्हारा यह बच्चा अनाथ हो जायेगा ।"

"तुम ऐसा नहीं कर सकते ।" शबाना बिलखकर बोली- "तुम ऐसा नहीं कर सकते ।"

"अब यह होने देना या न होने देना बस तुम्हारे हाथ में है मैडम ! तुम अपने शौहर की मौत की जिम्मेदार भी बन सकती हो और उसकी आजादी की भी । तुम अपने बच्चे को अनाथ भी बना सकती हो और उसे अनाथ होने से बचा भी सकती हो । सब तुम्हारे हाथ में है ।"

फिर कमाण्डर करण सक्सेना की निगाह अपनी रिस्टवॉच पर

जाकर फ्रीज हो गयी ।

"याद रहे ।" कमाण्डर ने उसे फिर चेतावनी दी- "तुम्हारे पास पांच मिनट का समय है । मेरे आदमी मेरे टेलीफोन का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं ।"

घड़ी की सुई टिक-टिक करती हुई धीरे-धीरे आगे सरकने लगी ।

शबाना के चेहरे पर अब जबरदस्त आतंक के चिन्ह थे । उसके जिस्म का पुर्जा-पुर्जा कांप रहा था ।

घड़ी की सुई आगे सरकती जा रही थी ।

फिर एक क्षण वह भी आया, जब पाँच मिनट की अवधि भी पूरी हो गयी ।

"लगता है, तुम्हें भी अपने शौहर की जिंदगी से कोई प्यार नहीं है ।" कमाण्डर ने अब अपना रिस्टवॉच वाला हाथ नीचे झुका दिया और उसके चेहरे पर खतरनाक भाव फैलते चले गये- "तुम विधवा बनना चाहती हो । अपने बेटे को अनाथ करना चाहती हो । ठीक है, मैं फोन करता हूँ और अपने आदमियों को आदेश देता हूँ कि वह हसन साबरी को फ़ौरन गोली मार दें । बस बहुत खेल हो गया ।"

वह शब्द कहने के बाद कमाण्डर करण सक्सेना बड़ी तेजी के साथ वहीं रखे टेलीफोन की तरफ बढ़ गया और उसने रिसीवर उठाया ।

"न...नहीं ।" शबाना गिड़गिड़ा उठी- "नहीं । अपने आदमियों को आदेश मत दो कमाण्डर ! म... मेरे शौहर को मत मारो ।"

"ठीक है, तो फिर मुझे जल्दी उस गुप्त जेल की पूरी डिटेल बताओ ।" कमाण्डर रिसीवर हाथ में लिये-लिये उसकी भावनाओं से खिलवाड़ करता हुआ बोला- "मेरे पास ज्यादा समय नहीं है, जल्दी फैसला करो ।"

"म... मैं बताती हूँ । ब... बताती हूँ ।" शबाना हाँफती हुई बोली ।

"वैरी गुड ! मुझे अच्छा लगा कि तुमने एक समझदार और फरमाबरदार बीवी बनकर दिखाया ।" कमाण्डर करण सक्सेना तुरंत

टेलीफोन का रिसीवर रखकर उसकी तरफ पलटा- "मुझे अच्छा लगा कि तुमने अपने आपको एक सलीकेमंद और आलादिमाग औरत साबित किया। जबकि तुम्हारा शौहर इतना आलादिमाग नहीं है। ऐनी वे, अब तुम मुझे जल्दी सब कुछ बता दो।"

अगले ही पल शबाना उसे गुप्त जेल के बारे में सब कुछ बताती चली गयी।

सबसे पहले तालाब के बारे में बताया, जिसमें मगरमच्छ, ऑक्टोपस और बड़े-बड़े केकड़े पड़े रहते हैं।

फिर शीशे की गुप्त जेल की रुपरेखा समझाई।

हैलीकॉप्टर के बारे में बताया। रिमोट कंट्रोल और माइक सिस्टम के बारे में बताया।

कुल मिलाकर वो एक-एक प्वाइंट बताती चली गयी। दस मिनट में ही वो पूरी डिटेल बताकर चुप हो गयी थी।

"बस !" कमाण्डर करण सक्सेना उस डिटेल को सुनकर बेहद प्रभावित मुद्रा में बोला- "इसके अलावा कोई और प्वाइंट नहीं है ?"

"नहीं।" शबाना बेहिचक बोली- "उस जेल से रिलेटिड जितनी भी बातें हैं, मैं तुम्हें बता चुकी हूँ।"

रजिया भी उस गुप्त जेल की डिटेल सुनकर इम्प्रेस हुई थी। इसमें कोई शक नहीं, हसन साबरी ने उस बेहद अद्भुत जेल की जो परिकल्पना की थी, वह हैरतअंगेज थी।

काबिलेतारीफ थी।

□□□

उसी पल हंगामा हुआ।

एकाएक कोठी की कॉलबैल यूँ बेहद तीखी आवाज़ में चिल्लाई थी, जैसे धांय-धांय गोलियां चली हों।

कमाण्डर ने एक नजर दरवाजे पर डाली और फिर वापस शबाना की तरफ घूम गया।

"इस वक्त कौन हो सकता है ?" उसने आंदोलित स्वर में पूछा।

"शाम के चार बज रहे हैं।" शबाना भी थोड़ी विचलित मुद्रा में बोली- "यह समय तो जावेद के डैडी के आने का होता है। लेकिन वह कैसे हो सकते हैं, वह तो तुम्हारे कब्जे में है।"

कमाण्डर करण सक्सेना फौरन भांप गया, कौन आया है।

वह हण्ड्रेड परसेंट हसन साबरी ही था।

"रजिया !" कमाण्डर ने बेपनाह फुर्ती से रजिया की तरफ देखा।

"हाँ।"

"जल्दी से कपड़ा लाकर शबाना का मुँह बांध दो।"

रजिया ने तुरंत वहीं पड़ा दुपट्टा उठा लिया और वह उसे लेकर शबाना की तरफ बढ़ी।

"ल... लेकिन मेरा मुँह क्यों बांध रहे हो ?" शबाना ने आतंकित मुद्रा में अपने हाथ-पैर पटके- "इसकी क्या जरूरत है ?"

"चुप रहो।" कमाण्डर ने उसे जोर से घुड़क दिया- "चुप।"

शबाना सहमकर चुप हो गयी।

उसी पल रजिया ने जावेद की तरह ही उसका मुँह भी कसकर बांध दिया।

यही वो पल था, जब कॉलबैल फिर बड़े तीखे अंदाज में जोर-जोर से दो बार बजी।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना कोल्ट रिवॉल्वर लेकर तेजी से दरवाजे की तरफ बढ़ गया और उसने दरवाजा खोला।

जैसी उम्मीद थी, सामने हमेशा की तरह अपनी आंखों पर काला चश्मा चढ़ाये हसन साबरी खड़ा था।

दरवाजा खुलने के बाद हसन साबरी की निगाह जैसे ही अंदर के नजारे पर पड़ी, उसके नेत्र दहशत से फैल गये।

"यह... यह सब क्या है ?" वह चीखा।

जबकि शबाना की निगाह भी जैसे ही हसन साबरी पर पड़ी, वह भी बुरी तरह चौंकी।

लेकिन हसन साबरी के मुँह से निकलने वाली वो पहली और आखिरी चीख साबित हुई। वह कुछ और कहता, उससे पहले ही कमाण्डर करण सक्सेना जबरदस्त एक्शन में आ गया था।

वह एकदम उसकी तरफ चील की तरह झपटा।

उस झपटने के दौरान ही उसने अपनी रिवॉल्वर को नाल की तरफ से पकड़ लिया और फिर रिवॉल्वर की बैरल का प्रचण्ड प्रहार हसन साबरी की खोपड़ी पर किया।

चीख पड़ा हसन साबरी।

हसन साबरी अपना सिर पकड़कर बैठता चला गया और फिर वहीं दरवाजे पर ही ढेर हो गया।

शबाना और जावेद कुर्सी पर बंधे-बंधे अब जोर-जोर से उछल रहे थे।

वह चीखना चाहते थे, लेकिन असफल थे।

तभी रजिया दौड़ती हुई कमाण्डर के पास पहुँची।

"य... यह मर गया ?" रजिया के मुँह से सिसकारी छूटी।

"नहीं, अभी जिंदा है।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "थोड़ी ही देर में इसे होश आ जायेगा।"

फिर कमाण्डर, हसन साबरी के बेहोश जिस्म को घसीटता हुआ अंदर ले गया।

"दरवाजा बंद कर दो।" उसने रजिया से कहा।

रजिया ने फौरन पहले की तरह ही दरवाजा अंदर से बंद कर दिया।

लेकिन अब वहाँ का माहौल काफी बोझिल और खौफ से भरा हो गया था। हसन साबरी के सिर से खून भलभल करके निकल रहा था।

कमाण्डर ने हसन साबरी को उठाकर एक कुर्सी पर बिठा दिया और इससे पहले कि उसे होश आता, कमाण्डर करण सक्सेना ने कुर्सी के साथ नायलोन की रस्सी से उसके हाथ-पैर बांध डाले और एक कपड़े से उसका मुँह भी कसकर बांध दिया। जल्द ही हसन

साबरी की हालत भी शबाना और जावेद जैसी ही हो गयी थी ।

"अब क्या करोगे ?" रजिया ने उत्सुकतापूर्वक कमाण्डर की तरफ देखा ।

"देखती जाओ, अब मैं क्या करता हूँ ।"

इसमें कोई शक नहीं कि कमाण्डर का एक-एक कदम काफी सोचा-समझा और योजनाबद्ध था ।

□□□

उसके बाद कमाण्डर ड्रेसिंग टेबिल के सामने जाकर खड़ा हो गया था ।

फिर उसने अपनी जेब से एक छोटा-सा किट बैग निकाला, जिसे वो साथ लाया था और जिसमें कुछ बड़ी अजीबो-गरीब किस्म की चीजें भरी हुई थीं, जिन्हें वो अपना व्यक्तित्व बदलने के लिये इस्तेमाल करता था ।

अगले ही पल वो ड्रेसिंग टेबिल के सामने खड़ा होकर अपना मेकअप करने लगा ।

हसन साबरी की कुर्सी कुछ इस तरह रखी हुई थी कि उसका चेहरा बिल्कुल साफ-साफ ड्रेसिंग टेबिल के अंदर नजर आ रहा था ।

कमाण्डर की आँखें हसन साबरी के चेहरे पर टिकी हुई थीं और उसके हाथ काफी तेजी से अपने चेहरे पर चल रहे थे ।

वह पूरे दो घण्टे तक एकदम सीधा ड्रेसिंग टेबिल के सामने खड़ा रहा और अपना मेकअप करता रहा ।

रजिया के साथ-साथ शबाना और जावेद भी हैरान से उसे देख रहे थे । कोई नहीं समझ पा रहा था, वो क्या कर रहा है ।

ठीक दो घण्टे बाद जब कमाण्डर करण सक्सेना ड्रेसिंग टेबिल के सामने से हटा, तो सब उसका चेहरा देखकर भौंचक्के रह गये ।

वह हू-ब-हू हसन साबरी का चेहरा था ।

उसके बाद कमाण्डर ने सफेद पाउडर को थोड़े से पानी में घोला और उससे अपने बालों को रंग डाला । पलक झपकते ही उसके

बाल भी हसन साबरी की तरह सफेद झक्क हो गये ।

फिर उसने वार्डरोब के अंदर से हसन साबरी के कपड़े निकाले और दूसरे कमरे में जाकर उन्हें पहन लिया ।

कपड़े वगैरह पहनकर जब वो उस कमरे से बाहर निकला, तब तक हसन साबरी को धीरे-धीरे होश आने लगा था । जल्द ही उसकी आँखें पूरी तरह खुल गयीं । लेकिन आँखें खुलने के बाद जैसे ही उसकी नजर कमाण्डर करण सक्सेना पर पड़ी, वह बुरी तरह उछल पड़ा ।

उसके सामने एक दूसरा हसन साबरी खड़ा था ।

"क्यों ?" कमाण्डर उसकी कुर्सी के दोनों हत्थों पर हाथ रखकर खड़ा हो गया और मुस्कराया- "चौंक पड़े हसन साबरी ? आज तक ऐसे लाजवाब सीन तुमने सिर्फ फिल्मों में देखे होंगे, लेकिन आज अपनी आँखों के सामने साक्षात् देख रहे हो ।"

हसन साबरी हैरान था ।

भौंचक्का ।

हतप्रभ ।

"सबसे पहले मैं तुम्हें अपना परिचय देता हूँ, मेरा नाम कमाण्डर है, कमाण्डर करण सक्सेना ।"

कमाण्डर करण सक्सेना !

हसन साबरी के दिमाग में बम फट पड़ा । उसके नेत्र हैरतअंगेज ढंग से फैले ।

"ज़्यादा नहीं !" कमाण्डर मुस्कुराया- "ज़्यादा बुरी तरह मत चौंको । वरना हार्टफेल हो जायेगा ।"

जबकि कमाण्डर ने अब उसके चेहरे से काला चश्मा भी उतारकर अपने चेहरे पर चढ़ा लिया था ।

"अब हम दोनों को देखकर शायद ही कोई बता सकता है कि हममें असली कौन है और नक़ली कौन ?" कमाण्डर विजेता जैसे अंदाज़ में बोला- "बहरहाल अब कमाण्डर करण सक्सेना का खेल शुरु होता है । कमाण्डर का वो खेल, जो एक बार फिर पूरे

पाकिस्तान को हिलाकर रख देगा।"

***



12. मिलट्री जेल

हसन साबरी की कार चीखती हुई मिलट्री जेल के अंदर जाकर रुकी।

वह क्योंकि हसन साबरी की कार थी, इसलिये उसे अंदर दाखिल होने में कोई परेशानी न हुई। फिर उसे चला भी हसन साबरी रहा था।

उस समय वह कार में अकेला था।

हसन साबरी की कार को देखकर मिलट्री जेल का सब-जेलर फौरन दौड़ता हुआ उसके करीब आया।

"क्या बात है सर ?" उसने हसन साबरी को जोरदार सैल्यूट मारा- "आप तो चले गये थे ?"

"हाँ, चला गया था।" हसन साबरी के रूप में कमाण्डर झुंझलाता हुआ नीचे उतरा और फिर उसी की तरह बौखलाकर बोला- "लेकिन इस कमाण्डर ने बुरी तरह परेशान किया हुआ है। न मालूम कैसे उसे पता चल गया है कि सुलतान फौजी यहाँ है।"

"यह रिपोर्ट तो आपको सुबह ही मिल गयी थी सर !" जेलर बेहद तत्पर लहजे में बोला- "यह रिपोर्ट मिलने के बाद ही तो

आपने यहाँ सिक्योरिटी बढ़ाई थी। सुरक्षा बंदोबस्त तगड़े किये थे। आखिर कमाण्डर करण सक्सेना ने सुलतान फौजी को सिर्फ आधा घंटे के अंदर-अंदर मार डालने का अल्टीमेटम दिया था। लेकिन हुआ कुछ नहीं। वह आधा घण्टे बाद तो क्या कई घंटे बाद भी यहाँ नहीं फटका।"

"सही कह रहे हो तुम।" कमाण्डर, हसन साबरी की तरह ही चीखकर बोला- "हुआ कुछ नहीं यहाँ। लेकिन अभी-अभी आई.एस.आई. को रिपोर्ट मिली है कि तब कमाण्डर ने कर्नल साहब को बेवकूफ बनाया था। सच्चाई ये है कि वो उन्हें भ्रम में रखकर अब यहाँ हमला करना चाहता है। रिपोर्ट मिली है कि वो थोड़ी देर बाद ही यहाँ अटैक करने वाला है। इतना ही नहीं आई.एस.आई. को यह रिपोर्ट भी मिली है कि इस बार उसका अटैक इतना प्री-प्लान होगा कि सुलतान फौजी के बचने के चांस बहुत कम हैं।"

"तौबा!" सब जेलर के शरीर में झुरझुरी-सी दौड़ी- "ऐसा वो क्या करने वाला है सर?"

"यह मुझे मालूम नहीं। लेकिन कर्नल साहब ने मुझे आदेश दिया है कि मैं फौरन सुलतान फौजी को शीशे की गुप्त जेल से निकालकर कहीं और शिफ्ट करूँ।"

"लेकिन कमाण्डर ने पहले भी सुलतान फौजी को सिर्फ आधा घंटे के अंदर-अंदर मार डालने का अल्टीमेटम दिया था। लेकिन हुआ कुछ नहीं। वह आधा घंटे बाद तो क्या कई घंटे बाद भी यहाँ नहीं फटका।"

"सही कह रहे हो तुम।" करण सक्सेना चीखकर ही बोला- "कुछ नहीं हुआ यहाँ। लेकिन अभी-अभी आई.एस.आई. को रिपोर्ट मिली है कि तब कमाण्डर करण सक्सेना ने कर्नल साहब को बेवकूफ बनाया था। सच्चाई ये है कि वो अब थोड़ी देर बाद ही यहाँ अटैक करने वाला है। इतना ही नहीं, आई.एस.आई. को यह रिपोर्ट भी मिली है कि इस बार उसका अटैक इतना प्री-प्लान होगा कि सुलतान फौजी के बचने के बहुत कम चांस हैं।"

"तौबा !" सब-जेलर के शरीर में फिर तेज़ झुरझुरी दौड़ी- "ऐसा वो क्या करने वाला है सर ?"

"यह मुझे मालूम नहीं । लेकिन कर्नल साहब ने मुझे आदेश दिया है कि मैं फौरन सुलतान फौजी को शीशे की गुप्त जेल से निकालकर कहीं और शिफ्ट करूँ । बिना कोई सैकिंड गंवाये शिफ्ट करूँ । वह सुलतान फौजी के मामले में कैसा भी कोई रिस्क नहीं लेना चाहते ।"

पलक झपकते ही यह खबर मिलट्री की उस पूरी जेल में आग की तरह फैल गयी कि कमाण्डर वहाँ जबरदस्त अटैक करने वाला है ।

वहाँ चारों तरफ खलबली-सी मच गयी ।

जिसने भी उस खबर को सुना, उसी के छक्के छूट गये । कमाण्डर, आज की तारीख में वो नाम ही काफी था, दहशत फैलाने के लिये ।

□□□

जबकि कमाण्डर करण सक्सेना, सब-जेलर के साथ फौरन ही दौड़ता हुआ कैदियों की बैरक के पीछ बने उस विशेष हिस्से में पहुँचा था, जहाँ मिलट्री का हरा हैलीकॉप्टर खड़ा था ।

कमाण्डर ने एक पल भी बर्बाद नहीं किया । वह फौरन ही दौड़कर उस हैलीकॉप्टर में जा चढ़ा और उसने आनन-फानन हैलीकॉप्टर स्टार्ट किया । अगले ही पल वो हैलीकाप्टर उस तालाब के ऊपर मंडराने लगा, जिसमें सुलतान फौजी था ।

कमाण्डर ने हवा में उड़ते हुए तालाब पर नज़र डाली । उसके अंदर बड़े-बड़े मगरमच्छ और ऑक्टोपस इस समय भी पानी में इधर-से-उधर तड़ंग भर रहे थे । वो बेहद खौफनाक मंजर था । कमाण्डर करण सक्सेना ने एक बार फिर मन-ही-मन हसन साबरी की कल्पना शक्ति की तारीफ की, जो उसने ऐसी नायाब जगह का निर्माण किया ।

फिर उसने रिमोट कंट्रोल उठाकर देखा । हरेक बटन के नीचे

लिखा था कि किसका क्या एक्शन है।

कमाण्डर ने अपना हाथ हैलीकॉप्टर से बाहर निकालकर एक बटन दबाया। तुरंत असर हुआ। नीचे तालाब के पानी में एकदम ऐसी गरड़-गरड़ की आवाज़ हुई थी, जैसे वहाँ कोई पनचक्की चलने लगी हो।

फिर देखते-देखते पारदर्शी शीशे का केबिन तालाब के अंदर से निकलता हुआ छः फुट ऊपर आ गया।

सुल्तान फौजी शीशे के केबिन में इस समय भी बैठा हुआ था, लेकिन इस बार वो इतना डरा हुआ नजर नहीं आ रहा था, जितना वो पहली बार डरा हुआ था।

केबिन के ऊपर आते ही हैलीकॉप्टर में उड़ता कमाण्डर करण सक्सेना तुरंत कण्ट्रोल सिस्टम के पास ही लगे माइक की तरफ झपटा।

"हैलो, सुलतान फौजी ! सुलतान फौजी ! !" कमाण्डर करण सक्सेना एकाएक माइक पर बुरी तरह चिल्लाने लगा- "मैं हसन साबरी तुमसे बात करना चाहता हूँ सुलतान फौजी।"

नीचे गुप्त जेल में बंद सुलतान फौजी भी फौरन माइक की तरफ झपटा।

"हाँ, मैं बोल रहा हूँ।" सुलतान फौजी ने हड़बड़ाये स्वर में कहा- "क्या कहना चाहते हो मिस्टर हसन साबरी ?"

"तुम्हारे लिये एक बुरी सूचना है फौजी ! कमाण्डर करण सक्सेना को तुम्हारे यहाँ छिपे होने का पता चल गया है और वह बस किसी भी पल यहाँ अटैक करने वाला है।"

"क... क्या कह रहे हो तुम ?" सुलतान फौजी के मुँह से चीख खारिज हुई।

"डरो मत।" कमाण्डर करण सक्सेना उच्च स्वर में बोला- "डरने की कोई बात नहीं है सुलतान फौजी ! हमारे लिये डरने की बात तब थी, जब हमें यह रिपोर्ट पहले से मालूम न होती। बहरहाल कर्नल साहब ने तुम्हें फौरन कहीं और शिफ्ट करने का प्लान बना लिया है

और तुम अभी, इसी वक्त मेरे साथ चल रहे हो ।"

"ल... लेकिन मुझे अब कहाँ शिफ्ट किया जायेगा ?"

"यह मैं नहीं जानता ।" कमाण्डर बोला- "मुझे सिर्फ इतना मालूम है कि पहले तुम मेरे साथ यहाँ से इसी हैलीकाप्टर से आई.एस.आई. हैडक्वार्टर जाओगे और फिर तुम्हें वहाँ से कहीं और शिफ्ट किया जायेगा ।"

"ओह !"

"तो फिर मैं गुप्त जेल का दरवाजा खोल रहा हूँ । मैं समझता हूँ कि तुम मेरे साथ चलने के लिये तैयार हो, क्योंकि हमें बातचीत में ज्यादा वक़्त बर्बाद नहीं करना चाहिये ।"

"ठीक है, मैं तैयार हूँ ।"

कमाण्डर ने रिमोट वाला हाथ फिर नीचे हवा में लटकाया और इस बार दूसरा बटन दबा दिया ।

फ़ौरन शीशे का दरवाजा खुलता चला गया ।

उसी पल कमाण्डर करण सक्सेना ने हैलीकॉप्टर में रखी रस्सी की सीढ़ी उठाकर नीचे लटका दी । तुरंत वह सीढ़ी गुप्त जेल के दरवाजे में-से होकर उसके अंदर पहुँच गयी थी ।

फिर पूरा एक मिनट भी नहीं लगा, सुलतान फौजी सीढ़ी चढ़ता हुआ हैलीकॉप्टर के अंदर आ गया ।

उसके बाद कमाण्डर ने आनन-फानन पहले की तरह ही रिमोर्ट कंट्रोल का बटन दबाया, तो गुप्त जेल का दरवाजा बंद हो गया ।

दूसरा बटन दबाया, तो शीशे की वह गुप्त जेल पहले की तरह ही वापस तालाब में समाती चली गयी ।

□□□

हैलीकॉप्टर अब सुलतान फ़ौजी को लेकर दूर अनंत आकाश में उड़ता चला जा रहा था । मिलट्री की जेल काफी पीछे छूट गयी थी ।

"कमाण्डर ! कमाण्डर ! !" सुलतान फौजी बुरी तरह झुंझला

उठा- "मैं तो तंग आ चुका हूँ इस कमाण्डर करण सक्सेना से। भारत सरकार को भी मुझे सजा देने के लिये वही एक आदमी मिला था।"

हैलीकॉप्टर को उड़ाते हुए कमाण्डर के होठों पर बाल जैसी बारीक मुस्कान दौड़ गयी।

"वह आखिर इस मिशन पर अपने किसी न किसी जासूस को तो भेजते, फिर कमाण्डर ही क्यों नहीं।" उसने जवाब दिया- "इसके अलावा मत भूलो सुलतान फौजी, तुमने उनके पांच हजार निर्दोष नागरिकों की हत्या की है। पांच हजार! यह संख्या कम नहीं होती।"

"लेकिन मैंने जो कुछ किया।" सुलतान फौजी भड़ककर बोला- "पाकिस्तान के कहने पर किया। पाकिस्तानी ऑफिसर्स के कहने पर किया।"

"मगर उस संगीन जुर्म के करता-धरता तो तुम ही थे।" कमाण्डर की आवाज़ भड़क उठी- "उन निर्दोष इंसानों की जानें तो तुम्हारे ही हाथों गयीं। उनका खून तो तुम्हारे ही सिर है। फिर पाकिस्तान को भी अपने किये की काफी सजा मिल चुकी है। काफी बर्बादी हो चुकी है। अब तो सिर्फ तुम्हें ही सजा मिलनी बाकी है।"

"पता नहीं क्या कह रहे हो तुम?" सुलतान फौजी की कंजी आंखों में बेपनाह हैरत उमड़ आयी थी- "मुझे तो लग रहा है कि मैं अब ज्यादा दिन का मेहमान नहीं हूँ। बहुत जल्द कमाण्डर मुझे फाँसी के फंदे पर लटका देगा या गोली मार देगा। बहरहाल मुझे बार-बार यह अहसास होता है कि मेरी जिन्दगी की दौड़ बस खत्म होने वाली है।"

"बिल्कुल सही अहसास होता है तुम्हें फौजी!" कमाण्डर की आवाज़ में एकाएक बेपनाह क्रूरता उमड़ आयी- "तुम्हारी जिंदगी की दौड़ अब सचमुच खत्म होने वाली है बल्कि खत्म होने वाली नहीं, खत्म हो भी चुकी है फौजी!"

"य... यह क्या कह रहे हो मिस्टर साबरी?" सुलतान फौजी चौंका- "और... और यह तुम्हारी आवाज़ को क्या हो गया है?"

उसी क्षण कमाण्डर ने बेपनाह फुर्ती से अपनी कोल्ट रिवॉल्वर निकालकर सुलतान फौजी के ऊपर तान दी ।

"मैं हसन साबरी नहीं बल्कि कमाण्डर हूँ फौजी ।" कमाण्डर करण सक्सेना एकाएक विषधर की तरह फुंफकार उठा- "वो कमाण्डर करण सक्सेना जिससे बचने के लिये तुम गुप्त जेल से भागे हो ।"

"न...नहीं ।" सुलतान फौजी आतंक के वशीभूत होकर डकराया- "नहीं, तुम कमाण्डर नहीं हो सकते । तुम वो खतरनाक जासूस नहीं हो सकते ।"

कोल्ट रिवॉल्वर उसी क्षण कमाण्डर की उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी और फिर सुलतान फौजी के माथे से जाकर सट गयी ।

"जब इस रिवॉल्वर से निकली गोली तुम्हारी खोपड़ी की धज्जियां उड़ायेगी फौजी, तब तुम्हें खुद-ब-खुद यकीन हो जायेगा कि मैं कौन हूँ । फिलहाल अलविदा ।"

लेकिन अगर वह कमाण्डर करण सक्सेना था, तो वह भी फौजी था, सुलतान फौजी ।

कमाण्डर उसे गोली मारकर अपना मिशन कम्पलीट करता, उससे पहले ही सुलतान फौजी एक बार फिर दांव खेल गया । अपनी जिंदगी का सबसे खतरनाक दांव ।

वह एकाएक हैलीकॉप्टर के दरवाजे की तरफ झपटा था और इससे पहले कि कमाण्डर कुछ समझ भी पाता कि वो क्या कर रहा है, वह दरवाजा खोलकर उड़ते हैलीकॉप्टर से नीचे कूद गया ।

भौंचक्का-सा रह गया कमाण्डर करण सक्सेना !

बेहद भौंचक्का ।

उसने ख्वाब में भी नहीं सोचा था कि सुलतान फौजी ऐसा कदम उठा सकता है ।

□□□

एक बार फिर दोनों के बीच आँख-मिचौली का खेल शुरू हो गया ।

जबरदस्त आँख-मिचौली का खेल !

सुलतान फौजी की किस्मत तेज थी, जो उसने उड़ते हैलीकॉप्टर से छलांग लगायी, तो वह सीधे एक शोरूम के सामने खड़ी कार की छत पर जाकर गिरा ।

वह जिन्ना रोड का चौराहा था ।

एक बेहद भीड़-भाड़ वाला चौराहा और काफी व्यस्त इलाका ।

सुलतान फौजी के नीचे छलांग लगाते ही कमाण्डर ने भी अपना हैलीकाप्टर नीचे सड़क की तरफ दौड़ाया ।

भगदड़ मच गयी वहाँ चारों तरफ ।

जबरदस्त भगदड़ ।

पब्लिक इधर-से उधर भागने लगी ।

ट्रेफिक रुक गया ।

कमाण्डर करण सक्सेना ने आनन-आनन मिलट्री का वो हरा हैलीकॉप्टर जिन्ना रोड के चौराहे पर उतार दिया और फिर उसमें से छलांग लगाकर वह भी सुलतान फौजी की तरफ झपटा ।

□□□

सचमुच पूरे इस्लामाबाद में हड़कम्प मच गया था ।

सनसनी की शुरुआत मिलट्री जेल से हुई ।

वहाँ के सब-जेलर को न जाने क्या सूझा कि उसने हैलीकॉप्टर के वहाँ से जाने के मुश्किल से पांच मिनट बाद ही आई.एस.आई. हैडक्वार्टर में फोन घुमा दिया और वहाँ पूछ लिया- "सुलतान फौजी ठीक-ठाक पहुँच गया या नहीं ?"

"सुलतान फौजी !" कर्नल नासिर के दिमाग में बम सा फटा- "यह क्या कह रहे हो तुम ? उसे यहाँ किसलिये भेजा गया है ?"

अब सब-जेलर सकपकाया ।

"ल...लेकिन उसे आपने ही तो बुलाया था सर !" सब-जेलर शुष्क लहजे में बोला- "आपने ही तो जेलर साहब को आदेश दिया था कि वह सुलतान फौजी को लेकर तुरंत आई.एस.आई.हैडक्वार्टर पहुँचे ।"

"यह क्या बकवास है ?" कर्नल नासिर चिंघाड़ उठा- "मैंने किसी को ऐसा आदेश नहीं दिया । अब सुलतान फौजी कहाँ है ?"

"उ... उसे तो जेलर साहब थोड़ी देर पहले ही हैलीकाप्टर में बिठाकर यहाँ से ले गये ।"

"ओह ! जरुर कुछ गड़बड़ है ।" कर्नल नासिर पहले से भी ज़्यादा तेज़ चीखा- "बेवकूफ, वह आदमी हण्ड्रेड परसेंट कमाण्डर करण सक्सेना है, जो सुलतान फौजी को ले गया है । उसे पकड़ो, जल्दी कुछ करो ।"

□□□

और उसके बाद इस्लामाबाद शहर में हड़कम्प मच जाना स्वाभाविक-सी बात थी ।

फौरन वायरलेस खड़खड़ाये जाने लगे ।

इस्लामाबाद पुलिस को यह सूचना सर्कुलेट की जाने लगी कि शहर में मिलट्री का हरे रंग का हैलीकॉप्टर जहाँ कहीं भी उड़ता दिखाई दे, उसे फौरन शूट करने की कोशिश करो ।

एयरफ़ोर्स के हवाई जहाज और हैलीकॉप्टर उसकी तलाश में चारों तरफ़ उड़ान भरने लगे ।

उन हवाई जहाज और हैलीकॉप्टर्स के विशेष दस्तों को इस बात में महारथ हासिल थी कि वह किसी भी उड़ते हुए हवाई जहाज या हैलीकॉप्टर को रोक सकते थे ।

कुल मिलाकर एकदम से चारों तरफ़ अफरातफरी का माहौल बन गया ।

ऐसा लग रहा था, जैसे पाकिस्तानी फौज किसी दूसरे देश पर हमला करने के लिये उड़ान भर रही हो ।

उस क्षण एयरफ़ोर्स की अफरातफरी देखकर कौन कह सकता था कि वह सारी कारवाई एक आदमी के खिलाफ थी, सिर्फ एक आदमी के खिलाफ !

कमाण्डर करण सक्सेना नाम था जिसका !

□□

उधर कमाण्डर और सुलतान फौजी के बीच सड़क पर जबरदस्त जंग छिड़ी हुई थी।

कार की छत पर गिरते ही फौजी के कण्ठ से तेज चीख निकल गयी। उसे ऐसा लगा, मानो जिस्म की सारी हडिडयां चकनाचूर हो गयी हों।

उसने कार की छत पर पड़े-पड़े ही कुछ क्षण सांस ली।

मगर जैसे ही उसने हैलीकाप्टर को सड़क पर उतरते देखा, उसके जिस्म में मौत की सिहरन दौड़ गयी।

वह एकदम झटके से उठा था।

उठते ही कार की छत से नीचे कूदा और फिर हैलीकॉप्टर से विपरीत दिशा में बेपनाह तेजी से भागा।

लेकिन वाह री किस्मत !

कमाण्डर उससे कहीं ज्यादा फुर्तीला साबित हुआ।

तब तक वह न सिर्फ जिन्ना चौक पर अपना हैलीकॉप्टर उतार चुका था बल्कि हैलीकॉप्टर उतारते ही उसमें से कूद भी पड़ा और उसके बाद सुलतान फौजी के पीछे-पीछे बेपनाह तेजी से दौड़ा।

“फौजी !” कमाण्डर भागते हुए ही डकराया- “रुक जा।”

लेकिन अगर सुलतान फौजी ने रुकना होता, तो वह अपनी जान की बाजी लगाकर हैलीकॉप्टर के अंदर से ही क्यों कूदता ?

“मैं तुमसे फिर कहता हूँ।” कमाण्डर तेज धावक की तरह भागते हुए चिल्लाया- “तेरी दौड़ खत्म हो चुकी है। तुझे पांच हजार इंसानों की हत्या का प्रायश्चित करना है। तुझे उस सजा को सम्मानपूर्वक कबूल करना है, जो हिन्दुस्तानी अदालत ने तुझे सुनायी

है।"

लेकिन सुलतान फौजी के कान पर जूँ तक न रेंगी, वह भागता ही रहा।

आते-जाते राहगीर सहमकर सड़क के दाये-बायें खड़े हो गये थे।

उसी पल रिवॉल्वर कमाण्डर की उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी और उसने गोली चलायी।

धांय!

गोली चलने की भीषण आवाज़ चारों तरफ गूंज उठी।

बेपनाह तेजी से भागता सुलतान फौजी डकराया।

गोली उसके बाजू में लगी थी।

सुलतान फौजी एक पल के लिये ठिठका, लेकिन बिना कोई सेकंड गवायें फिर बेपनाह तेजी से भागा।

तब तक पुलिस की पेट्रोलिंग वैन चारों तरफ जमा होने लगी थीं।

तभी बोइंग 207 बमवर्षक विमानों का एक दल भी गरजता हुआ वहाँ आ पहुँचा, उस दल में तीन विमान थे।

फिर उनमें से एक बमवर्षक विमान गरजता हुआ इतना नीचे आया, इतना नीचे, जितना शायद ही ऐसी भीड़ भरी जगह में पहले कभी आया हो।

नीचे आते ही बमवर्षक विमान के अंदर से एक सीढ़ी गिरी।

सुलतान फौजी एकदम झपटकर उस सीढ़ी पर चढ़ गया।

कमाण्डर का दिमाग सक्रिय हो उठा।

सुलतान फौजी एक बार फिर उसके शिकंजे से निकलकर भाग रहा था।

जबकि इस बार वो असफल नहीं होना चाहता था।

किसी भी हालत में नहीं।

कमाण्डर ने एकाएक अपनी जेब से बहुत सूक्ष्म-सी वस्तु निकालकर रिवॉल्वर की नाल के अंदर डाल दी, वह मेग्नेट की वस्तु थी, इसलिये फौरन ही अंदर जाकर गोली से चिपक गयी।

फिर कमाण्डर ने सुलतान फौजी का टारगेट करके एक गोली और चलाई।

धांय !

गोली इस बार सनसनाती हुई सीधी सुलतान फौजी की जांघ में जा घुसी।

पुनः चिल्लाया फौजी !

उसकी जांघ से भलभल करके खून बहने लगा, लेकिन उसने रस्सी नहीं छोड़ी थी। वह बोइंग 207 विमान के साथ और ऊपर उठता चला गया।

जल्द ही वो कमाण्डर की पहुँच से दूर हो चुका था।

मगर अब कमाण्डर करण सक्सेना को परवाह नहीं थी।

मेग्नेट की वो सूक्ष्म वस्तु गोली के साथ-साथ सुलतान फौजी के जिस्म में दाखिल हो गयी थी।

और अब उसी सूक्ष्म वस्तु ने अपना कमाल दिखाना था।

शानदार कमाल !

□□□

उस महत्वपूर्ण काम को अंजाम देकर कमाण्डर करण सक्सेना तेजी से घूमा।

फ़ौरन एक नई मुश्किल उसके सामने थी।

दरअसल पुलिस पेट्रोलिंग वैनों से अब कई दर्जन पुलिसकर्मी नीचे उतर आये थे और वह उसके चारों तरफ घेरेबंदी करते हुए तेजी से उसी की तरफ बढ़ रहे थे। कमाण्डर के घूमते ही उन्होंने धांय-धांय उस पर बेशुमार गोलियाँ बरसा डालीं। तुरंत मार्शल आर्ट का प्रयोग किया कमाण्डर ने। उसे सिर्फ सैकिण्ड के सौवें हिस्से के बराबर समय मिला था और उसी समय का प्रयोग करते हुए उसने गोलियों से बचने के लिये न सिर्फ अपना जिस्म एकदम से नीचे जमीन पर गिरा दिया बल्कि वो जमीन से चिपका हुआ ही सांय-सांय काले नाग की तरह रेंगता हुआ वहीं खड़ी एक बस में जा चढ़ा।

घटना ने फिर एक नया सनसनीखेज मोड़ लिया ।

वह बस यात्रियों से खचाखच भरी हुई थी ।

दरअसल ड्राइवर ने वह बस जिन्ना चौक पर सड़क के किनारे इसलिये खड़ी कर दी थी, क्योंकि एकाएक वहाँ जबरदस्त हंगामा मच गया था और गोलियाँ चलने लगी थीं । ड्राइवर ने सोचा, थोड़ी देर बाद जब हंगामा बंद हो जायेगा, तब वह बस आगे बढ़ा लेगा ।

मगर उसे कहाँ मालूम था कि एक और ज्यादा बड़ा हंगामा उसका इंतजार कर रहा है ।

कमाण्डर करण सक्सेना जैसे ही धड़धड़ाता हुआ बस में चढ़ा, वहाँ खलबली मच गयी ।

सभी यात्री धड़ाधड़ अपनी-अपनी सीट से खड़े होने लगे ।

जबकि बस में घुसते ही कमाण्डर ने सबसे पहले बस का दरवाजा अंदर से बंद कर लिया था ।

यही वो पल था, जब बस के ड्राइवर ने घबराकर ड्राइविंग डोर खोला और नीचे छलांग लगानी चाही ।

कमाण्डर ने तुरंत उसे गोली मार दी ।

उसकी खोपड़ी की धज्जियां बिखर गयीं ।

वह नीचे गिरा जरूर, पर जिन्दा नहीं मरा हुआ । फिर कमाण्डर रिवॉल्वर लेकर यात्रियों की तरफ घूम गया था ।

"कोई अपनी जगह से न हिले ।" कमाण्डर करण सक्सेना खतरनाक लहजे में चिंघाड़ा- "जो जहाँ है, वहीं बैठ जाये । जल्दी । फौरन ।"

एक सेकिण्ड भी नहीं लगा, तुरंत सारे यात्री अपनी-अपनी सीटों से इस तरह चिपककर बैठ गये, जैसे वह कभी उठे ही नहीं थे ।

"अगर किसी ने कैसी भी कोई हरकत की ।" कमाण्डर ने उन्हें चिल्लाकर चेतावनी दी- "तो उसका भी वही अंजाम होगा, जो अभी-अभी ड्राइवर का हुआ है ।"

सबके चेहरे पर खून निचुड़ गया ।

सब पत्थर की तरह बैठे थे ।

ड्राइवर की लाश गिरने से बस के चारों तरफ मौजूद पुलिसकर्मियों के बीच भी आतंक की लहर दौड़ गयी।

उसी पल कमाण्डर की निगाह बस में घूमी।

जल्दी ही उसकी नज़र ऐसे दो यात्रियों पर पड़ी, जो शायद किसी बैण्ड-बाजे वाले ग्रुप के आदमी थे और लाउडस्पीकर का सैट लेकर कहीं जा रहे थे।

कमाण्डर करण सक्सेना ने फौरन उनके हाथ से लाउडस्पीकर छीना और फिर दरवाजा खोलकर उसे बाहर पुलिस कर्मियों के बीच फैंक दिया।

कोई कुछ समझ पाता कि क्या हुआ है, उससे पहले ही कमाण्डर ने उसके हाथ से माइक भी छीन लिया।

फिर वह पुलिसकर्मियों से सम्बोधित होकर माइक पर चीखा- "मैं कमाण्डर करण सक्सेना बोल रहा हूँ, मेरी बात ध्यान से सुनो।"

कमाण्डर की आवाज़ बस से बाहर पड़े लाउडस्पीकर पर चारों तरफ गूंजने लगी- "इस समय पूरी बस मेरे कब्जे में है। बस के अंदर मौजूद एक-एक पेसेंज़र मेरे कब्जे में है।"

कमाण्डर के उन शब्दों का बाहर मौजूद पुलिसकर्मियों पर बड़ा अप्रत्याशित प्रभाव पड़ा।

वहाँ सन्नाटा छा गया।

खौफनाक सन्नाटा।

"मैं बस को लेकर यहाँ से जा रहा हूँ।" कमाण्डर की आवाज़ पुनः लाउडस्पीर पर गरजी- "अगर किसी ने मुझे रोकने की कैसी भी कोई कौशिश की या बस के टायर पर फायर किया, तो ध्यान रहे, इस वक़्त तक़रीबन साठ पेसेंज़र मेरे कब्जे में हैं, मैं उन सबको मार डालूँगा। इसलिये बेहतर यही है कि तुम लोगों की तरफ से कैसी भी कोई हरकत नहीं होनी चाहिये। समझे!"

उसके बाद कमाण्डर ने उनके जवाब की प्रतीक्षा नहीं की।

उसने बाहर पड़े लाउडस्पीकर की वायर कट कर दी और फिर तुरंत बस की ड्राइविंग सीट पर जा बैठा।

अगले ही पल बस का इंजन गरज उठा था और बस तूफानी गति से सड़क पर दौड़ने लगी ।

पुलिसकर्मियों की तरफ से सचमुच कोई हरकत न हुई ।

वह सिर्फ मूकदर्शक बने उस बस को जाते देखते रहे ।

□□□

जल्द ही वह बस जिन्ना चौक पार कर गयी थी, लेकिन अभी भी उसकी रफ्तार में कैसी भी कोई कमी नहीं आयी थी ।

बस आंधी-तूफान बनी सड़क पर दौड़ रही थी और यात्री पहले की तरह ही सहमें हुए से बैठे थे ।

जिन्ना चौक पार करते ही कमाण्डर करण सक्सेना ने एक और महत्वपूर्ण काम किया । उसने बस ड्राइव करते हुए ही अपनी जेब से वो ट्रांसमीटर घड़ी निकाल ली, जो रजिया ने उसे दी थी ।

फिर उसने रजिया से सम्पर्क स्थापित किया ।

दरअसल रजिया अभी भी हसन साबरी के घर पर थी और वहाँ इस बात की देखभाल कर रही थी कि कहीं उन तीनों में से कोई किसी तरह अपने बंधन न खोल डाले और उनकी पूरी योजना का भंडाफोड़ न कर दे ।

“यस कमाण्डर स्पीकिंग, कमाण्डर स्पीकिंग ।”

सम्पर्क स्थापित होते ही कमाण्डर करण सक्सेना काफी तेज-तेज बोलने लगा ।

“बोलो कमाण्डर ।” शीघ्र ही रजिया की आवाज़ ट्रांसमीटर पर उभरी- “क्या रिपोर्ट है ?”

“तुम जल्दी वहाँ से भागो रजिया ।” कमाण्डर करण सक्सेना उत्तेजित होकर चिल्लाया- “मामला बिगड़ चुका है । तुम वहाँ फँस सकती हो ।”

“इ... इसका मतलब सुलतान फौजी एक बार फिर बच निकला ।” रजिया के मुँह से तेज सिसकारी छूट गयी- “व... वो फिर भाग गया ?”

"हाँ, भाग गया। लेकिन इस बार मेरी कोशिश पूरी तरह नाकाम नहीं है। मैंने एक चाल चल दी है और मैं लगभग पचास परसेंट कामयाब रहा हूँ।"

"म... मेरे तो कुछ समझ नहीं आ रहा है कि तुम क्या कह रहे हो ?" रजिया बौखलायी सी बोली- "आखिर तुमने क्या किया है कमाण्डर ?"

"फिलहाल यह सब बातें करने का समय नहीं है।" कमाण्डर स्पीड से बोला- "तुम पहले हसन साबरी के घर से भागो। जल्दी। इस बारे में बाद में भी बातें की जा सकती हैं।"

"ठीक है, मैं यहाँ से निकलती हूँ।"

कमाण्डर करण सक्सेना ने ट्रांसमीटर बंद कर दिया।

□□□

कर्नल नासिर उस समय आई.एस.आई. हैडक्वार्टर में था और वहीं बैठा वो वायरलेस द्वारा एक-एक पल के घटनाक्रम पर नजर रखे था।

उसे रिपोर्ट पर रिपोर्ट भेजी जा रही थीं कि किस पल कहाँ, क्या-क्या हो रहा है।

जब उसे वायरलेस पर यह रिपोर्ट मिली कि सुलतान फौजी को कमाण्डर करण सक्सेना के शिकंजे से बचा लिया गया है, तो उसने राहत की सांस ली।

"कमाण्डर अब कहाँ है ?" उसने थोड़े उत्सुक स्वर में पूछा।

"वह एक बस का किडनैप करके फरार हो गया है सर !"

"क्या बकवास कर रहे हो तुम ?" कर्नल नासिर चिल्ला उठा- "उसे क्यों जाने दिया गया ?"

"दरअसल बस में पचास-साठ पेसेंज़र सवार थे सर।" ऑफिसर तत्पर लहजे में बोला- "कमाण्डर ने उन सबको अपने कब्जे में कर लिया था और पुलिस को धमकी दी थी कि अगर उसे रोकने की कैसी भी कोई कोशिश की गयी, तो वह उन सबको मार डालेगा।"

"बेवकूफ आदमी !" कर्नल नासिर भेड़िये की तरह गुर्रा उठा- "उसे फिर भी नहीं जाने देना चाहिये था। क्या तुम नहीं जानते कि कमाण्डर करण सक्सेना की मौत उन पचास-साठ पाकिस्तानियों से कहीं ज्यादा कीमती है। उसका मरना पाकिस्तान के लिये बेइंतहा जरूरी है।"

"अ... अब हम क्या करें सर ?" ऑफिसर बुरी तरह हड़बड़ा उठा- "अब क्या किया जा सकता है ?"

"अब बस एक ही तरीका है।" कर्नल नासिर दांत किटकिटाता हुआ दहाड़ा- "फौरन यह सूचना वायरलेस द्वारा पूरे इस्लामाबाद में सर्कुलेट कर दो। उस बस को जल्द-से-जल्द ढूंढा जाये और उसे देखते ही बम से उड़ा दो। कमाण्डर करण सक्सेना किसी भी हालत में बचना नहीं चाहिये।"

"ओके सर ! मैं अभी उस बस को ढूंढने की सूचना सर्कुलेट करता हूँ।"

"ओवर एंड ऑल।"

कर्नल नासिर अभी वायरलेस पर आंदोलित लहजे में बोल ही रहा था कि तभी वायरलेस पर एक और सूचना सर्कुलेट होने लगी कि कमाण्डर करण सक्सेना जिस बस का अपहरण करके भागा था, वह बस बरामद हो गयी है। पैसेंज़र पूरी तरह सुरक्षित हैं। सिर्फ कमाण्डर गायब है। वह थोड़ी देर पहले ही उस बस को वहाँ खड़ी करके फरार हो गया था।

कर्नल नासिर ने वायरलेस का रिसीवर नीचे पटक मारा। वह झुंझलाता हुआ अपना सिर ठोकने लगा।

करण सक्सेना ! करण सक्सेना ! !

□□□

रात के दस बज रहे थे।

कमाण्डर करण सक्सेना और रजिया एक बार फिर उसी सुलेमान क्लब में मिले, जहाँ वो पहले भी दो बार मिल चुके थे।

हमेशा की तरह उस क्लब मे सड़क छाप वेश्याओं और उनके ग्राहकों की भीड़ लगी हुई थी । कुछ उन्हें लेकर उन कोने वाली टेबिलों पर चले गये थे, जहाँ काफी कम रोशनी थी और उसी कम रोशनी का फायदा उठाते हुए वह एक-दूसरे के ऊपर झुककर न जाने क्या-क्या कर रहे थे । खासतौर पर मेज के नीचे उनके हाथ-पैर जिस तरह एक-दूसरे के जिस्म पर रेंग रहे थे, उसने तो खुले सेक्स की लगभग सारी सीमायें पार कर दी थीं ।

कमाण्डर ने सुलेमान क्लब में आने से पहले आज दो ख़ास काम किये थे । पहला काम, उसने अपना होटल बदल दिया था । क्योंकि इस्लामाबाद में अब लोग उसे पहचानने लगे थे । इसलिये एक ही होटल में रहना उचित नहीं था ।

दूसरा काम, उसने फैसला कर लिया था कि अब वो चाहे कहीं भी जायेगा, थोड़ा मेकअप करके जायेगा ।

इस समय भी उसने अपने चेहरे पर हल्की-सी दाढ़ी लगायी हुई थी । कमाण्डर ने 'सुलेमान क्लब' में सबसे पहले व्हिस्की के चार बड़े-बड़े पैग पिये, जिससे उसका मूड पूरी तरह फ्रेश हो गया और सारा दिन उसने जो भागादौड़ी की थी, उस थकान से उसे निजात मिली ।

"अब बताओ ।" रजिया बोली- "आखिर तुम क्या कह रहे हो ? इस बार तुम्हारी यह कौशिश पूरी तरह नाकाम कैसे नही हुई है ?"

"बताता हूँ ।" कमाण्डर डनहिल सुलगाता हुआ बोला- "दरअसल मैंने सुलतान फौजी के जिस्म के अंदर एक मिनी माइक्रोफोन पहुँचा दिया है ।"

"क... क्या कह रहे हो ?" रजिया के मुँह से तेज सिसकारी छूटी- "मिनी माइक्रोफोन ! जिस्म के अंदर ! ! लेकिन तुमने उसे पहुँचाया कैसे ?"

"दरअसल वह माइक्रोफोन बटन के आकार का था और उसके दोनों तरफ मेग्नेट (चुम्बक) की एक हल्की-सी परत चढ़ी थी । उसी मेग्नेट की वजह से वह माइक्रोफोन गोली के साथ चिपक गया और

जब मैंने गोली चलाई, तो वह गोली के साथ-साथ सुलतान फौजी की जांघ में जा घुसा।"

"माई गॉड !" रजिया के नेत्र फैले- "लेकिन क्या जांघ में पहुँचने के बाद भी वो माइक्रोफोन काम करेगा ?"

"बिल्कुल करेगा।" कमाण्डर ने बे-हिचक जवाब दिया- "दरअसल वह एक बेहद शक्तिशाली माइक्रोफोन है, जो जांघ में पहुँचने के बावजूद अपने आसपास बीस मीटर तक का वार्तालाप कैच करके मेरे पास भेजेगा। यह देखो, यह वो स्पीकर है, जिस पर माइक्रोफोन के आसपास होने वाला वार्तालाप साफ़-साफ़ सुनाई देगा।" कमाण्डर ने अपनी जेब से एक फाउण्टेन पैन निकालकर रजिया के सामने रख दिया और उसका कैप खोला।

तुरंत उस पैन में निब वाली जगह बिल्कुल साफ-साफ एक काला, लम्बा सा स्पीकर नजर आने लगा।

रजिया हैरान नजरों से उस स्पीकर को देखती रह गयी।

जबकि कमाण्डर ने उस फाउण्टेन पैन को जल्द ही वापस बंद करके अपनी जेब में रख लिया था।

"इसके अलावा उस बेहद शक्तिशाली और मिनी माइक्रोफोन की कई खासियतें भी हैं।" कमाण्डर ने डनहिल का छोटा सा कश लगाते हुए कहा- "जैसे वो जिस्म में पहुँचने के ठीक आधा घंटे बाद काम शुरु कर देता है। दरअसल वो चार्ज ही जिस्म की गर्मी से होता है। अगर उसे जिस्म के अंदर की गरमी नहीं मिलेगी, तो वह काम करना ही शुरु नहीं करेगा। इसके अलावा उस माइक्रोफोन की दूसरी विशेषता ये है कि शरीर के अंदर पहुँचते ही उसकी चुम्बकीय शक्ति खुद-ब-खुद खत्म हो जाती है। और इसीलिये वो जल्दी ही गोली से अलग हो जाता है। फिर उस माइक्रोफोन का अगला भाग भी काफी नुकीला बनाया गया है, यही वजह है कि जब शरीर के स्नायुतंत्र सांस लेते हैं, तो वह उनके साथ-साथ गोश्त को आहिस्ता आहिस्ता चीरता हुआ अंदर घुसता चला जाता है।"

"लेकिन जब डॉक्टर, सुलतान फौजी की जांघ से गोली निकाल

लेगा ।" रजिया ने पूछा- "फिर तो वह गोली के साथ-साथ उस माइक्रोफोन को भी बाहर निकाल डालेगा ?"

"कैसे निकालेगा ?" कमाण्डर बोला- "मैंने बताया न, उस माइक्रोफोन का अगला भाग काफी नुकीला बनाया गया है और स्नायु तंत्र जब सांस लेते हैं, तो वह उनके साथ-साथ अंदर घुसता चला जाता है। इसी कारण जब तक डॉक्टर द्वारा सुलतान फौजी की जांघ से गोली निकालने की नौबत आयेगी, तब तक वह माइक्रोफोन जांघ के गोश्त के अंदर तक पेवस्त हो चुका होगा और गोली निकालते समय वह डॉक्टर को तथा किसी और को नजर भी नहीं आयेगा। दरअसल उस माइक्रोफोन का अगला भाग नुकीला बनाया ही इसलिये गया है, ताकि सर्जरी के दौरान उसे जिस्म से बाहर न निकाला जा सके।"

"वाकई माइक्रोफोन की संरचना काफी अच्छी ढंग से की गयी है।" रजिया प्रभावित मुद्रा में बोली।

"दरअसल वह माइक्रोफोन ऐसी ही किसी विशेष परिस्थितियों के लिये बनाया गया है, अब स्थिति ये है।" कमाण्डर ने डनहिल की राख वहीं रखी एश-ट्रे में झाड़ते हुए कहा- "कि सुलतान फौजी मेरे शिकंजे से निकलकर भाग जरूर गया है, लेकिन आठ घण्टे की समय सीमा पूरी होते ही माइक्रोफोन जैसे ही काम शुरू करेगा, मुझे उसके आसपास के वार्तालाप से फिर पता चल जायेगा कि वो इस वक्त कहाँ है और उसके बाद मुझे कोई मुश्किल पेश नहीं आयेगी। इसीलिये मैंने तब तुमसे कहा था कि इस बार मैं पूरी तरह अपनी कोशिश में नाकाम नहीं हुआ हूँ। इस बार मैं नाकाम होते हुए भी काफी हद तक कामयाब हूँ। अब तो सिर्फ मुझे बेहद बेसब्री से आठ घण्टे की अवधि पूरी होने का इंतजार है। माइक्रोफोन के शुरु होते ही मैं फिर हरकत में आ जाऊँगा।"

रजिया की आँखें फिर चार सौ चालीस वोल्ट के बल्ब की मानिन्द जगमगाने लगीं।

वाकई कमाण्डर ने सच कहा था, वह इस बार पूरी तरह नाकाम

नहीं हुआ था ।

अभी उस खेल का कुछ अंत बाकी था ।

कुछ और हंगामा होना बाकी था ।

□□□

रजिया की सुबह काफी जल्दी आँख खुल गयी ।

हैदर अली अभी लाहौर से नहीं लौटा था ।

आँख खुलते ही रजिया की निगाह एकाएक सामने टंगी तारीख वाले बोर्ड पर पड़ी, 25 जनवरी !

एकाएक वह तारीख रजिया के दिमाग में मधुर संगीत की तरह गूंजने लगी । वह उसके लिये कोई साधारण तारीख नहीं थी, वह उसके भाई अर्जुन ठक्कर के जन्मदिन की तारीख थी ।

यह वो तारीख थी, जिस दिन उसने अपने भाई का जन्म दिन बड़े जोश के साथ मनाया था और उसको एक अंगूठी तोहफे में दी थी ।

उस तारीख को देखते ही रजिया बड़े उत्साह के साथ बिस्तर से उठी और फिर जल्दी-जल्दी ही घरेलू काम निपटाने में लग गयी । वह दिन वो काफी हंसी-खुशी गुजारना चाहती थी ।

रजिया उस दिन काफी जल्दी-जल्दी काम कर रही थी । हैदर अली का और अपना बैडरूम उसने खुद अपने हाथों से साफ किया । एक-एक चीज अपनी जगह सलीके से रखी ।

रजिया जब दीवार पर लगी पेण्टिंग साफ कर रही थी, तभी एकाएक उसकी निगाह एक अलमारी पर जाकर ठिठक गयी । वह काफी बड़ी अलमारी थी और उस पर ताला पड़ा था ।

रजिया को आज हैदर अली के साथ रहते हुए कई महीने गुजर चुके थे । लेकिन यह बड़ा मजेदार इत्तेफाक था कि रजिया ने आज तक अलमारी की चाबी हमेशा हैदर अली के पास देखी थी । रजिया ने जब दो बार हैदर अली से उस अलमारी को देखने की इच्छा प्रकट की थी, तो वह टाल गया था ।

खुद रजिया ने भी अलमारी को देखने के लिये उस पर कभी

ज्यादा जोर नहीं डाला था ।

लेकिन आज न जाने क्यों उस अलमारी को देखकर रजिया न सिर्फ ठिठक गयी थी बल्कि एकाएक उसके अंदर यह इच्छा भी काफी बलवती हो उठी थी कि उसे देखना चाहिये कि उस अलमारी के अंदर क्या है ?

वह फौरन दौड़कर चाबियों का एक गुच्छा उठा लायी, जिसमें तरह-तरह की चाबियां थीं ।

रजिया ने आनन-फानन एक-एक चाबी उस अलमारी के ताले में लगाकर देखनी शुरु की ।

उसने सारी चाबियां लगा डालीं ।

मगर उसमें से कोई भी चाबी उस ताले के अंदर फिट न बैठी ।

रजिया और ज्यादा बेचैन हो उठी ।

उस अलमारी के अंदर क्या है ? यह देखने की बैचेनी उसके अंदर हर पल बढ़ती जा रही थी ।

उसने दूसरा चाबियों का गुच्छा तलाशा, मगर जब वह उसे न मिला, तो वह एक छोटा-सा नुकीला पेचकस उठा लायी । फिर वह उस नुकीले पेचकस से उस ताले को खोलने की जी-तोड़ कौशिश करने लगी ।

काफी देर तक वो कौशिश करती रही ।

उसके माथे पर पसीने चुहचुहाने लगे ।

दो बार वह नुकीला पेचकस उसकी हथेली में लगते-लगते भी बचा, लेकिन फिर भी रजिया जुटी रही । कोई अनदेखी शक्ति मानों आज उसे वो ताला खोलने के लिये जबरदस्ती प्रेरित कर रही थी ।

लगभग आधा घंटे की मेहनत-मशक्कत के बाद आखिरकार रजिया कामयाब हुई और उसने वह ताला खोल दिया ।

ताला खुलते ही रजिया ने राहत की सांस ली ।

उसके बाद उसने फ़ौरन ही अलमारी भी खोल दी थी ।

□□□

और !

अगले ही क्षण रजिया के लिये मानों कयामत के क्षण थे ।

उस पूरे बैडरूम में भयानक तूफ़ान आ गया । बिजली गड़गड़ा उठी । खिड़की-दरवाजे मानों सब बुरी तरह चीखने-चिल्लाने लगे ।

रजिया के नेत्र अचम्भे से फट पड़े थे । उसे यकीन नहीं हो रहा था कि वह जो देख रही है, वह सब सच है ।

उस अलमारी के अंदर यूँ तो काफी सारा सामान था, लेकिन बीच वाले स्लैब पर उसके भाई की कुछ चीजें रखी थीं । उसके अर्जुन ठक्कर की कुछ चीजें ।

उसका सर्विस रिवॉल्वर । उसका रुमाल । उसका पॉकेट पर्स । उसका पैन । उसका ब्रोच ।

यह वो चीजें थीं, जिन्हें रजिया लाखों में पहचान सकती थी । क्योंकि उन सब पर कहीं-न-कहीं 'आर' मौजूद था ।

आर !

रजिया के दिमाग में सांप सा रेंगने लगा । उसने कंपकंपाते हाथों से अपने भाई के रिवॉल्वर को छुआ । उसके रुमाल को छुआ । उसकी उन तमाम चीजों को इस तरह छुआ, जैसे उन्हें छूकर वो अपने भाई का स्पर्श महसूस कर रही हो ।

और उन चीजों को छूते-छूते एकाएक उसके दिमाग में भयानक विस्फोट हो गया था ।

एक सवाल उसके अंदर-ही-अंदर रेंग उठा- "य... यह सारा सामान यहाँ कैसे आया ?"

"हैदर अली के पास कैसे आया ?"

आँखें सुलगने लगी रजिया की । उनमें खून उतर आया । जिस्म सूखे पत्ते की तरह कांपने लगा ।

उसे अपने सवाल का जवाब मिल गया था ।

वह अब नागिन नजर आ रही थी ।

साक्षात् नागिन !

□□□

दस बज रहे थे, जब हैदर अली ने कोठी के अंदर कदम रखा ।

वह काफी खुश था और लाहौर वो जिस काम से गया था, वह काम पूरा हो गया था ।

"रजिया !" कोठी में कदम रखते ही हैदर अली ने अपना ब्रीफकेस एक तरफ उछाला और उसे आवाज़ देता हुआ आगे बढ़ा- "रजिया !"

लेकिन रजिया की कहीं से भी आवाज़ न आयी ।

"रजिया !" वह थोड़ा और जोर से चिल्लाया- "तुम कहाँ हो डार्लिंग !"

लेकिन रजिया की फिर भी कहीं से कोई आवाज़ न आयी ।

उसी पल वह अपने बैडरुम का दरवाजा खोलकर अंदर घुसा था और अंदर घुसते ही वो ठिठका ।

सामने की एक कुर्सी पर पत्थर की शिला में बदली हुई रजिया बैठी थी ।

"क्या बात है डार्लिंग !" हैदर अली चहकता हुआ ही आगे बढ़ा- "आज बोल क्यों नहीं रहीं ? क्या हमारे शैतान बेटे ने कुछ गड़बड़ कर दी ?"

बोलते-बोलते हैदर अली ठिठका । एकाएक ही उसकी नजर उस सेंटर टेबिल पर पड़ी, जो रजिया के सामने बिछी हुई थी और जिस पर अर्जुन ठक्कर का सामान फैला था ।

"अरे !" उस सामान को देखते ही हैदर अली बुरी तरह चौंका– "यह सामान बाहर कैसे आ गया ?"

फिर बड़े स्वाभाविक अंदाज में झटके से उसकी गर्दन अलमारी की तरह घूमी थी, जो खुली पड़ी थी ।

"ओह, तो यह बात है !" हैदर अली बड़े विनोदपूर्ण ढंग से हँसा- "हमारे पीछे हमारी चीजों की तलाशी लेती हो जानेमन ! उनकी खूब जांच-पड़ताल करती हो । लेकिन एक बात समझ नहीं आयी, तुमने

इन सब चीजों को अलमारी से बाहर क्यों निकाला है ?"

"क्योंकि इन सब चीजों से मेरा बेहद खास रिश्ता है हैदर !" रजिया के मुँह से अल्फाज इस तरह निकले, जैसे कोई मशीन घरघरायी हो। उसकी आँखें अभी भी अंगारे की तरह धधक रही थीं- "मेरे एक सवाल का जवाब दो, तुम्हारे पास यह तमाम चीजें कहाँ से आयीं ?"

"इसके पीछे एक बड़ा दिलचस्प किस्सा है डार्लिंग।" हैदर अली खतरे से अंजान पहले की तरह ही चहककर बोला- "एक हिन्दुस्तानी जासूस था, जो यहाँ पाकिस्तान में जासूसी करने आया था। मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं कि वह बड़ा दिलेर आदमी था। बड़ा ही जांबाज। हिन्दुस्तान सरकार ने उसे यहाँ इसलिये भेजा था, ताकि वो यह सबूत इकट्ठे कर सके कि पाकिस्तान ही आतंकवादियों को प्रशिक्षण देता है। कमबख्त वो पाकिस्तान के खिलाफ काफी सारे सबूत भी इकट्ठे करने में कामयाब हो गया था। लेकिन एकाएक मुझे उसकी भनक मिल गयी। मुझे पता चल गया कि वो हिन्दुस्तानी जासूस है। बस मैंने फौरन उसे जा दबोचा।"

"फिर ?" रजिया की आवाज़ और ज्यादा सर्द हो उठी- "फिर क्या हुआ ?"

"हमारे बीच जबरदस्त मुठभेड़ हुई थी।" वह शब्द कहते हुए हैदर अली की आवाज़ कहीं खो सी गयी- "मुझे आज भी वो खतरनाक मुठभेड़ भी पूरी तरह याद है। ऐसे कई मौके आये थे, जब वह मेरे ऊपर काफी भारी पड़ा और मुझे मारने के काफी नजदीक पहुँच गया। लेकिन मैं शायद बार-बार अपनी किस्मत की बदौलत बचता रहा और आखिरकार मैंने उसके सीने में चार गोलियां उतार दी थीं, वह उसी पल ऑन द स्पॉट मर गया।"

रजिया की आँखें अब बुरी तरह खून से लिथड़ी हुई नजर आने लगीं। उसके जिस्म को धीरे-धीरे ऐसे झटके लगने लगे, मानों उसे गुस्से का दौरा पड़ रहा हो।

"और... और तुमने उसका यह सारा सामान क्यों संभालकर रखा

हुआ है ?"

"इसके पीछे भी एक अलग ही कहानी है ।" हैदर अली ने मुस्कराते हुए कहा- "दरअसल उस जासूस का नाम अर्जुन ठक्कर था । मगर जब मैंने उसकी मौत के बाद उसकी चीजों की तलाशी ली, तो यह देखकर चौंका कि उसकी हर चीज़ पर अंग्रेजी का पहला अक्षर 'आर' मौजूद था । जबकि उसके नाम अर्जुन के हिसाब से तो 'अ' होना चाहिये था । यह राज़ मैं तब सुलझा नहीं सका था, इसलिये मैंने उसकी इन तमाम चीजों को यह सोचते हुए अपने पास संभालकर रख लिया कि शायद मैं कभी इस राज़ को सुलझा सकूं । लेकिन एक बात मेरे अभी भी समझ में नहीं आई डार्लिंग, तुम इन चीज़ों में इतना इन्ट्रेस्ट क्यों ले रही हो ?"

"मेरा इन चीजों से वही संबंध है हैदर !" रजिया एकाएक नागिन की तरह फुंफकार उठी- "जो किसी बहन का अपने भाई की राखी से होता है । तुम्हें सुनकर हैरानी होगी, तुमने जिस हिन्दुस्तानी जासूस को मारा, वह मेरा भाई था, मेरा अपना भाई ।"

"य... यह क्या कह रही हो तुम ।" हैदर अली के दिलो-दिमाग पर एकाएक पहाड़ सा टूटकर गिरा- "वह तुम्हारा भाई कैसे हो सकता है ? व... वह तो हिन्दू था ?"

"हाँ, हिन्दू था वो, हिन्दू ।" रजिया बेहद जुनून अंदाज में गुर्राती चली गयी- "लेकिन फिर भी वो मेरा भाई था । ऐसा भाई, जिस पर कोई भी बहन खुशी-खुशी अपनी जान दे सकती है । मैं अपने उसी बहादुर भाई की मौत का बदला लेने हिन्दुस्तान से यहाँ आयी थी हैदर !" रजिया हिंसक लहजे में चिंघाड़ती चली गयी- "लेकिन मैं नहीं जानती थी, जिसके हाथ से मैं सुहाग जोड़ा पहन रही हूँ, वही मेरे भाई का खूनी है । लेकिन एक बात तुमने गलत बोली, तुम अभी भी अर्जुन ठक्कर के हाथों से बचे नहीं हो, वह इस समय भी मौत बनकर तुम्हारे आसपास ही मंडरा रहा है ।"

"य... यह क्या कह रही हो तुम ?"

उसी पल रजिया ने एकाएक टेबिल पर रखा अर्जुन ठक्कर का

सर्विस रिवॉल्वर उठा लिया ।

"ये देखो ।" रजिया ने रिवॉल्वर अब हैदर अली के सीने की तरफ तान दिया- "यह अर्जुन ठक्कर का ही रिवॉल्वर है और इसके अंदर गोलियां भी हैं । अब यही रिवॉल्वर तुम्हारी मौत की वजह बनेगा ।"

"त... तुम पागल हो गयी हो रजिया !" हैदर अली दहशत से चिल्ला उठा- "मत भूलो कि मैं तुम्हारा शौहर हूँ ।"

"हाँ ।" रजिया नफरत से फुंफकारी- "बड़े अफसोस की बात है कि जिस दरिन्दे ने मेरे भाई के खून से अपने हाथ रंगे, वही मेरा शौहर है । जानते हो, आज 25 जनवरी है, आज मेरे भाई का जन्मदिन है । खुशी के इस मौके पर मुझे अपने भाई को कोई-न-कोई तोहफा तो देना ही था, इससे बढ़िया तोहफा मेरे भाई के लिये और क्या होगा कि मैं उसके क़दमों में उसके हत्यारे की भेंट चढ़ा दूं ।" उसी पल रजिया ने रिवॉल्वर का सैफ्टी कैच पीछे खींचा ।

"तुम... तुम सचमुच पागल हो गयी हो ।" हैदर अली हकला उठा, उसका पूरा जिस्म पसीने से लथपथ होता चला गया था- "म... मत भूलो, तुम मेरे बच्चे की मां बनने वाली हो ।"

"मेरे लिये भाई के मायने बहुत बुलंद है हैदर !" रजिया डकरायी- "मैं हर चीज की कुर्बानी दे सकती हूँ, लेकिन अपने भाई के हत्यारे को माफ नहीं कर सकती । तुम्हारा आखिरी वक़्त आ गया है । मैं समझती हूँ कि अब मुझे ज्यादा देर नहीं करनी चाहिये ।"

लेकिन देर हो चुकी थी ।

रजिया जज्बातों के प्रवाह में भूल गयी थी कि उसके सामने एक पठान खड़ा है । खतरनाक पठान !

वह गोली चलाती, उससे पहले ही हैदर अली अपनी जान पर खेलकर उसके ऊपर झपट पड़ा ।

चीखी रजिया !

वह कुर्सी सहित पीछे जा गिरी थी ।

वह उठती, उससे पहले ही हैदर अली ने बेहद आनन-फानन अपने होलस्टर से रिवॉल्वर निकालकर गोली चला दी ।

रजिया के मुँह से हृदयविदारक चीख निकल गयी। गोली सीधी उसकी कोख में जाकर लगी थी, वहाँ से खून का जबरदस्त फव्वारा छूटा, जिसने हैदर अली को खून में रंग डाला।

सकपका गया हैदर !

"अच्छा हुआ, बहुत अच्छा हुआ हैदर !" रजिया पीड़ादायक अंदाज में हंसी थी- "जो तुमने अपने हाथों से ही अपनी निशानी को मिटा डाला, अब मेरे अंदर की औरत तुम्हारे कर्ज से आजाद हो गयी है। अब मैं ज्यादा आसानी से अपने बहादुर भाई के क़दमों में तुम्हारी बलि चढ़ा सकती हूँ।"

"तुम मुझे नहीं मार सकतीं।" वह चिल्लाता हुआ बोला- "नहीं मार सकतीं, नहीं मार सकतीं।"

उसी पल 'धांय'से एक गोली हैदर अली के सीने में जाकर लगी
।

चीख पड़ा हैदर !

वह उछलकर सीधा उस सेंटर टेबिल पर जाकर गिरा, जिस पर अर्जुन ठक्कर का सामान रखा था। रिवॉल्वर उसके हाथ से छूटकर दूर जा पड़ी। उसने फौरन वहाँ से उठकर भागना चाहा।

लेकिन तब तक खून में बुरी तरह लथपथ रजिया उसके सामने आकर खड़ी हो गयी थी।

उसके जिस्म के एक-एक हिस्से से खून बह रहा था।

पांच गोलियां उसे लगी हुई थीं।

खड़े-खड़े जोर से हंसी रजिया ! इतने जोर से कि सहम गया हैदर !

"मैंने तुमसे क्या कहा था।" रजिया हँसते हुए बोली- "कि तुम अर्जुन ठक्कर के हाथ से नहीं बचोगे हैदर ! नहीं बचोगे। उसके हाथों में फौलाद है फौलाद !"

रजिया 'धांय-धांय'उसके सीने में गोलियां उतारती चली गयी।

फिर वह खड़े-खड़े पीछे जा गिरी थी।

लेकिन मरते वक्त उसके चेहरे पर सुकून था।

सुकून !

आखिर उसने अपने बहादुर भाई की मौत का बदला जो ले लिया था।

***



13. उपसंहार

पाकिस्तान के राष्ट्रपति भवन में वह एक बेहद एमरजेंसी मीटिंग चल रही थी।

उस मीटिंग में पाकिस्तान की तीन सबसे बड़ी शक्तियां शामिल थीं।

प्राइम मिनिस्टर, राष्ट्रपति और कर्नल नासिर !

"यह मीटिंग मैंने काफी सोच-समझकर बुलायी है।" पाकिस्तान का प्राइम मिनिस्टर गंभीर स्वर में बोल रहा था- "जबसे कमाण्डर करण सक्सेना ने हमारी राजधानी में हंगामा करना शुरु किया है, मैं तभी से हालातों पर पूरी नजर रख रहा हूँ। दरअसल सुलतान फौजी की वजह से अब तक हमारा काफी नुकसान हो चुका है। इसके अलावा खतरे की एक और बड़ी जबरदस्त घण्टी हमारे सिर पर बज रही है।"

"कैसी घण्टी ?" राष्ट्रपति की आँखें भी थोड़ी सिकुड़ गयीं ।

"अगर यह राज़ खुल गया कि हमने फौजी जैसे बेहद खतरनाक कश्मीरी आतंकवादी को अपने देश में शरण दी हुई है या फिर मुम्बई में जो पांच हजार आतंकवादी मारे गये, उनकी मौत के पीछे कहीं न कहीं हमारा हाथ था, तो पूरी दुनिया में हमारी काफी बदनामी हो सकती है ।"

"यस, ऑफकोर्स !" राष्ट्रपति भी बैचेन होकर बोला- "सचमुच इसके काफी खतरनाक रिज़ल्ट हमारे सामने आ सकते हैं । पाकिस्तान को टैररिस्ट कंट्री घोषित किया जा सकता है । हमारे वेपन्स की सप्लाई पर बैन लगाया जा सकता है । इसके अलावा यूनाईटेड नेशन में हमारी मेम्बरशिप खत्म की जा सकती है ।"

"इससे भी खौफनाक बात ये है !" प्राइम मिनिस्टर फिर गर्मजोशी के साथ बोला- "कि अगर भारत सरकार के पास इस संबंध में सबूत पहुँच गये, तो वह इंटरनेशनल प्लेटफार्म पर हमारी इज्जत का खूब अच्छी तरह से जनाजा निकाल देगा । हमारी खूब थुक्का-फजीहत करेगा और यह सिर्फ एक आदमी की वजह से होगा, सिर्फ एक आदमी की वजह से !" प्राइम मिनिस्टर दांत किटकिटाता हुआ बोला- "और उसका नाम सुलतान फौजी है- सुलतान फौजी !"

"फिर अब हम क्या करें सर ?" कर्नल नासिर उलझनपूर्ण लहजे मे बोला- "तमाम हालत एकाएक इतने मुश्किल हो गये हैं कि अब तो कोई रास्ता भी नजर नहीं आता ।"

"लेकिन अपना रास्ता हमें बनाना होगा ।" पाकिस्तान के प्राइम मिनिस्टर ने आंदोलित स्वर में कहा- "हमें अपनी नीतियां थोड़ी चेंज करनी होंगी ।"

"लेकिन नीतियां किस तरह चेंज होंगी ?"

"दरअसल सुलतान फौजी को हम लोगों ने आज तक अपनी नाक का सवाल बना रखा था ।" प्राइम मिनिस्टर बोला- "हम उसे ऐसी जबरदस्त सिक्योरिटी दे रहे थे, जो आज तक पाकिस्तान

सरकार ने कभी किसी को नहीं दी । जबकि अगर हम शुरु से ही थोड़ी चालाकी से काम लेते, तो अब तक हमारी सारी प्रॉब्लम ही सॉल्व हो जाती बल्कि उस पोजीशन में हमारा इतना ज्यादा नुकसान भी न होता । दरअसल हमें शुरु से ही सुलतान फौजी को बचाने की बजाय इस तरफ ज्यादा ध्यान देना चाहिये था कि कमाण्डर को किस तरह मारा जाये । क्योंकि अगर कमाण्डर करण सक्सेना मारा जाता, तो हमारी असली प्रॉब्लम ही खत्म हो जाती ।"

अब पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने थोड़ी हैरान निगाहों से कर्नल नासिर की तरफ देखा । कुछ ऐसे ही भाव कर्नल नासिर की आंखों में भी थे ।

"बहरहाल अभी तक हमसे जो गलतियां हुई, हुई ।" पाकिस्तान का प्राइम मिनिस्टर आगे बोला- "अब हमें इस तरफ ज्यादा ध्यान देना चाहिये कि आगे क्या किया जाये ? क्योंकि अभी भी हमारे पास भूल-सुधार का एक मौका है ।"

"अब क्या किया जाये ?" कर्नल नासिर ने उत्सुकतापूर्वक पूछा ।

"वह भी बताता हूँ ।" प्राइम मिनिस्टर अपनी कुर्सी पर थोड़ा संभलकर बैठा और उसकी आवाज़ बेहद रहस्यमयी हो गयी- "दरअसल अब हमें अपनी एक-एक चाल काफी सोच-समझकर चलनी है । पहली बात, अब हम सुलतान फौजी को एक बकरे की तरह इस्तेमाल करेंगे ।"

"ब... बकरे की तरह ?" कर्नल नासिर के मुँह से तेज सिसकारी फूटी- "य... यह आप क्या कह रहे हैं सर ?"

"पहली मेरी पूरी योजना सुनो ।" प्राइम मिनिस्टर रहस्यमयी स्वर में ही बोला- "याद रखो, शेर का शिकार करने के लिये हमेशा एक बकरे की जरूरत होती है और अब सुलतान फौजी हमारे लिये ऐसे ही एक बकरे का रोल अदा करेगा । जिस तरह शेर का शिकार करने के लिये बकरे को मचान के नीचे बांधा जाता है, ठीक उसी तरह कमाण्डर करण सक्सेना का शिकार करने के लिये अब हम सुलतान

फौजी का इस्तेमाल करेंगे। फौजी को इस बार जान-बूझकर हल्की सिक्योरिटी दी जायेगी, ताकि कमाण्डर वहाँ जल्द-से-जल्द पहुँच सके।"

प्राइम मिनिस्टर बोलता जा रहा था, जबकि उसकी योजना सुनकर राष्ट्रपति के साथ-साथ कर्नल नासिर की आँखें भी हैरानी से फटने लगी थीं।

□□□

कमाण्डर उस समय होटल के अपने कमरे में था।

इतना ही नहीं वह फाउण्टेन पैन के स्पीकर पर सुलतान फौजी की बातचीत भी सुनने की कोशिश कर रहा था, ताकि उसकी उपस्थिति का अंदाजा लगाया जा सके कि वो इस वक्त कहाँ है ?

माइक्रोफोन को सुलतान फौजी के जिस्म में दाखिल हुए आठ घण्टे का समय हो चुका था, लेकिन अभी तक उसे सुलतान फौजी की सिर्फ कुछ आवाजें सुनाई दी थीं।

ऐसे आवाजें, जिनसे यह अंदाजा किसी भी हालत में नहीं लगाया जा सकता था कि वो इस वक्त कहाँ हैं ?

परन्तु फिर भी कमाण्डर को यकीन था कि जल्द ही उसे कुछ पता लगेगा और उसी उम्मीद के सहारे वो फाउण्टेन पेन के स्पीकर से चिपका हुआ था।

दोपहर के समय कमाण्डर को रजिया और हैदर अली की मौत का समाचार भी मिल गया था।

उस समाचार को सुनकर कमाण्डर के हाथ-पैर फूल गये थे।

वो सन्न रह गया।

वह खबर उसे टी.वी. के समाचारों द्वारा मिली।

खबरों में बताया गया था कि रजिया और हैदर अली के बीच किसी बात को लेकर जबरदस्त झगड़ा हो गया था और उसी झगड़े के दौरान उन्होंने एक-दूसरे के ऊपर गोलियां बरसा डालीं, जिससे दोनों की फ़ौरन ऑन द स्पॉट मौत हो गयी।

खबरों में यह भी बताया गया कि झगड़े की वजह मालूम नहीं हो सकी थी।

कमाण्डर जज्बादी हो उठा।

उसकी आंखों के गिर्द रजिया का चेहरा घूम गया था।

उसने तुरंत अपनी जेब से ट्रांसमीटर घड़ी निकाली, उस घड़ी को देखते-देखते कमाण्डर की आँखों में आँसू उमड़ आये थे। वह समझ गया कि रजिया ने आखिरकार अपने भाई का बदला ले लिया था।

हैदर अली जरूर अर्जुन ठक्कर का हत्यारा था।

कमाण्डर करण सक्सेना ने आहिस्ता से उस ट्रांसमीटर घड़ी को चूमा।

अब वह घड़ी उसके पास सिर्फ एक यादगार थी।

रजिया की यादगार!

□□□

सुलतान फौजी के जिस्म से दोनों गोलियां निकल चुकी थीं और इस समय वो आई.एस.आई. हैडक्वार्टर के विशेष कक्ष में आराम कर रहा था।

वहाँ उसे तमाम सुख-सुविधायें दी जा रही थीं।

दो नौकर हर पल उसकी सेवा में लगे थे।

जिस समय सुलतान फौजी आई.एस.आई. हैडक्वार्टर में आराम कर रहा था, उसी समय कर्नल नासिर के ऑफिस में उसकी मौत की अंतिम रूपरेखा तैयार की जा रही थी।

कर्नल नासिर के सामने आई.एस.आई. के वही दोनों अधिकारी बैठे थे, जिनमें से एक लम्बे कद का बुलगारियन कट दाढ़ी वाला आदमी था। जबकि दूसरा ठिगना था, जो उन दोनों के सामने बिल्कुल बच्चा नजर आता था।

"यह फैसला हो चुका है।" कर्नल नासिर उन दोनों ऑफिसर्स को बता रहा था- "कि इस बार सुलतान फौजी को कहाँ शिफ्ट किया जायेगा। दरअसल इस बार उसे बड़ी अजीबोगरीब जगह

शिफ्ट करने का प्लान है। जिसके बारे में सुनकर तुम्हें भी हैरानी होगी।"

"ऐसी कौन सी जगह है ?" बुल्गारियन कट दाढ़ी वाले के नेत्र फैले।

"इस्लामाबाद में जो 'दस्तरखान' रेस्टोरेंट है, उस रेस्टोरेंट का नाम तो तुम दोनों ने सुना ही होगा।"

"बिल्कुल सुना है।" उन दोनों ने लगभग समवेत स्वर में जवाब दिया- "वह आखिर इस्लामाबाद के बेहद प्रसिद्ध रेस्टोरेंटों में-से एक है।"

"बिल्कुल सही।" कर्नल नासिर ने उत्साहित होकर जवाब दिया- "मैं उसी 'दस्तरखान' रेस्टोरेंट की बात कर रहा हूँ। दरअसल वह दो मंजिल का रेस्टोरेंट है और उस रेस्टोरेंट की दूसरी मंजिल आजकल बिल्कुल खाली पड़ी है। उस रेस्टोरेंट के मालिक से बात कर ली गयी है और इस बार सुलतान फौजी को उसी रेस्टोरेंट के ऊपर शिफ्ट किया जायेगा।"

"रेस्टोरेंट के ऊपर !" ठिगने के मुँह से सिसकारी छूट गयी।

"हाँ।"

"लेकिन वहाँ तो कमाण्डर बड़ी आसानी से पहुँच जायेगा सर।" बुल्गारियन कट दाढ़ी वाला भी भौंचक्के स्वर में बोला।

"ठीक कहा तुमने।" कर्नल नासिर के होठों पर मुस्कान दौड़ी- "इसमें कोई शक नहीं कि कमाण्डर वहाँ बड़ी आसानी से पहुँच जायेगा और सच तो यह है कि इस बार हम लोग भी यही चाहते हैं कि कमाण्डर करण सक्सेना वहाँ आसानी से पहुँच जाये। कमाण्डर यह समझेगा कि सुलतान फौजी को इस बार उस अनोखी जगह इसलिये शिफ्ट किया गया है, ताकि कोई उसके वहाँ मौजूद होने के बारे में सोच भी न सके। जबकि सच्चाई इससे बिल्कुल उल्टी होगी। हम लोग ही जानबूझकर पूरे इस्लामाबाद में यह खबर फैलायेंगे। जबकि हकीकत यह होगी कि सुलतान फौजी को 'दस्तरखान' रेस्टोरेंट के ऊपर बकरे की तरह बांधा जायेगा, ताकि उसके जरिये

कमाण्डर नामक शेर का शिकार किया जा सके।"

फिर कर्नल नासिर दबी जबान में उन दोनों को प्राइम मिनिस्टर की योजना बताता चला गया।

जैसे-जैसे उन दोनों ने योजना सुनी, ठीक उसी अनुपात में उसके नेत्र भी अचम्भे से फटते चले गये।

□□□

सुलतान फौजी को भी एकाएक ही उनकी उस खतरनाक योजना का पता चल गया था।

दरअसल वो अपने विशेष कक्ष में लेटा-लेटा बोर होने लगा था, इसलिये वो अपने बिस्तर से उठ बैठा और फिर यह सोचकर कर्नल नासिर के ऑफिस की तरफ बढ़ा कि वहाँ चलकर पूछा जाये कि अब आगे की सिक्योरिटी का क्या इंतजाम किया जा रहा है?

सुलतान फौजी, कर्नल नासिर के ऑफिस में घुसने ही जा रहा था कि एकाएक उसके कदम ठिठक गये। एकाएक उसके कानों में कुछ ऐसे शब्द पड़े, जिन्होंने उसे चौकन्ना कर दिया।

सुलतान फौजी बड़े ध्यान से अंदर हो रही बातचीत सुनने लगा था और जैसे-जैसे उसने वो बातचीत सुनी, ठीक उसी अनुपात में उसके दिमाग के अंदर धमाके होने लगे।

उफ! कैसी खतरनाक योजना बना रहे थे वह लोग।

उनकी दिलचस्पी अब उसे बचाने की बजाय कमाण्डर को मारने में ज्यादा थी।

वह कमाण्डर को मारने के लिये अब कुछ भी करने को तैयार थे।

सुलतान फौजी की कंजी आँखें अब गुस्से से भभकने लगीं। एकाएक वो खूनी दरिंदा नजर आने लगा था। उसकी आंखों में नफ़रत ही नफ़रत उमड़ पड़ी।

जिनके लिये उसने सब कुछ किया। मुम्बई में इतने जबरदस्त बम-विस्फोट किये थे, आज वही लोग उसकी जिंदगी को दांव पर लगाने के लिये तैयार थे।

सुलतान फौजी को लगने लगा, अगर अब वो वहाँ रहा, तो उसे मरने से कोई नहीं बचा सकता ।

उसने जोर से अपने कंधे पर पड़े बाल पीछे झटके थे और कुछ ही सेकंण्ड के अंदर अब वो वहाँ से भाग निकलने का फैसला कर चुका था ।

उसके बाद उसने वहाँ एक पल भी व्यर्थ नहीं गंवाया ।

वह फौरन ही छिपता-छिपता आई.एस.आई. हैडक्वार्टर के मेन गेट पर पहुँच गया । वहाँ दो सिक्योरिटी गार्ड खड़े थे ।

लगभग पंद्रह मिनट तक सुलतान फौजी मेन गेट के पास ही छिपा खड़ा था ।

फिर वह सिक्योरिटी गार्ड जैसे ही मेन गेट से इधर-उधर हुए, वह तुरंत ही आई.एस.आई. हैडक्वार्टर से बाहर निकल गया ।

“कहाँ जाना है ?” ड्राईवर ने अपनी टैक्सी का मीटर डाउन करते हुए पूछा ।

“प्राइम मिनिस्टर हाउस !” फौजी ने बड़े ठोस शब्दों में जवाब दिया ।

“प... प्राइम मिनिस्टर हाउस !” कांप गयी टैक्सी ड्राइवर की आवाज़ । उसने हकलाकर सुलतान फौजी की तरफ देखा । लेकिन अगले ही पल वो टैक्सी प्राइम मिनिस्टर हाउस की तरफ दौड़ जा रही थी ।

सुलतान फौजी की आंखो में अभी भी आग थी । गुस्से की आग । और दिल में कोई इरादा हर पल दृढ़ होता जा रहा था ।

वह मन-ही-मन कोई मजबूत फैसला कर चुका था ।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना चौंका ।

बुरी तरह चौंका ।

सुलतान फौजी के साथ जो घटनायें घट रही थीं, वह फाउण्टेन पैन के स्पीकर पर वो सब कुछ सुन रहा था ।

सबसे पहले तो वह कर्नल नासिर की वो योजना सुनकर ही बुरी तरह चौंका, जो उसने अपने दो बेहद खास आदमियों के सामने बयान की थी।

वाकई वो बेहद नाटकीय योजना थी।

फिर कमाण्डर स्पीकर पर यह सुनकर भी चौंका कि सुलतान फौजी अब प्राइम मिनिस्टर हाउस जा रहा है।

प्राइम मिनिस्टर हाउस।

कमाण्डर के चेहरे पर हैरानी का सागर उमड़ पड़ा था।

वह प्राइम मिनिस्टर हाउस क्यों जा रहा था ?

क्या चक्कर है ?

फिर वो अपनी स्थिति में भी अकेला ही लग रहा था।

कमाण्डर करण सक्सेना को महसूस हुआ, सारे हालात एक बार फिर नई करवटें लेने वाले हैं।

बिल्कुल नई करवट।

□□□

सुलतान फौजी जैसे ही पाकिस्तान के प्राइम मिनिस्टर हाउस पहुँचा, वहाँ खलबली मच गयी।

ऐसे कई आफिसर्स थे, जो सुलतान फौजी को पहचानते थे। इसलिये उसके टैक्सी से उतरते ही वह तेजी से उसकी तरफ झपटे।

"मिस्टर फौजी !" उनके स्वर में बेपनाह हैरानी थी- "तुम यहाँ अकेले कैसे आये हो ?"

"मुझे फौरन प्राइम मिनिस्टर से मिलना है।" सुलतान फौजी की आवाज़ में दृढ़ता थी।

"लेकिन बात क्या है, तुम प्राइम मिनिस्टर से क्यों मिलना चाहते हो ?"

वहाँ चारों तरफ बेचैनी सी फैल गयी थी।

"इस बारे में भी मैं प्राइम मिनिस्टर को ही बताऊंगा। आप लोग बस फौरन मेरी उनसे मुलाकात का इंतजाम करो।"

"ठीक है, तुम हमारे साथ अंदर आओ।" तुरंत छः ऑफिसरों ने हिफाजत के तौर पर उसे चारों तरफ से घेर लिया था- "हम अभी तुम्हारी मुलाकात का इंतजाम करते हैं।"

फिर वह ऑफिसर सुलतान फौजी को चारों तरफ से घेरे हुए अंदर की तरफ बढ़ गये।

□□□

प्राइम मिनिस्टर की उस समय अंदर हॉल में कुछ विदेशी नेताओं के साथ बेहद कॉन्फिडेंशियल मीटिंग चल रही थी।

लगभग दस मिनट वह मीटिंग और चली।

उस मीटिंग के खत्म होते ही ऑफिसरों ने सुलतान फौजी की प्राइम मिनिस्टर के साथ मुलाकात का इंतजाम कर दिया।

सुलतान फौजी अपने सीने में आग लिये बड़े खतरनाक इरादों के साथ हॉल में दाखिल हुआ। सामने ही सोफे पर पाकिस्तान का प्राइम मिनिस्टर फैलकर बैठा था।

"यह मैं क्या सुन रहा हूँ।" सुलतान फौजी के हॉल में कदम रखते ही प्राइम मिनिस्टर भड़ककर बोला- "तुम यहाँ अकेले आये हो, वो भी टैक्सी में बैठकर ? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि कमाण्डर तुम्हारे खून का प्यासा बना इस्लामाबाद में चारों तरफ घूम रहा है ? उसने कितनी बरबादी मचा रखी है।"

"मैं सब जानता हूँ।" सुलतान फौजी बेहद सर्द लहजे में बोला- "मुझे सब मालूम है मिस्टर प्राइम मिनिस्टर !"

"क्या कर्नल नासिर को पता है कि तुम यहाँ आये हो ?"

"नहीं।" सुलतान फौजी ने सांप की तरह फुंफकारते हुए बिल्कुल स्पष्ट लहजे में जवाब दिया- "आई.एस.आई. हैडक्वार्टर में इस राज को कोई नहीं जानता कि मैं यहाँ आया हूँ। उन लोगों को तो शायद अभी यह भी मालूम नहीं होगा कि मैं वहाँ से फरार हो चुका हूँ।"

प्राइम मिनिस्टर की एकाएक आँखें सिकुड़ गयीं। उसे हालात

ठीक नजर नहीं आ रहे थे ।

"इस हरकत का मतलब ?" प्राइम मिनिस्टर ने गुर्राकर पूछा ।

सुलतान फौजी थोड़ा नीचे झुका और फिर प्राइम मिनिस्टर की आंखों में आखें डालकर कर्कश स्वर में बोला- "क्योंकि मैं बलि का बकरा नहीं बनना चाहता हूं साहब ! मैं अभी जिंदा रहना चाहता हूँ । मैं तुम लोगों के हाथों में खेलकर रेस के मैदान का वो घोड़ा नहीं बन जाना चाहता, जिसे अपने मतलब की खातिर लोग दांव पर लगाते हैं ।"

"यह क्या बकवास कर रहे हो तुम ?" प्राइम मिनिस्टर चीखा ।

"मैं बकवास नहीं कर रहा ।" सुलतान फौजी की आंखों में खून उतर आया- "मैं सच्चाई बयान कर रहा हूँ । मैंने अपनी जान की बाजी लगाकर मुम्बई में इतने जबरदस्त बम-विस्फोट किये ।" सुलतान फौजी दहाड़ता चला गया- "वहाँ हजारों हिन्दुस्तानी मार डाले और उसका आज मुझे यह सिला मिल रहा है कि कमाण्डर करण सक्सेना को मार डालने के लिये तुम लोगों ने मुझे बकरा बना दिया है । नहीं प्राइम मिनिस्टर, नहीं ! मैं इतनी आसानी से बकरा नहीं बनूंगा । मेरा नाम सुलतान फौजी है । सुलतान फौजी ! मैं उन लोगों में से नहीं, जिनसे दांव खेले जाते हैं ।"

काले कोबरा की तरह फुंफकारता हुआ सुलतान फौजी एकाएक काफी भयंकर नजर आने लगा था । उसने एकदम अपनी रिवॉल्वर निकालकर प्राइम मिनिस्टर के ऊपर तान दी ।

"य... यह क्या हरकत है ?" प्राइम मिनिस्टर के नेत्र अचम्भे से फट पड़े । वह फौरन झटके से सोफा छोड़कर उठा- "य... यह क्या बदतमीजी है ?"

"तुम मुझे दस्तरखान के ऊपर शिफ्ट करने जा रहे थे न ?" सुलतान फौजी फुंफकारा- "लेकिन नहीं, अब मैं अपनी मर्ज़ी से यहाँ शिफ्ट हो गया हूँ । यहाँ प्राइम मिनिस्टर हाउस में । अब तुम्हारी इस बेशकीमती जिन्दगी की डोर मेरी जिन्दगी की डोर के साथ बंध गयी है । अब अगर मैं बकरा हूं, तो तुम भी बलि के बकरे हो । अगर मैं

मरूंगा, तो तुम भी मेरे साथ-साथ ही मरोगे । अब मैं देखता हूँ ।" सुलतान फौजी बेहद हिकारत भरे अंदाज में बोला- "कि कमाण्डर करण सक्सेना मेरे तक कैसे पहुँचता है ? कैसे वो यहाँ तक आता है ? ऐसी की तेसी इस कमाण्डर की ।"

प्राइम मिनिस्टर के चेहरे का रंग उड़ गया । उसके चेहरे पर अब दहशत-ही-दहशत मंडराने लगी ।

उसके हाथ-पैरों में कंपकंपी सी छूट गयी ।

"त... तुम पागल हो गये हो ।" प्राइम मिनिस्टर सहमे-सहमे स्वर में बोला- "तुम्हें नहीं मालूम कि तुम क्या कर रहे हो ? किसके साथ कर रहे हो ?"

"हाँ-हाँ, मैं पागल हो गया हूँ ।" सुलतान फौजी वहशी दरिन्दे की मानिन्द डकरा उठा- "पागल हो गया हूँ मैं ! बिल्कुल पागल कुत्ता ! लेकिन मुझे पागल कुत्ता भी तुम्हीं ने बनाया है और अब उसकी सजा भी तुम्हें ही भुगतनी पड़ेगी ।"

□□□

चीख-पुकार की उन आवाजों को सुनकर तुरंत एक अधिकारी उस हॉल के अंदर आ गया ।

और !

अंदर आने के बाद जैसे ही उसकी नजर उस हौलनाक मंजर पर पड़ी, उसके नेत्र हैरत से फैल गये ।

यही वो पल था, जब प्राइम मिनिस्टर हाउस के कुछ और ऑफिसर तथा सुरक्षाकर्मी भी उसके पीछे-पीछे ही हॉल में घुस आये । अंदर का नजारा देखकर उनके नेत्र भी अचम्भे से फट पड़े । वाकई वो एक चौंका देने वाला नजारा था । किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि प्राइम मिनिस्टर हाउस में घुसने के बाद कोई इस तरह प्राइम मिनिस्टर के ऊपर रिवॉल्वर भी तान सकता है ।

"य... यह क्या हो रहा है ?" तुरंत एक सुरक्षाकर्मी आक्रोश में चिल्लाता हुआ सुलतान फौजी की तरफ बढ़ा- "य... यह क्या

हरकत है ?"

"कोई आगे न बढ़े ।" सुलतान फौजी हिस्टीरियाई अंदाज में चिंघाड़ उठा । इतना ही नहीं, उसने प्राइम मिनिस्टर को खींचकर अब बिल्कुल अपने सामने कर लिया था और रिवॉल्वर उसके कान से सटा दी- "अगर कोई भी आगे बढ़ा, तो मैं फौरन उसे गोली मार दूंगा । बेधड़क गोली मार दूंगा ।"

सुरक्षाकर्मी के कदम ठिठक गये । उसका चेहरा राख में तब्दील हो गया ।

"त... तुम चाहते क्या हो ?"

"कुछ नहीं चाहता । पहले मुझे कमाण्डर से बचाने के लिये सीक्रेट हाउस में शिफ्ट किया गया था । फिर गुप्त जेल में शिफ्ट किया गया । अब मैं अपनी इच्छा से प्राइम मिनिस्टर हाउस में शिफ्ट हो गया हूँ । अब मैं तब तक प्राइम मिनिस्टर के साथ इसी पोजीशन में यहाँ रहूँगा, जब तक कमाण्डर करण सक्सेना या तो मारा नहीं जाता या फिर वो पाकिस्तान छोड़कर कहीं चला नहीं जाता ।"

"लेकिन इस तरह प्राइम मिनिस्टर के ऊपर रिवॉल्वर तानने का क्या मतलब है ?"

"क्योंकि मुझे अब यहाँ किसी पर भी यकीन नहीं रहा । अब मैं जो खेल खेलूँगा, पूरी तरह अपने ढंग से खेलूँगा । अपने दिमाग से खेलूँगा ।"

"बेवकूफ आदमी !" तभी एक ऑफिसर दांत किटकिटाते हुए विषैले स्वर में बोला- "तुम शायद जानते नहीं कि किसी भी देश के प्राइम मिनिस्टर को इस तरह कब्जे में करने का क्या मतलब होता है ? यह कितना बड़ा गुनाह है ?"

"मैं सब जानता हूँ ।" सुलतान फौजी हिंसक लहजे में गुर्राया- "मुझे सब मालूम है । मैंने आज तक मौत के ऐसे ही खेल खेले हैं ।"

"लेकिन हम लोग जब तुम्हारी सिक्योरिटी पूरी जी जान से कर रहे थे ।" सुरक्षाकर्मी बोला- "तो फिर तुम्हें किस बात की फ़िक्र थी ? फिर तुमने यह कदम क्यों उठाया ?"

"क्योंकि मुझे मालूम हो चुका था ।" सुलतान फौजी नफरत से होंठ सिकोड़कर बोला- "कि तुम लोग अब मेरी कैसी सिक्योरिटी करने वाले हो । बहरहाल अब तुम लोग यहाँ से बाहर निकल जाओ और हम दोनों को यहाँ अकेला छोड़ दो । अब प्राइम मिनिस्टर से कोई नहीं मिलेगा । इनके तमाम अप्वाइंटमेंट कैंसिल कर दो । बाहर के जितने प्रोग्राम हैं, वह सबके सब कैंसिल कर दो । अब यह मेरे कैदी हैं, मेरे कैदी !"

सब हैरानी से एक-दूसरे की सूरत देखने लगे ।

जबकि प्राइम मिनिस्टर के चेहरे पर अभी भी हवाइयां उड़ रही थीं । उसके इतने सारे हिमायती वहाँ मौजूद थे, लेकिन फिर भी वो खुद को फंसा हुआ महसूस कर रहा था ।

□□□

पूरे प्राइम मिनिस्टर हाउस में एकाएक सनसनी-सी फैल गयी थी ।

जिसने भी यह खबर सुनी कि सुलतान फौजी ने प्राइम मिनिस्टर को अपना कैदी बना लिया है, वही भौंचक्का रह गया ।

उसी के नेत्र हैरानी से फैल गये ।

प्राइम मिनिस्टर और कैदी ? सुलतान फौजी के कैदी ? वह भी प्राइम मिनिस्टर हाउस के अंदर ही ?

वाकई वो एक हैरतअंगेज खबर थी ।

प्रेस और टी.वी. मीडिया के कई लोग वहाँ मौजूद थे । उन्होंने तुरंत टीवी और सोशल मीडिया पर उस खबर को ब्रॉडकास्ट कर दिया ।

अलबत्ता 'सुलतान फौजी' का नाम तब भी छिपाया गया था ।

समाचारों में यही कहा गया कि किसी आतंकवादी ने प्राइम मिनिस्टर को अपना कैदी बना लिया है ।

देखते-ही-देखते वह खबर न सिर्फ पूरे पाकिस्तान में बल्कि पूरी दुनिया में आग की तरह फैल गयी ।

□□□

जिस समय पूरी दुनिया उस खबर से दहली हुई थी, उसी क्षण प्राइम मिनिस्टर हाउस के एक कमरे में विशेष सुरक्षा दस्ते के जाबांज बॉडीगार्ड जमा हुए, जिनका काम प्राइम मिनिस्टर की हिफाजत करना ही था।

उस समय वह सभी बॉडीगार्ड घबराये हुए थे और बुरी तरह विचलित नजर आ रहे थे।

"हमें जल्दी कुछ करना चाहिये।" एक बॉडीगार्ड वहाँ आते ही बोला- "सुलतान फौजी जैसे आदमी पर ज्यादा देर यकीन नहीं किया जा सकता। वह गुस्से में आकर किसी भी पल कुछ भी कर सकता है। वह आखिर एक खतरनाक आतंकवादी रहा है।"

"लेकिन हम लोग क्या कर सकते हैं ?" दूसरा बाडीगार्ड बोला- "अगर हमने कोई भी हरकत की, तो वह बेहिचक प्राइम मिनिस्टर को गोली मार देगा। उसने आज तक सैकड़ों इंसानों की जान ली है। उसके लिये एक और हत्या कर देना क्या मुश्किल काम है ?"

"बिल्कुल ठीक है।" वह एक अन्य बॉडीगार्ड की आवाज़ थी।

"फिर हम क्या करें ?"

"हमें कोई ऐसी तरकीब निकालनी होगी, जो हम प्राइम मिनिस्टर को बचाने के लिये अपनी चाल भी चल जायें और सुलतान फौजी को हमारे इरादों की भनक भी न मिले।"

"लेकिन ऐसी क्या तरकीब हो सकती है ?"

विशेष सुरक्षा दस्ते के वो तमाम बॉडीगार्ड अब बड़ी उम्मीद के साथ एक दूसरे की सूरत देखने लगे।

लेकिन कोई कुछ न बोला।

किसी के पास ऐसी कोई नायाब तरकीब न थी।

□□□

उन सब लोगों के बीच में अकरम नाम का एक पाकिस्तानी

नौजवान भी बैठा था, जिसकी उम्र पच्चीस-छब्बीस साल थी और वह सिर्फ एक साल पहले ही प्राइम मिनिस्टर के उस विशेष सुरक्षा दस्ते में शामिल हुआ था।

अकरम दिलेर होने के साथ-साथ बेहद बुद्धिमान भी था और वह पक्का क्रेकशॉट था। नेशनल लेवल के फायर आर्म्स कॉम्पटीशन में वह दो बार गोल्ड मैडल जीत चुका था। इसके अलावा उसकी एक और खूबी यह थी कि वह कराटे में ब्लैक बेल्ट होल्डर था।

उस हादसे ने अकरम को भी झंझोड़ा हुआ था।

लेकिन अभी तक वह उन लोगों के बीच कुछ नहीं बोला था और सिर्फ ठण्डे दिमाग से कुछ सोच रहा था।

"आप लोग मुझे एक मौका दें।" काफी सोचने विचारने के बाद अकरम बोला- "मैं प्राइम मिनिस्टर को फौजी के शिकंजे से निकाल सकता हूँ।"

सबकी हैरान निगाहें एकदम अकरम की तरफ उठीं।

"त... तुम क्या करोगे ?" एक बॉडीगार्ड के मुँह से सिसकारी छूटी थी।

"मैं कुछ नहीं करूँगा, सारा काम यह पिस्टल करेगी।" अकरम पहले की तरह ही बेहद शांत लहजे में बोला और फिर उसने अपनी जेब से एक बहुत छोटी सी पिस्टल निकालकर मेज के बीच में रख दी।

वह एक बेहद खास किस्म की पिस्टल थी, जिसका साइज इतना छोटा था कि उसे बड़ी सहूलियत के साथ मुट्ठी के अंदर बंद किया जा सकता था।

"ल... लेकिन अगर तुम यह पिस्टल लेकर सुलतान फौजी के पास गए, तो वह फौरन प्राइम मिनिस्टर को शूट कर देगा।"

"ऐसी कोई नौबत नहीं आयेगी।" अकरम पूरे यकीन के साथ बोला- "मैं यह पिस्टल लेकर इस तरह अंदर जाऊँगा कि सुलतान फौजी के फरिश्तों को भी पता नहीं चलेगा कि मेरे हाथ में पिस्टल है।"

"तुम्हारा प्लान क्या है ? पहले तुम अपना प्लान हम लोगों को बताओ ।"

"ठीक है । मैं प्लान बताता हूँ ।"

अकरम थोड़ा तनकर बैठ गया, फिर वो अपनी पूरी योजना उन लोगों को बताने लगा ।

□□□

उधर कमाण्डर जबरदस्त ढंग से एक्टिव था ।

माइक्रोफोन से उसे काफी मदद मिल रही थी ।

माइक्रोफोन की बदौलत ही कमाण्डर को न सिर्फ यह मालूम हो गया था कि सुलतान फौजी, प्राइम मिनिस्टर हाउस में पहुँच चुका है बल्कि उसी माइक्रोफोन की बदौलत उसने अपने होटल के कमरे में बैठे-बैठे सुलतान फौजी और प्राइम मिनिस्टर के बीच का सारा वार्तालाप भी सुना था ।

और उसी वार्तालाप को सुनकर कमाण्डर जैसा आदमी भी चौंका था, उसे उम्मीद नहीं थी कि सुलतान फौजी ऐसा कदम भी उठायेगा । वह फौरन समझ गया कि प्राइम मिनिस्टर हाउस में कुछ होने वाला है ।

वो जानता था कि ऐसे हालात में प्राइम मिनिस्टर के बॉडीगार्ड किसी भी हालत में खामोश नहीं रहेंगे ।

फैसले की घड़ी आ चुकी थी ।

कमाण्डर, पाकिस्तान के प्राइम मिनिस्टर हाउस पहुँचने के लिये आनन-फानन तैयार होने लगा ।

□□□

उधर अकरम ने भी चाल चली ।

अपनी योजना की बदौलत उसने कुछ ही मिनट के अंदर साबित कर दिया था कि वो वाकई बुद्धिमान है ।

अकरम ने सबसे पहले अपने दोनों हाथों में काले रंग के मुलायम

रबड़ के दस्ताने पहने और फिर दायें हाथ के दस्ताने के अंदर एक पिस्टल छिपा ली।

दस्ताने में हथेली के पास उसने एक छेद भी किया, ताकि उंगली दस्ताने के अंदर पहुँच सके और वहाँ मौजूद पिस्टल का वह सहूलियत से ट्रेगर दबा सके।

यानि वह दस्ताने पहने-पहने अब गोली चला सकता था।

जिस हॉल के अंदर सुलतान फौजी मौजूद था, उस हॉल के आसपास प्राइम मिनिस्टर के तमाम बॉडीगार्ड फैल गये। अकरम ने उन्हें आदेश दे रखा था कि उसके हॉल में पहुँचने के बाद जैसे ही पहली गोली चले, वह सब धड़धड़ाते हुए अंदर आ जायें।

□□□

पूरी योजना तैयार हो चुकी थी।

फिर वह क्षण भी आया, जब अकरम दरवाजा खोलकर उस हॉल के अंदर जा घुसा। उसने प्लान के अनुसार अपने हाथ में पानी का एक गिलास पकड़ रखा था और दूसरे हाथ में एक टेबलेट थी।

सुलतान फौजी ने जैसे ही दरवाजा खुलते देखा, वह एकदम उछलकर खड़ा हो गया। वरना वह उस समय प्राइम मिनिस्टर से थोड़ा फासले पर पड़ी एक कुर्सी पर बैठा था। अलबत्ता रिवॉल्वर तब भी उसके हाथ में थी।

"क्यों आये हो तुम यहाँ ?" सुलतान फौजी, अकरम को देखकर गुर्राया- "क्या मालूम नहीं कि मैंने किसी को भी यहाँ आने के लिये मना कर रखा है।"

"म... मैं दरअसल बहुत मजबूरी में यहाँ आया हूँ।" अकरम ने उसे थोड़ा डराने का अभिनय करते हुए कहा।

"कैसी मजबूरी ?" सुलतान फौजी पहले की तरह ही गरजा।

"तुम शायद जानते नहीं, प्राइम मिनिस्टर महोदय हार्टपेशेंट हैं।" अकरम बोला- "उन्हें दिन में तीन बार टेबलेट खानी पड़ती है। यह समय भी उनके टेबलेट खाने का है, इसीलिये मुझे मजबूरी में टेबलेट

लेकर यहाँ आना पड़ा है।"

सुलतान फौजी की गर्दन झटके से प्राइम मिनिस्टर की तरफ घूमी।

"क्या यह आदमी सच कह रहा है ?" सुलतान फौजी ने कर्कश स्वर में प्राइम मिनिस्टर से पूछा- "क्या तुम सचमुच हार्ट पेशेंट हो ?"

प्राइम मिनिस्टर को हार्ट की कैसी भी कोई बीमारी न थी।

इसीलिये वो फौरन भांप गया कि जरूर उसके बॉडीगार्ड कोई चाल चल रहे हैं।

"ह... हाँ।" प्राइम मिनिस्टर ने तुरंत खड़े होकर कहा- "ह... हाँ, मैं हार्ट पेशेंट हूँ।"

"ठीक है।" सुलतान फौजी की गर्दन पुनः अकरम की तरफ घूमी- "तुम टेबलेट और पानी का गिलास वहीं अपने पास मौजूद टेबिल पर रख दो और जाओ यहाँ से।"

सुलतान फौजी उस समय एक-एक कदम काफी फूंककर उठा रहा था, क्योंकि वो खुद जानता था कि इस समय वो कितने बड़े संकट में घिरा हुआ है।

उसके चारों तरफ खतरा-ही-खतरा था।

अकरम धीरे-धीरे कदमों से चलता हुआ अपने से थोड़े ही फासले पर पड़ी टेबिल के नजदीक पहुँचा और वहाँ उसने दोनों चीजें रख दीं।

लेकिन फिर भी वो वहीं खड़ा रहा।

"अब क्यों खड़े हो यहाँ ?" सुलतान फौजी ने दांत किटकिटाये- "जाते क्यों नहीं हो ?"

"मैं दरअसल तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ।"

"क्या कहना चाहते हो ?"

"अगर तुम कहो, तो मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ।" अकरम ने सकुचाये लहजे में कहा- "यह सच है कि तुमसे बहुत बड़ा गुनाह हो गया है। तुमने प्राइम मिनिस्टर जैसे वीवीआईपी आदमी को अपना कैदी बना लिया है, लेकिन अगर तुम इन्हें छोड़ दो, तो तुम्हारा यह

गुनाह माफ किया जा सकता है। इतना ही नहीं पाकिस्तान सरकार कमाण्डर करण सक्सेना से पहले की तरह ही तुम्हारी जान की हिफाजत भी करेगी।"

"मुझे बेवकूफ मत समझो।" सुलतान फौजी चिंघाड़ उठा, उसके चेहरे की तमाम नसें तन गयीं- "मैं जानता हूँ कि तुम लोग किसी-न-किसी तरह प्राइम मिनिस्टर को मेरे शिकंजे से निकालना चाहते हो। लेकिन मैं अब तुम लोगों की किसी चाल में फंसने वाला नहीं हूँ। तुमने पानी का गिलास और टेबलेट मेज पर रख दी है, तुम्हारा काम खत्म हुआ। अब तुम जा सकते हो।"

"ठीक है, जैसी तुम्हारी मर्जी!" अकरम बोला- "मैं तो तुम्हें पहले समझाने की कोशिश कर रहा था। लेकिन यहाँ से जाने से पहले मैं चाहता हूँ कि प्राइम मिनिस्टर मेरे सामने ही टेबलेट खा लें, क्योंकि इन्हें बिल्कुल सही वक्त पर टेबलेट खिलाने की जिम्मेदारी मेरी ही है। डॉक्टर ने खास इंस्ट्रक्शन दे रखी है कि टेबलेट खिलाने में पांच मिनट भी इधर-उधर न हों, वरना इन्हे हार्टअटैक का दौरा पड़ सकता है। कुछ भी हो सकता है।"

सुलतान फौजी ने कठोर निगाहों से अकरम को घूरा।

"द... दरअसल अगर इन्हें कुछ हो गया।" अकरम ने पुनः सकुचाये लहजे में कहा- "तो मुझे जवाब देना पड़ जायेगा। मैं गरीब खामखाह मारा जाऊँगा।"

"ठीक है-ठीक है, अब ज्यादा बातें मत बनाओ।" सुलतान फौजी आक्रोश में बोला और फिर उसने खूंखार नज़रों से ही प्राइम मिनिस्टर की तरफ देखा- "आगे बढ़ो और मेज के पास जाकर अपनी टेबलेट खा लो। लेकिन ध्यान रहे कि दोनों में-से कोई भी गलत हरकत न करे। अगर जरा भी गलत हरकत हुई, तो मैं उसी पल तुम्हारी खोपड़ी में छेद कर दूंगा।"

पाकिस्तान के प्राइम मिनिस्टर का दिल जोर-जोर से धड़कने लगा।

वह धीरे-धीरे कदमों से चलता हुआ मेज के पास पहुँचा। इस

बीच वो काफी होपलैस हो चुका था। उसे लग रहा था कि कुछ होने वाला है।

फिर उसने मेज पर रखी टेबलेट उठाकर मुँह में डाली और उसके बाद पानी का गिलास उठाकर गटागट सारा पानी पी गया।

अकरम की यही योजना थी।

यही योजना।

वो प्राइम मिनिस्टर को कुछ सेकेंड के लिये सुलतान फौजी से अलग करना चाहता था और वो हो गया।

प्राइम मिनिस्टर ने पानी पीने के बाद कांच का गिलास जैसे ही नीचे रखना चाहा-

"एक मिनट !" अकरम फौरन बोल पड़ा- "अभी यह एक गोली और भी है, जो आपको खानी है।"

अकरम का वह दस्तानेयुक्त हाथ जिसके अंदर पिस्टल थी, एकाएक बड़ी तेजी से प्राइम मिनिस्टर की तरफ उठा।

सुलतान फौजी कुछ समझ पाता, उससे पहले ही अकरम का हाथ झटके से सुलतान फौजी की दिशा में घूमा। उंगली फ़ौरन दस्ताने के अंदर बने छेद में गयी और धांय से गोली दस्ताने को फाड़ती हुई बाहर निकली।

चीख पड़ा सुलतान फौजी !

गोली सीधे उसके रिवॉल्वर वाले हाथ में जाकर लगी थी। तुरंत रिवॉल्वर उसके हाथ से उछलकर दूर जा गिरी।

गोली चलते ही बाहर मौजूद तमाम बॉडीगार्ड धड़धड़ाते हुए अंदर आ गये।

सब कुछ बेहद आनन-फानन हुआ।

सुलतान फौजी हक्का-बक्का रह गया।

हथियारबंद बॉडीगार्ड ने अंदर आते ही एकदम से प्राइम मिनिस्टर को अपने सुरक्षा घेरे में ले लिया था। इससे पहले कि सुलतान फौजी तमाम हालातों को अच्छी तरह समझ पाता, वह बॉडीगार्ड प्राइम मिनिस्टर को लेकर दौड़ते हुए हॉल से बाहर निकल आये।

उसके हाथ से अब 'जैकपॉट' निकल चुका था।

घबरा गया फौजी!

घबराहट में ही वो पागलों की तरह एक बॉडीगार्ड के ऊपर झपट पड़ा और उसने अपने सिर की प्रचण्ड टक्कर उसके मुँह पर मारी।

वह बॉडीगार्ड हलक फाड़कर चिल्लाया। उसकी नाक से खून बहने लगा।

तुरंत 'धांय-धांय-धांय' कई सारी गोलियाँ सुलतान फौजी के ऊपर झपटीं।

लेकिन उसी पल सुलतान फौजी ने अपने आपको नीचे गिरा दिया था। गिरने से पहले उसने एक समझदारी का काम और किया, जिस बॉडीगॉर्ड के मुँह पर उसने अपने सिर की प्रचण्ड टक्कर मारी थी, उसके हाथ से सुलतान फौजी ने राइफल छीन ली और फिर वह बॉडीगार्ड पर बेहताशा गोली बरसाता हुआ बाहर की तरफ भागा।

बॉडीगार्ड भी गोलियों की बारिश सी करते उसके पीछे-पीछे लपके।

हालांकि सुलतान फौजी ने उन गोलियों से बचने की भरपूर कौशिश की थी। लेकिन गोलियां इतनी बड़ी संख्या में चलायी जा रही थीं कि उनसे बचने की भरपूर चेष्टा के बावजूद कई गोलियां उसके जिस्म में पेवस्त हो गयीं।

खून से लथपथ हो गया सुलतान फौजी!

लेकिन फिर भी वो भागता हुआ एक जीप में जा बैठा था।

जीप में बैठते ही उसने जीप स्टार्ट की और फिर वह जीप आंधी-तूफान बनी प्राइम मिनिस्टर हाउस से निकल भागी।

जल्द ही प्राइम मिनिस्टर के बॉडीगार्ड भी अन्य गाड़ियों में भर-भरकर उसके पीछे लपके।

□□□

सचमुच फैसले की घड़ी आ चुकी थी।

कमाण्डर करण सक्सेना भी उस समय प्राइम मिनिस्टर हाउस के सामने मौजूद था और एक नीली सुजुकी कार की ड्राइविंग सीट पर बैठा था। वह सुजूकी कार उसने थोड़ी देर पहले ही एक पार्किंग से चुराई थी।

सुलतान फौजी के आसपास का सारा वार्तालाप वो इस समय भी अपने फाउण्टेन पैन के स्पीकर पर सुन रहा था।

उसने जब अकरम और सुलतान फौजी के बीच का वार्तालाप सुना, वह तभी भांप गया कि यह नौजवान जरूर कुछ गड़बड़ करेगा।

और वही हुआ।

बेतहाशा गोलियां चलने और फिर जीप स्टार्ट होने की आवाज़ सुनते ही उसने भी अपनी सुजूकी स्टार्ट कर दी थी।

तभी धांय से सुलतान फौजी की जीप प्राइम मिनिस्टर हाउस से यूँ बाहर निकली, जैसे तोप से गोला छूटा हो। वाकई उसकी स्पीड हैरतअंगेज थी।

फिर उतनी ही बेपनाह तेजी से दौड़ती हुई एक के बाद एक प्राइम मिनिस्टर हाउस से आठ कारें और बाहर निकलीं।

कमाण्डर ने भी चुपचाप उन कारों के पीछे अपनी सुजूकी लगा दी।

अब वह भी उस दौड़ में शामिल था।

□□□

सुलतान फौजी को पकड़ने की पूरे जोर-शोर से कौशिश हो रही थी।

न सिर्फ प्राइम मिनिस्टर के बॉडीगार्ड उसके पीछे थे बल्कि वायरलेस द्वारा अब उस जीप के मेक, मॉडल और नम्बर भी पूरे इस्लामाबाद में सर्कुलेट होने लगे थे, जिसमें सुलतान फौजी सवार था।

खास आदेश जारी हो रहे थे कि फौरन उस जीप को पकड़ा जाये।

सुलतान फौजी को पकड़ा जाये ।

देखते-ही-देखते इस्लामाबाद के तमाम चौराहों और चैकपोस्टों पर उस जीप से सम्बन्धित जानकारी पहुँच गयी ।

□□□

मगर सुलतान फौजी भी हद से ज्यादा चालाक था । उसे शायद पहले से ही मालूम था कि इस तरह भी उसे पकड़ने की कोशिश हो सकती है ।

इसलिये उसने मुख्य सड़क या चौराहों से गुजरने की बजाय अपनी जीप छोटी-छोटी पेचदार गलियों में घुसा दी ।

वह पिछले लगभग एक साल से इस्लामाबाद में रह रहा था । इसलिये उसे वहाँ की तमाम सड़कों और गलियों का ज्ञान भी काफी अच्छी तरह था ।

वह तकरीबन एक घंटे तक प्राइम मिनिस्टर के तमाम बॉडीगार्डस और कमाण्डर करण सक्सेना को उन्हीं पेंचदार गलियों में घुमाता रहा । वहाँ तूफान-सा आया हुआ था ।

आखिरकार सुलतान फौजी अपनी चालाकी की बदौलत उन सबको धोखा देने में कामयाब हो ही गया ।

वह सब उसे ढूंढते ही रह गये थे, जबकि सुलतान फौजी फरार हो चुका था ।

□□□

उसके बाद सुलतान फौजी ने फिर एक चाल चली ।

उन सबको धोखा देने के बाद जब वह थोड़ी दूर निकल गया, तो उसने वह जीप भी वहीं छोड़ दी और एक वैन में जा घुसा । जो राइफल वह अपने साथ लाया था, उसकी गोलियां भी खत्म हो चुकी थीं । इसलिये वह राइफल भी उसने जीप के अंदर ही छोड़ दी ।

फिर वह वैन को कच्चे और पथरीले रास्ते पर दौड़ाता हुआ शहर

की आबादी से दूर ले गया।

जल्द ही उसने वैन किसी बहुत विशाल इमारत के खण्डहरों के सामने रोकी थी। दरअसल वहाँ कभी ब्रिटिश साम्राज्य में सेण्ट्रल जेल थी और वह उसी जेल के खण्डहर थे।

सुलतान फौजी ने वह वैन एक टूटी हुई दीवार के पीछे खड़ी कर दी और फिर वह लड़खड़ाता हुआ उस वैन के नीचे उतरा। उसके जिस्म से खून लगातार बह रहा था और उसे काफी दर्द भी हो रहा था।

सुलतान फौजी लड़खड़ाते कदमों से चलता हुआ ही जेल के खण्डहरों में घुसा और फिर वहीं बनी एक टूटी-फूटी सी बैरक के अंदर जाकर गिर पड़ा।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना अब निराश होने लगा था।

हालांकि इस्लामाबाद की सारी पुलिस फोर्स और प्राइम मिनिस्टर के तमाम बाडीगार्ड अब थक-हारकर बैठ गये थे। लेकिन कमाण्डर ने फिर भी सुलतान फौजी की तलाश जारी रखी थी।

उसे सुलतान फौजी को ढूंढते-ढूंढते सारी रात गुजर गयी और अब दिन निकल आया था।

आसमान में आज कुछ लालिमा थी।

कमाण्डर को लग रहा था कि सुलतान फौजी अब उसे नहीं मिलने वाला। यही बात उसके अंदर थोड़ी निराशा पैदा कर रही थी, क्योंकि उसने सारी रात मेहनत की थी।

थोड़ी ही देर बाद उसकी सुजुकी कार सेंट्रल जेल के उन्हीं पुराने खण्डहरों के सामने से गुजरी और उसी पल वह न जाने क्या देखकर चौंक पड़ा था।

वह जल्दी से अपनी कार बैक करता हुआ खण्डहरों के सामने लाया, दरअसल एकाएक उसकी निगाह काफी सारे ताजे खून पर पड़ गयी थी, जो मिट्टी पर मौजूद था।

फिर जल्द ही उसे वो वैन भी नजर आ गयी, जो टूटी हुई दीवार के पीछे खड़ी थी। उसकी ड्राइविंग सीट पर भी काफी सारा खून था।

कमाण्डर करण सक्सेना फौरन भांप गया, सुलतान फौजी वहाँ है।

वह खून की कुछ नन्हीं-नन्हीं बूंदो का पीछा करता हुआ सेण्ट्रल जेल के अंदर घुस गया। उसने अब अपनी कोल्ट रिवॉल्वर भी हाथ में ले ली थी। वह जल्द ही उस बैरक के अंदर जा घुसा।

□□□

यह अचम्भा ही था कि इतनी गोलियां लगने के बावजूद सुलतान फौजी अभी भी जिंदा था।

अलबत्ता उसकी हालत काफी दयनीय हो गयी थी। उसके जिस्म से काफी सारा खून निकल चुका था और वो वहाँ बैरक के पथरीले फर्श पर लेटा था।

लेकिन कमाण्डर करण सक्सेना ने जैसे ही बैरक के अंदर कदम रखा, उसे वहाँ देखकर सुलतान फौजी के होश उड़ गये। वह एकदम झटके से उठा।

कमाण्डर ने उसी पल अपनी 38 कैलीबर की कोल्ट रिवॉल्वर सुलतान फौजी के चेहरे की तरफ तान दी थी।

“हिलना मत !” कमाण्डर सांप की तरह फुंफकारा- “हिलना मत ! मैंने तुमसे कहा था न, तुम्हारी दौड़ खत्म हो चुकी है। तुम्हें जितना भागना था, भाग चुके। बस अब तुम्हारी जिंदगी का क्लाइमेक्स यहीं होता है। तुम्हारी कहानी ख़त्म !”

“न... नहीं।” सुलतान फौजी के शरीर में खौफ की लहर दौड़ी- “नहीं।”

“कैसा अजीब इत्तेफाक है, आज 26 जनवरी है।” फिर कमाण्डर ने अपनी रिस्टवॉच देखी- “और आठ बजने में भी सिर्फ कुछ ही मिनट बचे हैं। यही वो तारीख और टाइम था न फौजी, जो अदालत ने तुम्हें फाँसी देने के लिये मुकर्रर किया था। आज एक साल बाद,

ठीक एक साल बाद तुम्हें फाँसी देने का बिल्कुल वही समय आ गया है। समय की धुरी एक बार फिर घूमकर वापस उसी जगह पहुँच गयी है, जहाँ से वह एक साल पहले चली थी।"

सुलतान फौजी की अब दहशत से बुरी हालत होने लगी। उसके हाथ-पैर बर्फ की तरह ठंडे पड़ गये। ऐसा लगा, जैसे कमाण्डर के कुछ करने से पहले ही उसका हार्टफेल हो जायेगा।

जबकि कमाण्डर रिवॉल्वर हाथ में लिये-लिये धीरे-धीरे कदमों से चलता हुआ सुलतान फौजी की तरफ बढ़ा।

"और यह भी कितना बड़ा इत्तेफाक है।" कमाण्डर पुनः बोला-"कि आज से एक साले पहले तुम इसी दिन, इसी समय जेल से निकलकर भागे थे। और आज तुम खुद ही अपने पैरों से चलकर एक दूसरी जेल मे आ गये हो। मैं तुम्हें गोली नहीं मारूंगा सुलतान फौजी बल्कि अदालत के फैसले का पूरी तरह सम्मान करते हुए अब मैं तुम्हें फाँसी ही दूंगा।"

वह शब्द कहने के बाद कमाण्डर ने सचमुच कोल्ट रिवॉल्वर वापस अपनी जेब में रख ली थी।

और!

कमाण्डर के रिवॉल्वर जेब में रखते ही फौजी एक बार फिर शेर बन गया।

उसने कमाण्डर करण सक्सेना को एकदम पीछे की तरफ जोर से धक्का दिया और उसके बाद वो बैरक से निकलकर अद्वितीय फुर्ती से भागा।

कमाण्डर भी उसके पीछे-पीछे चीते की तरह झपटा था।

□□□

हालांकि सुलतान फौजी की काफी बुरी हालत थी, मगर उस हालत में भी उसकी फुर्ती देखने योग्य थी।

वह सेण्ट्रल जेल के विशाल प्रांगण में दौड़ता चला गया। काफी दूर तक दौड़ता चला गया और फिर दौड़ते-दौड़ते वह जेल के अंदर

ही बने एक ऊंचे से मंच पर जा चढ़ा । उसी पल कमाण्डर करण सक्सेना भी जम्प लगाकर उस मंच पर जा चढ़ा था और उसने तुरंत सुलतान फौजी को अपने लोहे जैसे शिकंजे में जकड़ लिया ।

"देखो !" कमाण्डर गुर्राकर बोला- "देखो, तुम खुद ही जेल में उस जगह आ गये हो, जहाँ कैदियों को फाँसी दी जाती है । आज तुम्हारा हर कदम अपनी मौत की तरफ है ।"

फौजी ने अब हकबकाकर उस मंच को अच्छी तरह देखा, जिस पर वह बौखलाहट में खुद ही चढ़ गया था । वह सचमुच फाँसी देने वाली जगह थी । वहाँ सचमुच कुआं भी खुदा था और उसके ऊपर तख्ता भी रखा था । लोहे के पाइप में रस्सी का एक फंदा भी लटक रहा था ।

सारी तैयारियां थीं ।

ऐसा लग रहा था, जैसे तमाम चीजों पर वक्त का असर इसीलिये नहीं हुआ था, क्योंकि वहाँ सुलतान फौजी को फाँसी दी जानी थी ।

सुलतान फौजी ने एक बार उसके शिकंजे से भाग निकलने का प्रयास किया, लेकिन हर बार कौशिशें कामयाब नहीं होतीं ।

कमाण्डर इस बार काफी अलर्ट था ।

वह उसे जबरदस्ती घसीटता हुआ कुएं के पास ले गया । फिर उसे खींचकर तख्ते पर खड़ा कर दिया और उसके गले में फाँसी का फंदा डालकर अच्छी तरह कस दिया ।

अब सुलतान फौजी के चेहरे पर जमाने भर की दहशत उमड़ आयी थी । वह बुरी तरह अपने हाथ-पैर पटकने लगा और गला फाड़-फाड़कर चिल्लाने लगा ।

लेकिन वहाँ उन वीरान खण्डहरों में उसकी चीख सुनने वाला कौन था ?

"मैंने तुमसे पहले भी कहा था फौजी !" कमाण्डर बोला- "आज फिर कहता हूँ । तुमने भारत में जिन निर्दोष इंसानों की हत्यायें की, उनके मुकाबले तुम्हारी यह सजा काफी कम है । इसीलिये अब बाकी सजा तुम्हें तुम्हारा बनाने वाला देगा । अलविदा !

अलविदा ! !"

कमाण्डर करण सक्सेना ने बड़ी शांत मुद्रा में उसके पैरों के नीचे से तख्ता पकड़कर खींच लिया ।

सुलतान फौजी झटके से कुंए के अंदर लटक गया ।

वह बुरी तरह छटपटाने लगा ।

बुरी तरह हाथ-पैर पटकने लगा ।

काफी देर तक वह इसी तरह छटपटाता रहा था ।

फिर उसकी आँखें बाहर निकल आयीं ।

जबान ठोढ़ी से नीचे लटक गयी ।

गर्दन खिंचकर लम्बी हो गयी ।

वह मर चुका था ।

उसी पल कमाण्डर करण सक्सेना ने फिर अपनी रिस्टवॉच देखी ।

ठीक आठ बज रहे थे ।

बिल्कुल ठीक आठ !

उसने डनहिल सुलगा ली और उसके कश लगाता हुआ धीरे-धीरे कदमों से चलकर सेंट्रल जेल के उन विशाल खण्डहरों से बाहर आ गया ।

आसमान पर थोड़ी देर पहले जो लालिमा छिटकी हुई थी, वह अब साफ हो चुकी थी । वहाँ अब उजाला ही उजाला था ।

कमाण्डर करण सक्सेना को उस पूरे मिशन में बस एक ही बात का दुःख रहा था, वह कर्नल नासिर जैसे राक्षस को कोई सजा न दे सका ।

कोई बात नहीं ।

जो काम इस बार अधूरा रह गया, वह आगे कभी पूरा हो जाना था ।

हाँ, एक बात का दुःख और था, रजिया जैसी देशभक्त मारी गयी ।

रजिया !

जिसे वो कभी नहीं भुला सकता था ।

ऐसे देशभक्त कम ही पैदा होते हैं । सेल्यूट था उस महान वीरांगना को ।

कमाण्डर करण सक्सेना की वह सर्जिकल स्ट्राइक, जिसे पाकिस्तान हमेशा याद रखने वाला था ।

कमाण्डर ने पाकिस्तान में घुसकर उसी की सरज़मीन पर उस आतंकवादी को सजा दी ।

जय हिन्द !

जय भारत !

समाप्त